सुभाषचन्द्र बोस

नेताजी

सम्पूर्ण वाङ्मय

खंड-8

पत्र, लेख और बयान
(1933–1937)

सम्पादक
शिशिर कुमार बोस
एवं
सुगता बोस

अनुवादक
माधवी दीक्षित

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण : शक 1919 (1998)
पुनर्मुद्रण – शक 1920 (1999)

ISBN 81-230-0602-0

मूल्य 160.00 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केंद्र ● प्रकाशन विभाग

- पटियाला हाउस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001
- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- हाल नं 196, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
- कामर्स हाउस, करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, मुंबई-400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- राजाजी भवन, बेसैंट नगर, चेन्नई-600090
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, तिरुअनंतपुरम-695001
- 27/6, राममोहन राय मार्ग, लखनऊ-226001
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय, पब्लिक गार्डंस, हैदराबाद-500004
- एफ विंग, प्रथम तल, केंद्रीय सदन, कोरा मंगला, बेंगलौर-560034

विक्रय काउंटर ● प्रकाशन विभाग

- पत्र सूचना कार्यालय, 80, मालवीय नगर, भोपाल-462003
- पत्र सूचना कार्यालय, सी.जी.ओ काम्प्लेक्स, 'ए' विंग, ए बी रोड, इंदौर, (म.प्र.)
- पत्र सूचना कार्यालय, के-21, मालवीय मार्ग, सी. स्कीम, जयपुर

लेजर टाइपसेटिंग : दिनेशचन्द्र चौधरी
मुद्रक आकाशदीप प्रिन्टर्स, 20 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

विषय-सूची

लेख, भाषण और बयान

भूमिका

फरवरी 1933 मे एक बेहद बीमार और दुर्बल मरीज को एबुलेंस से निकाल कर स्ट्रेचर पर डालकर एस.एस. गगे नामक जहाज पर ले जाया जा रहा था। वह जहाज बबई से यूरोप के लिए रवाना होने वाला था। उसी व्यक्ति ने जब नवबर 1937 मे कलकत्ता से यूरोप जाने के लिए के.एल.एम. फ्लाइट पकडी। तब वह भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का अध्यक्ष चुना जा चुका था। 1933 से 1937 के मध्य के वर्षों ने इस सुधारवादी नेता को एक राजनीतिज्ञ मे परिवर्तित होते हुए देखा था। इस अक मे सुभाष चद्र बोस के जीवन के आकर्षक कितु असामान्य और अपेक्षाकृत अछूते पक्ष के पत्रों, लेखो और भाषणो का एकत्रित किया गया है । इस अवधि में उन्होने साम्राज्यवाद, राष्ट्रीयता, कट्टरवाद, साम्यवाद मनोविज्ञान, दर्शन, भौतिकवाद, शहरी योजना, यात्रा, गाधी, आयरलैंड और प्रेम आदि जैम विषयो को छुआ, यहा उन्ही पर उनके विचारो को एकत्र करने का प्रयास किया गया है।

उनके जीवन की इस अवधि का अधिकाश समय जबरन देश निकाले के कारण यूरोप में (मार्च 1933 से मार्च 1936) बीता, जहा वे अनाधिकारिक रूप से भारतीय स्वतत्रता के राजदूत बनकर कार्य करते रहे। अस्वस्थता और विएना मे गाल-ब्लैडर का आपरेशन करवाने के बावजूद सुभाष चद्र बोस ने पूरे महाद्वीप में खूब भ्रमण किया और यूरोपीय देशो की विभिन्न सस्थाओं व वहां स्थित भारतीय विद्यार्थी सगठनों से भी द्विपक्षीय मैत्री की चर्चा की। उन्होने आस्ट्रिया, बुल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया, मिस्र, फास, जर्मनी, हगरी, आयरलैंड, इटली, पोलैंड, रोमानिया, स्विटजरलैंड, तुर्की और यूगोस्लाविया की यात्रा की। नाओमी सी वैटर को लिखे पत्रो की सहायता से हम उनके यात्रापथ का निर्धारण कर सकते हैं। 1934 मे वे अपने पिता की गभीर बीमारी की सूचना मिलने पर कुछ समय के लिए भारत आए, कितु उन्हें आने मे बहुत देर हो गई। पिता का अतिम सस्कार करने के तुरत बाद वे यूरोप लौट गए। मार्च 1936 मे उन पर लगे प्रतिबध के बावजूद उनके बबई पहुचने पर ब्रिटिश सरकार ने उनकी गिरफ्तारी के आदेश दिए। एक वर्ष नजरबदी के मध्य बिताया और 1937 मे अप्रैल माह मे उन्हें प्रातीय चुनावों के समय राजनीति मे प्रवेश करने की आजादी मिली। यह चुनाव भारतीय अधिनियम 1935 के अतर्गत कराए जा रहे थे जिसके नेताजी कडे आलोचक थे। अक्टूबर 1937 मे अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के कलकत्ता सम्मेलन मे यह बात प्रकट हुई कि गाधी जी उन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाने के इच्छुक थे। अगले माह वे अपनी इच्छा और गांधी जी के आशीर्वाद से यूरोप की यात्रा पर पुनः रवाना हुए। 1933 से 1936 के मध्य बोस को ऐसा अनुभव हुआ कि ब्रिटेन जाने पर उन पर प्रतिबध लगाया जा रहा है। इसी अवसर पर उन्होंने लदन की यात्रा की और ब्रिटिश राजनीतिज्ञो, विशेष रूप से लेबर पार्टी के सदस्यों से मुलाकात भी की।

इस अवधि मे सुभाष चद्र बोस ने दो पुस्तकें लिखी जिसे इस वाड्मय के खड एक और दो के रूप मे प्रकाशित किया जा चुका है। पहली पुस्तक *एन इडियन पिलग्रीम* थी जो उन्होंने 1937 में आस्ट्रिया मे बैगस्टीन में अपने दस दिन के प्रवास में लिखी।

यह अपूर्ण आत्मकथा है। दूसरी पुस्तक *द इंडियन स्ट्रगल* है। इसमें उन्होने वर्ष 1920 तक क भारतीय स्वतत्रता आदोलन के अध्ययन पर लिखा। यह पुस्तक 1934 मे लिखी गई।

इसके अलावा उनके 200 से अधिक पत्र इस अक मे प्रकाशित किए जा रहे हैं, जिनमे उनके राजनीतिज्ञ के रूप में विचार व्यक्त हुए हैं। इस अंक मे उनके राजनीति सबधी कुछ लेख भी प्रकाशित किए जा रहे हैं। हरिपुरा में उन्होने अध्यक्षीय भाषण दिया, किंतु उससे पूर्व उनका एक भाषण, जिसे 'द लदन थीसिस' भी कहा जाता है, इसमे उन्होंने राजनीतिक दर्शन पर प्रकाश डाला है। उस लेख का शीर्षक 'द एटी इपीरियलिस्ट स्ट्रगल एड कम्युनिज्म' है। यह भाषण उनकी गैरहाजिरी में 10 जून, 1933 को लदन में आयोजित राजनीतिक सम्मेलन में पढा गया। इसमे उन्होंने गांधीवादी सत्याग्रह की प्रशसा और कही आलोचना की और साम्यवाद के आदर्शों पर प्रकाश डाला है। यूरोप से समाजवाद के राजनीतिक प्रयोगों से प्रभावित होकर बोस ने भारत के लिए पुराने बुद्धकालीन समाजवादी आदर्शों की अनुशसा की, क्योंकि उन्होंने अनुभव किया कि भारतीय स्थितियो के लिए वही आदर्श अधिक उपयुक्त थे। उन्ही आदर्शों द्वारा संतुलन और सामजस्य स्थापित किया जा सकता था।

अपने यूरोप प्रवास के दिनों मे बोस ने अतर्राष्ट्रीय राजनीति का विस्तृत अध्ययन किया। यद्यपि वे कट्टरवादी गुटो (कम्युनिस्ट) और आदोलनो से प्रभावित थे किंतु उनके मन में नाजी जर्मनी के प्रति गहरा असतोष था। उसकी चर्चा किट्टी कुर्टी ने भी की है। उन्होंने जर्मनी मे फैल रहे जन विवाद, विशेष रूप से भारतीय जाति कि विरुद्ध प्रचार, का खुलकर विरोध किया। 1936 मे जर्मनी से रवाना होते समय उन्होंने इस नए राष्ट्रवाद की खूब भर्त्सना की। डॉ. थीरफेल्डर को लिखे पत्र मे उन्होंने इसे 'सकुचित, स्वार्थ से परिपूर्ण व कठोर' कहा। गाधी व टैगोर की भाति वे भी मुसोलिनी के नेतृत्व की इटली के समर्थक थे। 1937 मे किट्टी कुर्टी को लिखे पत्र में उन्होंने जापान को 'पूर्व के अग्रेज' की सज्ञा दी। इटली के साम्राज्य से उनका मतभेद था। अमिय चक्रवर्ती को लिखे पत्रों मे अतर्राष्ट्रीय सबधों के बदलते परिदृश्य पर उनके विचार प्रकट हुए हैं, 'यूरोप आज और कल' तथा 'पूर्वोत्तर क्षेत्र में जापान की भूमिका' आदि लेखों में भी ऐसे ही विचार व्यक्त हुए हैं। इस कट्टर साम्राज्यवाद विरोधी व्यक्ति को एक ही बात आदोलित किए रहती थी वह यह थी कि इस विश्वव्यापी साम्राज्यवादी ब्रिटेन के कमजोर पक्षो को कैसे उजागर किया जाए।

यूरोप प्रवास के दौरान उनकी आयरलैंड यात्रा बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस अवधि में उन्होंने इयान डी. वलेरा से डब्लिन में तीन बार मुलाकात की। आयरलैंड के प्रति उनकी रुचि ई वुड्स को लिखे पत्रों से स्पष्ट होता है, यही आभास उनके 'डब्लिन की यात्रा' और 'आयरलैंड के प्रभाव' नामक लेखों को पढकर भी होता है। यूरोपीय शहरो में विएना बोस को सबसे अधिक प्रिय था। यहा के नगर निगम की राजनीति मे उनकी विशेष रुचि थी। सतोष कुमार बासु व ए.के फजलूल हक को लिखे पत्रों में कलकत्ता नगर निगम के प्रति उनकी चिंता स्पष्ट झलकती है। यही चिता उनके विएना, प्राग, वारसा और बर्लिन आदि शहरों पर लिखे लेखों में भी उजागर हुई है। चेकोस्लोवाकिया की राजनीति

व संस्कृति ने उन्हे विशेष रूप से आकर्षित किया। वहा के राष्ट्रपति एडवर्ड बेनेस तथा भारतीय विद्वान प्रो वी. लेस्नी से उनके घनिष्ठ सबध स्थापित हो गए थे। उन्होने चेकोस्लोवाकिया के स्वास्थ्य स्थलो की यात्रा की तथा 'कार्ल्सबाद तथा चेकोस्लोवाकिया के अन्य जल स्थान' शीर्षक से एक लेख भी लिखा।

भारतीय स्वतत्रता के मुद्दे को प्रचारित करने के साथ-साथ सुभाष चद्र बोस को यात्राओ मे तथा नए स्थानो को देखने व नए-नए लोगों से मिलने मे भी बहुत रुचि थी। विभिन्न विषयो पर प्रकाश डालते हुए लेख लिखने कि लिए उन्होने समय निकाला। धर्म के सबध मे उन्होने दिलीप कुमार राय तथा अनिल चद्र गागुली से पत्र व्यवहार किया। जुग फायड और मनोविश्लेषण पर किट्टी कुर्टी से तथा रोम्या रोला से राजनैतिक दर्शन पर पत्र व्यवहार किया। जवाहरलाल नेहरू की पत्नी कमला नेहरू की गभीर बीमारी के दौरान उन्होने अत्यधिक सहयोग व सहायता की। अपनी भाभी बिभावती बोस, श्रीमती और श्री धर्मवीर तथा उनकी पुत्री सीता धर्मवीर को लिखे पत्रो में हास्य व्यग्य व मानवीयता का पुट देखने को मिलता है। 1937 मे नजरबदी से मुक्त होने के पश्चात उन्होंने भारतीय राजनीति पर खुलेआम स्पष्ट शब्दों मे बहुत कुछ कहा। आधुनिक इतिहास व राजनीति के छात्रों को उनका लेख 'पद स्वीकार करने से हानि व लाभ' नामक लेख तथा बगाल व पजाब की स्थिति पर दिए बयान रुचिकर लगेगे।

सुभाष चद्र बोस के व्यक्तित्व और नेतृत्व गुणों को उनके प्रवास के वर्षो ने प्रभावित किया किंतु बगाल और भारतीय राजनीति के परिदृश्य से उनकी गैरहाजरी राष्ट्रीय राजनीति के लिए हानिकारक सिद्ध हुई। 1932 और 1936 के मध्य तो उनके भाई व उनके निकटतम राजनीतिक कमाडेट शरत चद्र बोस को भी गिरफ्तार कर जेल मे डाल दिया गया था। 1932 और 1934 में अवज्ञा आदोलन और क्रातिकारी आदोलनों के समय उनकी बहादुरी व दूरदृष्टि की कमी को बहुत महसूस किया गया क्योंकि किसी अन्य नेता मे वह शक्ति और दूरदर्शिता नही थी कि वह हिंदू-मुस्लिम संबधों में पडती दरार को बढने से रोक सकता। बोस भाइयों के भारतीय राजनीति के मुख्यधारा में प्रवेश से पूर्व इस क्षेत्र को काफी हानि उठानी पडी।

सुभाष चद्र बोस पर थोपे गए यूरोपीय प्रवास के वर्षों मे उनके जीवन व राजनीति के पक्ष पर इतना अधिक अध्ययन हुआ है कि किसी अन्य काल मे नही हुआ। इसमे रुचि रखने वाले लोगो को कुछ पुस्तके पढनी चाहिए जो इस प्रकार हैं-बियोवार्ड ए गोर्ल्डन, 'ब्रदर्स अगेंस्ट द राज' 'ए बायोग्राफी आफ इडियन नेशनलिस्ट शरत एड सुभाष चद्र बोस' (दिल्ली व न्यूयार्क 1990) का अध्याय 7, जिसका शीर्षक है 'अबेसडर ऑफ इडिया इन बोंडेज', कृष्णा बोस-'इतिहासेर सधाने' (इन सर्च ऑफ हिस्ट्री, बगला) कलकत्ता, 1937 तथा शिशिर कुमार बोस द्वारा सपादित 'ए बीकॉन अक्रौस एशिया-ए बायोग्राफी आफ सुभाष चद्र बोस (कलकत्ता 1973) का अध्याय दो। इसके अतिरिक्त किट्टी कुर्टी के साथ 1930 मे हुई मुलाकातों और वार्तालाप का विस्तृत ब्यौरा, जो 'सुभाष चद्र बोस एज आई न्यू हिम' (कलकत्ता 1969) में उपलब्ध है।

1933 और 1937 के मध्य सुभाष चद्र बोस द्वारा लिखे गए कई पत्रों को इस खड

में शामिल नही किया गया है। 1934 के पूर्वार्द्ध मे वे एक महिला से मिले, जिससे बाद मे उन्होने विवाह भी किया। 1934 मे *द इडियन स्ट्रगल* लिखने के दौरान और 1933 से 1936 के मध्य राजनैतिक गतिविधियो में एमिली शैंक्ल ने उनकी बहुत मदद की। अपनी यूरोप यात्रा के दौरान उन्होंने उनके साथ पत्र व्यवहार कायम रखा और 1937 मे भारत लौटने के बाद तो उन्होने लगातार उन्हे पत्र लिखे। एमिली शैंक्ल को लिखे पत्रो को और 1937 के पूर्व के पत्रों को इस सकलन कार्य के विशेष अक खड-7 मे प्रकाशित किया गया है।

सपादक गण सुभाष चद्र बोस के सहयोगियो व उन सभी मित्रो का आभार व्यक्त करना चाहते हैं जिन्होंने नेताजी के सभी पत्र 'नेताजी रिसर्च ब्यूरो' को सौंप दिए। स्वर्गीय नाओमी सी वैटर के हम विशेष आभारी हैं क्योकि उनके द्वारा दिए गए पत्रो स ब्यूरो के खजाने मे अपार वृद्धि हुई है। कई यूरोपीय मित्रो ने भी सामग्री एकत्र करने में हमारी सहायता की है। ओरिएटल इस्टीट्यूट, प्राग के भूतपूर्व निदेशक डॉ. मिलोस्लाव क्रासा ने चकोस्लोवाकिया के समाचार-पत्र हमे उपलब्ध करवाए। जर्मनी के अलेक्जैंडर बर्थ और डॉ लोथार फ्रैंक ने भी अपनी अमूल्य सेवाए हमे दी। ए गार्डन, किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा सुभाष चद्र बोस के जीवन को अधिक जानते थे, का भी यही प्रयास था कि यह सकलन पूर्ण होना चाहिए। अभिलेखागार के विषय में श्री नागा सुदरम का गहन ज्ञान सपादको के लिए असाधारण स्रोत था जिसका उन्होंने पूरा-पूरा लाभ उठाया। श्री कार्तिक चक्रवर्ती ने इसके कई ड्राफ्ट सावधानीपूर्वक टाइप किए। शर्मिला बोस व सुमतरा बोस ने इस कार्य के विविध चरणों मे अपनी सहायता हमें दी। हम लोग नेताजी की पत्नी एमिली शैंक्ल व उनकी पुत्री अनीता पेफ के विशेष आभारी हैं जिन्होने नेताजी के सपूर्ण कार्यो का कापी राइट ब्यूरो को सौंप दिया तथा समय-समय पर ब्यूरो के कार्यों को प्रोत्साहित भी किया। इस ब्यूरो को प्रसन्नता है कि आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली से उसका एक समझौता हुआ जिसके तहत इस अक व सपूर्ण वाड्मय के वितरण का कार्य आक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस को सौंपा गया। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस के श्री रूकुन आडवाणी के भी हम आभारी हैं जिन्होने इस कार्य में रुचि दिखाई और अपना सहयोग हमे दिया। अत में हम बताना चाहेंगे कि इस अक का प्रकाशन शिक्षा मत्रालय, भारत सरकार की सहायता व अनुदान स किया जा रहा है।

शिशिर कुमार बोस
सुगता बोस

नेताजी रिसर्च ब्यूरो
कलकत्ता
मार्च 1994

पत्र

दिलीप कुमार राय को *

एस एस गंगे
5 मार्च, 1933

प्रिय दिलीप,

एक लंबे समय से मैं तुम्हे कोई पत्र नहीं लिख पाया यद्यपि तुम्हारे पत्र निरतर मुझे मिलते रहे हैं। जनवरी और फरवरी माह के दौरान मैं सरकार की प्रताडना के कारण अतहीन मानसिक यातना का शिकार रहा हू और अत तक आश्वस्त नही हो पाया था कि उपचार के लिए मैं यूरोप जा भी पाऊगा या नही। सरकार की प्रताडित करने वाली नीतियों के कारण मेरा अपने माता-पिता एव मित्रों से मिल पाना भी सभव नहीं हो पाया। केवल कुछ निकट के रिश्तेदार ही जबलपुर जेल में मुझसे मिलने की अनुमति पा सके। मेरे कई मित्र मुझसे मिलने दूरदराज के इलाकों से बबई आए थे किंतु उन्हे भी निराश ही वापिस लौटना पडा। जहाज तक मुझे ले जाने वाले पुलिस अधिकारी तक मुझे शिकारी कुत्तो की तरह घेरे रहे, जब तक कि जहाज बंदरगाह से रवाना नही हो गया। बबई से प्रस्थान करने तक के क्षणों में यत्रणा ने मुझे बहुत कष्ट पहुचाया।

यद्यपि, मेरे विचार मे, इन क्षुद्र बातों का वर्णन कर मुझे तुम्हे चिंतित नही करना चाहिए। मेरी गिरफ्तारी के दौरान, तुम्हे जो मेरी चिंता रही उसके बारे में जानकर अच्छा लगा। फिर यह बात अप्रत्याशित भी थी, क्योंकि तुम तो विश्वमोह त्यागकर योग ले चुके हो। प्रिय दिलीप, सच तो यह है कि योग और अध्यात्म से परे मेरे प्रति तुम्हारी मानवीय सवेदना ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। क्योंकि तुमसे, जिससे सभी सासारिक बातो और अपने सासारिक मित्रो को भूल जाने की अपेक्षा थी, मेरे जैसे व्यक्ति के लिए इतना चिंतन कल्पना से परे की बात है।

तुमने अपने किसी पत्र मे शिव या ऐसे ही किसी विषय के सबध मे मुझसे प्रश्न किया था। सच तो यह है कि, शिव, काली और कृष्ण के प्रति अपने प्रेम के कारण मैं एक विभक्त व्यक्तित्व हू। यद्यपि मूलत· ये तीनों एक ही हैं, किंतु व्यक्ति का एक की अपेक्षा दूसरा प्रतीक अधिक प्रिय हो सकता है। मेरे स्वय के अनुभव के आधार पर मेरी मनोदशा परिवर्तित होती रहती है और वर्तमान मनोदशा के अनुसार में शिव, काली और कृष्ण तीनो रूपों में से किसी एक का चुनाव करता हू। इन तीनों में स फिर शिव और शक्ति का सघर्ष है। शिव एक योगी होने के कारण मुझे आकर्षित करते हैं तो काली मा होने के नाते मुझे सम्मोहित करती है। तुम तो जानते ही हो कि पिछले दिनो

---

* मूल बगला से अनूदित

(अर्थात पिछले चार-पाच वर्ष से) से मैं मत्र शक्ति में आस्था रखने लगा हू। अब मेरा विश्वास है कि कुछ मत्रों मे अतर्निहित शक्ति होती है, इससे पहले मेरी दृष्टि तार्किक थी और मैं मानता था कि मत्र केवल प्रतीक मात्र हैं जो ध्यान मे सहायक होते हैं। किंतु तत्रशास्त्र पढने के बाद मुझे विश्वास हुआ कि कुछ मंत्रों मे शक्ति अंतर्निहित होती है और कुछ विशिष्ट मत्रों के अनुरूप ही मानसिक सरचना भी होती है। तभी से मैं इस खोज में हू कि मेरी मानसिक सरचना किस मंत्र के योग्य है और मैं किस मत्र को सही रूप में अपना सकता हू। किंतु अभी तक मैं इसमें असफल रहा हू क्योंकि मेरी मानसिकता परिवर्तित होती रहती है और मैं कभी शैव, कभी शाक्त और कभी वैष्णव बन जाता हू। मेरे विचार में ऐसी दशा मे ही हमें गुरु की आवश्यकता रहती है क्योकि सच्चा गुरु हमसे अधिक हमें पहचानता है। वही हमें तत्काल बता सकता है कि हमें किस मत्र को अपनाना चाहिए और पूजा की किस विधि का अनुपालन करना चाहिए।

अब पुन: इहलोक मे वापिस आता हू। कल मैं वेनिस पहुंच जाऊगा वहा से विएना के लिए प्रस्थान करूगा जहा चिकित्सकों से परामर्श करूगा। उसके पश्चात शायद किसी सैनिटोरियम में जाऊगा।

सईद बदरगाह तक की यात्रा बहुत सुखद रही क्योंकि समुद्र बिल्कुल शांत था। सईद बदरगाह के पार करते ही खराब मौसम से सामना हुआ। मेरी परेशानिया (पेट दर्द आदि) अभी भी ज्यों की त्यों बनी हैं फिर भी पहले की अपेक्षा बेहतर अनुभव कर रहा हू। सईद बदरगाह तक पहुचने से पहले तो मैं निश्चित रूप मे ही बेहतर अनुभव कर रहा था, किंतु मध्यसागर के खराब मौसम ने मुझे काफी कष्ट पहुंचाया।

मैं यहीं समाप्त करता हूं क्योंकि लहरों के कारण डगमगाते जहाज मे लिख पाना काफी कठिन हो रहा है।

प्रेम सहित,

तुम्हारा अपना
सुभाष

कातिलाल पारीख को,

होटल रायल डैनियली
वेनेजिया

7 मार्च, 1933

मेरे प्रिय कातिलाल,

मैं कल दोपहर यहा पहुच गया था। जहाज़ से एक मोटरबोट मे हम यहा होटल में पहुचे। जेटी में मुझे मेरा भतीजा (शरत बाबू का पुत्र) मिला जो पिछले डेढ वर्ष से

म्यूनिख में अध्ययन कर रहा है।

कल से ही मौसम धुंधला और बरसाती बना हुआ है और अभी तक हम इटली का सूर्यास्त नहीं देख पाए हैं। इस बार मैं वेनिस और यहां की कला देख नहीं पाऊंगा और यह सब मुझे स्वास्थ्य लाभ होने तक स्थगित ही रखना पड़ेगा।

तुम्हारा 27 फरवरी का पत्र मुझे आज प्रातः मिला।

जैसा कि आप जानते ही हैं कि वेनिस, नहरों का शहर है। नहरें ही यहां यातायात का मार्ग हैं और 'नाव' तथा 'गोन्डोलाज़' यहां के वाहन और घोड़ागाड़ियां हैं।

तुम्हारे 27 तारीख के पत्र में, जो मुझे आज ही प्राप्त हुआ, आपने श्री अरविंद घोष के लिए कोई फूल आदि नहीं भेजा। न ही कोई प्रेस कटिंग (फ्री प्रेस या अन्य अखबारों से) ही भेजी। मैं भारतीय पत्रों में अत्यधिक रुचि रखता हूं। अखबारों की कटिंग्स आप एयरमेल से भिजवा सकते हो, किंतु कुछ मुख्य भारतीय पत्रों को मानार्थ प्रति मैं लगातार देखना चाहूंगा। कृपया मुझे इस पते पर लिखिए-द्वारा-द अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, 14-कैरटनेरिंग, वियेना।

कल मुझे इटली के समाचार-पत्रों के कुछ प्रतिनिधियों को साक्षात्कार देना है। मैं शीघ्र ही आपको इटली के कुछ अखबार भेजूंगा। कृपया उनको अंग्रेज़ी में अनुवाद कर भारतीय पत्रों में छपवाने का प्रयास करना। बंबई में इटली के कस्यूलेट और लॉयड ट्रियेस्टिनो के एजेंट इस में प्रसन्नतापूर्वक आप को सहायता करेंगे।

इटली सरकार के आदेशानुसार लॉयड ट्रियेस्टिनों के एजेंट्स ने वेनिस मे मेरे जहाज से उतरने पर कुछ विशेष व्यवस्थाएं की हैं। जहाज़ में भी उन्होंने मेरा विशेष ध्यान रखा जिसके लिए मैं उनका बहुत आभारी हूं।

आपके पत्रों को प्राप्त करने के पश्चात मैं आपको केबल करने की सोच रहा था किंतु फिर मैंने सोचा कि मुझे आपका टेलिग्राफिक पता मिलने तक इंतजार करना चाहिए। इस बीच मैं आपको एयरमेल अथवा साधारण डाक द्वारा पत्र लिखता रहूंगा।

यात्रा प्रारंभ होने से लेकर आज तक मैंने एसोसिएटेड प्रेस और फ्री प्रेस को कुछ संदेश भेजे हैं। 24, 25, 27 फरवरी और 2 मार्च तथा 6 मार्च को मैंने रेडियो एवं केबल से कुछ संदेश भेजे थे। फ्री प्रेस को मैंने 23 फरवरी और 6 मार्च को संदेश भेजे। कृपया पता करें कि उनका उपयोग हुआ और वे प्रकाशित हुए या नहीं।

पोर्ट सईद में रायटर के प्रतिनिधि ने मेरा साक्षात्कार लिया। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं मिस्र जाऊंगा। यदि नहीं तो मेरा रास्ता और लक्ष्य कहां जाने का है। अभी तक किसी अन्य स्थान पर रायटर के प्रतिनिधि ने मुझसे कोई मुलाकात नहीं की। इससे तुम स्वयं अंदाज लगा सकते हो। कृपया इसी संदर्भ में भविष्य के लिए मेरा मार्गदर्शन करो।

धन के मामले में, मुझे विश्वास है कि आप पूरा प्रयत्न करोगे।

कृपया जगमोहन को बता दें कि आपके पत्र के साथ उनका पत्र पा मुझे हार्दिक

प्रसन्नता हुई। मुझे आशा है कि अलग से उन्हें पत्र न लिख पाने के लिए वे बुरा नहीं मानेंगे।

कृपया मुझे निरंतर पत्र लिखते रहें। मेरा विश्वास है कि जब तक डाक्टर मेरे परीक्षण एवं निदान के लिए यहां रखना चाहेंगे तब तक मैं यहीं रहूंगा, उनके कहने पर ही मैं सैनिटोरियम जाऊंगा।

आशा है वहां सब ठीक-ठाक होगा।

आपका अपना
सुभाष

कांतिलाल पारीख को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
14, कैरंटनेरिंग
वियेना-1

8 मार्च, 1933

प्रिय कांतिलाल,

तुम्हारा 27.2.33 का पत्र वेनिस में मिला था। मैंने वेनिस से ही साधारण डाक द्वारा पत्र का उत्तर दे दिया था। यह पत्र मैं एयरमेल से भेज रहा हूं।

मैंने 24, 25 और 27 फरवरी तथा 2 मार्च को एसोसिएटेड प्रेस को केबल पर संदेश भेजे थे। मैं यह जानने को उत्सुक हूं कि उन्होंने उनका क्या किया।

मैं तुम्हारे टेलिग्राफिक पते के इंतजार में हूं, सईद बंदरगाह पर रायटर का प्रतिनिधि मेरे लक्ष्य स्थान और मार्ग के बारे में पूछताछ करने आया था। अन्य किसी भी स्थान पर रायटर ने मेरे बारे में कोई पूछताछ नहीं की। 6 तारीख को वेनिस में मुझसे इटली के पत्रकारों ने संपर्क किया था। कृपया मुझे बताएं कि मुझे भविष्य में भारतीय प्रेस से क्या व्यवहार करना चाहिए। यदि संभव हो तो मुझे इस प्रकार लिखें।

बोस, द्वारा ट्रैवामैक्स
वियेना,

शेष अगले पत्र में,

तुम्हारा अपना
सुभाष

कांतिलाल पारीख को,

लायॅड ट्रीस्टीनो
द्वारा द अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
14-कैरटनेरिंग
वियेना-1

15 मार्च, 1933

प्रिय कांतिलाल,

तुम्हारा 27 फ़रवरी का पत्र मिलने के बाद मैंने वियेना से तुम्हें एयरमेल द्वारा और वेनिस से 7 तारीख को साधारण डाक द्वारा पत्र भेजा था।

11 फरवरी को मुझे होटल से हटाकर शहर के फ्यूरेथ सैनिटोरियम मे भेज दिया गया। अब मेरी गहन एक्सरे और चिकित्सकीय प्रयोगशाला जाच हो रही है। जांच पूरी होने पर मैं तीन या चार विशेषज्ञों की राय लूंगा और सैनिटेरियम शायद स्विटज़रलैंड के सैनिटेरियम में दाखिल होना चाहूंगा।

पता नहीं तुम कुछ पैसा एकत्र कर पाए या नहीं। यदि धन एकत्र हुआ तो कृपया इस पत्र के मिलते ही केबल से मुझे कुछ धन शीघ्र ही भेज दो। यहा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी का टैलिग्राफ़िक पता इस प्रकार है-ट्रैवामैक्स, वियेना। यहां विशेष रूप से सैनिटेरियम मे रहने का खर्च जितना मैंने सोचा था, उससे बहुत अधिक है। मैं यह पत्र एयरमेल से भेज रहा हू, ताकि तुम्हें शीघ्र मिल सके।

मैं तुम्हारी राय जानना चाहता हूं कि मुझे फ्री प्रेस अथवा एसोसिएटेड प्रेस में से किसे अपने समाचार भेजने चाहिए। कृपया मुझे अपना टैलिग्राफिक पता तत्काल भेजो।

अभी तक मैंने तुम्हें कोई केबल नहीं भेजा है क्योंकि लंबे पते पर खर्च अधिक आएगा।

तुमने अपने पत्र में लिखा है कि समाचार-पत्रों की कटिंग्स भेज रहे हो किंतु मुझे आज तक कोई कटिंग नहीं मिली है न ही मुझे श्री अरबिंदो घोष की ओर से फूल आदि ही प्राप्त हुए हैं।

जैसा कि मैं अपने पहले पत्र में भी लिख चुका हूं कि सईद बंदरगाह के अतिरिक्त रायटर ने मेरे बारे में और कहीं कैसी भी पूछताछ नहीं की। मैं फ्री प्रेस और एसोसिएटेड प्रेस दोनों को ही अपने संदेश भेज चुका हूं और यह जानने को उत्सुक हू कि उन्होंने उनका क्या उपयोग किया। 23 फरवरी को 6 मार्च (वेनिस से) और 8 मार्च को (वियेना से) मैंने फ्री प्रेस को केबल किया था। 24, 25 और 27 फ़रवरी तथा 2 मार्च को मैंने एसोसिएटेड प्रेस को भी केबल किया था।

यदि तुम कुछ धन एकत्र कर पाए हो तो कृपया केबल द्वारा शीघ्र ही भिजवा दो।

सभी को मेरा प्यार,

तुम्हारा अपना
सुभाष

कांतिलाल पारीख को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
14, कैरटेनेरिंग
विएना-1

30.3.33

प्रिय कांतिलाल,

21 तारीख का तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। मुझे 22, 23 और 24 तारीख के फ्री प्रेस जर्नल प्राप्त हुए हैं। कृपया देखो कि मुझे लगातार अखबार और सन्दर्भ सामग्री प्राप्त होती रहे।

पैसे के बारे में तुमने क्या किया? यदि कुछ एकत्र कर पाए हो तो कृपया अमेरिकन एक्सप्रेस में केबल के ज़रिए शीघ्र भिजवा दो। यदि ऐसा कर पाना सभव न हो तो बिना किसी झिझक के मुझे साफ़-साफ़ लिखो। ऐसे मामलों में किसी प्रकार की हिचकिचाहट उचित नहीं है। कृपया मुझे अनिश्चय की स्थिति में न रखो, बल्कि मुझे ठीक-ठीक सूचित करो कि क्या मैं तुमसे कोई अपेक्षा करूं या नहीं ।

जैसे ही तुम स्वस्थ हो जाओ, श्री हैरीमन से मिलो और परिणाम स मुझे भी सूचित करो।

कृपया बंबई एसोसिएट प्रेस के श्री निखिल सेन से कहो कि वे मेरे पत्रों का उत्तर शीघ्र दे। मैं यूरोप में रायटर के प्रतिनिधियों की जानकारी तुमसे चाहता हू। कोशिश करो कि प्रत्येक डाक से तुम पत्र-प्रेषक चन्द पक्तियां ही, लिख सको।

सभी को स्नेह

तुम्हारा
सुभाष

सत्येद्र नाथ मजूमदार को *

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
14 केरटनेरिंग
विएना
28 4 33

प्रिय मित्र,

समय-समय पर तुम्हारे पत्र मिले। उत्तर नही दे पाया इसके लिए क्षमा प्रार्थी हू। मैं बहुत कुछ कहना और लिखना चाहता हू, किंतु शारीरिक क्षमता इसकी इजाजत नही दे रही, वैसे भी कुछ कहने का समय नही आया है। यदि मैं अभी कहना शुरू करू तो क्या तुम ध्यान दे पाओगे?

मेरे जीवन का एक अध्याय समाप्त हो चुका है। दूसरे की शुरुआत करने की कोशिश मे हू, और अब पूरी तरह इस कार्य मे व्यस्त हू । आज मैं समुद्र पार विदेशी भूमि विएना मे रह रहा हू किंतु मेरा तन-मन सब तुम्हारे साथ है। हर क्षण एक ही विचार, एक ही प्रयत्न, एक ही साधना मे लगा हू कि किस प्रकार, किस शक्ति के स्फुरण से, किस विधि से यह अधजाग्रत देश आत्मनिर्भर और विजयी हो पाएगा।

हमारे राष्ट्रीय इतिहास का भी पुराना अध्याय समाप्त हो चुका है। सन् 1920 मे प्रारभ हुआ अध्याय समाप्त हो गया है। सत्येन बाबू, मुझ पर विश्वास करे, पुराना समय वापिस नही लौटेगा। आज एक नई विधि, एक नए सदेश और नई शक्ति को महसूस करने की आवश्यकता है। जिस शक्ति, जिस सदेश की कामना हम उनके लिए करते हैं, उसकी खोज हमें अपनी आत्मा मे करनी होगी।

जब सन् 1921 मे मैंने अपनी आत्मशक्ति के आधार पर सभी सम्मानजनक पदो का त्याग किया था, उसी दिन मैंने अपने जीवन के पुराने अध्याय को भी समाप्त मान लिया था, तब एक मित्र ने मेरे इस व्यवहार पर शका व्यक्त करते हुए टिप्पणी की थी- "अरे! यह तो राजनैतिक दाव है।"

मैंने दुखी होकर उत्तर दिया था-"भविष्य ही बताएगा।" लोग कुछ भी कहे लेकिन मैं जानता हू कि समाप्त हुआ अध्याय पुन: नही लौटेगा।

आज जो मैंने कदम उठाया है, वहा मैं बिल्कुल अकेला और मित्रविहीन हू। अपने चारों ओर दृष्टिपात करने पर पाता हू कि मैं एकात के रेगिस्तान से घिरा हू। मैं उस लबे मार्ग पर चल पडा हू, जिस पर अकेला यात्री यह गीत गाता चलता है-'यदि कोई तुम्हारी पुकार न भी सुने तो भी अकेले चलते रहो।'

लेकिन यह अकेलापन अधिक समय तक टिकने वाला नहीं। जीवन में समृद्धि और पूर्णता पाने के लिए सब कुछ त्याग कर अकेला होना ही पडता है। इसी कारण व्यक्ति को अकेलापन महसूस होता है। यदि तुम व्यक्ति निर्माण करना चाहते हो, लौह से भी

---

* मूल बगला से अनूदित

शक्तिशाली सगठन बनाना चाहते हो तो ऐसी स्थिति मे यह अति आवश्यक है कि तुम नितात एकाकीपन से शुरुआत करो। जहा दाल-रोटी का सघर्ष हो या निजी स्वार्थों का द्वद्व हो, जहा मानवीयता और दृढ चरित्र का अभाव है वहा विशुद्ध रूप मे कुछ प्राप्त नही किया जा सकता और वह स्थाई भी नही होता। क्रॉमवेल की विजय का राज यही था कि उसने लौह सेना का निर्माण किया था। हमारी लौह सेना कहा है? अभी हम स्वराज्य प्राप्त नही कर पाए हैं, क्योकि हमारे देश में वे व्यक्तित्व कहा है जिन्हे हम वास्तविक व्यक्ति कह सकें, अभी हम उनका निर्माण नहीं कर पाए हैं, अभी हमारे पास शक्तिशाली सेना नही है। जिस शक्ति का अभाव है वह हमे पैदा करनी होगी तभी हम विजयी हो पाएगे अन्यथा नही। इसीलिए आज से मैंने नई खोज प्रारभ कर दी है। क्या कोई मेरे साथ आएगा? यदि वे आएगे तो मुझे भय है कि, हर कदम पर खतरों और रुकावटो का सामना करना होगा। प्रत्येक चीज का परित्याग कर, व्यक्ति को एकाकी निकल पडना होगा और वह भी किसी ससाधन के बिना यहा किसी पुरस्कार या उपहार मिलने की आशा नही है। यहा मैं गैरीबाल्डी के शब्दो का उद्धरण देने का लोभ सवरण नही कर पा रहा हू। उसने कहा था। 'मैं तुम्हें भूख, प्यास, अभाव, प्रयाण और मृत्यु दूगा' जिसे ये सब बातें मंजूर हो वही साथ चल सकता है। ऐसे सहयात्री को या तो मृत्यु प्राप्त होगी या फिर स्वतत्रता और अमरत्व प्राप्त होगा। बगाल की राजनीति दूषित है। अनत त्याग एक बार फिर बगाल के वातावरण को स्पष्ट और साफ कर देगा। कार्य दुष्कर अवश्य है किंतु असभव नही। मुझ पर विश्वास रखें, दो वर्ष के भीतर ही बगाल मे अद्‌भुत परिवर्तन आएगा। वर्तमान में चल रहे निजी स्वार्थों के झगडे अधिक समय तक बगाल की वायु को प्रदूषित नही कर पाएगे। आनेवाली भोर की तैयारिया क्यो न अभी से शुरू कर दी जाए। यह मेरी सच्ची प्रार्थना और इच्छा है।

आशा है तुम सब लोग पूर्ण स्वस्थ हो। हृदय से प्रेम युक्त।

तुम्हारा अपना
सुभाष चद्र बोस

सतोष कुमार बासु, मेयर कलकत्ता को,

11 मई, 1933

महोदय,

विएना के लार्ड मेयर (बर्गरमिस्टर) ने कल 10 मई को मुझे राथूस (म्युनिसिपल कार्यालय) में आमत्रित किया था। आपका पत्र उन्हें दे दिया गया था। मैंने स्वय भी उन्हे तथा म्युनिसिपल कार्पोरेशन को कलकत्ता के मेयर एव म्युनिसिपल कार्पोरेशन की ओर से शुभकामनाए दे दी थी। निजी रूप से भी विएना की म्युनिसिपल एडमिनिस्ट्रेशन की तथा समाजवादी

सत्ता के अधीन हुई प्रगति की प्रशसा की।

लार्ड मेयर ने धन्यवाद दिया और कलकत्ता के मेयर तथा म्युनिसिपल कार्पोरेशन को हार्दिक शुभकामनाए दीं। वे मुझसे कांग्रेस के कार्पोरेशन में आने के बाद वर्ष 1924 से लेकर आज तक हुई कलकत्ता की प्रगति के बारे में जानने को बहुत उत्सुक थे।

मैंने लार्ड मेयर को कलकत्ता म्युनिसिपल गजट (वार्षिक अंक और हाल ही मे प्रकाशित स्वास्थ्य अक) की दो प्रतिया भेंट की और उन्होंने अत्यधिक प्रसन्नता जाहिर की। मैंने उन्हे बताया कि मैं विएना के म्युनिसिपल प्रशासन का अध्ययन करना चाहता हूं। उन्होंने मुझे भरसक सहायता देने का आश्वासन दिया। उन्होंने मेरे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की और इस बात पर अपना सतोष व्यक्त किया कि मैं अच्छे चिकित्सकों से परामर्श ले रहा हू।

मेयर साहब, आप जानते ही हैं कि विएना म्युनिसिपैलिटी का प्रशासन पिछले बारह वर्ष से समाजवादी पार्टी के अधीन है। इन वर्षों में उन्होंने आवास, शिक्षा, चिकित्सा और सामाजिक भलाई जैसे सामान्य कार्यों में पर्याप्त प्रगति की है। इस दौरान उन्होने लगभग दो लाख लोगों को आवास सुविधा उपलब्ध कराई है और वह भी बिना धन उधार लिए। यही उनकी सबसे बडी उपलब्धि भी है। यह सब धन मनोरजन एव ऐश्वर्य के सामान पर लगे कर से प्राप्त किया गया।

कुछ आस्ट्रियाई मित्र, जो म्युनिसिपैलिटी से सबद्ध थे, मुझे म्युनिसिपैलिटी द्वारा बनाए गए आवास और वे सस्थाए, जो बच्चों की भलाई और शिक्षा के लिए बनाई गई हैं, दिखाने भी ले गए। जो कुछ मैंने देखा, उससे मैं काफी प्रभावित हुआ। मेरी इच्छा है कि ऐसा ही प्रयास कलकत्ता म्युनिसिपल द्वारा भी किया जाना चाहिए।

मैंने विएना के बर्गरमिस्टर सीट्ज को आपके कार्यों का लेखा-जोखा भी दिया, जो कि वास्तव में एक समाजवादी कार्य ही है। रूस के अलावा विएना म्युनिसिपल, पूरे यूरोप मे, अत्यधिक महत्वपूर्ण समाजवादी म्युनिसपैलिटी है। यदि कलकत्ता कार्पोरेशन चाहे और उसे प्रकाशित करने का इच्छुक हो तो मैं विएना पर (भारतीय दृष्टि से) एक पुस्तक, जो कुछ मैंने यहा देखा और सीखा, लिखना चाहूगा। विएना पर तो मैं एक पुस्तक लिखूगा ही, लेकिन म्युनिसिपल काउंसलर्स और कार्यकर्ताओं के लिए यह पुस्तक अधिक विस्तार मे होनी चाहिए। अत: मैं आपका अति आभारी होऊंगा यदि आप मुझे सूचित कर सकें कि कार्पोरेशन मुझे इस कार्य को करने की अनुमति देता है। यदि आवश्यक हो तो आप यह पत्र कार्पोरेशन के सम्मुख रख सकते हैं।

मेयर साहब, आपको तथा कार्पोरेशन को मेरी हार्दिक शुभकामनाए और धन्यवाद।

भवदीय
सुभाष चद्र बोस

जेटी सुदरलैंड को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
14-कैरटनेरिंग
विएना (आस्ट्रिया)

18 मई, 1933

प्रिय महोदय सुदरलैंड,

आपका पत्र पाकर मुझे अतीव प्रसन्नता और गर्व का अनुभव हुआ है। मैं क्षमा चाहता हू कि मैं तत्काल आपको पत्रोत्तर नही दे सका। मुझे आशा है कि मेरे स्वास्थ्य को देखते हुए आप मुझे क्षमा करेंगे।

आपकी हस्ताक्षरित पुस्तक मेरे लिए एक और सुखद आश्चर्य थी। जब से वह मुझे मिली है तभी से उसको लेकर मेरे मित्रों में छीना-झपटी चल रही है। जैसा कि आप जानते ही हैं कि यह पुस्तक भारत में उपलब्ध नही है, क्योकि भारतीय सरकार ने उस पर रोक लगा दी है।

अतः यह पुस्तक एक खजाने के रूप मे है।

श्री वीजे पटेल आजकल विएना के ही एक सैनिटोरियम मे हैं और हम लोग प्रायः मिलते रहते हैं। आपने सुना होगा कि अमरीका से लौटने के बाद उनका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब हो गया था। चिकित्सको की राय है कि उन्होने वहा क्षमता से अधिक कार्य किया। फिर भी जिस दशा में वे यहां आए थे उसमे अब बहुत बेहतर हैं और ऐसी आशा है कि आराम और उपचार के परिणामस्वरूप वे पुनः पहले जैसे स्वस्थ हो जाएगे। श्री पटेल ने अमरीका के अपने अनुभव मुझे बताए।

आपके पत्रो में जो मेरे प्रति आपकी सदाशयता व्यक्त हुई है उससे मुझे जो प्रसन्नता मिली मैं उसका वर्णन नही कर सकता। आपने पत्राचार प्रारंभ किया है और मुझे आशा है भविष्य में भी इसे कायम रखेंगे।

मैं आपकी पुस्तक को खजाने को भाति सभाले हू। एक बार पुनः आपको धन्यवाद देता हू।

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च : पहले की अपेक्षा मैं काफ़ी बेहतर अनुभव कर रहा हू, यद्यपि प्रगति बहुत धीमी गति से हो रही है।

सु. च. बो

श्री संतोष कुमार बासु, मेयर, कलकत्ता को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
14, कैरटनेरिंग
विएना-1

23 मई, 1933

सेवा मे,

मेयर साहब,
कार्पोरेशन ऑफ कलकत्ता

प्रिय महोदय,

पिछले सप्ताह आपको लिखे अपने पत्र में मैंने विएना नगरपालिका पर भारतीय दृष्टि से एक पुस्तक लिखने की इच्छा व्यक्त की थी। मैंने यह भी सुझाव दिया था कि कलकत्ता निगम उसे प्रकाशित करने का कार्य कर सकता है। यदि यह सभव हो तो, मैं उस पुस्तक को और अधिक विस्तृत आकार देने का प्रयत्न करूगा।

क्योंकि विएना के मेयर ने मुझे राथॉस में (टाउनहॉल) मिलने के लिए आमंत्रित किया था, इसलिए मुझे पिछले बारह वर्ष में नगरपालिका द्वारा निर्मित कुछ भवनों को देखने का अवसर मिला। अभी तक मैं नगरपालिका द्वारा बनाए गए कुछ मकानों को ही देख पाया हू। उनकी योजना में अद्‌भुत वैविध्य है। एक ओर शहर के मध्य मे बडे-बडे मकान हैं जिसमे लबे चौड़े अपार्टमेंट्स हैं और दूसरी ओर छोटे-छोटे कुटीर हैं सब सुविधाओं से युक्त जिनके साथ बगीचे जुड़े हैं जिन्हें गार्डनसिटी के अनुरूप बनाया गया है। इन दोनो प्रकार के अलग-अलग आवासों के बीच शिल्पकारों ने मिले-जुले मकान बनाने का प्रयोग किया है।

मुझे किंडरगार्टेन आवासों को भी देखने का अवसर मिला, जहा, निर्धनों के बच्चे, या उन लोगों के बच्चे जो दिन में कार्य पर जाते हैं, की देखभाल और शिक्षा का प्रबध है। निर्धनों के बच्चों को वे सुविधाए देने का प्रबध है कि उसे देख धनवानो को भी ईर्ष्या हो जाए।

लोगों के लिए तैरने की सस्थाओं को देखने का अवसर भी मिला जिन्हें युद्ध के बाद बनाया गया है। ऐसे जनसाधारण के लिए निगम द्वारा बनाए गए स्नानागारों के कारण विएना के लोगों को सूर्य की रोशनी में नहाने की सुविधा मिली और परिणामस्वरूप तपेदिक के रोग में आश्चर्यजनक रूप से गिरावट आई। स्नानागारों में नहाने की सुविधा इतनी अच्छी है कि हज़ारों लोग बिना किसी हिचक और असुविधा के प्रतिदिन स्नान कर सकते हैं। निरतर पानी फिल्टर होता रहता है जिसकी वजह से स्विमिंग का पानी पूरी तरह स्वच्छ और साफ़ रहता है बच्चों के लिए बिल्कुल अलग स्नानागार बनाए गए हैं।

इस सप्ताह मैं बडे-बड़े विजली और गैस के सस्थान देखन जाऊगा। ये संस्थान नगरपालिका के अधीन ही हैं। जहा तक मेरा स्वास्थ्य साथ देगा, मेरी कोशिश रहेगी कि मैं ऐसे प्रत्येक विभाग को देखू , जिस क्षेत्र में हम अभी पिछडे हुए हैं। मैं जिस भी सस्था को देखना चाहता हू उसमे नगरपालिका मुझे पूरी सुविधा उपलब्ध करा रही है इसके लिए मैं उनका आभारी हू।

अत में मैं वित्त विभाग की चर्चा करना चाहूगा जिसके सक्षम कार्य द्वारा ही पिछले 12 वर्ष मे इतनी अद्‌भुत सफलता इन्हें प्राप्त हुई है। मेयर साहब, आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि सभी नए कार्य इन्होंने करों से प्राप्त राशि द्वारा किए हैं अत: किसी प्रकार का उधार नही लिया। इसके लिए इन्होने मनोरजन एव ऐश्वर्य के साधनो पर कर लगाए ताकि धनी वर्ग से पैसे लेकर निर्धनो पर व्यय हो सकें ताकि पहल की अपेक्षा उनकी अधिक देखभाल सभव हो सके।

मेयर साहब, जैसा कि आप जानते ही हैं कि विएना समाजवादी नगरपालिका का व्यावहारिक उदाहरण है और इस दृष्टि से इसका यूरोप मे अलग स्थान है।

मेरे विचार में कलकत्ता के प्रथम मेयर का कार्यक्रम भी समाजवादी कार्यक्रम है फिर भी इस बात मे कोई दो राय नही कि विएना की नगरपालिका से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

मेयर साहब। यदि आप मेरे कार्य को निगम के सम्मुख रख सकें और उनके निर्णय से मुझे सूचित कर सके तो मैं आपका बहुत आभारी रहूगा।

धन्यवाद,

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चद्र बोस

एल्फेड टायरनौर को,

होटल डि फ्रास
27 मई, 1933

प्रिय श्री टायरनौर,

पत्र के साथ कुछ समाचार हैं जिनमे शायद आपकी रुचि हो। यदि आप इन समाचारो का जहा तक संभव हो, विस्तृत प्रचार कर सके तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। यदि आप इन्हें आस्ट्रियन एजेंसी को दे सकें तो अच्छा रहेगा क्योंकि इसस यह विएना के पत्रों में स्थान पा सकेगे। इसके अतिरिक्त आप इन्हें इटली, फ्रास और जर्मनी के समाचार पत्रों मे भेजने का प्रयास भी कर सकते हैं। अमरीका के पत्रों को भी भेजे जा सकते हैं।

यदि वहां इसका विस्तृत प्रचार हो सका तो मुझे विश्वास है कि उन्हे मुझे इग्लैंड के लिए पासपोर्ट देने पर विवश होना पडेगा। अतः कृपया मेरे लिए इतना कष्ट अवश्य करे।

धन्यवाद,

शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को

होटलडी फ्रास, विएना
28 मई, 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

मेरे एक मित्र भारत से कुछ आम लाए हैं। क्या मैं उनमें से कुछ आम डा वैटर और आपके लिए भिजवा सकता हू। मैं चाहता हू कि काश मेरे पास कुछ और होते ताकि मैं अधिक से अधिक आप तक भेज पाता।

जैसा कि आप जानती ही हैं कि, आम एक भारतीय फल है और अच्छे फलो में से एक है। मुझे आशा है कि यह बहुत मीठी किस्म का आम है।

डा. वैटर और आपको शुभकामनाओं सहित

शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को

होटल डी फ्रास
31 मई 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

आज शाम के भाषण की एक प्रति भिजवा रहा हूं। यद्यपि मैं भाषण पढूंगा नही बल्कि सीधे भाषण दूगा ही। किंतु सलग्न प्रति से आपको यह पत्ता लग जाएगा कि मैं क्या बोलूगा। अतः आप को उसे तत्काल जर्मन भाषा में अनुवाद करने मे सुविधा रहेगी।

धन्यवाद,

शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सतोष कुमार बासु, मेयर कलकत्ता को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
14-कैरटनेरिंग
विएना-(आस्ट्रिया)
18 जून, 1933

सेवा में,
मेयर साहब
कलकत्ता नगर निगम,

महोदय,

आपको दूसरा पत्र लिखने के पश्चात मैंने विएना की कुछ अन्य निगम सस्थाओं को देखा है। विएना के मेयर ने मेरी सुविधा के लिए एक अंग्रेजी बोलने वाला व्यक्ति और कार मुझे उपलब्ध करवा दी। पिछले पंद्रह दिनों में मैं बिजली विभाग, गैस विभाग और जल विभाग देखने गया। सभी विभागों के प्रमुख बहुत सदाशय थे और उन्होंने ऐसी कोई भी सूचना, जो कलकत्ता के लिए उपयोगी हो, उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। अगले सप्ताह मैं जल-मल-व्ययन सस्थान तथा सडक निर्माण व सडकों को साफ़ रखने की व्यवस्था का अध्ययन करुगा जिनकी व्यवस्था नगर निगम करता है । मेरी इच्छा है कि यहा जो कुछ मैं देख और अनुभव कर रहा हू उसका उपयोग हमें भी करना चाहिए।

मेयर साहब, आप जानते ही होंगे कि बिजली, गैस, ट्राम आदि जैसे सभी जनोपयोगी विभाग विएना नगर निगम के अधीन हैं। यूरोप में अन्य किसी भी स्थान की अपेक्षा बिजली और गैस यहा सस्ती है।

पिछले बारह वर्षों में निगम ने लगभग 2 लाख लोगों को आवास की सुविधा उपलब्ध कराई है वह भी बिना धन उधार लिए, केवल मनोरजन और ऐश्वर्य के साधनों पर कर लगाकर राशि एकत्र की है। मुझे इसमें शका नहीं कि निगम भी कलकत्ता के निवासियो को सस्ती गैस और बिजली उपलब्ध कराने की आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति करती रहेगी। इन जैसी अन्य समस्याओं के समाधान खोजने के लिए हम विएना निगम के कार्यों व अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

मेयर साहब को अनेकानेक शुभकामनाओं सहित!

आपका
सुभाष चद्र बोस

बिभावती बोस को *

विएना
21 6 33

प्रिय मेजोबोवदीदी,

एक लबे अरसे से आपको पत्र नहीं लिख पाया, इससे आप अवश्य नाराज होगी। बहरहाल। मैं क्षमा प्रार्थी हूं। जब पत्र लिखने का समय मिलता है तो आलस्य घेर लेता है, जिसके परिणामस्वरूप मैं पत्र नही लिख पाता। इसी प्रकार कई सप्ताह बीत गए।

मेरा स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधर रहा है। यद्यपि मेरा वजन तो बहुत अधिक नही बढ पाया है, फिर भी मैं अधिक चिंतित नही हूं, क्योंकि पेट बढाने का कोई लाभ नही। शारीरिक रूप से मैं स्वय को पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली महसूस कर रहा हू। अभी उपचार चल रहा है और खानपान पर बहुत सी बदिशे हैं। सबसे मजेदार बात तो यह है कि कुछ लोग जो मेरी उम्र का अदाजा लगाने का प्रयास करते हैं उनका कहना है कि मेरी उम्र 32 वर्ष से अधिक नहीं। कुछ कहते हैं मैं 28 बर्ष का हू। इसलिए जो मुझे शक होने लगा था कि मैं उम्र से पहले ही बूढा हो रहा हू वह शका समाप्त हो रही है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि मेजदादा का स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। आप कैसी हैं? 'नेरा-नेरी' कैसे हैं? मैंने उन्हे पत्र नही लिखा इस बात से वे नाराज होगे। अशोक से पता चला कि अब वह ठीक है। कृपया मेरा प्रणाम स्वीकार करें।

आपका
सुभाष

नाओमी सी वैटर को

पैलेस होटल
इन्डुरिस्क
प्राग

29 जून 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

मैं विएना से वायुयान द्वारा आज दोपहर यहा पहुचा हू और अभी तक होटल मे ही हू। वायुयान की यात्रा अच्छी नही लगी, क्योंकि हल्का-हल्का सिर चकराने सा लगा। यहा पहुच कर स्वस्थ महसूस कर रहा हू। अभी तक शहर की कोई जगह नहीं देखी है।

* मूल बगला से अनूदित

प्रेज़ीडेंट वैटर व आपको सादर प्रणाम।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

श्री सतोष कुमार बासु, मेयर, कलकत्ता को,

पैलेस होटल
प्राग

9 जुलाई, 1933

प्रिय श्री मेयर साहब

मैं यहा (प्राग) मे एक सप्ताह पहले आया था। यहां पहुंचने पर मैं प्राग के प्राइमेटर (मेयर) डा बाक्सा से उनके कार्यालय टाउनहॉल में मिला। हम दोनो मे लबा वार्तालाप हुआ और उन्होंने कलकत्ता और प्राग के बीच निकट सबंधों पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की।

प्राग के प्राइमेटर ने कलकत्ता के मेयर और वहां के निवासियों के लिए अपने आटोग्राफ, चित्र और शुभाकामनाए भेजी हैं। इस सप्ताह के अंत तक यह सब भिजवा दी जाएगी।

मुझे निगम कार्यालय दिखाया गया, जो प्राचीन और कलात्मक ढग से बना हुआ है। बाद में मैं समाज सुधार सस्थाओ को देखने भी गया जिनमें से सबसे प्रसिद्ध मसारिक होम है जहा अनाथ और बच्चे रहते हैं। जल संस्थान, मल व्ययन सस्थान और गैस सस्थान भी मैंने देखे। बिजली संस्थान को देखने की व्यवस्था भी की गई थी। कितु मैं वहा जा नही पाया। अपने अगले पत्र में मैं उन बातों के बारे में चर्चा करूगा जिन्होंने मुझे काफी प्रभावित किया। मैं आपको बताना चाहूगा कि यहा निगम ने कूडा-करकट खत्म करने के लिए भस्मकारी यत्र का निर्माण किया है इसी की सहायता से बिजली का उत्पादन किया जाएगा। इस कार्य को सकोडा वर्क्स कर रहा है।

प्राइमेटर ने मुझे गाड़ी की सुविधा उपलब्ध करा दी थी और जिन सस्थानों को मैं देखने गया वहां की जानकारी उपलब्ध कराने के लिए अंग्रेज़ी बोलने वाले अधिकारियो की व्यवस्था भी करवा दी थी।

मेयर साहब, प्राग के प्राइमेटर के सदेश के उत्तर में आपके पत्र को पाकर यहा के प्राइमेटर निश्चित रूप से प्रसन्न ही होंगे। यदि निगम, कोई सदस्य या अधिकारी प्राग की निगम सबधी समस्याओं की जानकारी चाहेंगे तो यहा के अधिकारी प्रसन्नतापूर्वक अपना सहयोग देंगे।

प्राग नगर निगम आजकल एक नए किस्म की सडकों (टार-मैकेडम) के निर्माण का कार्य कर रही है जो कि डामर की सड़कों जैसी ही सस्ती और अच्छी होगी। जिस

इजीनियर ने मुझे यह सब दिखाया मैंने उसे बताया कि कलकत्ता निगम भी इस विषय में रुचि लेगा।

मेयर साहब, आपको व निगम को हार्दिक शुभकामनाए।

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

श्री नाओमी सी वैटर को,

होटल ब्रहल
फ्रैड्री न 12
वारसा, (पोलैंड)

10 7 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

उपरोक्त पते से आप अनुमान लगा लेंगी कि मैं कितना घुमक्कड हो गया हू।

प्राग मे मैं अत्यधिक व्यस्त रहा। दिनभर घूमते रहने के बाद, शाम को मैं इतना थक जाता था कि मुझमे इतनी शक्ति भी शेष नही रहती थी कि पत्र भी लिख सकू। शीघ्र पत्र न लिख पाने के लिए कृपया मुझे क्षमा करें।

आपके दोनो पत्र पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। विएना से जब मैंने आप लोगो से विदा ली तो मन काफी दुखी था और आपके तथा श्री वैटर के आभार को व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नही हैं। मानव होने के नाते, हम बहुत भावुक हैं यद्यपि बाहर से मैं बहुत कठोर प्रतीत होता हू। कम से कम मेरे कुछ मित्र तो मुझे ऐसा ही मानते हैं।

इस तथ्य को जानकर कि आपको मेरे देश के प्रति इतनी रुचि है मुझे बेहद प्रसन्नता हुई और मैं आप लोगों के प्रति कृतज्ञ हू। आप तो जानती ही हैं कि मैंने अपने छुद्र जीवन को अपने देश के प्रति समर्पित कर दिया है। परिणामत: जो भी मेरे देश के प्रति रुचि दर्शाता है वही मेरी श्रद्धा का पात्र हो जाता है।

मुझे विश्वास है कि यदि आप निर्णय कर लें तो आप भी भारत के लिए बहुत कुछ कर सकती हैं।

भारत के सबध में पुस्तक लिखने का आपका विचार, यूरोप के पाठकों की दृष्टि से, बहुत अच्छा और उपयोगी है। यदि मेरी सेवाओं की आवश्यकता पडे तो अवश्य कहे।

मैं अभी वारसा पहुचा हू और जब यहा के लोगों और जगहो को देख लूगा तब आपको लिखूगा।

प्राग मे एक विशेष आकर्षण है-विशेषकर पुराने भवनों और मध्ययुगीन व कृतियो

में-किंतु विएना निश्चय ही अद्भुत है। प्राग में मैं बहुत अधिक समय तक रुक नही पाया और मैत्री भी स्थापित नहीं कर पाया। किंतु जिन लोगों से भी मिला वे बहुत सहृदय थे। सरकार ने (विदेश विभाग और वाणिज्य मत्रालय ने) ही व्यवस्था की कि किन-किन स्थानो को मुझे देखना चाहिए। परिणामस्वरूप मुझे अधिक कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा। मैं विदेश मत्री डा. बैनेस से भी मिला और दिलचस्प वार्तालाप हुआ। कुल मिलाकर मेरी यात्रा सफल रही और अब हम चेकोस्लोवाकिया और भारत के बीच सबध स्थापित करने के लिए एक सगठन प्राग में बना सकेंगे।

यहा मेरे आठ दिन रुकने का विचार है। यहां से बर्लिन जाऊंगा जहा एक सप्ताह या 10 दिन रहूगा। बर्लिन के बाद का कार्यक्रम अभी तय नहीं कर पाया हू किंतु जैसे ही कोई निर्णय लूंगा आपको तत्काल सूचित करूगा।

शुभकामनाओं सहित

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को

होटल ब्रुल
वारसा
15.7.1933
शनिवार, रात्रि,

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके कई पत्र मिले, समझ नहीं पा रहा किन शब्दों में धन्यवाद करू। मुझे दुख है कि मैं इतना समय नही निकाल पा रहा कि जो कुछ कहना चाहता हू वह सब लिखते हुए एक लबा पत्र लिख पाऊ। आज रात्रि में मैं केवल यही कह सकता हू कि मुझे प्रसन्नता है कि मैंने विएना में इतने महीने बिताए और बदले में मुझे अपने देश का आप जैसा सच्चा मित्र मिला। मुझे आशा और विश्वास है कि आप सदा भारत के प्रति ऐसी ही रुचि रखेंगी। मैं तो अपने देश का एक अदना-सा प्रतिनिधि मात्र हू। यदि मुझमें कोई खूबी है तो वह मेरे देश की खूबी हैं। मुझमें जो बुराई है वह केवल मेरी अपनी है किसी और की नही।

सोमवार प्रातः (17 जुलाई) मैं बर्लिन के लिए रवाना हो रहा हू और मेरा विचार है वहा कुछ दिन आराम कर पाऊंगा। प्राग और वारसा में तो मैं लगातार भ्रमण करता रहा। आपको बताने में प्रसन्नता अनुभव कर रहा हू कि दोनों स्थानो की मेरी यात्रा एक सफल यात्रा रही।

कृपया, स्पेन के राजदूत से पत्र लेकर आप अपने पास ही रख ले। मैं स्पेन जाने से पूर्व आपसे ले लूगा।

बर्लिन में मेरा पता होगा-द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी। बर्लिन से मैं आपको पुनः लंबा पत्र लिखूंगा । अपने कार्यक्रम निर्धारण में मुझे कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है इसलिए पक्के तौर पर आपको कुछ कह नही सकता। मुझे यह सुनकर बहुत गर्व और आनद हुआ कि यदि मैं विएना लौटू तो आप मुझे वहां मिलेगी। जैसे ही किसी निर्णय पर पहुचूगा आपको तत्काल अपना कार्यक्रम लिखूगा।

प्रेजीडेंट वैटर साहब व आपको मेरी अनंत शुभकामनाए

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बास

नाओमी सी वैटर को,

ग्रैंड होटल एम नी
बर्लिन
22 7 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

मुझे खेद है कि मैं वायदे के अनुसार बर्लिन पहुंचकर आपको लबा पत्र नही लिख पाया।

मेरे विचार में मैंने स्वय को प्राग और वारसा में अत्यधिक थका लिया जिसका प्रभाव मैं अब महसूस कर रहा हूं। अपने आप को पूरी तरह थका हुआ और कुछ-कुछ बुखार का भी अनुभव कर रहा हूं। किंतु आशा है दो-तीन दिन बाद पूर्ण स्वस्थ हो पाऊगा।

अभी तक मैं कुछ विशेष स्थान देख नहीं पाया हूं। इसलिए एक सप्ताह और यहा रुकने का विचार बना रहा हूं। कुछ परिचितों को पत्र लिखने के लिए मैं आपका आभारी हू।

वारसा में जिन मित्रों से आपने मेरा परिचय कराया था उन्होंने मेरे पत्रो के उत्तर नही दिए । शायद गर्मियों की छुट्टियों में वे वारसा से बाहर गए हुए हों। मैं स्वय उनके घर जाकर उनसे व्यक्तिगत रूप में संपर्क नही कर पाया।

सोमवार या मंगलवार को मैं आपको पुनः पत्र लिखूंगा। शेष अगले पत्र म।

डा वैटर और आपको शुभकामनाए।

आपका शुभेच्छु
सुभाष चद्र बोस

नाआमी सी वैटर को

ग्रैंड होटल एम नी

4 8 1933

शुक्रवार

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपने जो खूबसूरत फूल भेजे हैं उनका किन शब्दो मे आभार व्यक्त करू? इतना सुदर और सटीक उपहार आपने मेरे लिए भेजा, जिसके बारे में मैं सोच भी नहीं सकता था। फूल अभी तक बिल्कुल ताजा हैं और वे ताजा रहेगे।

फूलों के सदेश को आप बेहतर समझती हैं। मगलवार से मैं कुछ बेहतर अनुभव कर रहा हू और मैंने कुछ कार्य भी प्रारभ कर दिया है आजकल मैं विभिन्न निगम सस्थाओ को देख रहा हू। मगलवार को मैंने बर्लिन के ओवर बर्गरमिस्टर स साक्षात्कार किया।

बर्लिन के विषय मे आपको अपनी राय बताना अभी जल्दबाजी हागी। किंतु इतना अवश्य कह सकता हू कि प्राग और वारसा दोनो ही स्थानो पर अधिकारियो ने पर्याप्त स्वागत किया और भारत के प्रति रुचि भी दिखाई।

मैं कलकत्ता के मेयर और डिप्टी मेयर के पत्र सलग्न कर रहा हू। दोनो ही मेरे परम मित्र हैं। दोनों को विएना के प्रति रुचि हो गई है। जब आपको सुविधा हो कृपया पत्र मुझे लौटा दें क्योकि मुझे उन्हें उत्तर भेजना होगा।

मुझे पर्वत बहुत पसद हैं और मुझे खेद है कि बंगाल में अधिक पर्वत नहीं हैं। पर्वतों पर जाने के लिए हमें उत्तर की ओर जाना पडता है। अर्थात हिमालय की ओर। किंतु विश्व का प्रसिद्ध बर्फीला स्थान कचनजघा जो 27,000 फीट की ऊचाई पर है हमारे यहा है। आपके दो अगस्त के पत्र, जो मुझे आज ही प्रात: मिला, मैं पर्वतों और फूलो के बारे मे पढकर बहुत प्रसन्नता हुई।

डा वैटर और आपको शुभकामनाए।

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को

होटल ग्राड एम नी
बर्लिन
10.8 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

कलकत्ता यूनिवर्सिटी के डा हरीशचद्र सिन्हा जो मेरे परम मित्र हैं आजकल विएना

में हैं। 13 तारीख की प्रात: वे म्यूनिख कि लिए विएना से रवाना होंगे। यदि वे विएना मे आप से मिल सके तो मुझे बहुत प्रसन्नता और गर्व होगा।

डा सिन्हा इकोनामिक्स के ज्ञाता हैं और कलकता में बैंकिंग और कामर्स पढाते हैं। वे आल इडिया स्टैटिस्टिकल सोसायटी के सचिव भी हैं।

मैं चाहूगा कि डा सिन्हा रायौस का डा. न्यूरथ म्यूजियम भी देखें। उसे देखकर वे प्रसन्न भी होंगे और लाभान्वित भी होंगे। क्या आप ऐसी व्यवस्था कर पाएगी?

मेरा स्वास्थ्य पहले से बेहतर है।

शेष अगले पत्र में।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

बर्लिन
25.8 1933
शुक्रवार, रात्रि

प्रिय श्रीमती वैटर,

मुझे खेद है कि मैं लबे समय से आपको पत्र नहीं लिख पाया।

डा सिन्हा यहा कुछ दिनो के लिए आए थे। मुझे प्रसन्नता है कि आपने वहा उनकी पर्याप्त सहायता की।

रविवार को मैं फ्रैंजेंसबाद के लिए निकलूंगा। कुछ दिन वहां रहूंगा। वहा से मैं ब्लैक फारेस्ट जाना चाहता हू।

कृपया यथाशीघ्र मुझे सूचित करें कि 4 या 5 दिन बाद आप कहा होगी। आपका पत्र मिलने पर ही मैं आपको सूचित करूगा कि फ्रैंजेंसबाद जाते हुए मैं विएना जाऊगा या नहीं।

कृपया निम्न पते पर पत्र लिखें–
विला डा. स्टीसबर्ग
फ्रैंजेंसबाद
सी. एस आर.

डा. वैटर व आपको हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वेटर

फ्रैंजेसबाद सी. एस आर
31.8.1933
बृहस्पतिवार

प्रिय श्रीमती वेटर,

पिछले रविवार को मैं बर्लिन से यहा पहुच गया था। कल (शुक्रवार) मैं श्री पटेल के साथ विएना के लिए रवाना होऊगा, श्री पटेल आजकल यही हैं।

यहा आने से पहले बर्लिन से मैंने आपको पत्र लिखा था। शायद आप विएना से बाहर गई थी तभी आपका उत्तर प्राप्त नही हुआ।

मैं विएना मे कुछ दिन रुकूगा और शायद यही से स्कवर्जवाल्ड या किसी अन्य स्वास्थ्य केंद्र मे जाऊगा। फिलहाल मैं विएना में एक सप्ताह रुकने का विचार रखता हू।

विएना मे मुझसे मिलने के लिए कृपया आप अपना छुट्टियो का कार्यक्रम परिवर्तित न करे। मैं अभी भारत वापिस नही लौट रहा हू। कुछ माह अभी यूरोप मे रहूगा और एक बार विएना अवश्य आऊगा। ऐसी सभावना है कि नवबर के अथवा दिसबर के प्रारभ मे मैं विएना आऊगा।

बर्लिन मे मैं लगभग तीन सप्ताह अस्वस्थ रहा। अब काफी स्वस्थ अनुभव कर रहा हू। आशा है आप भी स्वस्थ होगे। डा वैटर और आपको शुभकामनाए।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बास

नाओमी सी वैटर,

ज्यूरिख
16 9 1933

प्रिय श्रीमती वेटर,

आज प्रात, बहुत सुहावना मौसम है, बादल भी नही हैं, किंतु मौसम ठडा है।

स्विटजरलैंड और आस्ट्रिया के जिस भाग से आज प्रात: मैं गुजरा हू बहुत ही मोहक है। जगह-जगह पर्वत बर्फ से आच्छादित थे।

एक दिन के लिए मैंने यात्रा रोकी। मेरा जिनेवा का पता रहेगा–

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
जिनेवा,
कल साय मैं जिनेवा पहुचूगा।
डा वैटर और आपको मेरा नमस्कार,

सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को

पैशन सर्जी
केमिन कगिंग
जिनेवा
21 9 1933

श्रीमती वैटर,

आपका 18 तारीख का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई।

यहा आने के बाद से मैं बहुत व्यस्त रहा हू। सम्मेलन पूर्णत: सफल रहा। शाम को लोगो की काफी भीड़ थी, मैं भी वक्ताओ में से एक था। लोगो का मानना है कि यह सम्मेलन जिनेवा मे भारत क लिए आयाजित अब तक के सभी सम्मेलनो मे सबसे बडा था।

यहीं आकर पहले से कुछ बेहतर अनुभव कर रहा हू। दो दिन मौसम बिल्कुल साफ था, फिर बादल आए और मोसम बरसाती हुआ।

श्री पटेल बीमार हैं और उन्हे यहीं सैनिटोरियम में जाना हागा।

सम्मेलन मे पारित निर्णय की प्रति भिजवा रहा हू।

अभी यहा कितने दिन रहूगा तय नही कर पाया हू। यदि मौसम साफ रहा तो कुछ दिन और रुकना चाहूंगा।

आप अपनी पुस्तक लिखनी कब प्रारभ करेंगी। डा. वैटर व आपको प्रणाम।

वहा का मौसम कैसा है?

हा, मैं वियना अवश्य आऊंगा।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

इस्टैब्लिशमैंट फिजिक थैरेपिक
डू लमन
ले लिग्नीयर
ग्लैंड (जिनेवा के निकट)

25.9 1933

सोमवार, साय

प्रिय श्रीमती वैटर,

मैं यह पत्र आपको इस सैनिटेरियम से लिख रहा हू जहा आजकल श्री पटेल दाखिल हैं। जब से श्री पटेल ने विएना छोड़ा है, उनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही जा रहा है। आजकल उनकी स्थिति बहुत गभीर है। भगवान ही जानता है कि वे इस हार्टअटैक से उबर पाएंगे या नहीं। हम केवल उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना और प्रार्थना ही कर सकते हैं।

अगले कुछ दिन तक मैं आपको पत्र नहीं लिख पाऊंगा इसीलिए जल्दबाजी में कुछ पक्तिया लिख रहा हू।

जिनेवा में मेरा पता है पैंशन सर्जी, चैमिनकरिंग, जिनेवा। मैं अभी अगले तीन चार दिन यहीं रहूगा ताकि श्री पटेल के निकट रह सकू। कृपया मुझे जिनेवा के पते पर ही पत्र लिखें।

मैं आपको पहले भी लिख चुका हू कि भारतीय सम्मेलन एक सफल सम्मेलन रहा। एक सफल आयोजन था।

भारतीय चाय आपको पसद आई, जानकर अच्छा लगा। काश यहा मेरे पास कुछ अधिक चाय होती।

मुझे आशा है कि जिनेवा में कुछ और दिलचस्प लोगों से मेरी मुलाकात होगी। यदि मौसम ने मेरा साथ दिया तो मैं अंचलों में जाने की अपेक्षा जिनेवा मे ही रहना चाहूगा। अब साफ मौसम नही है और आजकल यहा बरसात हो रही है।

प्रेजीडेंट वैटर और आपको नमस्कार।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर

पैंशन मर्जो
कैमिन करिग
जिनेवा
30 9 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपको सूचित कर रहा हू कि श्री पटेल अब पहले से बेहतर हैं। किंतु खतरा अभी टला नही है। मुझे आपके सभी पत्र प्राप्त होते रहे हैं और जैसे ही मैं कुछ समय निकाल पाऊगा तो आपको विस्तृत पत्र अवश्य लिखूगा।

श्री पटेल के स्वस्थ होने पर शायद मैं सैनिटोरियम मे दाखिल होऊगा और आपरेशन करवाऊगा। अभी तक दर्द ज्यो का त्यो है।

जल्दबाजी मे लिखे इस पत्र के लिए कृपया क्षमा करे।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

कातिलाल पारीख को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
जिनेवा
3 10 1933

प्रिय कातिलाल,

खेद है कि लबे अरसे से तुम्हे पत्र नही लिख पाया। जून के अत मे मैंने एक छोटी सी यात्रा के लिए जिनेवा, छोड दिया था। वहा मुझे दर्द नही हुआ। मैं चेकोस्लोवाकिया पोलैंड और जर्मनी गया। सभी स्थानो पर खूब स्वागत हुआ और लोगो न भारत के प्रति पर्याप्त रुचि भी दिखाई।

यात्रा से पुराना कष्ट पुन. शुरू हो गया और बर्लिन मे मुझे तीन सप्ताह तक पूर्ण विश्राम करना पडा। अगस्त के अंत मे मैं बर्लिन से रवाना हुआ और रास्ते मे चेकोस्लोवाकिया मे फ्रैंजेसबाद मे एक सप्ताह रुका। वहा से मैं विएना आया। यही चिकित्सको को दिखाया।

15 सितबर को मैं विएना से रवाना हुआ और रास्ते में ज्यूरिख रुकता हुआ जिनेवा आया। 19 सितबर को जिनेवा मे भारत पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया था जिसम हमने भी भाग लिया। काफी भीड थी।

पिछले लगभग बारह दिनो से मुझे डा पटेल के स्वास्थ्य की बहुत चिता है। पहल से बेहतर तो हैं किंतु खतरा अभी टला नही है। पिछले कुछ दिनो स रात-दिन मैं उनक

साथ हू। वे आजकल ग्लैंड के क्लीनिक ला लिग्नीयर मे दाखिल हैं जो जिनेवा से लगभग एक घटे की रेलयात्रा की दूरी पर है।

कल मैं भी उसी क्लीनिक में एक रोगी के रूप मे दाखिल होऊगा। बर्लिन के बाद से मेरा दर्द पुनः शुरू हो गया है और अभी तक जारी है बल्कि कुछ दिन से बढ ही गया है। यदि उस क्लीनिक मे मुझे आराम आया तो मैं दो माह वही ठहरूगा। सर्दियो में स्विटजरलैंड का मौसम जिनेवा की अपेक्षा अधिक सुहावना है।

आप सब लोग कैसे हैं। सभी को मेरा प्यार व शुभकामनाए। यदि मैं पत्र व्यवहार निरतर न भी कर पाऊ तब भी कृपया तुम लगातार पत्र लिखते रहो।

तुम्हारा अपना
सुभाष

नाओमी सी वैटर को,

क्लीनिक ला लिग्नीयर
ग्लैंड
सूइस
5 10 1933

महोदय, प्रैजीडेट वैटर साहब,
वेहरिंगर स्ट्रासे 41
विएना-9
(आस्ट्रेय)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आगतुक से मैं इस क्लीनिक का एक रोगी बन गया हू। देखता हू यहा का उपचार मुझे लाभ पहुचाता है या नही।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पटेल अब पहले की अपेक्षा बेहतर है यद्यपि अभी पूर्णतः खतरे से बाहर नही हैं। हर बीते दिन के साथ मुझे आशा बंधती है कि वे इससे उबर जाएंगे। आशा है आप सभी पूर्ण स्वस्थ होगे। प्रेजीडेट वैटर और आपको शुभकामनाए।

सदैव आपका अपना
सुभाष चद्र बास

नाओमी सी. वैटर को,

क्लीनिक ला लिग्नीयर
ग्लैंड
सूइस
10 10 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका 27 तारीख का पत्र, उसी दिन का भेजा पोस्टकार्ड और तत्पश्चात 2 अक्तूबर का पत्र सभी आज ही मिले।

भारत से प्राप्त जो पत्र आपने साथ भेजे हैं मैंने बहुत दिलचस्पी से उन्हे पढ़ा। श्री श्रीकृष्ण का पत्र मैं आपको लौटा रहा हू किंतु श्री अग्निहोत्री का पत्र नही लौटाऊगा, क्योकि आपको उसकी आवश्यकता नही है। श्री अग्निहोत्री का पता है–

के बी एल अग्निहोत्री
बिलासपुर,
सी पी
इडिया

बर्गर मिस्टर सिट्ज का पत्र अच्छा है और मुझे उसकी प्रति पाकर प्रसन्नता हुई।

क्या आपने देखा कि हेस्टिंग्स, इंग्लैंड में आयोजित लेबर पार्टी काफ्रेस में आस्ट्रिया की समाजवादी पार्टी द्वारा विएना में पिछले 15 वर्षों में किए गए कार्यों की प्रशसा की गई।

पडित का वास्तविक अर्थ हमारे यहा उस व्यक्ति से है जो दर्शन और साहित्य (सस्कृत) का ज्ञाता हो। आधुनिक युग के हमारे स्कूलों, कालेजों में सस्कृत के अध्यापकों को भी पडित ही कहा जाने लगा है। भारत के कुछ क्षेत्रों में, विशेषरूप से कश्मीर में ब्राह्मण स्वय को पडित कहलाना पसद करते हैं। सामान्य रूप में जब पडित शब्द का प्रयोग होता है तो वह ब्राह्मण के संदर्भ में होता है जिसका उसके सस्कृत ज्ञान अथवा भारतीय दर्शन से कोई संबंध नही है। मैं जानना चाहता हूं कि ज्यूरिख़र जीटुग में प्रकाशित, भारत के संबध में लिखे गए लेख, को क्या ब्रिटिश दृष्टि से लिखा गया है मुझे आशका है कि यह भी भारत के विरुद्ध प्रचार का ही एक हिस्सा तो नही, जैसे कि प्राय: जर्मन प्रेस में प्रकाशित होता रहता है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वहां का मौसम पिछले कुछ अर्से से अच्छा चल रहा हैं। यहा भी पिछले कुछ दिनों मौसम बहुत साफ था और प्राय: बरसात भी होती रहती है।

श्री पटेल को पुन: हृदय सबंधी परेशानियां उठ खडी हुई हैं और मुझे इससे बहुत निराशा हुई है क्योंकि मुझे पूर्ण आशा थी कि वे शीघ्र स्वस्थ हो जाएगे। मैं नही जानता क्या होगा यद्यपि अभी भी पूर्ण आश्वस्त हू कि वे शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएगे।

मेरा दर्द (खाना खाने के बाद) अभी भी वैसे ही हैं, मैं समझ नहीं पा रहा कि क्या करू। मुझे शक है कि वे मेरे रोग का ठीक निदान भी कर पाए हैं या नहीं। बहरहाल, दर्द सहने के अलावा कुछ नही किया जा सकता। मैं यहा क लोगो का अवसर दे रहा हू कि स्विस चिकित्सक मुझे स्वस्थ कर पाते हैं अथवा नहीं। अब मैं इस क्लीनिक (सैनिटोरियम) का रोगी बन चुका हू।

साथ में अमेरिका से डा सुदरलैंड का लिखा पत्र भी भज रहा हू। कृपया यह पत्र आवश्यक कार्यवाही के बाद लौटा दें। आशा है अब तक आपको उनका पत्र व उनकी पुस्तक मिल चुकी होगी। अब आप उसका अनुवाद प्रारभ कर सकती हैं।

डा वैटर को व आपको नमस्कार,

आपका शुभेच्छु
सुभाष चद्र बास

ई वुड्स को

क्लीनिक ला लिग्नीयर
ग्लेड
स्विटजरलैंड
12 10 1933

प्रिय श्रीमती वुड्स,

श्री वी जे पटेल के नाम आपका 4 तारीख का पत्र मिला। आपका सदेश पाकर वे बहुत प्रसन्न हैं और उनकी इच्छा थी कि मैं उनका धन्यवाद आप तक प्रेषित कर दू। खेद है कि वे अस्वस्थता के कारण स्वय पत्र नही लिख पाए।

पुनः- दुख के, साथ सूचितकर रहा हू कि, उनका स्वास्थ्य अभी बहुत खराब है। हम केवल उनक स्वस्थ होने की कामना ही कर सकते हैं किंतु ईश्वर ही जानता है कि वे इस हार्ट अटैक से उबर पाएंगे या नहीं।

चिकित्सक भी अभी कुछ कह सकने मे असमर्थ हैं।

शुभकामना सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बास

सतोष कुमार बासु, मेयर कलकत्ता को,

एम सी बास
द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
रू डु मोट ब्लैंक
जिनवा
ला लिग्नीयर, ग्लैंड
स्विटजरलैंड
17 अक्तूबर 1933

सेवा मे,
मेयर साहब
कलकत्ता निगम,

मेयर साहब

पिछले सप्ताह, विएना के मेयर (बर्गरमीस्टर) का स्वय का लिखा मूल पत्र और एक चित्र विएना से आपको प्रेषित किया गया था। उस पत्र की एक प्रति मैं आपको भेज रहा हू। मुझे आशा है कि इस प्रेमपूर्वक भेजे गए सदेश से कलकत्ता निगम कलकत्तावासी और उनके प्रतिनिधि होने के नाते आप भी प्रसन्नता अनुभव करेंगे और यथाशीघ्र उत्तर भी प्रेषित करेंगे।

सादर,

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

सत्येद्र नाथ मजूमदार को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
जिनवा
19 10 1933

प्रिय सत्येन बाबू,

एक लबे अरसे से मैंने आपको पत्र नही लिखा। इसीलिए निराश होकर आपने भी लिखना बद कर दिया। दोष आपका नही मेरा है। खैर! विजय के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाए व प्रेम स्वीकार करें।

श्री सेनगुप्ता के असामयिक निधन से मुझे गहरा आघात पहुचा है। बगाल का दुर्भाग्य है कि राजनीति के क्षेत्र से धीरे-धीरे एक-एक कर व्यक्तित्व कम हो रहे हैं। श्री सेनगुप्ता

की कमी पूरी नही होगी।

मैं आजकल जिनेवा के निकट ग्लैंड नामक शहर (गाव) के ला लिग्नीयर नामक सैनिटोरियम मे हू। श्री पटेल भी यही हैं। उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हैं, शायद अधिक समय तक उन्हे जीवित रख पाना सभव नही।

मेरे पेट का दर्द फिर शुरू हो गया है, बल्कि अब और तेज है। समझ नही पा रहा क्या करू। कभी सोचता हू कि आपरेशन करवा लू। बहरहाल, आजकल मुझे अपने से अधिक श्री पटेल की चिता रहती है।

आप सब लोग कैसे हैं? काश । विस्तृत समाचार मिल पाते। आप लोग कब तक महात्मा गाधी का अधानुकरण करते रहेगे। ऐसा प्रतीत होता है कि देश गलत दिशा मे जा रहा है, जबकि अभी समय है, कृपया नया सदेश दीजिए और नया आदोलन शुरू कीजिए अन्यथा देश को जगाने में बहुत अधिक समय लग जाएगा।

इसके अतिरिक्त, कृपया बगाल को पुनः संयोजित कीजिए। यदि श्रीमती नेली सेनगुप्ता प्रयास करेंगी तो परिणाम बेहतर होंगे। मैं इस विषय मे उन्हे लिखने की भी सोच रहा हू। कुछ दिन पहले मुझे उनका पत्र मिला था।

आज इतना ही काफी है। कृपया विजयदशमी की शुभकामनाए सभी को दे।

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को

ला लिग्नीयर
ग्लैंड
सूइस
22 10.1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

लबे अरसे से आपका कोई समाचार नही, चिंतित हू। प्रतिदिन आपके पत्र की प्रतीक्षा रहती है क्या आपको मेरा पिछला लबा पत्र नही मिला, जिसके साथ मैंने डा सुदरलैंड का पत्र और वे सभी पत्र भेजे थे जो आपने मुझे भिजवाए थे।

श्री पटल की स्थिति बहुत नाजुक है। मैं भी यहा अपना उपचार करा रहा हू किंतु कोई लाभ नही हो रहा। पेट के अदर का दर्द बहुत परेशान कर रहा है।

श्री वैटर और आपको प्रणाम ।

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च:- अब तक आपको सूचना मिल ही चुकी होगी कि डा. सुदरलैंड पुस्तक के अनुवाद के लिए राजी हो गए हैं।

सु च बोस

नाओमी सी वैटर को

पैंशन सर्जो
कैमिन करिग
जिनेवा
1 नवबर, 1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका 23 अक्तूबर का पत्र पाकर निश्चिंत हुआ। डा. वैटर और आपको बहुत धन्यवाद।

श्री पटेल की अतिम इच्छा के अनुसार हमें उनका पार्थिव शरीर अत्येष्टि सस्कार हेतु भारत भिजवाना होगा। मैं मर्सिलेज गया था और मृत देह को जहाज मे चढ़ाने के बाद ही एक दिन बाद यहा लौटा हूं।

फिलहाल मैं उपरोक्त पते पर ठहरा हू और भविष्य की योजना के बारे मे निश्चित रूप से कुछ कह नही सकता।

वारसा के आपके मित्र का पत्र मुझे मिला जो मैं साथ में भेज रहा हूं। क्या आप उनका नाम व पता मुझे लिखने का कष्ट करेंगी। उन्होंने भारत पत्र भेजा था जहा से मुझे प्रेषित किया गया है।

मैं एक तार भी भेज रहा हूं जिसे भेजने वाले का नाम बहुत कोशिश के बावजूद मैं जान नही पाया। शायद कोई चीनी नाम है। आश्चर्य नही यदि वे जिनेवा में चीनी राजदूत हों जो शायद श्री पटेल को निजी रूप में जानते हों।

क्या आपको डा. सुदरलैंड के पत्र और पुस्तकें प्राप्त हुई?

वहा मौसम कैसा है? यहा तो अभी सर्दी है।

डा. वैटर व आपको प्रणाम।

शुभेच्छु
सुभाष चद्र बोस

प्रोफेसर वी लैस्नी को,

द्वारा द अमरिकन एक्सप्रेस कपनी
जिनवा
10 नवबर 1933

सेवा मे,
प्रबधक
ओरिएटल इस्टीट्यूट
प्राग,

महोदय,

आपका पत्र सख्या 1397/33, दिनाक 3 नवबर को प्राप्त हुआ। ओरिएटल इस्टीट्यूट के भारतीय केंद्र के उद्घाटन समारोह के निमत्रण के लिए धन्यवाद।

अस्वस्थता के कारण आजकल मैं उपचार करवा रहा हू और शीघ्र ही दक्षिणी फ्रास के लिए रवाना होऊगा। ऐसी स्थिति मे मेरा नवबर के मध्य तक प्राग आना सभव नही हो पाएगा। इसीलिए मैंने आपका निमत्रण मिलते ही आपको तार भेजा था जिसमे दिसबर के मध्य कोई तिथि निश्चित करने की सलाह दी थी। यदि आपके लिए उस समय की कोई तिथि निश्चित कर पाना सभव हो तो मैं अवश्य आपका निमत्रण स्वीकार कर सकता हू और प्राग आ सकूगा।

यहा मेरा यह कहना आवश्यक नही कि मैं दोनो देशो के मध्य सास्कृतिक एव वाणिज्य सबध स्थापित होने की बात से अत्यधिक प्रसन्न हू। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि अपने हाल ही के प्राग दौरे के पश्चात मैंने भारत मे इसका काफी प्रचार किया है। जब पुन प्राग आऊगा तो इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हर सभव प्रयत्न करूगा और यदि सभव हो सका और आयोजन हो सका तो कुछ भाषण आदि भी दूगा। एक बार पुन: आपका धन्यवाद।

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी जिनवा
13 11 1933

फ्रॉ प्रेज़ीडेट वैटर
वहरिंगर स्ट्रीट 41
विएन-9
(आस्ट्रेख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

मुझे खेद है कि काफी समय से मैं आपको पत्र नही लिख पाया। इस बीच आप सोचती रही होगी कि न जाने मुझे क्या हो गया।

आपके दोनों पत्र मिले-धन्यवाद। तीन-चार दिन बाद लबा पत्र लिखूगा। एक दो दिन के बीच मैं दक्षिणी फ्रास की यात्रा पर निकलूंगा।

मेरा स्वास्थ पहले जैसा ही है। आजकल मैं विएना के प्रोफेसर न्यूमन की बताई दवाइयो को ही ले रहा हू।

आप सब लोग कैसे हैं? डा. प्रैज़ीडेड वैटर व आपको नमस्कार।

सदैव आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

प्रोफेसर फ्रासिस जजती को,

होटल दि लग्जमबर्ग
प्रोमैंडे डीस एग्लैस
नाईस
टेलि- 839.45-839-46
फ्रास
6.12 1933

आदरणीय प्रोफेसर साहब,

विएना मे मेरे श्रद्धेय मित्र श्रीमती एव श्री फ्यूलप-मिलर से आपके और भारत एव हगरी के सबंध मे आपके कार्यों के बारे मे जानकारी प्राप्त हुई।

भारत और हगरी के मध्य मैत्रीपूर्ण सबधों की इच्छा रखने के नाते मैं आपके इस कार्य की प्रशसा करता हू।

मैं उस दिन की प्रतीक्षा मे हू जब आपके दर्शनों का लाभ व सुख प्राप्त कर सकूगा। अगले वर्ष गर्मियों से पहले मेरा बुडापेस्ट आने का विचार है।

इस वर्ष कई महीने मैं विएना में रहा। उसके बाद से स्विटजरलैंड और फ्रास की

यात्रा पर हू।

शुभकामनाओं सहित

सदा आपका

शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

ई वुड्स को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
नाइस (फ्रास)
7.12.33

प्रिय श्रीमती वुड्स,

आपके 3 नवबर के पत्र के लिए धन्यवाद पत्र लिखने में देरी के लिए क्षमा चाहता हू।

आयरिश मित्रों के सहानुभूति सदेश भारतीय प्रेस में भेजने के लिए आपका धन्यवाद। मुझ आशा है कि वे काफी पसद किए जाएंगे। मुझे याद है लाहौर जेल में श्री जतीनदास के भूख हडताल के कारण हुई मृत्यु पर सितंबर 1929 में टैरेम मैक्सकीनी परिवार ने महत्वपूर्ण सदश भेजा था। उस सदेश का भी बहुत स्वागत हुआ था।

आयरलैंड आने के लिए निमंत्रण भेजने के लिए धन्यवाद। कई वर्षों से आरलैंड आने को उत्सुक था और भारत लौटने से पूर्व एक बार वहा अवश्य आऊगा। देश के एक हिस्से (बगाल) में आजकल स्वतत्र प्रेमी पुरुष व स्त्री आयरिश इतिहास को बहुत गभीरता से पढ़ रहे हैं और कुछ घरों में तो कई आयरिश व्यक्तित्वों की पूजा भी हो रही है। फिलहाल मुझ यूनाइटेड किंगडम जाने की आज्ञा नही मिली है किंतु शीघ्र ही मुझ आयरिश फ्री स्टेट गवर्नमेंट से आयरलैंड (स्वतत्र राज्य) जाने की अनुमति मिलने वाली है। किंतु मैं इस तथ्य को गुप्त ही रखना चाहता हू। लदन के मेरे कुछ मित्र मेरी इंग्लैंड यात्रा की अनुमति प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं। किंतु यदि ब्रिटिश सरकार को पता *चल गया कि मेरी आयरलैंड जाने की योजना है तो वे पलट जाएगे और कभी भी* मुझे इग्लैंड जाने का पासपोर्ट नहीं देंगे। जब तक मेरे इंग्लैंड जाने का निर्णय-हां या ना-नही हो जाता तब तक मैं आयरलैंड जाने की अपनी इच्छा को गुप्त ही रखना चाहता हू।

यूरोप से निकलने से पहले जेल में मुझे मेरे भाई मिले थे, जिन्होंने मैडम गोने मैकब्राइड के लिए एक सदेश भिजवाया है। मेरे भाई वर्ष 1914 में पेरिस में मैडम से मिले थे और तभी से वे उनके प्रशंसक हैं। सभव है मैडम को अब मेरे भाई की याद ही न हो। फरवरी 1932 में उसका देहात हो गया। मेरे भाई श्री मुखर्जी, जो उनके मित्र थे, के साथ मैडम से मिला था।

आपके बुलेटिन की प्रति मिल गई थी, काफी पसद आई। क्या आपको भारतीय समाचार-पत्र (अग्रेजी मे) निरतर मिल रहे हैं? यदि मिल रहे हैं तो क्या आप उनमे से उपयोगी समाचार निकाल लेती हैं या कि आपको समाचार तैयारशुदा ही भिजवाए जाए। बुलेटिन कब-कब प्रकाशित करती हैं? मैं आपको भारत के विषय मे कुछ सूचनाए भेजना चाहता हू।

कृपया मुझे बताए कि आयरलैंड के कौन-कौन से पत्र मुख्य खबरे प्रकाशित करना चाहेंगे विशेषकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद का पर्दाफाश करने वाले समाचार मेरे ख्याल से डब्लिन का आयरिश प्रेस देव का अखबार हैं। आइ.आर.ए. का तत्र कौन सा है? यदि आप मुझे कुछ आयरिश अखबारो व पत्रिकाओं के पते भेज सके तो मैं समय पर आपको कुछ समाचार उपलब्ध कराने का प्रयत्न करूगा।

मुझे आशा है कि आजकल भारत की तरह आयरलैंड मे पत्र सेंसर नही किए जाते होंगे। मेरे लिए यह जानना अति आवश्यक है।

शुभकामनाओ सहित,

मैं,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को,

स्थायी पता
द अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
14, कैरटनेरिंग
विएना
नाइस (फ्रास)
7 12 1933

प्रिय सुनील,

तुम्हारे बहुत से खत मिले। उत्तर नही दे सका क्षमा चाहता हू। हाल ही मे विजयादशमी के उपलक्ष्य में लिखा तुम्हारा पत्र मिला, प्रसन्नता हुई।

अपने पहले पत्रो में तुमने बगाल मे वाद को कम करने के प्रयास के बारे मे लिखा था। मैं यहा स्पष्ट आकाश और सूर्य की रोशनी की तलाश मे आया हू। मध्य सागर के ये विश्रामगृह बहुत खूबसूरत हैं।

मेरा मुख्य कष्ट पेट-दर्द अभी भी कष्ट दे रहा है। पिछली जून मे दर्द खत्म हो गया था। जुलाई में पुनः शुरू हुआ और तभी से अभी भी है। कुछ दिन पहले दर्द बहुत अधिक बढ़ गया था। अब कुछ कम है किंतु प्रगति बहुत धीमी है। कह नही

सकता कि पूर्णरूप से स्वस्थ होने मे कितना समय लगेगा। पिछले आठ माह से यूराप मे हू किंतु अभी तक ठीक होने के ठोस लक्षण महसूस नहीं हुए। और यदि मैं ठीक नही हो पाया तो घर वापिस लौटकर क्या करूगा? अस्वस्थता की हालत मे कोई कार्य सभव नही है।

बहरहाल। आशा है तुम सब लोग ठीक-ठाक हो। प्रेम व शुभकामनाओ सहित।

तुम्हारा अपना
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वेटर को,

हाटल डि लग्जमबर्ग
नाइस (फ्रास)
9 12.1933

प्रिय श्रीमती वैटर,

जब मैं विएना में था तब आस्ट्रिया और भारत के सबध मे मेरी श्री रोकोवन्स्की स लबी बातचीत हुई थी। श्री रोकोवन्स्की ने मेरा परिचय निदेशक ओटो फाल्टिस स करवाया था। श्री फाल्टिस मुझे योग्य और व्यापारिक दृष्टि वाले व्यक्ति लगे और हमने दोनो देशो का निकट लाने के लिए कुछ व्यावहारिक योजना भी बनाई। वे यहा कार्य करेगे और मैं भारत लौटने के पश्चात वहा कार्य करूगा। हम वास्तव मे कोई व्यापार नही करेगे। हम केवल व्यापार तथा दोनो देशो के सबधों को प्रगाढ करने का प्रयत्न करेंगे। बाद मे यदि हम व्यापार करना चाहेगे तो नई दिशा में नए रूप में उस पर पुनर्विचार करेगे। हाल ही मे निर्देशक ओटो फाल्टिस ने मुझे नए सगठन का प्रारूप भेजा है। इससे पहले मैंने इस विषय मे डा वैटर व आपकी राय नही ली थी, क्योंकि आवश्यकता महसूस नही हुई। किंतु अब चूकि योजना मूर्त रूप ले रही है और यदि ठीक प्रकार कार्यरत हुई तो लाभकारी भी होगी, मैं निम्न मुद्दों पर आपकी राय लेना चाहूगा।

1 क्या वे लोग जिनके साथ मुझे कार्य करना है, विश्वसनीय हैं?

2 क्या योजना सही दिशा में है?

मैं कहना चाहूगा कि पूरे वार्तालाप और पत्राचार के दौरान मुझे श्री फाल्टिस सज्जन और विश्वसनीय व्यक्ति लगे है। किंतु परम मित्र होने के नाते मुझ आगे बढने से पहले आप लोगो से परामर्श लेना ही चाहिए। कृपया इस बात को पूर्णत: गुप्त ही रखे और यथाशीघ्र मुझे पत्रोत्तर दे।

एक कटिंग भेज रहा हूं, जिसमे आपको भी दिलचस्पी होगी। ब्रिटिश का एक और उदाहरण।

मैंने आपको एक लबा खत लिखा था जो अब तक आपको मिल चुका होगा। आप दोनो को शुभकामनाए।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

होटल एक्सैल्सियर
रोम
21 12 1933

प्रिय श्रीमती वैटर

रोम से मेरे इस पत्र को पाकर आप आश्चर्यचकित रह जाएगी। 19 तारीख को अचानक मुझे इंडियन ओरिएटल इस्टीट्यूट के उद्घाटन-समारोह का सरकारी निमत्रण मिला। 19 की शाम जल्दबाजी में मैंने नाइस से प्रस्थान किया और कल दोपहर यहा पहुचा, कल की यात्रा दुखद रही। आज यहा रोम मे मौसम बहुत साफ है बल्कि कहना चाहिए कि सबसे अच्छा है।

विएना बैच के लगभग 22 विद्यार्थी भी यहा आए हैं। यूरोप के विभिन्न केद्रो से लगभग 90 भारतीय विद्यार्थी और 150 चीनी विद्यार्थी यहा पहुचे हैं।

ओरिएटल इस्टीट्यूट का औपचारिक उद्घाटन आज प्रात: हुआ, हम सभी वहा उपस्थित थे। कल और उसके बाद एशियाटिक स्टूडेट्स कान्फ्रेंस को श्रीमान मुसोलिनी सबोधित करेगे।

नाइस आने के बाद से मेरा स्वास्थ्य कुछ बेहतर था तभी मेरा यहा आ पाना सभव हुआ। वहा मुझे आपके दो पत्र मिले थे। धन्यवाद। शेष अगले पत्र मे। श्री वैटर व आपको प्रणाम।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर

मिलान
12.1 1934

होटल
प्रिंसिप 7 सवोला,

प्रिय श्रीमती वैटर,

आप हेरान होगी कि जब से मैं रोम आया हू मुझे क्या हो गया। प्रत्यक्षदर्शियो ने अब तक आपको सब कुछ बता ही दिया होगा। अतः रोम मे क्या हुआ मैं सक्षेप में आपको बताऊगा।

1 ओरिएटल इस्टीट्यूट ऑफ रोम (वल्कि, इटली कहना चाहिए) का 21 दिसबर का उद्घाटन समारोह था।

2 22 से 28 दिसबर तक एशियाटिक स्टूडेट्स की मीटिंग थी जिसमे यूराप क विभिन्न केद्रो क लगभग 600 एशियाटिक स्टूडेट्स ने भाग लिया।

इटली की गाडियो मे यात्रा नि.शुल्क थी और रोम मे एक सप्ताह तक रहन व खाने-पीन की सुविधा भी निःशुल्क उपलब्ध कराई गई थी। 22 दिसबर का सगठन का मुसोलिनी ने सबोधित किया। वक्ता के बारे मे हमारी राय कुछ भी हो किंतु भाषण अच्छा था। उन्होंने कहा--यह सोचना मूर्खता है कि पूर्व और पश्चिम कभी एक नहीं हो सकते। पहल भी यूरोप और एशिया के मध्य रोम न कडी का काम किया था वसा ही वह अब भी करेगा। इसी पुनर्मिलन में विश्व की गति है। रोम ने यूराप मे पहल उपनिवेशवाद फैलाया था किंतु एशिया के साथ उसके सबध मैत्रीपूर्ण और सहयोग के रहे हैं।

3 इडियन स्टूडेट कन्वेशन रोम मे तीसरी बार एकत्र हुई, इसस पहले वर्ष 1931 मे लदन मे और 1932 मे म्यूनिख मे हुई थी। यह निर्णय लिया गया कि यूरोप में फेडरशन ऑफ इडियन स्टूडेंटस के आफिस को लदन से विएना मे स्थानातरित कर दिया जाए। मैंने इस विचार का हार्दिक स्वागत किया और अपनी सहमति भी दी और मेरे मन म यही विचार था कि विएना में हमारे पास आप जैसे भले मित्र भी हैं। यह भी निर्णय हुआ कि इडियन स्टूडेट्स की चौथी कन्वेशन विएना मे वर्ष 1934 मे आयोजित की जाएगी। इस सब का अर्थ है कि न केवल विएना में रह रहे भारतीय विद्यार्थियों बल्कि उनक मित्रो पर भी काफी जिम्मेदारी आ पडी है। मैं जानने को उत्सुक हू कि आपकी राय मे हमें क्या करना चाहिए।

बैठक व सम्मलन के पश्चात मैं रोम में लगभग पद्रह दिन रुका रहा । बहुत-सी बातों को जानने की दृष्टि से तथा भारत क लिए कुछ मित्र बनाने की दृष्टि स। सक्षेप मे मैं अपने अनुभव लिख रहा हू-

1. रोम में कुछ लोग ऐसे हैं जो वास्तव मे भारत के प्रति रुचि रखते हैं।

2. सामान्यत: लोग भारत के विषय में कुछ नहीं जानते किंतु जानना चाहते हैं। भारत के प्रति कोई पूर्वाग्रह नहीं बल्कि सहानुभूति है।

3 सामाजिक दृष्टि से इटलीवासी एकांतप्रिय हैं। जब तक वे विदेशियों को भलीभाति जान नही लेते तब तक उन्हें अपने घर आमत्रित नही करते। मुझे पता चला है कि ऐसी ही फ्रास के लोगों की भी स्थिति है। किंतु यूरोप के अन्य स्थानों पर मैंने जर्मन बोलने वाले लोगो मे इसके विपरीत आचरण अनुभव किया है।

4 मेरे विचार में मैंने रोम में जिन लोगो से परिचय स्थापित किया उनमे भारत के प्रति गहरी रुचि जगाने में सफलता पाई है। किंतु अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी कि वे इस दिशा में कितना कार्य करते हैं। अधिकारियो का रवैया भी अब ठीक है और वे पूर्व के साथ सबध स्थापित करने के इच्छुक भी हैं। यदि ऐसा ही रवैया विएना और बर्लिन के अधिकारियों में भी होता तो मुझे विश्वास है कि हम वहा कुछ उपयोगी कार्य करने मे सक्षम होते।

नववर्ष पर सुदर उपहार भेजने के लिए अनेकानेक धन्यवाद। इससे अच्छा और कोई उपहार हो ही नही सकता।

आपने अपने पिछले पत्रों में यह जानना चाहा है कि घर वापिस लौट कर मेरा क्या होगा। आपको चिंतित होने की आवश्यकता नही। वे मुझे बंबई पहुचने से रोक नही सकते और यदि वे वहा पहुचने पर मुझे जेल में डालते हैं तो भी मुझे कोई चिंता नही। जब तक भारत मे ऐसी दशा रहेगी जैसी कि आजकल है, वे मुझे बबई पहुचते ही जेल मे डालेंगे-किंतु इस विषय में कुछ नहीं किया जा सकता। अत: जब तक मैं यूरोप मे हू मुझे अपनी स्वतत्रता का पूरा-पूरा उपयोग कर लेना चाहिए।

आपको श्रीमती एव श्री एन के बोस का स्मरण होगा जो कुछ सप्ताह पूर्व विएना मे थे। श्रीमती बोस एक दिलचस्प परिवार से संबध रखती हैं। उनकी एक बहन पिछले 9 वर्ष से, सन् 1932 में दीक्षात समारोह में बंगाल के गर्वनर को मारने के प्रयास के आरोप में जेल में हैं। वह उस समारोह में अपनी स्नातक की उपाधि लेने गई थी किंतु कुछ गोलिया, जो निशाने पर नही लगी, चलाने के बाद गिरफ्तार कर ली गईं। वह लडकी प्रकृति से बहुत शात व शर्मीली हैं। दूसरी बहन स्नातकोत्तर उपाधि लेने के पश्चात बिना किसी वजह जेल में है। यह हमारी नई पीढ़ी है। अब मैं समाप्त करता हू। 18 जनवरी को मैं जिनेवा पहुच जाऊंगा। जिनेवा में मेरा पता होगा-

द्वारा श्रीमती होर्प, 23 एवेन्यू बीयू सेजोर, जेन्फ, स्वीज़,

सादर,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

बिवाबती बास को

मिलान, इटली
16.1 1934

प्रिय मेजो बोवदीदी

मैं 20 दिसबर को रोम पहुच गया था और लगभग तीन सप्ताह वहीं व्यतीत किए। अशोक आया था और लगभग आठ नौ दिन यहा रहा। मैंने रोम से एयरमेल द्वारा मेजदादा को एक लबा पत्र लिखा था।

अब मैं जिनेवा की यात्रा पर हू। तीन-चार दिन पहले ही मिलान पहुचा हू और परसों जिनेवा के लिए रवाना होऊगा। वहा मेरा पता रहेगा-द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी।

क्या आप बता सकती हैं कि परिवार में बार-बार पैराटाइफायड का आक्रमण क्यो हो रहा है? मेरे विचार में इस पर कुछ विचार और खोज की जानी चाहिए। अब तक शायद कोई भी सदस्य इससे बचा नहीं, इसलिए इसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होगा। फुलु अब कैसा है? मिलान में खीचे दो चित्र भेज रहा हूं। कृपया एक मेजदादा को भिजवा दें। साथ में गोपाली और मेजदादा के पत्र भी भेज रहा हूं। कृपया डाक द्वारा दोनों को यथास्थान भिजवा दें।

आपका
सुभाष

पुनश्चः- श्री पी सी बासु ने लिखना बद क्यों कर दिया?

सुरामा दे को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
जिनेवा
21.1 34

प्रिय महोदया,

आपका 5 अक्तूबर का पत्र समय पर मिल गया था किंतु पत्रोत्तर देने में देरी हो गई। कृपया क्षमा करें।

इस बीच, बूडापेस्ट के चित्र आपको भिजवा दिए गए थे। पता नही आपको मिले या नही, आशा है मिल गए होंगे। यदि नही मिले तो कृपया मुझे सूचित करें ताकि मैं पूछताछ करूं।

* मूल बगला से अनूदित

मेरा स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा बेहतर है। पेट दर्द भी पहले से कम है और वजन भी कुछ बढा है। किंतु अभी भी स्वस्थ होने मे कुछ समय लगेगा। अब मैं अपने स्वास्थ्य की देखभाल भी खूब करता हू।

इस पत्र के साथ मैं अमिया के लिए भी एक पत्र भेज रहा हू। कृपया उसे बुला कर यह पत्र उसके हवाले कर दें।

आशा है आप सभी पूर्णत: स्वस्थ हैं।

सादर प्रणाम,

आपका
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

23, एवेन्यू बीयू सेजूर
जिनेवा
6 2 1934

प्रिय श्रीमती वैटर,

पिछले कई दिनो से आपका कोई समाचार नही।

मेरे ख्याल से अतिम पत्र मैंने ही लिखा था।

तीन सप्ताह पूर्व मैं इटली से यहा आया हू। रोम आते हुए मैं कुछ दिन मिलान रुका था। भारतीय विद्यार्थियों का एक दल मिलान मे अध्ययन हेतु आया हुआ है।

यहा आने के पश्चात मैं श्रीमती होरप की, उनके द्वारा भारत पर प्रकाशित बुलेटिन मे, सहायता करने मे व्यस्त था। वे भारत पर तीन भाषाओ मे बुलेटिन प्रकाशित करेंगी यानी कि-अंग्रेज़ी, फ्रेंच और जर्मन में। कल मैंने आपको जनवरी के बुलेटिन की जर्मन कापी भेजी थी। आशा है इस माह की प्रति आपको जल्दी मिल जाएगी।

मेरे बडे भाई जो आजकल भारत में हैं, पिछले आठ वर्षों से कलकत्ता नगर पालिका के एल्डरमैन थे। उन्होने मुझे पत्र लिखकर पूछा है कि क्या विएना नगरपालिका की कार्य पद्धति पर अंग्रेज़ी मे कोई पुस्तक है। मैंने श्री कटयार को भी लिखा है कि वे आपसे ऐसी किसी पुस्तक का नाम पूछकर उसकी एक प्रति मुझे भिजवाए जो मैं अपने भाई साहब को भिजवा सकू।

श्री सुदरलैंड की पुस्तक 'इंडिया इन बाडेज' के अनुवाद कार्य मे कुछ प्रगति हुई?

ऐसी बहुत सी बाते हैं जो मैं आपको लिखना चाहता हू किंतु उन्हे अगले पत्र

के लिए रखूंगा। आशा है इस बीच आपका पत्र मुझे मिलेगा। श्री वैटर व आपको सादर नमस्कार।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

23 एवेन्यू बीयू सेजोर
जिनेवा
14 2.1934

प्रिय श्रीमती वैटर,

आज के शाम लंदन के अखबारों में आस्ट्रिया के विषय में दुखद समाचार पढ़ा। मैं 'टाइम्स' की कटिंग साथ में भेज रहा हूं जिससे आपको अनुमान होगा कि आस्ट्रिया के बाहर क्या कुछ छप रहा है।

इन परिस्थितियों में आप कैसा अनुभव कर रहे होंगे मैं समझ सकता हूं। यह कहना आवश्यक नही कि मैं आस्ट्रिया में विशेषरूप से विएना के मित्रों के प्रति अत्यधिक चिंतित हू।

लबे समय से आपका समाचार व खत न मिलने से चिंतित था और उस चिंता को श्री रोशोवास्की के पत्र ने आपकी अस्वस्थता की सूचना देकर और बढा दिया है। मैं आपको तार भेजने ही वाला था कि आपका चिरप्रतीक्षित पत्र मिला।

आज मैं आपका अधिक समय नही लूंगा। कृपया इतना अवश्य लिखें कि आप सब कैसे हैं। श्री वैटर की ओर से भी बहुत चिंतित हू।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
जिनेवा
15 फरवरी, 34

प्रिय सुनील,

यहां लौटने पर 24 जनवरी 34 को तुम्हारा पत्र मिला। रोम और मिलान की यात्रा के पश्चात मैं 18 जनवरी, 34 को नाइस पहुंचा था। पहले की अपेक्षा अब मेरा स्वास्थ्य

ठीक है और कुछ वजन भी बढा है। प्रगति बहुत ही धीमी है और दिनचर्या से थोडा भी इधर-उधर होने से पेट का दर्द असहनीय हो जाता है। दर्द पहले से कम तो है किंतु हल्का-हल्का दर्द हमेशा बना रहता है पता नहीं कब पहले की तरह स्वस्थ हो पाऊगा।

पृथकतावादी झगड़ों को समाप्त करने के विषय में तुम्हारा विचार पढकर अच्छा लगा। श्रीमती सेनगुप्ता कैसी हैं और इस विषय में उनके क्या विचार हैं। कुछ समय पूर्व मैंने उन्हे पत्र लिखा था और अलगाववाद समाप्त करने के लिए प्रयत्न करने का आग्रह भी किया था किंतु आज तक उनका जवाब नहीं आया।

सबको एकत्र करने के लिए तुमने एक सम्मेलन का उल्लेख किया था। इस विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने को मैं उत्सुक हू।

तुमने जिस पुस्तक का जिक्र किया है वह भेजने की कोशिश करूगा। इस कार्य में कुछ विलब हो सकता है, क्योंकि उसकी अतिरिक्त प्रति मेरे पास नही है।

पिछले माह मिलान में खीचे एक चित्र की प्रति भेज रहा हू।

एक लबे समय से, शायद पाच या छ: माह से तुम्हें पत्र नही लिख पाया।

अमरिकन एक्सप्रेस कपनी का तार का पता सभी जगह यही है- अमैक्सको। केवल विएना के लिए तार का पता है-ट्रैवामैक्स लगभग सभी बडे शहरों में अमेरिकन एक्सप्रेस के उप कार्यालय हैं।

आजकल मेरी अपनी पार्टी कोई नही हैं। नई नींव पर नई पार्टी बनाने की आवश्यकता है। मैं डरपोक लोगों के साथ कार्य नहीं कर सकता। इस सगठन से दो किस्म के लोगों को अलग रखने की आवश्यकता है-डरपोक और स्वार्थी।

फिलहाल मैंने आपरेशन की सलाह ठुकरा दी है। पिछले तीन-चार माह से मैं विएना के प्रोफेसर न्यूमान के उपचार में हूं जिससे मुझे काफी लाभ हुआ है। आजकल मैं श्यामदास कविराज द्वारा बताई गई मकरध्वज भी ले रहा हू।

' रोम और मिलान में बिताए दिन आनंददायक रहे। वहां के मुख्य समाचार पत्रों मे मैंने भारत के सबध में लेख लिखे, मिलान में सबसे बडी सोसायटी (सिसलो फिलोलोगियो सोसायटी) में 'इटली व भारत' विषय पर भाषण भी दिया। गणमान्य व्यक्ति वहा एकत्र हुए थे।

आशा है तुम ठीक-ठाक हो।

शुभकामनाओं सहित

तुम्हारा शुभेच्छु
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

23, एवेन्यू बीयू, सेजूर
जिनेवा
17.2.1934

प्रिय श्रीमती वैटर,

विएना में पिछले कुछ दिन से जो कुछ हो रहा है, उसके लिए मैं काफी चिंतित हूं। पहले भी आपको पत्र लिख चुका हूं। जब तक आपका कोई समाचार नहीं मिलता मैं चिंतित रहूंगा। कृपया तुरत सूचित करें कि आप सब लोग कैसे हैं।

सदैव आपका अपना
सुभाष चंद्र बोस

श्रीमती एन.सी. वैटर
द्वारा प्रेज़ीडेंट डा. वैटर
वेहरिंगर स्ट्रासे-41
विएन-9
(आस्ट्रिया)

ई. वुड्स को,

23, एवेन्यू बीयू सेजूर
जिनेवा
20.2.1934

प्रिय श्रीमती वुड्स,

12 जनवरी का आपका कृपापत्र पाकर प्रसन्नता हुई। आपके पत्र का उत्तर देने में विलंब हुआ, क्षमा चाहता हूं। आशा है इस बीच आपका पुत्र पूर्णतः स्वस्थ हो गया होगा।

कृपया मुझे सूचित करें कि भारत से कौन-कौन से दैनिक अंग्रेजी राष्ट्रीय समाचार-पत्र आपको प्राप्त हो रहे हैं। संभव है मैं सहायता कर सकूं कि वे आपको निरंतर प्राप्त हो सकें।

मैडम मैकब्राईड के पत्र का उत्तर देने में विलंब हुआ, क्षमा चाहता हूं। मैंने अभी उन्हें सब कुछ बताते हुए एक विस्तृत पत्र लिखा है।

बुलेटिन आपने मुझे भेजा उसके लिए धन्यवाद। मेरी उसमें बहुत दिलचस्पी थी। कुछ दिन पूर्व यहां से प्रकाशित बुलेटिन की प्रति आपको भिजवाई थी। हम प्रतिमाह तीन भाषाओं-अंग्रेजी, फ्रेंच और जर्मन-में बुलेटिन प्रकाशित करेंगे।

भारत में सरकारी दबाव के विषय में आप द्वारा सुझाए गए मुद्दों पर मैं लेख लिखना

चाहूगा। शायद अब तक लिख भी चुकता लेकिन यहां के कुछ विषयों के कारण मे बहुत व्यस्त था। किंतु आशा है शीघ्र ही लिखूंगा। मैं आपको भेज दूगा और आप उसे सबसे अच्छे समाचार-पत्र में प्रकाशित करा सकेंगी। प्रचार की दृष्टि से, मेरे विचार मे, आइरिश प्रेस सबसे अच्छा रहेगा।

हम आपके आभारी है कि आपने श्रीमती कज़िन के नेक अनुभवों पर प्रकाशित लेख पर तत्काल टिप्पणी भेजी। मुझे पढकर बहुत आश्चर्य हुआ। सच कहू तो मैं उनकी मानसिकता समझ नही पाया हू।

कृपया आयरलैंड के कुछ परिचित अखबारों के पते भिजवाए। हम उन्हे भी अपना बुलेटिन सीधे भेजेंगे। जनवरी का अक केवल आयरिश प्रेस व फ्री प्रेस जर्नल और अमृत बाज़ार पत्रिका आदि के मिल रहे हैं। क्या ये आपको लगातार यानी हर सप्ताह प्राप्त हो रही हैं? आपको इन पत्रों के दैनिक संस्करण या साप्ताहिक सस्करण मे से कौन से मिल रहे हैं।

मैडम मैकब्राइड ने लिखा है कि धनाभाव के कारण आई.आई. लीग का कार्य समाप्त करना होगा। आशा है जैसे भी सभव होगा आप उसे जारी रखेंगी। मेरी ओर से, मैं इस अनुबंध को पूर्ण करने का हर संभव प्रयास करूगा।

यहा भारतीय समिति की सचिव डेनिश महिला-मैडम होरप है, मैंने उनसे आई आई लीग और आयरलैंड के मित्रों के सबध में बात की थी। उन्होंने काफी दिलचस्पी ली।

शुभकामनाओ सहित

मैं.

आपका शुभाकाक्षी

सुभाष चद्र बोस

सत्येंद्रनाथ मजूमदार

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी,

जिनेवा

22 2 34

प्रिय सत्येन बाबू,

आपका 23 नवबर का पत्र मुझे 11 दिसबर को प्राप्त हुआ, पढकर प्रसन्नता हुई। आपकी सब बातों से मैं सहमत नही हूं, किंतु मुझे प्रसन्नता है कि आप मुद्दों की जड तक तो पहुचे।

देश की वर्तमान स्थिति का जो खाका आपने खींचा है, वह बिल्कुल सही है। किंतु

मूल बगला से अनूदित

क्या आपने कारण का सही सकेत किया है? आपने लिखा है-

"यह कहना कठिन है कि जिम्मेदार कौन है-राष्ट्रीय चरित्र की कमजोरी या फिर लोक अवज्ञा मे खामी होना।" मेरा कहना है कि यदि नेतागण सफलता का श्रेय लेना चाहते हैं तो असफलता का कलक भी झेलना होगा। यह कहने से काम नही चलेगा कि-"देश के लोगों ने साथ नही दिया-देश के लोगो में चारित्रिक दृढता नही है। आदि-आदि," जब नेता अपने कार्यक्रम की घोषणा करता है तो, उसे अपना कार्यक्रम बनाना होगा और मानवीय पक्षों को ध्यान में रखकर ही कार्यक्रम तैयार करना होगा। मेरा कहना इस प्रकार है .

(1) नेताओं ने जिस मार्ग को अपनाया है, उससे सफलता मिलना सभव नही।

(2) उन्होने देश के सम्मुख आत्म-बलिदान के सदेश को क्षुद्र कर दिया है। आप कह सकते हैं कि नेताओ ने देश, समय और उद्देश्यो का आकलन करने के पश्चात जानबूझकर ऐसा किया है और अपेक्षाकृत नरमाई का रुख अपनाया है। इसके उत्तर मे मैं कहना चाहूगा कि यदि ऐसा है तो होने दें। जो बीत चुका उसे लेकर मैं झगडना नही चाहता। किंतु अब नेताओ के सामने आकर देशवासियो को बता देना चाहिए कि कठोर निर्णय लेने का समय आ गया है और अब हमें मध्यम मार्ग अपनाना होगा। मैं नेताओं को अपमानित करने या उन्हें छोटा करने के लिए आलोचना नही कर रहा बल्कि भविष्य के मार्ग का निर्णय करने की दृष्टि से यह सब कह रहा हू। किंतु आपको लगता है कि आलोचना का अर्थ उनकी बुराई करना है और उनके पूर्ण कार्य व आदोलन की निंदा करना है। किंतु जिस आदोलन से मेरा अस्तित्व अभिन्न रूप से जुडा है, मैं उसकी अवज्ञा कैसे कर सकता हू।

आपने लिखा है कि-"हम लोग महात्मा गाधी का अधानुकरण नही कर रहे।" किंतु मैं पूछता हू कि प्रतिदिन आनद बाजार पत्रिका पढने वाला व्यक्ति क्या राय कायम करेगा? क्या आपने कभी किसी रूप मे महात्मा गाधी का, उनके आदोलन की आलोचना की है? पाठक नही जानते कि आपके मस्तिष्क मे क्या है। वे तो केवल आनद बाजार पत्रिका पढते हैं। कब तक अधानुकरण होता रहेगा, नेताओ की आखें नही खुलेगी।

फिर आपने लिखा है-"आज बगाल में कोई ऐसा नेता नही जो बगाल को, एकत्र कर सके और राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बना सके।" किंतु मेरे प्रिय पत्रकार मित्र, मैं आपसे पूछता हूं कि क्या आपने लोगों के सम्मुख ऐसे किसी व्यक्ति की छवि रखने का प्रयत्न किया है? बगाल के लोगो को बगाल की प्रेस से जैसा व्यवहार मिल रहा है वैसा देश के किसी अन्य प्रात में नही है। हम अपने लोगों को नीचा दिखाते हैं और फिर स्वय को कोसते हैं। आपने देखा होगा कि अन्य प्रातों के पत्रकारो ने अपने लोगों की छवि कैसे निर्मित की है। मैं अपने ही विषय में कह सकता हू कि, 1927 और 1928 के कुछ महीनों के अलावा, मुझसे भी अधिक सहयोग प्राप्त नही हो पाया। और मेरे पिछले बारह तेरह वर्षों के लोक जीवन के दौरान बगाल की राष्ट्रीय प्रेस ने मेरे साथ जो दुर्व्यवहार किया वैसा तो ब्रिटिश पत्रकारो के हाथों भी नहीं हुआ। ब्रिटिश उत्पीडन

ने मुझे हानि नहीं पहुचाई बल्कि मेरे देशवासियो की दृष्टि में मुझे ऊचा ही उठाया है इसके विपरीत राष्ट्रीय प्रेस के अत्याचारों ने मुझे मेरे देशवासियो की नजर मे गिराया ही है। मुझे इसका दुख नहीं है। मेरी चिता केवल आनदबाज़ार पत्रिका के महात्मा गाधी के प्रति अपनाए गए रवैये को लेकर है-वही रवैया बंगाल के लोगों के प्रति क्यो नही? खैर। इस विषय को यहीं छोड दें।

एक और टिप्पणी के साथ मैं समाप्त करूगा। मैं जवाहरलाल नेहरू को समझ नही पा रहा-वे एक ही समय पर गाधीवाद और साम्यवाद का समर्थन कैसे करत हैं मेरी समझ से परे है। पिछले वर्ष जून में लदन के अपने भाषण मे मैंने अपनी राय जाहिर की थी। हाल ही मे भारतीय प्रेस के लिए अपनी सम्मति भेजी। मैं नही जानता कि वह प्रकाशित भी होगी या नहीं। मैं नही जानता, कि आप इसे अभिमान भी कह सकते हैं, किंतु मेरा पूर्ण विश्वास है कि, जिस मार्ग का संकेत मैंने दिया है उसके अतिरिक्त कोई मार्ग सम्मुख नही है। एक-न-एक दिन तो हमारे देशवासियो को यह मार्ग चुनना ही होगा। मेरा मूल उद्देश्य साम्यवादी संघ का निर्माण करना है और साम्यवाद के उद्देश्य लोगो तक पहुचाना है। इस प्रकार जो पार्टी बनेगी वही देश को स्वतत्र करा पाएगी। मेरा आर्दिक स्नेह स्वीकार करे। मेरा स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। आशा है आप सभी स्वस्थ हैं। क्या 'देश' का प्रसारण हो रहा है। आनद बाजार मुझे लगातार मिल रहा है।

आपका शुभाकाक्षी

सुभाष चद्र बोस

किट्टी कुर्टी को,

23, एवन्यू बीयू सेजूर

जिनेवा

23 2 1934

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

विएना से भेजा आपका कार्ड पाकर प्रसन्नता हुई। वास्तव मे मुझे तो आश्चर्य ही हुआ, क्योकि मुझे उम्मीद नही थी कि आप वहा होंगी।

आपका 22 दिसबर का लबा पत्र समय पर मिल गया था जो बहुत दिलचस्प था। मुझे खेद हैं कि मैं पहले उसका उत्तर नही दे पाया।

साम्य का अर्थ बराबरी है और साम्यवादी, का अर्थ है जो बराबरी मे विश्वास रखता है। सघ का अर्थ समूह या सगठन है।

'साम्य' एक बहुत प्राचीन भारतीय विचार है। जिसे ईसा से लगभग 500 वर्ष पूर्व बौद्धों ने प्रचारित किया था। इसीलिए यूरोप मे प्रचारित अन्य नामों की अपेक्षा यह मुझ

अधिक प्रिय है।

भारत की युवा पीढी में धैर्य नहीं है। मेरी भाति उनका भी विचार है कि गाधी अपने विचारों मे व कार्यो में आवश्यकता से अधिक भले और मध्यमार्गी हैं। हम अधिक परिवर्तनकारी आक्रामक नीति में विश्वास करते हैं। नेहरू के विचार हमारे पक्ष मे अधिक हैं। किन्तु व्यवहारिक रूप मे वे महात्मा गाधी को समर्थन देते हैं। उनका मस्तिष्क उन्हे एक ओर खीचता है किंतु हृदय दूसरी ओर आकर्षित करता है। हृदय से वे गाधी के साथ हैं।

मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी यदि आप मुझे वे सभी लेख भिजवा सके जो आपने भारत के सबंध में यूरोपीय पत्रों में पढ़े हैं।

मेरे विचार मे जापानी पूर्व के अग्रेज हैं। एक जाति के रूप मे चीनी अधिक अच्छे हैं, क्योंकि वे मानवीय, दयालु और सुरुचिपूर्ण हैं।

आप जानना चाहती हैं कि मैंने क्या-क्या पढा है। पहले मैंने दर्शन-जिसे इग्लैंड मे मनोविज्ञान एव नैतिक विज्ञान कहते हैं पढ़ा है। उसके पश्चात मैंने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा पास की, जिसके लिए मुझे अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, भूगोल, विधि आदि जैसे कई विषयों का अध्ययन करना पडा। बाद मे मैंने सेवा से त्यागपत्र दे दिया, क्योंकि मैं विदेशी सरकार की सेवा करना नही चाहता था।

मनोविज्ञान मे मेरी बहुत रुचि थी अत. कुछ समय तक मैंने प्रायोगिक मनोविज्ञान भी पढ़ा। यदि राजनीति मे नही आया होता तो शायद आज एक मनोवैज्ञानिक होता।

एग्नेस स्मैडली की किस पुस्तक की आप चर्चा कर रही हैं? व बहुत योग्य और चतुर लेखिका हैं।

शीघ्र ही मैं आर.आर. से मिलूगा। उनकी बहन से मैं मिला था। वे जिनेवा मे इडियन कमेटी के लिए कार्य कर रही हैं।

अब आपका स्वास्थ्य कैसा है? क्या आपने सुदरलैंड लिखित पुस्तक 'इडिया इन बाडेज' पढी है?

पहले की अपेक्षा मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है, किंतु पूर्ण स्वस्थ नही हू। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च :- कृपया विएना के समाचार दें। चेक प्रेस के लिए मुझे किस विषय पर लेख लिखना चाहिए?

सतोष कुमार बासु, मेयर, कलकत्ता को,

14.3.34

प्रिय मेयर साहब,

आशा है आपको मेरा, क्लिनिक ला लिग्नीयर स्विटजरलैंड से 19 अक्तूबर को लिखा, पत्र समय पर मिल गया होगा जिसके साथ मैंने कलकत्तावासियो व मेयर के लिए वारसा के मेयर (प्रेज़ीडेंट) का सदेश और वारसा के सबध में एक ब्रोशर भी भेजा था।

प्राग जाने के बाद पिछली जुलाई में मैं वारसा भी गया था। सिटी हाल मे वाइस प्रेज़ीडेंट (डिप्टी मेयर) ने मेयर की अनुपस्थिति में मेरा स्वागत किया, क्योकि वे उन दिनो गर्मियो की छुट्टियों में शहर से बाहर थे। अतरग बातचीत के बाद उनके कमरे मे चित्र भी खीचा गया जो बाद मे पोलिश अखबार मे प्रकाशित भी हुआ और जिसकी प्रति मैंने 19 अक्तूबर के पत्र के साथ प्रेषित भी की थी।

पहले रूसी पोलैंड की राजधानी वारसा थी। पिछले युद्ध के बाद स्वतत्र सयुक्त राज्य पोलैंड का गठन हुआ और नए पोलैंड की राजधानी वारसा बनी। पोलैंड स्वतत्रता की उत्साह से वारसा शहर की प्रगति को बहुत लाभ हुआ। पिछले चौदह वर्षों मे शहर ने बहुत प्रगति की और चारों ओर शानदार इमारतें बनी हैं। वारसा की सडको पर चलने से नए जीवन की उमग का अनुभव होता है।

शहर की इतनी उन्नति एवं प्रगति से नगर निगम पर काफी दबाव रहा है। मेयर की कृपा से मुझे निगम के कार्यों को देखने की सुविधा प्राप्त हुई। उन्होंने अंग्रेज़ी बोलने वाले अधिकारी व अन्य सुविधाएं मुझे मुहैया करा दी थी।

यह देख कर बहुत प्रसन्नता हुई कि नगर निगम और सरकार दोनो ही आपसी सहयोग से कार्य कर रहे हैं। जिस पहली चीज़ ने मुझे आकर्षित किया वह यह थी कि जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ जलापूर्ति की बढती माग को पूरा करने के लिए इंजीनियरिंग कार्य हो रहा है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वारसा की मुख्य नदी विस्तुला को बाधा जा रहा है। यूरोप के अन्य शहरो में मैंने देखा बिजली, गैस, यातायात आदि जैसे जनोपयोगी साधनो की देखभाल नगरपालिका के नियत्रण मे है। हाल ही मे शहर की आवश्यकता को देखते हुए, गैस सयत्र का नवीनीकरण एव वृहदीकरण हुआ है जिसे देखकर मुझे बहुत अच्छा लगा। सभी कार्य पोलैंड के इंजीनियर्स व अधिकारियो द्वारा किया गया है और जहा तक सभव था मशीनरी भी पोलैंड की ही निर्मित थी। नगर निगम के अधिकारियों के आत्मविश्वास ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

युद्ध के बाद से वारसा को जनसख्या दस लाख के लगभग बढ़ी है और अब लगभग पद्रह लाख के करीब है। दूसरे शब्दो मे कलकत्ता की जनसख्या के आस-पास पहुच रही है। फिर भी मैंने अनुभव किया है कि निगम की आय कलकत्ता की अपेक्षा वारसा मे अधिक है। इस सदर्भ मे मुझसे कुछ निगम अधिकारियो ने प्रश्न भी किए और मुझे उन्हे बताना पडा कि कलकत्ता मे कुछ लोक उपयोगी विभाग निगम के अधीन नही है अतः हमारी आय वारसा की आय की अपेक्षा कम प्रतीत होती है।

वारसा मे मैं निगम बेकरी भी देखने गया जो शायद पोलैंड, बल्कि पूरे यूरोप मे अपन किस्म को सबसे बड़ी बेकरी है। आधुनिक उपकरणो से युक्त इस बेकरी मे प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में डबलरोटी बनती है जो शहर की जनसख्या की एक तिहाई माग की आपूर्ति कर सकती है तथा आपात स्थिति में आपूर्ति बढाकर आधी जनसख्या की पूर्ति की जा सकती है। दूसर शब्दों मे निगम बेकरी सामान्यत:, इतनी डबलरोटी का उत्पादन करती है कि 5 लाख लोगो को बिना किसी कठिनाई के डबलरोटी उपलब्ध कराई जा सकती है।

जिम अन्य सस्था ने मुझे प्रभावित किया वह थी वारसा की शारीरिक एव सांस्कृतिक सस्था, जो यूरोपभर मे सबसे बडी सस्था है। कम अवधि में युवा पीढी के स्वास्थ्य निर्माण की आवश्यकता की पूर्ति के कारण इस विशाल सस्था का निर्माण सभव हुआ। शारीरिक प्रशिक्षण का सारा कार्य चिकित्सकीय-वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है और यहा एक प्रयोगशाला व अनुसधानशाला भी है। प्राधिकरण की योजना यहा अन्य सुविधाओ स युक्त एक विशाल स्टेडियम क निर्माण की भी है जहा भविष्य मे अतर्राष्ट्रीय ओलपिक खेलो का आयोजन भी हो सके। इसे देख कर मुझे उस योजना की याद आई जो कलकत्ता मे निगम स्टेडियम और शारीरिक सास्कृतिक सस्था के निर्माण के लिए तैयार की गई थी।

मेरी वारसा यात्रा का अंत वारसा के ओरिएटल इस्टीट्यूट द्वारा किए गए स्वागत समारोह स हुआ जिसमे गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे । मैंने उनके स्वागत का यथायोग्य शब्दो मे उत्तर दिया। सभी स्थानों पर गर्मजोशी से किए गए मेरे अभिनदन से मैं बहुत प्रभावित हुआ और लोगों में भारत एव भारत की सस्कृति के प्रति रुचि ने भी मुझे प्रभावित किया। सस्कृत के विद्वान-प्रो मिकाल्सकी से भेट करने का सुअवसर भी मिला। कुछ लोगों ने तो मजाक में यहा तक भी कहा कि यूरोप के लोगो मे पोलिश भाषा की अपेक्षा सस्कृत के प्रति अधिक रुचि हैं।

कुल मिलाकर मेरी यह यात्रा मेरे लिए बहुत उत्साहवर्द्धक थी। यह देखकर मुझे अनुभव हुआ कि वर्षों से दबाए गए लोग भी, समय आने पर कितनी उन्नति कर सकते हैं और यदि उन्हें अवसर प्रदान किए जाए तो वे अपनी जिम्मेदारियो को पूरा करने के लिए ऊपर उठकर कार्य भी कर सकते हैं। लोक उत्थान की दृष्टि से यूरोप भर मे वारसा को सबसे उत्तम शहर की सज्ञा दी जा सकती है। आधुनिक शहरो मे जब तेजी से विस्तार होता है-जैसा कि पिछले दिनों कलकत्ता का हुआ-तब सामने आनेवाली समस्याओ का निराकरण किस प्रकार किया जा सकता है, के अध्ययन के लिए वारसा शहर के अध्ययन से अच्छा अन्य कोई स्थान नही है। सभी उच्चाधिकारियों ने मुझे आश्वासन दिया कि यदि कलकत्ता में समस्याओ के निराकरण हेतु आवश्यकता महसूस की गई और उनकी सेवाओ की आवश्यकता महसूस हुई तो वे सहर्ष सहायता प्रदान करेंगे।

मेयर साहब मुझे आशा है कि वारसा के निगम द्वारा आपको एवं कलकत्तावासियो को भेजी गई शुभकामनाओं सहित मैं,

आपका शुभेच्छु
सुभाष चद्र बोस

14 मार्च, 1934

कांतिलाल पारीख को,

म्यूनिख
24 3 1934

प्रिय कांतिलाल,

एक लंबे समय से तुम्हारा कोई समाचार नहीं। अब तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? मुझे पता चला है कि आजकल तुम अहमदाबाद में हो। कृपया शीघ्र मुझे निम्न पते पर पत्र लिखो–द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, विएना (अथवा जिनेवा)

21 मार्च को मैं यहा आ गया था। अप्रैल के मध्य तक मैं विएना मे ही रहूगा।

स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा बेहतर है, यद्यपि प्रगति बहुत धीमी है। आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ हैं।

तुम्हारा अपना
सुभाष

नाओमी सी वैटर को,

ईडन होटल
बुडापेस्टर स्ट्रीट
बर्लिन
30 3 1934

माननीय प्रेज़ीडट वेटर
व्हरिंगर स्ट्रासे-41
वीयन-9
(आस्ट्रिया)

प्रिय श्रीमती वेटर,

ईस्टर के उपलक्ष्य मे हार्दिक शुभकामनाए स्वीकार करें। प्रेज़ीडेट वेटर तक शुभकामनाए पहुचा दे।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी बोस

सी आर. प्रूफर को,

ईडन होटल
बर्लिन
5 अप्रैल, 1934

मिनिस्टीरीयलरट सिकोफ
आस्वेटिग्स एमट
विहलमस्टर 74-76

प्रिय महोदय,

मैं आपको ज्ञापन की प्रति, जिसमें मैंने जर्मनी व भारत के संबंधों पर भाषण दिया था, की प्रति भी शामिल है, भेज रहा हूं। आशा है आप इस विषय पर गंभीरता से विचार करेंगे।

सादर,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जर्मनी और भारत

जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी के शासन के पश्चात, कुछ तथ्य उभरे हैं। जिन पर यदि जर्मनी व भारत के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंधों की स्थापना करनी है, तो विचार करना आवश्यक है। ये तीन तथ्य हैं।

1. पिछले बारह माह के दौरान भारत के प्रति जर्मन प्रेस का रवैया।

2. भारत के संबंध में जर्मनी के नेताओं की टिप्पणियां।

3. जर्मनी में आजकल चल रहा जाति-प्रचार।

1. राष्ट्रीय समाजवादी क्रांति से पूर्व, जर्मनी के पत्र-पत्रिकाओं में कई लेख प्रकाशित हुए, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के प्रति सहानुभूतिपूर्वक लिखा। अब वैसे लेख प्रकाशित होने बंद हो गए हैं। संभव है जर्मन अधिकारियों को महसूस हुआ कि भारत के पक्ष में लेख प्रकाशित करने से ग्रेट ब्रिटेन नाराज हो जाएगा, जिसके साथ आजकल जर्मनी संबंध स्थापित करने को उत्सुक है। यद्यपि भारत के पक्ष में लेख प्रकाशित करने बंद किए जा चुके हैं, जबकि म्यूनकेनर न्यूसे नखरिख्तन, कोरेडल, कोलनिशे जीतुग, कोलनिशे

इलस्ट्रेर्ट, दास हौस तथा ऐसे ही कुछ अन्य पत्र भारत विरोधी लेख प्रकाशित कर रहे हैं, जिनसे जर्मनी के लोगो के बीच भारतीय लोगों की अवमानना होती है और छवि बिगडती है और यह सब उस समय हो रहा है जब जर्मन प्रेस पर पूर्णत: सरकार का नियत्रण है।

पिछले वर्ष जब मैं बर्लिन में था तब मैंने हिटलर (मीन काम्फ) तथा एल्फर्ड रोजेनवर्ग (माइथोज ऑफ द ट्वैंटीएथ सैंचुरी) जैसी महान हस्तियों द्वारा अपनी पुस्तको व अन्य लेखो मे भारत के प्रति दुर्भावनापूर्ण रवैया अपनाने से, पडने वाले दुष्प्रभावो की तरफ सरकार का ध्यान आकर्षित किया था। किंतु 20 फरवरी, 1934 के लदन के डेली मेल मे प्रकाशित जनरल गोरिंग के साक्षात्कार में महात्मा गाधी के सबध में की गई टिप्पणी से स्थिति और खराब हुई है। इस साक्षात्कार मे जनरल गोरिंग ने श्री गाधी को ब्रिटिश विरोधी बोल्शेविक एजेट बताया है और कहा है कि उन्होंने कई वर्ष पूर्व श्री गाधी के सहयोगी से मिलने से मना कर दिया था। श्री गाधी को बोल्शेविक एजेट बताना बिल्कुल गलत है और इस तथ्य से सभी वाकिफ़ हैं कि श्री गाधी साम्यवादियो से घृणा करत हैं, वे चाहे भारतीय हो या विदेशी। भारत से अनेकों मित्र मुझे लगातार पत्र लिखकर पूछ रहे हैं कि भारत ने तो जर्मनी को कोई हानि नही पहुचाई फिर जर्मनी की हिटलर जैसी महत्वपूर्ण हस्तिया भारत के विरुद्ध क्यो हैं? इन प्रश्नो का जवाब देने में मैं असमर्थ हू, क्योंकि जर्मन नेताओ ने स्वय भारत के प्रति अपना रुख अभी तक स्पष्ट नही किया है।

भारत और जर्मनी के मैत्रीपूर्ण सबधो को सबसे ज्यादा खतरा जर्मनी द्वारा फैलाए जा रहे जाति-प्रचार के प्रभाव से उत्पन्न हुआ है। एक सप्ताह पूर्व जब मैं मुनेकन की सडक पर घूम रहा था तो जर्मनी के कुछ बालकों ने मुझे 'नीगर' कहकर सबोधित किया। यहा के भारतीय विद्यार्थियों ने भी मुझे बताया कि उन सबको भी जर्मन बच्चे 'नीगर' कहकर ही पुकारते हैं। इसके अतिरिक्त वैसे भी आजकल जर्मनी का रुख भारत के प्रति पहले जैसा मैत्रीपूर्ण नही रहा है। ऐसा ही अनुभव बर्लिन में रह रहे भारतीयों का भी है, किंतु मुनकेन में स्थिति बहुत खराब है जहा कुछ अवसरों पर भारतीय विद्यार्थियो ने यह भी अनुभव किया है कि जब बच्चों ने भारतीय विद्यार्थियों के प्रति ऐसा रुख अपनाया तो उनके माता-पिता या सरक्षको ने उन्हें डांटने-फटकारने या मना करने की जगह उत्साहित ही किया। सभी भारतीयो की राय है कि जर्मनी के स्कूलों व कालेजो में चल रहे वर्तमान जाति-प्रचार के कारण भारतीयों के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न हो रहा है। इससे पहले तो जर्मनी में कभी ऐसा वातावरण नही रहा।

मैं आप लोगो का ध्यान नेशनल सोजियलिस्टिक स्ट्राफ्रेख्ट मे विधि मत्रालय द्वारा छापे गए प्रारूप की ओर दिलाना चाहूंगा जिसमें कहा गया है कि यहूदी, नीग्रो और कालो के विरुद्ध नियम विचाराधीन है। जर्मनी में रह रहे भारतीयों की राय है कि यदि यह प्रारूप नियम बन जाता है तो राष्ट्र के रूप में भारत की स्थिति सदा के लिए जातिहीनता की हो जाएगी। इस कारण यह प्रारूप भारतीयों के लिए पर्याप्त चिंता व विरोध का कारण बना हुआ है।

मेरी राय में यदि जर्मनी और भारत के मध्य मैत्रीपूर्ण सबंधो की स्थापना करनी है

तो निम्न कदम उठाए जाने चाहिए-

(1) जर्मनी के पत्र-पत्रिकाओं में भारत विरोध पर रोक लगाई जाए।

(2) कुछ जिम्मेदार वरिष्ठ नेताओं द्वारा पूर्व प्रचारित विरोध के प्रभाव को निष्क्रिय करने के लिए, मैत्रीपूर्ण टिप्पणिया की जाएं।

(3) भारतीयों के विरुद्ध प्रस्तावित जातिगत कानून को रोका जाए। जर्मनी के स्कूलों व विश्वविद्यालयों मे जाति-प्रचार समाप्त किया जाए ताकि भारतीयों के विरुद्ध घृणा के भाव पर रोक लग सके।

सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु, मेयर कलकत्ता को,

7 अप्रैल, 1934

महोदय,

मेरी बर्लिन यात्रा व वहा के मेयर (ओबरबर्गर मीस्टर) द्वारा किए गए अभिनंदन के सदर्भ में, यह मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको तथा निगम को वह सब बताऊ जो मैंने वहां के निगम प्रशासन मे देखा।

यद्यपि बर्लिन समतल भूमि पर बसा शहर है इसलिए विएना एवं प्राग जैसी विहगम दृश्यावली से वंचित है, किंतु यहा की खूबसूरत नहरो ने इस कमी को कम कर दिया है, क्योंकि इन नहरों का उपयोग स्नान, नौकायन और अन्य खेलों के लिए किया जा रहा है। शहर के रूप में, सभी की राय में यह बेहद साफ-सुथरा (यूरोपभर का सबसे साफ शहर) शहर है और यह सब यहा के निवासियों की वजह से संभव हुआ है, क्योंकि वे शहर को स्वच्छ और सुंदर रखने में लोक-विभाग को पूर्ण सहयोग देते हैं।

यद्यपि यहा की जनसख्या चालीस या पचास लाख के लगभग है फिर भी वैसी भीड़-भाड़ नही जैसी की अपेक्षा की जा सकती है। इसका कारण यही है कि शहर पूर्णरूप से आधुनिक है और योजना बनाते समय काफी स्थान घेरा गया है। शहर की घनी आबादी को ध्यान में रखकर, जल, गैस और बिजली की आपूर्ति के स्थान केंद्र मे न रखकर, शहर के विभिन्न हिस्सों मे रखे गए हैं। सभी जन उपयोगी विभाग, यातायात सहित, नगर निगम के नियंत्रण में हैं।

कलकत्तावासियों की समस्याओं के सदर्भ में मुझे यहा के जल, मलव्ययन, सडकों

तथा बिजली विभाग जैसे विभागो मे विशेष रुचि थी। मैंने देखा कि जल आपूर्ति की व्यवस्था के लिए बर्लिन के निकट नहरो पर बाध बना दिए गए और साथ ही भूमि के नीचे से, जैसे हम लोग ट्यूबवेल के पानी का प्रयोग करते है वैसे ही, पानी पप करने की व्यवस्था भी की गई। मुझे पता चला है कि शहर मे जल आपूर्ति के लिए ऐसे 13 स्टेशन बनाए गए हैं। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यहा जल-मल व्ययन व्यवस्था के लिए केवल एक निकासी का प्रबध नही, बल्कि कई निकास स्थानो की व्यवस्था है। गदगी व कूडा-कर्कट समाप्त करने के लिए, बडे शहरो के बाहर, आधुनिक ससाधनो के आधार पर उसे जलाने के सयत्र कार्यरत हैं। कूडे को तथा जलाने के बाद बने पदार्थ का खेतीबाडी के उपयोग मे लाया जा रहा है। इतने बडे शहर की यह व्यवस्था, कि वह इस गदगी को नदी या समुद्र मे डाले बिना किस प्रकार खत्म करने मे सक्षम है, दर्शनीय है। इस विधि से उन्हे प्रतिदिन 8,000 क्यूबिक मीटर गैस की प्राप्ति होती है। मुझे बताया गया कि इससे उन्हें मीथेन गैस की प्राप्ति होती है।

सडक निर्माण कार्य के पयोगो के लिए बर्लिन मे आधुनिकतम प्रयोगशालाए हैं। मुझे कुछ प्रयोगशालाओ मे जाकर वहा की कार्यपद्धति को देखने का सुअवसर मिला। प्रयोगशालाओ मे जाने के बाद मैंने वे सडके भी देखी जिनका निर्माण हाल ही मे किया गया था। मैंने देखा कि कक्रीट के ऊपर डामर बिछाकर उनका निर्माण किया गया था। एक वर्ग मीटर कक्रीट और उस पर डामर की परत बिछाने पर, उनका ग्यारह मार्क (लगभग 1 रु) का खर्च बैठता है, इसमे 5 वर्ष तक मरम्मत का खर्च भी शमिल है।

मैंने यहा के जनसाधारण के लिए बनाए गए स्नानागारों (विशेष रूप से वैनसी-लेक के स्नानागार) तथा शहर के मुख्य अस्पतालो का भी निरीक्षण किया।

मानसिक रोगियो के लिए बने गृह तथा विकलागों की देखभाल के लिए बने सस्थानो को देखने मे मेरी विशेष रुचि थी और मैंने अनुभव किया वहा उनकी देखभाल तथा शिक्षा के लिए आधुनिकतम विधियो का प्रयोग हो रहा है।

बिजली आपूर्ति के लिए वहा कम से कम सात स्टेशन हैं। कुछ बडे-बडे स्टेशनो को देखने मैं भी गया। विद्युत केद्र के बायलरों मे केवल भट्टिया ही नही बल्कि राख की भट्टियों की भी व्यवस्था की गई है, और उन्होने मुझे बताया कि चूकि राख बहुत उपयोगी है, इसलिए वे इसको भी प्रयोग में लाते हैं।

कुल मिलाकर मेरी यात्रा बहुत दिलचस्प और ज्ञानवर्धक रही। मेयर साहब की मुझ पर बहुत कृपा रही कि उन्होंने मेरे लिए सब व्यवस्था कर दी। बर्लिन के श्री वोन हेव ने मेरा हर जगह साथ दिया। मुझे विश्वास दिलाया गया कि आवश्यकता पडने पर कलकत्ता की समस्याओं को सुलझाने में बर्लिन नगरपालिका अपना पूरा सहयोग देगी।

आशा है आपको तथा कलकत्तावासियो को बर्लिन के मेयर द्वारा भेजे गए सदेश का आप उपयुक्त उत्तर दे चुके होगे।

सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

होटल एक्सैल्सियर
रोमा
बुद्धवार
25.4 1934

प्रेजीडेंट वैटर साहब,

वहरिंगर स्ट्रीट-41
विएन-9
(आस्ट्रिया)

प्रिय श्रीमती वैटर,

अपनी यात्रा के दौरान मैं फलोरेंस में रुका और कल यहा पहुचा हूं। शुक्रवार तक विएना पहुचने के लिए मैं अपना कार्य पूर्ण नही कर पाऊगा। इसलिए सोमवार की सुबह तक विएना अवश्य पहुच जाऊगा। मेरे विचार से डा. वैटर अभी विएना छोडकर गए नही होगे। यदि वे जा चुके हैं तो आप अकेली होगी। आपकी पुत्री लदन से कब लौट रही है। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

बुडापेस्ट
11 5.1934

ग्राड होटल
हगेरिया
बुडापेस्ट

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका पत्र पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। इतनी तत्परता से पत्रों के उत्तर देने के लिए व उदार विचारों के प्रति आभारी हूं।

यहा पहुंचने के बाद से, एक मिनट भी आराम नही कर पाया हू। मौसम बहुत गर्म है और मेरा स्वास्थ्य भी ठीक नही है। यदि ऐसा ही रहा तो लगता है मैं अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पाऊगा। बहुत थकान महसूस करता हू और दिनभर का कार्य करने के पश्चात इतनी शक्ति नही रह जाती कि कुछ कार्य करू। सिवाय आराम करने के

कुछ नही कर पाता।

कल बुखारेस्ट के लिए निकलूगा और 5-6 दिन होटल कांटीनेंटल मे ठहरूगा।

बुडापेस्ट बहुत पसद आया। सुदर दृश्यावली से युक्त आकर्षक स्थान है। यहा के लोगो के बारे मे राय व्यक्त करना जल्दबाजी होगी।

आपकी क्या योजना है? क्या जून के प्रारभ तक आपका विएना मे रहने का विचार है?

यदि मैं अपना कार्यक्रम पूरा कर पाया तो भी 25 मई से पहले बल्कि कुछ दिन बाद ही विएना नही पहुच पाऊगा।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

शुभाकाक्षी

सुभाष सी बोस

नाओमी सी वैटर को,

एथनी पैलेस होटल
94, काबा विक्टोरियल
बुखारेस्ट

बुखारेस्ट
18 5 1934
शुक्रवार, रात्रि

प्रिय श्रीमती वैटर,

पिछले रविवार मैं बुडापेस्ट से यहां पहुचा हू। यहा बहुत व्यस्त रहा हू। बुडापेस्ट की भाति ही मौसम गर्म है और थकान महसूस कर रहा हू। पता नही विएना मे आपको यह पत्र मिलेगा भी या नही।

कल प्रातः वायुयान से कास्टेंटीनोपल (इस्ताबुल) जाऊगा। रेलमार्ग सुविधाजनक नही है, इसलिए वायुयान से जाने का विचार बनाया है। वहा पीरा पैलेस होटल, इस्ताबुल, टर्की मे रुकने का विचार है। जब विएना से रवाना हुआ था तब इस्ताबुल जाने का कोई विचार नही था, वहा जुलाई में जाना चाहता था। लेकिन बुखारेस्ट आने के पश्चात मुझे महसूस हुआ कि मैं अभी इस्ताबुल के इतने पास हू और बाद मे यूरोप के इस भाग तक पहुचना मेरे लिए कितना कठिन होगा। अत: मैंने अपना विचार बदल लिया। अब की योजना के अनुसार मैं इस्ताबुल से सोफिया (बुल्गारिया) फिर वहा से बैल्ग्रेड और जगरेब जाऊगा।

मुझे आशा है इस्ताबुल पहुच कर आपका पत्र मिलेगा। वही से मैं आपको पुनः पत्र लिखूगा। यहा से बस यही। शुभकामनाओ सहित।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष सी. बोस

नाओमी सी वैटर को,

पेरा पैलेस होटल
इस्तांबुल
21.5.1934

पेरा पैलेस ओटेली
इस्ताबुल (टर्की)

प्रिय श्रीमती वैटर,

बुखारेस्ट से यहा 19 तारीख को वायुयान से पहुचा। अचानक यहा आने की योजना बनी, क्योंकि मुझे लगा कि पुनः इस दिशा मे आना सभव नही होगा।

इस्ताबुल के विषय में मुझे बहुत सी आशाए थी, किंतु यहा पहुच कर घोर निराशा हुई। इसे देखकर एक ऐसे राज्य का आभास होता है जो जर्जर हालत मे हो। पूर्व जैसा आकर्षण नही है और पश्चिम जैसी धन सपदा भी नही। किंतु मुझे आशा है कि अगोरा (*अकारा*) भिन्न होगा। क्योंकि टर्की के नए शहर की तुलना कास्टेटीनोपल से नही बल्कि अगोरा से है।

यहा से अगोरा जाऊगा और रास्ते मे सोफिया तथा बैल्ग्रेड रुकता हुआ वापिस विएना पहुचूगा। दुख है कि मेरी विएना वापसी में देरी हो रही है।

आपकी क्या योजना है? कब तक विएना में रुकने का विचार है? कृपया उपरोक्त पते पर पत्र लिखें।

शुभकामनाओ सहित,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष सी. बोस

नाओमी सी वैटर को,

सोफिया ले- 29.5 1934

ग्रैंड होटल
बुल्गारिया
सोफिया बुल्गारिया,

प्रिय श्रीमती वैटर,

मैं इस्ताबुल से पिछले बुधवार को यहा पहुच गया था। पूरा सप्ताह बहुत व्यस्त

रहा। सोफिया इस्ताबुल की तरह गदा नही बल्कि सुदर शहर है-मुझे बहुत पसन्द आया। लोग भी बहुत मिलनसार हैं।

आज रात बेल्ग्रेड के लिए रवाना हो रहा हू। मेरा वहा का पता होगा–

होटल सरबस्की क्राल्ज

बैल्ग्रेड

लगभग एक सप्ताह वहा रहूगा। जब से बुडापेस्ट से चला हू आपका एक भी पत्र नही मिला।

साथ मे आपकी बुडापेस्ट से भेजे गए पत्र की रसीद है। शुभकामनाओ सहित।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष सी बोस

नाओमी सी वैटर को,

होटल सरवस्की क्राल्ज
बल्ग्रेड
3 6 1934
रविवार

प्रिय श्रीमती वैटर,

पिछले बुधवार मैं सोफिया से यहा पहुच गया था। सोफिया और यहा दोनो जगह अच्छा समय व्यतीत हुआ। बलकान प्रदेश बहुत दिलचस्प स्थान है।

6 तारीख की सुबह मैं जगरेब के लिए रवाना होऊगा और चार दिन होटल एस्पलेनेड जगरेब मे रहूगा। वहा से विएना वापिस लौटूगा। यदि जगरेब में आपके कुछ लोग परिचित हो तो उन्हे मेरे विषय मे लिख दें।

प्रेजीडेट वैटर आजकल कहा है और कैसे हैं? वे वापिस विएना कब आ रहे हैं? डाल्मेशन कोस्ट पर उनका समय कैसा बीता? आपकी क्या योजना है? कब तक वहा रहने का विचार है।

मुझे लगता है मेरे पत्र कही इधर-उधर हो गए, क्योकि जबसे मैंने बुडापेस्ट छोडा है आपका कोई पत्र नही मिला।

आशा है आप पूर्णत: स्वस्थ हैं। क्या सुश्री वैटर लदन से वापिस आ गई? शुभकामनाओ सहित।

आपका शुभेच्छु
सुभाष सी. बोस

अजित कुमार देव को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
विएना
12 6 1934

आदरणीय अजित बाबू,

आपका 17 मई का पत्र जिसमें श्री प्रभुदयाल ने भी कुछ पक्तिया लिखी हैं, पाकर प्रसन्नता हुई। मैं भोलानाथ दत्त के लिए तत्काल सदेश प्रेषित कर रहा हू। क्या आप यह उन तक पहुचा देंगे। इस समय मैं यह निर्णय नही कर पा रहा कि सदेश सही भी है या नही। शब्द सयोजन ठीक नही हैं। अतः कृपया एक प्रारूप एव विचार भेजे ताकि पता लगे कि मुझे क्या लिखना चाहिए।

जुलाई के अत तक मैं विएना मे ही रहूगा। मेरे चिकित्सकों की राय है कि पिछले वर्ष की अपेक्षा अब काफी प्रगति है, किंतु कुछ माह अभी इलाज और चलेगा।

जानकर प्रसन्नता हुई कि अमि ने प्रथम डिविजन मे परीक्षा उत्तीर्ण की है। आशा है कि बी एस-सी करेगा और बी ए करने की गलती नही करेगा।

कृपया प्रभुदयाल बाबू तक मेरी शुभकामनाए पहुंचा दे। आपको भी शुभकामनाए। पिछले दो वर्षों के दौरान मैंने बहुत लबी यात्रा की है और चेकोस्लोवाकिया, हगरी, रोमानिया, बुल्गारिया, यूगोस्लाविया आदि देशो मे गया। श्रीमती देव को नमस्कार और आपके माता-पिता को प्रणाम।

आपका अपना
सुभाष

सत्येंद्र नाथ मजूमदार को *

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
विएना
5 7 34

श्री सत्येंद्र नाथ मजूमदार,

प्रिय मित्र,

एक लबे समय से तुम्हें पत्र नही लिख पाया। कृपया क्षमा करो। लगभग तीन माह विभिन्न देशों की यात्रा के पश्चात तीन सप्ताह पूर्व ही यहा पहुचा हू। अगस्त के अंत तक यही रहूगा। पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य अच्छा है। किंतु अभी पूर्णतः स्वस्थ नही हो पाया हू। अभी भी कभी-कभी पेट मे दर्द होने लगता है। अगले दो-तीन माह तक लगातार उपचार करवाऊगा। पिछले एक सप्ताह से शार्ट-वेव थैरपी करवा रहा हू-बाकी

* मूल बगला से अनूदित

इलाज भी साथ-साथ चल रहा है, किंतु अभी तक कोई विशेष लाभ नहीं पहुचा है।

देश की दशा पर कुछ कहना और लिखना चाहता हू। किंतु इतनी देर रह कर अपने विचार व्यक्त कर पाना आसान नहीं। फिलहाल इस कोशिश से दूर ही हू।

फिलहाल मैं 1920 से 1933 के मध्य घटी घटनाओं पर पुस्तक लिख रहा हू। यह पुस्तक लंदन में प्रकाशित होगी, मुझे एक अच्छा प्रकाशक मिल गया है। क्या इस अवधि की घटनाओं पर कोई पुस्तक उपलब्ध है? मुझे सभी घटनाएं व तिथिया ठीक से याद नहीं है, इसलिए मुझे एक दो पुस्तकों की आवश्यकता महसूस हुई। यदि आप कुछ शीर्षक सुझा सकें तो मुझे हर्ष होगा। आशा है सभी स्वस्थ हैं। निगम मे कब तक सघर्ष चलता रहेगा। देश के काग्रेस कार्यकर्ता क्या कर रहे हैं? वे विद्रोह क्यों नहीं करते? अब यहीं समाप्त करता हू। कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चंद्र बोस

ए.सी.एन नांबियार को,

पीटर जार्डन स्ट्रीट-28/1
विएन-19
10.7.34

प्रिय श्री नाबियार,

तुम्हारी दीर्घ चुप्पी का कारण समझ नहीं पा रहा। उपरोक्त पते से मैंने पहले भी तुम्हें पत्र लिखा था। अगस्त के अंत तक यहीं रहूंगा। मुझे यहां इलाज करवाना (शार्ट-वेव थेरेपी) है तथा लंदन के प्रकाशक के लिए 1920 से 1933 के मध्य तक की भारत की घटनाओं पर पुस्तक भी लिखनी है। इसलिए मैंने एक भारतीय मित्र के साथ मिलकर उपरोक्त पते पर एक फ्लैट ले लिया है।

पजाब के एक मित्र, श्री शेर सिंह कल प्रातः प्राग जा रहे हैं। मैंने उन्हें अपने नाम से तुम्हें एक तार भेजने को कहा है जिसमें तुम्हें स्टेशन पर मिलने को कहा है। वे कल 1 बजे वहा पहुंचेंगे। मैंने उन्हें पैलेस होटल में ठहरने का सुझाव दिया है। वे केवल एक दिन वहा रुकेंगे।

ड्रेसडन से श्री एस.सी. राय व श्री चटर्जी ने दो फरमाइशें की हैं-

1. श्री एस.सी. राय (इजीनियरिंग)

वे ड्रेसडन में इजीनियरिंग के विद्यार्थी हैं। वे एप्रेंटिस के रूप में कॉटन मिल

और फिर बाद में आर्टिफिशियल सिल्क मिल में कार्य करना चाहते हैं। चेकोस्लोवाकिया एक उन्नत देश है। क्या आप इसका प्रबंध कर सकते हैं। जो भी हो कृपया श्री राय को सूचित कर दें। उनका पता है-श्री एस.सी. राय, नूरनबर्गर, स्ट्रीट 31, ड्रेस्डन ए-24।

2 श्री एन.सी चटर्जी *(फिजिक्स)*

म्यूनिख की ड्यूश्चे अकादमी से वजीफा पा रहे हैं। भारत से एम.एस-सी. करने के बाद ड्रेस्डन में पी.एच-डी. कर रहे हैं। उनके प्रोफेसर डा. डी-----(पढ़ पाना कठिन है) को नौकरी से निकाल दिया गया क्योंकि वे यहूदी थे और नए प्रोफेसर डॉ तोममाश्क (3) ने उनके पूर्व कार्य का रद्द कर दिया और नए सिरे से शुरूआत करने को कहा है। जिसका अर्थ है कि अब उन्हें लगभग डेढ़ वर्ष ड्रेसडन में और अधिक रहना पड़ेगा। इसके इलावा ड्यूत्से अकादमी ने वजीफा भी रोक दिया है?

1 क्या प्राग में उन्हें अध्ययन और अनुसधान की सुविधा मिल सकती है?

2. क्या वजीफा, निःशुल्क शिक्षा और रहने-सहने के स्थान आदि का प्रबंध हो सकता है। श्री चटर्जी एक भद्र पुरुष हैं। उनका पता है। एन.सी चटर्जी, लिडेनन स्ट्रीट, 32/1, ड्रेसडन,

कृपया इन दोनों मसलों को यथाशीघ्र सुलझाने का कष्ट करें।

जब मैं पिछली बार प्राग में था तो मैंने अपने फोटो की सात प्रतियों (छः अपने लिए और एक डा. शर्मा के लिए) की मांग की थी और मेरा ख्याल है इसके लिए मैं 150 क्रो आपके पास छोड आया था। आपने इस विषय में क्या किया ?

आपका अपना
सुभाष चन्द्र बोस

वी. लैस्नी को,

पीटर जार्डन स्ट्रासे 28/1
विएन-19
25 7 34

प्रिय प्रोफेसर साहब,

जर्मनी में कई भारतीय विद्यार्थी प्राग के बारे में बहुत से प्रश्न पूछते हैं। शायद वे आप को भी लिख चुके हैं। जर्मनी में जहां कही भी मैं गया हर स्थान पर मैंने प्राग के समाज की चर्चा की और आपका पता लोगों को देता रहा हू। हाल ही में ड्रेस्डन के तीन विद्यार्थियों ने मुझे लिखा है कि वे प्राग जाने को उत्सुक हैं। मेरे विचार से वे आपको व श्री नाम्बियार को इस विषय में पत्र लिख चुके हैं। तीनों ही अच्छे

लड़के हैं।

1. श्री चटर्जी, कलकत्ता से एम.एस-सी. पास हैं और फिजिक्स में डाक्टरेट लेना चाहते हैं। पहले वे म्यूनिख की ड्यूत्से अकादमी से वजीफा पा रहे थे जो अब बंद कर दिया गया- है।

2. ड्रेस्डेन के श्री के.पी. झा प्राग से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डाक्टरेट करना चाहते हैं। पिछले तीन वर्ष से वे जर्मनी में अध्ययनरत हैं। मेरी उनसे मुलाकात ड्रेस्डन में हुई और यह बताने में मुझे गर्व महसूस हो रहा है कि वे सच्चरित्र और बहुत परिश्रमी युवक हैं। अभी तक उन्हें दरभंगा के महाराजा से वजीफा मिल रहा था, जो अब बंद हो गया है। वे निःशुल्क शिक्षा और रहने-सहने की व्यवस्था चाहते हैं।

3. ड्रेस्डन के श्री एस.सी. राय इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं। अब वे बिना पारिश्रमिक प्राप्त किए चेकोस्लोवाकिया अपरेंटिस के रूप में कपड़ा मिल या आर्टीफिशियल सिल्क मिल में कार्य करने के इच्छुक हैं। यदि वे आर्टिफिशियल सिल्क मिल में स्थान न पा सके तो सूती कपड़ा मिल में कार्य करना चाहेंगे। चेकोस्लोवाकिया में बहुत सी कपड़ा मिलें हैं, अतः उनके लिए अपरेंटिस के रूप में जगह खोजने में अधिक कठिनाई नहीं होगी।

मैं आपका कीमती समय अधिक नहीं लूंगा। आशा है आप इन युवाओं की सहायता कर सकेंगे। अगस्त के अंत तक मैं उपरोक्त पते पर ही रहूंगा।

शुभकामनाओं सहित,

आपका

शुभाकांक्षी
सुभाष सी बोस

प्रो. डा. लेस्नी
प्राग

सत्येंद्र चंद्र मित्रा को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
विएना
25.7 1934

प्रिय सत्येन बाबू,

आपका छः तारीख का पत्र समय पर मिल गया था। मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं? मेरा संबंध किसी पार्टी से नहीं है, इसलिए मैं किसी भी पार्टी को अपना

नही समझता और मुझे नहीं लगता कि बंगाल में आज मेरी बात का कोई वजन है। मैं अपनी स्थिति के प्रति सचेत तो हूं किंतु अधिक परवाह नही करता। मैं देश की सेवा के लिए वचनबद्ध हूं और यथासंभव अपनी तरह सेवा करूंगा भी। चाहे मैं इस विश्व में अकेला ही क्यों न हो जाऊंगा रोटी के टुकड़े के लिए लड़ने वाली वर्तमान दोनो पार्टियों में से एक भी ऐसी नहीं जिसमें शामिल हुआ जाए। खेद है। यदि मुझे 1929 में ही इस बात का पता चल जाता तो बड़े कष्ट से बच जाता।

मुझे नहीं लगता कि अखिल बाबू की दृष्टि में भी मेरी राय का कोई अर्थ है। आप तो अखिल बाबू को अच्छी तरह जानते हैं। एक बार वे जो निर्णय कर लें उससे उन्हें विचलित कर पाना कठिन है। यहां तक कि सन् 1923 में देशबधु बाबू भी अखिल बाबू को मना नही सके, जबकि उनकी राय थी कि अखिल बाबू को राज्यसभा में शामिल होना चाहिए।

बगाल के राजनैतिक बदियों की ओर से मैं आपके राज्य सभा में किए गए कार्य की सराहना करता हूं। भगवान आपका पथ प्रशस्त करे।

मैं आपकी सहायता करने को कुछ भी कर सकता हूं, किंतु मुझे कलकत्ता की भ्रष्ट पार्टी गत राजनीति से कुछ लेना देना नहीं है। इस स्थिति में मेरे विचार से आपको सच्चे मित्रों की शुभकामनाओं की बहुत आवश्यकता है।

श्रीमती मित्रा को मेरा प्रणाम व आपको प्यार। आपकी पुत्री अब कितनी बडी हो गई है?

पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य अब अच्छा है। किंतु पूर्ण उपचार नहीं हो पाया, दर्द बार-बार हो उठता है, जिसका वर्णन कर पाना संभव नहीं है। मैं पुनः आपरेशन कराने पर विचार कर रहा हू, ताकि सदा के लिए इस दर्द से छुटकारा पाया जा सके।

अपने फालतू वक्त में मैं, भारत में पिछले 14 वर्षों के दौरान घटी घटनाओं के सबध में, लदन के एक प्रकाशक के लिए पुस्तक लिख रहा हू। अगस्त तक यह पुस्तक समाप्त हो पाएगी।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च :- ढ़ाका के बाबू प्रियनाथ सेन ने भी मुझसे उनकी उम्मीदवारी की अनुशसा करने को कहा है। उन्हें भी मैंने ऐसा ही उत्तर लिखा है।

रवींद्रनाथ टैगोर को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
विएन
3 अगस्त, 1934.

माननीय महोदय,

मैं आपको एक विशिष्ट प्रयोजन से कष्ट दे रहा हूं, आशा है असुविधा के लिए क्षमा करेंगे।

आजकल मैं लंदन के एक प्रकाशक के आग्रह पर एक पुस्तक लिख रहा हूं। पुस्तक का विषय है-द इंडियन स्ट्रगल (1920-34), प्रकाशक हैं-विशार्ट एंड कंपनी, 9 जॉन स्ट्रीट, एडल्फी, लंदन, डब्ल्यू सी-2 । अगस्त के अंत तक मैं पुस्तक लिख कर दे दूंगा और अक्तूबर माह में पुस्तक प्रकाशित होने की आशा है। ज्वाइंट सिलैक्ट कमेटी की रिपोर्ट लोगों के सम्मुख आने के साथ-साथ मेरी पुस्तकें भी तैयार हो चुकेंगी। पुस्तक का पहला अध्याय होगा- हिस्टारिकल बैकग्राउंड । अंत के अध्याय में संभावित घटनाओं का उल्लेख किया जाएगा। प्रकाशक को इंग्लैंड व अमेरिका में पुस्तक के अत्यधिक बिकने की आशा है, वह इसके जर्मन व फ्रेंच अनुवाद की व्यवस्था भी कर रहा है। मैं, अंग्रेज़ी के प्रतिष्ठित लेखक से इस पुस्तक की भूमिका लिखवाना चाहता हूं ।

यदि श्री बर्नार्ड शॉ इस पुस्तक के संबंध में कुछ पंक्तियां लिख दें तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। आप इस कार्य में सहायक हो सकते हैं। यदि श्री बर्नार्ड शॉ को आप इस संबंध मे लिख दें तो मैं आपका आभारी रहूंगा। किंतु यदि ऐसा करने में आपको तनिक भी कठिनाई या हिचक महसूस हो तो मैं नहीं चाहूंगा कि अनुरोध किया जाए। यदि आप उन्हें लिखने का निर्णय करें तो कृपया ऐसे लिखें कि अनुकूल परिणाम प्राप्त हो। केवल मेरी प्रार्थना हेतु लिखने का कोई अर्थ नहीं है। जब मैं यूरोप आ रहा था तो आपने श्री रोम्यां रोलां के लिए मुझे एक परिचय पत्र दिया था किंतु वह पत्र ऐसे लिखा गया था जैसे मात्र मेरा मन रखने के लिए लिखा गया हो। परिणामस्वरूप मैं उसका उपयोग नहीं कर पाया और मैंने स्वयं अपने स्तर पर श्री रोलां से पत्र व्यवहार प्रारंभ किया। श्री बर्नार्ड शॉ शायद मेरे विषय में कुछ नहीं जानते । इसलिए उन्हें सही रूप में लिखना ही श्रेयस्कर होगा ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी पुस्तक का खूब स्वागत होगा, क्योंकि प्रकाशक ने मुझसे अग्रिम अनुबंध कर लिया है। रायल्टी की राशि मिलने पर ही मैंने लेखन कार्य प्रारंभ किया है।

सादर प्रणाम,

आपका अपना
सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

पीटर जार्डन स्ट्रीट 28/1
विएन-19
14.8.1934

प्रिय श्रीमती वैटर,

10 तारीख का आपका कार्ड पाकर प्रसन्नता हुई। आशा है पहाड़ों पर आपका अच्छा समय बीता होगा। भविष्य की क्या योजना है?

कुछ नया लिखने को नहीं है। अलग से 'द टाइम्स' की एक प्रति भिजवा रहा हू। आपको पसद आएगी।

अपन कार्य में पूर्णरूप से व्यस्त हूं, किंतु जो कर पा रहा हूं उससे सतुष्ट नही हू। किंतु दूसरा कोई मार्ग नहीं है। अगस्त के बाद शायद कार्ल्सबाद इलाज के लिए जाऊगा। फिलहाल मैं अल्ट्रा वायलेट रेज के उपचार करवा रहा हू (प्रो. न्यूमान के सुझाव पर शार्ट-वव उपचार बद कर चुका हू)। यदि इससे भी लाभ नही हुआ तो इलाज के लिए कार्ल्सबाद जाऊगा या फिर यही आपरेशन करवाऊगा, किंतु कार्ल्सबाद जाने में ही मेरी रुचि अधिक है।

यहा का मौसम साफ नही है। प्राय: बादल छाए रहते हैं और कभी-कभी बरसात भी होती है।

सादर ।

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चद्र बोस

अजित कुमार देव को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी,
विएना
29.8.34

प्रिय अजित बाबू,

आपका 12 जुलाई का पत्र कुछ समय पूर्व मिला।

अपने निजी कार्य हेतु आपको कष्ट दे रहा हूं। शायद आप जानते हो कि आजकल मैं भारतीय स्वतंत्रता सग्राम पर पुस्तक लिख रहा हूं। लदन में मेरे प्रकाशक इस संबंध मे कुछ चित्र चाहते हैं। सबसे जरूरी, यदि संभव हो तो, वालंटियर्स के नेता के रूप में मेरा ड्रेस में एक चित्र चाहते हैं।

ऐसा चित्र 1928 या 1929 में 'लिबर्टी' या 'फारवर्ड' के विशेषाक में प्रकाशित हुआ था। यदि आप यह अंक ढूंढकर मुझे भिजवा सकें तो मैं आपका आभारी होऊंगा। शायद

गोपाल सान्याल इसे खोजने मे आपके सहायक हो सकें, किंतु मैं उन्हे अपने लिए कष्ट देना नही चाहता। लिबर्टी का प्रकाशन सभवत: मई (2) 1929 मे प्रारभ हुआ और यह चित्र शायद दिसंबर 1928 में खींचा गया था। अत: लिबर्टी या फारवर्ड में इसका प्रकाशन सभवत: दिसबर 1928 या 1929 में ही हुआ होगा।

एक और मेरा चित्र (बड़े आकार मे) पोशाक में कांग्रेस कार्यालय का था। यह चित्र घोड़े पर बैठकर खिंचवाया गया था। यदि उस चित्र को ढूढकर उसकी फोटोग्राफिक प्रति बनवाकर मुझ तक भिजवा पाए तो आपका आभारी रहूंगा। यह चित्र उसकी अपेक्षा अच्छा है। किंतु कांग्रेस कार्यालय के मूल बड़े आकार के, चित्र की फोटोग्राफिक प्रति ही निकलवानी पड़ेगी।

मैंने अशोक को भी पत्र लिखा है कि वह प्रयत्न कर मुझे महात्मा गाधी, सी, आर. दास तथा लालाजी, पंडित मोतीलाल आदि जैसे प्रमुख नेताओं के चित्र भिजवा दे। यदि आप ये चित्र उपलब्ध कर भिजवा सकें तो मुझे प्रसन्नता होगी। जब मैंने अशोक को पत्र लिखा था तब नही जानता था कि प्रकाशक को मेरे चित्र की भी आवश्यकता पड़ेगी, इसीलिए मैंने उन्हें इस विषय में कुछ नहीं लिखा। बहरहाल! यदि आप मेरे चित्र भिजवा सकें तो मुझे संतोष रहेगा।

पुस्तक क्योंकि अक्टूबर में प्रकाशित हो जाएगी, इसलिए कृपया सितबर के अत स पूर्व, एयरमेल द्वारा चित्र भिजवाने का कष्ट करें। पूरी पत्रिका एयरमेल द्वारा भेजने की आवश्यकता नहीं है।

यदि आप फोटो भिजवाने की व्यवस्था न भी कर पाए तो भी कृपया एयरमेल द्वारा मुझे सूचित करें, वरना मैं अनिश्चय की स्थिति में रहूंगा। आपको यह कष्ट दे रहा हू, जो कि आपके कार्य से बिल्कुल भिन्न है, अत: क्षमाप्रार्थी हूं, किंतु मुझे पता है आपको लिखने से कुछ न कुछ व्यवस्था संभव हो ही जाएगी।

मेरे स्वास्थ्य के सबध में-पहले की अपेक्षा बेहतर हूं, किंतु दर्द अभी भी होता है। मुझे आशका है कि नवबर में मुझे आपरेशन ही करवाना पड़ेगा- उससे पहले मैं चेकोस्लोवाकिया में कार्ल्सबाद जाना चाहता हूं जहां एक माह जलोपचार कराने का विचार है। कार्ल्सबाद के प्राकृतिक झरने पेट दर्द विशेष रूप से आंतों के कष्ट के लिए वरदान माने जाते हैं। 2 सितंबर को कार्ल्सबाद जाने की व्यवस्था मैंने की है। कृपया मुझे इस पते पर पत्र का उत्तर अवश्य दे। द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, विएना।

प्रभुदयाल बाबू तक मेरी हार्दिक शुभकामनाएं पहुचा दे। आपके माता-पिता को प्रणाम। श्रीमती देव को सादर नमस्कार और रेबा को प्यार।

आपका अपना
सुभाष,

पुनश्च :- अशोक कैसे हैं? मेजदादा के चुनाव का क्या रहा।

सुभाष

पुनश्च :- श्री दास के अच्छे चित्र के लिए अशोक से कहें कि वह श्रीमती दास से सपर्क करे। संभव है वे कोई अच्छा चित्र उपलब्ध करवा सकें।

श्री ए.सी.एन. नांबियार को,

(पोस्टकाड)
पोस्ट रेस्टाटे
कार्ल्सबाद
6.9 34

पिछले रविवार मैं यहा पहुच गया था। स्कालेसबर्ग में किसी बोर्डिंग हाउस की तलाश में हू, यदि ठीक मिल गया तो एक माह यहीं रहूंगा अन्यथा किसी और जगह चला जाऊंगा। इस बीच कृपया उपरोक्त पते पर ही पत्र लिखें।

अभी तक मुझे फ़िलासफ़िकल कांग्रेस की ओर से कोई आमत्रण नही मिला है जबकि प्रोफ़ेसर लेस्नी ने लिखा था कि वे आमत्रित कर रहे हैं।

सुभाष सी. बोस

माननीय श्री ए.सी. नाबियार
सैस्टिमरोवा 863/5
प्राग 13
सी एस.आर.

नाओमी सी. वैटर को,

कुरहॉस कोइनिगि न अलैग्जेंड्रा
स्कासबर्ग, कार्ल्सबाद
अथवा
द्वारा पोस्ट रेस्टाटे
कार्ल्सबाद
सी.एस.आर.
24.9 34

प्रिय श्रीमती वैटर,

विएना से निकलने के बाद से आपको पत्र नहीं लिख पाया, क्षमा चाहता हू। जब मैं यहा पहुचा तो मौसम बहुत अच्छा था, ताजी हवा थी, मुझे बहुत अच्छा लगा। पिछले कुछ दिनों से बादल छाए हुए हैं, किंतु आज फिर मौसम साफ है, यहा की प्राकृतिक छटा बहुत मनोरम है । एक आध घंटे में आप पर्वत पर चढ कर ताजी हवा का आनन्द ले सकते हैं। गर्मियों में यहा बुरा हाल होता होगा, जब सड़कों पर खूब भीड़-भाड़ हो

जाती होगी, यहा की भीड़ किसी भी बड़े शहर की याद दिलाती हैं। इस दृष्टि से यह स्थान मेरे जैसे अजनबी वेश-भूषा वाले व्यक्ति के लिए बहुत अच्छा है, क्योंकि लोगों का ध्यान उस ओर नहीं जाता।

दुख के साथ सूचित कर रहा हू कि अभी तक मैं पुस्तक पूरी नहीं कर पाया हूं और अब चिंतित रहने लगा हू। इस माह के अंत तक की अवधि और माग ली है। किंतु अब हर हाल में वह पूरी करनी ही है। 30 सितबर के बाद मैं आजादी की सास ले सकूंगा।

विएना लौटने के बाद से आपका स्वास्थ्य कैसा है? डा वैटर कैसे हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पहाडों से लौटने के बाद से आप लोग बेहतर अनुभव कर रहे हैं।

जो चित्र आपने भेजे हैं वे इतने सुंदर हैं कि मुझे लगता है यदि अगली गर्मियो तक मैं यूरोप में ठहरा तो ग्लेशियर देखने दक्षिणी आस्ट्रिया अवश्य जाऊगा। मुझे उन्हे देखकर अति प्रसन्नता होगी, क्योंकि हिमालय के ग्लेशियर्स देख पाना मेरे लिए असंभव है।

कभी-कभी घर लौटने की इच्छा होती है, किंतु स्वास्थ्य की दृष्टि से मैं इस योग्य नही हो पाया हू। वैसे भी वे लोग वहां पहुचते ही मुझे छोडने वाले नही हैं। मेरा भाई अभी भी नजरबद है, और परिवार बहुत परेशान है।

अपनी योजना के अनुसार विएना लौटने से पूर्व मैं अभी कुछ सप्ताह और यहा रहना चाहता हूं। यही सभावना है कि मुझे अंततः आपरेशन ही करवाना पड़ेगा। सर्दियों में कहा रहूगा, कह नहीं सकता। चाहता हूं कि दक्षिण की ओर जा पाता जहा कुछ उष्णता मिलती । जाने से पहले आपरेशन करवाना ही पडेगा।

आशा है आप सभी स्वस्थ एव सानद हैं। अनंत शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष सी बोस

सत्येंद्र चद्र मित्रा को,*

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
विएना
कार्ल्सबाद
18.10.34

प्रिय सत्येन बाबू,

आपका तीन तारीख का पत्र 16 तारीख को प्राप्त हुआ। आपकी छोटी सी माग मैं पूरी नहीं कर सका। यद्यपि आपके लिए बहुत कुछ करना चाहता हू।

---

* मूल बगला से अनूदित

सबसे अच्छा उपाय शायद यही था कि पत्र का उत्तर ही न दिया जाता, किंतु मैं स्पष्टवादी हूं यद्यपि यह स्पष्टवादिता मैत्री संबंधों में बाधक सिद्ध होती है।

महात्मा गांधी के शिष्यों द्वारा संचालित कार्यकारिणी में मेरा बिल्कुल भी विश्वास नहीं है। पार्लियामेंट्री बोर्ड में भी मेरा अधिक विश्वास नहीं क्योंकि देश जब सन् 1932-33 में दुरूह काल से गुजर रहा था तो किसी ने अपना कर्तव्य नहीं निभाया। मुझे अपने उन सहयोगियों से कोई सहानुभूति नहीं, जिन्होंने अपने स्वार्थों की प्रतिपूर्ति के लिए बंगाल की राजनीति में पुनः महात्मा गांधी को खींच लिया है। अंत में मुझे यह कहने मे कोई झिझक नहीं कि मेरा उस पार्टी से कोई संबंध नहीं, जिसने यूरोप की सहायता से कलकत्ता के मेयर पद पर नलिनी सरकार को ला बैठाया है।

एक मित्र के रूप में मैं आपको बहुत प्यार करता हूं। आपने प्रमुख लोगो के लिए, ऐसे लोगों के लिए, जो कष्ट में हैं और जिनके इस दुनिया में बहुत कम मित्र है, बहुत कुछ किया है। राष्ट्रभक्त के रूप में मैं आपका सम्मान करता हूं। लेकिन आपकी सहायता कैसे करू? क्योंकि मेरा उस मशीनरी में बिल्कुल विश्वास नहीं, जिसने आपको एक उम्मीदवार के रूप में खडा किया और मुझे विश्वास है कि यदि वे अखिल बाबू को मना पात तो आपको नहीं चुनते। मैंने उन स्थितियों का निरीक्षण किया है जिन्होंने आपके और अखिल बाबू के मध्य मुकाबला पैदा कर दिया। किंतु मैं बिल्कुल असमर्थ हू। मैं आपको उस मशीनरी से अलग कैसे मान लूं जिसने आपका चुनाव किया है?

सत्येन बाबू मैं जानता हूं कि आज मैं बिल्कुल अलग-थलग हू लेकिन मुझे उसका तनिक भी दुख नही हैं। मुझे जो ठीक लगता है मैं वह कहता रहूगा, यद्यपि उससे मुझे कितना ही कष्ट झेलना पड़े या बदनामी सहनी पडे।

जातिवाद के प्रति मैं चुप्पी का रुख नहीं अपना सकता। डा. बी.सी राय की पार्टी ने इस प्रश्न पर महात्मा गांधी का साथ देकर बंगाल को बहुत बड़ी क्षति पहुचाई है। इस प्रश्न पर बगाल को एकजुट रहना चाहिए था।

मेरे शब्द कठोर प्रतीत हो सकते हैं। क्योंकि मुझे बहुत दुख हुआ है। मैं स्पष्टता मे विरोध करता हू, क्योंकि मैं बहुत स्पष्टवादी और सच्चा व्यक्ति हू। अतः सत्य कहने का साहस रखता हूं। भारत के हित में मैं बंगाल के लिए हो रहे सघर्ष में लिप्त रहूगा। बेशक एक अकेला ही क्यों न रह जाऊं। मुझे खेद है कि वर्तमान विपत्ति में मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर पाऊंगा किंतु मुझे विश्वास है कि आप मेरे कदम की प्रशसा करेंगे और मुझे क्षमा कर देंगे। आशा है वह दिन अवश्य आएगा जब विपरीत परिस्थितियों में मैं यह सिद्ध कर दूंगा कि मैं आपका मित्र हूं-एक सच्चा मित्र, केवल मौकापरस्त नही।

विजयादशमी की शुभकामनाएं स्वीकार करें।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

श्री सत्येन सी. मित्रा,

वी. लेस्नी को,

कार्ल्सबाद
1.11.1934

प्रोफ़ेसर डा. लेस्नी,
ज़बोरोवस्था 66,
पराहा 16,

प्रिय प्रोफ़ेसर साहब,

कल (शुक्रवार) मैं प्रात: विएना के लिए रवाना होऊंगा और प्राग में कुछ देर के लिए रुकूंगा। शाम को पहुंच कर रात को ट्रेन द्वारा विएना के लिए रवाना होऊंगा। यदि आपके पास समय हो तो दोपहर बाद, या शाम को मैं आपसे मिलना चाहूंगा। मेरी गाडी रात दस बजे चलेगी। अत: शाम छ: बजे के बाद का समय ठीक रहेगा। श्री नाबियार को भी मैं लिख रहा हू कि वे आपसे मिलने का समय ले लें।

कृपया रात्रि भोज की व्यवस्था न करें। जैसी कि आप हमेशा करते रहे हैं। जब भी मैं प्राग आया हू। मुझे कुछ अन्य कार्य भी करने हैं, इसके अलावा आजकल मैं बहुत हल्का खाना ले रहा हूं। आपसे बातचीत करके प्रसन्नता होगी,

हम लोग ईडो-चैकोस्लोवाक सोसायटी तथा अन्य सामान्य बातों पर चर्चा करेंगे।

सादर,

आपका शुभेच्छु
सुभाष सी बोस

सैंसर कर पास की गई
इलीजिबल

नाओमी सी वैटर को,
10/12
कृते डी.सी.एस बी

38/2, एल्गिन रोड
या
1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता
7.12.34

प्रिय श्रीमती वैटर,

29 नवबर को विएना छोडने के बाद 4 दिसंबर को मैं यहा पहुंचा। पहुचते-पहुचते

बहुत देर हो गई। 2 दिसंबर की मध्यरात्रि में मेरे पिता इस दुनिया से चले गए। मेरे पहुंचने से केवल 40 घंटे पूर्व।

वायुयान की यात्रा बहुत दिलचस्प थी, मुझे बहुत आनंद आता, किंतु मानसिक चिंताओं की वजह से यह संभव नहीं हो पाया। प्रातकालीन सूर्योदय का दृश्य बहुत मनोरम था। सूर्योदय के चमकते और विभिन्न रंगों से युक्त दृश्य से पश्चिम के लोग अनभिज्ञ हैं, इसका मज़ा और बढ़ता गया जैसे-जैसे हम आकाश में ऊपर उठते गए। ऊपर-नीचे होते जहाज़ के कारण कुछ असुविधा हुई। शोर, वातावरण के दबाव से उत्पन्न शोर के कारण कानों को भी कष्ट पहुंचा। कुल मिलाकर यात्रा बुरी नही थी।

मालूम नहीं भविष्य में आपसे पत्राचार कायम रख पाऊंगा अथवा नहीं। फिलहाल मैं अपने 'घर में बंदी की भांति रह रहा हूं। जहाज़ से उतरते ही मुझे 'घर मे नजरबंदी' का आदेश थमा दिया गया। फिलहाल मुझे अपनी माता के साथ एक सप्ताह तक ठहरने की आज्ञा मिली है। नहीं जानता कि इस सप्ताह के बीतने के बाद मुझे क्या आदेश प्राप्त होते हैं (-------2 पंक्तियां सेंसर द्वारा काट दी गई) शायद भविष्य मे आपको पत्र नहीं लिख पाऊंगा। उस दशा में आप मुझे अन्यथा न ले।

विएना में गुज़ारे वक्त में आपको प्रेम व सहानुभूति का आभार प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। प्रेज़ीडेंट वैटर व आपको सादर प्रणाम।

मेरी मा बहुत उदास हैं। हम भाई-बहन उन्हें सांत्वना देते हैं। किंतु कोई लाभ नही। हिंदू समाज में पत्नी की जिंदगी पति के साथ ऐसी बंधी है कि उसके बिना उसका जीवन असहनीय हो जाता है। यूरोप का जीवन भिन्न है।

मेरे घर का पता है 38/2, एल्गिन रोड अथवा 1, वुडबर्न पार्क, फ़िलहाल मैं पहले वाले पते पर अपनी मां के साथ रह रहा हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

सेंसर द्वारा पास
इलीजिबल 9/1
कृते डी. सी. एस. बी.

38/2 एल्गिन रोड, कलकत्ता
8 जनवरी 1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके सभी पत्र समय पर मिले और सभी पढे। उन सबके लिए धन्यवाद।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि यूरोप की यात्रा के लिए मैं आज बंबई के लिए

रवाना हो रहा हू। 10 जनवरी को (एम.वी. विक्टोरिया, लॉयड ट्रिस्टीनो कपनी) बबई से जलयान पकडूगा। ग्यारह दिन की यात्रा के पश्चात 21 जनवरी को जेनेवा (इटली) पहुचूगा।

यहां लौटने के बाद से मेरी तकलीफ़ बहुत बढ़ गई है और मुझे आपरेशन करवाना ही पड़ेगा।

----- सेंसर द्वारा काट दी गई----

वहा सभी मित्रों को मेरे प्रस्थान की सूचना दे दें। आशा है मेरे जिनेवा पहुचने से पहले मेरा यह एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र आपको मिल चुकेगा। श्रीमती फ्यूलोप मिलर को भी सूचित कर दें और उन्हें बता दें कि उनके सभी पत्र मुझे प्राप्त हो गए हैं। मैं उन्हें अलग से पत्र नही लिख रहा । आशा है वे बुरा नही मानेंगी।

प्रेजीडेंट वैटर व आपको सादर प्रणाम ।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

एल्बर्गो प्लैजो एड एबैसीएटरी, रोमा
23.1 1935

श्रीमान प्रेज़ीडेंट वैटर साहब

व्हीरिंगर स्ट्रीट-41
विएन-9, (आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कलकत्ता छोडने के दिन, मैंने आपको एयरमेल से पत्र भेजा था, आशा है आपको मिल गया होगा । 20 तारीख को मैं नेपल्स पहुंचा और पहुचते ही डा. कटियार को कार्ड भेजा कि वे मेरे पहुंचने की सूचना सभी मित्रों को दे दें। कल रात मैं नेपल्स से यहा पहुचा हू। दो-तीन दिन यहां रुक कर विएना के लिए प्रस्थान करने का विचार है। यहा मौसम कैसा है? नेपल्स मे खूब बर्फ गिरी। शानदार। कल यहा बर्फ गिरी थी लेकिन अधिक नही। आज मौसम साफ़ है। शाश्वत शहर बहुत सुदर है। कलकत्ता पुलिस बहुत चिंतित थी, क्योंकि आपके पत्रों में आपका नाम पढ़ नहीं पा रही थी। मुझे उन्हें बताना पडा। आप दोनों को शुभकामनाएं।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च :- सभव है मुझे यहा दो या तीन दिन से अधिक समय तक रहना पडे।

सी आर प्रूफर को,

होटल डी फ्रास
विएना-1
स्काटेनरिंग-3
2 फरवरी 1935

माननीय डा कुर्ट प्रूफर
आस्वर्टिगेस एमट
विल्हेल मस्ट्रासे 75
बर्लिन

प्रिय डा. प्रूफर,

हाल ही मे मेरी 'द इडियन स्ट्रगल 1920-34' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। लदन को विशार्ट एंड कपनी ने इसे प्रकाशित किया है। लदन प्रेस द्वारा इस पुस्तक की पर्याप्त प्रशसा हुई है और माना जा रहा है कि किसी भारतीय राजनीतिज्ञ द्वारा भारत पर लिखी गई यह सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। मुझे विश्वास है कि जर्मन पाठक भी इसे पढना चाहेगे और इसके जर्मन अनुवाद की आवश्यकता महसूस की जाएगी। क्या आप किसी जर्मन प्रकाशक को इस पुस्तक के बारे मे सूचित कर इसे जर्मनी मे अनुवाद कराकर छापने के लिए अनुरोध कर सकते हैं?

मैंने अपने प्रकाशन को आपको एक प्रति भिजवाने के लिए कहा है। तब तक मैं आपको एक नोटिस भेज रहा हूं, जिससे आपको पुस्तक की विषयवस्तु के बारे मे पता चलेगा।

कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूं और शीघ्र पत्रोत्तर की आशा करता हू।

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

ई वुड्स को,

होटल डी फ्रास
स्काटेनरिंग-3
विएना-1
4 फरवरी, 1935

प्रिय श्रीमती वुड्स,

दो सप्ताह पूर्व यूरोप और एक सप्ताह पूर्व विएना लौट आया हू। यहा पहुच कर आपका 5 जनवरी का पत्र मिला। आपने अपने पत्र में जो सहानुभूति प्रदर्शित की है, मैं उसके लिए आपका आभारी हू।

दुख के साथ सूचित कर रहा हूं कि यद्यपि मेरा स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा बेहतर है, किंतु अधिक संतोषजनक नही है। शीघ्र स्वस्थ होने का प्रयास कर रहा हूं। यह कहना आवश्यक नही कि पूर्ण स्वस्थ होते ही मैं आयरलैंड जाने का विचार रखता हू।

श्रीमती मैकब्राईड कैसी और कहां हैं? कृपया मेरी हार्दिक शुभकामनाएं उन तक पहुंचा दें। मेरे भाई सरत, (जो अभी तक नज़रबंद हैं) श्रीमती मैकब्राईड से पेरिस में मिले थे, ने भी उन्हें प्रणाम प्रेषित किया है। मेरे भारत निवास के दौरान मुझ पर बहुत से प्रतिबंध थे, फिर भी मुझे अपने परिवार के सदस्यों से मिलने की अनुमति थी।

कृपया सूचित करें कि इडो-आयरिश लीग का कार्य कैसा चल रहा है?

सादर,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जे.टी. सुदरलैंड को,

होटल डी.फ्रांस
स्कॉटनेरिंग 3
विएना-1
12 फरवरी, 1935

डा जे.टी. सुदरलैंड
1510, कैंब्रिज रोड
एन, आर्बर
मिकिंघम

प्रिय महोदय डा. सुदरलैंड,

आपको जानकर हर्ष होगा कि हाल ही में भारतीय राजनैतिक आदोलन पर मेरी 'द इडियन स्ट्रगल, 1920-34' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। यह पुस्तक वाममार्गी राष्ट्रीय विचारधारा में लिखी गई है। प्रसन्नता का विषय है कि इंग्लिश प्रेस ने इसकी पर्याप्त प्रशंसा की है। लंदन में अपने प्रकाशक को मैंने लिखा है कि वे आपको इसकी प्रति भिजवा दें, यदि आप इसे स्वीकार करेंगे तो मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी बोस

रोम्यां रोला से

विलेनेयूव (वॉड)
विला ओलगा
22 फ़रवरी, 1935

प्रिय श्री सुभाष चंद्र बोस,

आपकी पुस्तक 'द इंडियन स्ट्रगल 1920-34' मिली। पुस्तक भिजवाने के लिए धन्यवाद। इस पुस्तक के लिए हार्दिक बधाई! पुस्तक इतनी दिलचस्प लगी कि मैंने उसकी एक और प्रति मंगवाई है ताकि मेरी पत्नी व पुत्री भी इसको पढ़ सकें। भारतीय संघर्ष के इतिहास में यह महत्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य में आपका एक इतिहासकार के रूप में स्पष्टवादिता और मानसिक संतुलन स्पष्ट झलकता है। ऐसा कम ही देखने में आता है कि आप जैसा कार्यकर्ता पार्टीवाद से हटकर अपना स्पष्ट निर्णय सामने रख सके। हम जैसे विचारकों का ही यह कर्तव्य है कि अनिश्चिय व थकान के समय हमें घेर लेने वाले स्वार्थों के प्रति हम संघर्ष करें और मनुष्यों को ईश्वर, कला, आत्म स्वतंत्रता तथा रहस्यवाद के क्षेत्रों से उत्पन्न संघर्षों से बचाने का उपाय करें। इस संघर्ष में, समुद्र के इस पार मानवीय युद्ध भूमि ही हमारी कर्मभूमि है।

मुझे आशा है कि आपका स्वास्थ्य शीघ्र ही ठीक होगा, क्योंकि भारत को आपकी बहुत आवश्कता है और मुझे हृदय से आपके साथ सहानुभूति है, कृपया मुझ पर विश्वास रखें।

रोम्या रोला

अमिय चक्रवर्ती को,

विएना XVIII
कॉटेज गेस 21
7 मार्च, 1935

प्रिय प्रोफ़ेसर चक्रवर्ती साहब,

रोम पहुंचने पर सबसे पहले आपका ही समाचार मिला। प्रारंभ में मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आप यूरोप आए हुए हैं। प्रसन्नता का विषय है कि आपने भारतीय विद्यार्थियों के सम्मेलन की अध्यक्षता की।

डा. सेलिंग से मेरी भेंट हुई और हमने आपस में काफ़ी बातचीत की। एक दिन मैंने उन्हें चाय पर आमंत्रित किया है और फिर उनसे लंबी परिचर्चा करूंगा। उनसे बात करना अच्छा लगा क्योंकि उनकी बात में गांभीर्य है। उन्होंने पहले मुझे पत्र लिखा (आपका

पत्र साथ में), अतः मैंने उनसे परिचय किया और यहां बैठक में उनसे मिला। (कुछ दिन पहले 'मैंने भारतीय महिलाएं' विषय पर महिलाओं की सभा में भी भाषण दिया)

मेरी पुस्तक पर आपकी सम्मति से मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हुई। श्री रोम्यां रोलां ने भी मुझे एक बहुत अच्छा पत्र लिखा है।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आपने 'शांतिनिकेतन' छोड़ दिया है। मेरा विश्वास है कि किसी दूसरे वृक्ष की छत्रछाया में कोई भी वृक्ष अधिक ऊंचाई तक नहीं पहुच सकता। महात्मा गाधी के शिष्यों को देखकर तो मुझे यही आभास होता है। इसीलिए स्वामी विवेकानंद अपने शिष्यों को अधिक समय तक अपने ईर्द गिर्द समेटे नहीं रहते। बहरहाल इस विषय को यहीं छोड़ते हैं।

आप कब तक वहां रहेंगे? जो पुस्तक आप लिख रहे हैं उसका विषय क्या है?

मेरी ओर से अनंत शुभकामनाएं

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
जिनेवा
21.3.1939

श्री एन सी. वैटर

व्हीरिंगर स्ट्रीट-41
विएना-IX
(आस्ट्रेख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

मैं यहां ठीक-ठाक पहुंच गया हू, सूचना देने के लिए पत्र लिख रहा हू। कल स्मृति समारोह आयोजित की जाएगी। मुझे प्रसन्नता है कि मैं यहां आया।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी.वैटर. को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क.
जिनेवा
25.3 1935

श्री एन.सी.वैटर,
व्हरिंगर स्ट्रीट-41
विएना-IX
(आस्ट्रेख)

प्रिय श्रीमती वेटर,

जिस दिन मैं यहां पहुंचा था, उस दिन जल्दबाजी में आपको एक-दो पक्तिया लिखी थी।

समारोह शांतिपूर्ण संपन्न हुआ। यदि नहीं पहुंचता तो बहुत दुख होता, क्योंकि उस दशा में लोगों को बहुत निराशा होती। अभी कुछ दिन और यहीं व्यतीत कर यहां के पुराने स्थानों को देखूंगा और पुराने मित्रों से मिलूगा, फिर विएना लौटूगा।

जिनेवा की यात्रा बहुत सुखद थी। विशेषरूप से जब हम टायरोल से गुजर रहे थे। यदि प्रबध हो पाया तो मैं एक-दो दिन इन्सब्रक और शाल्जबर्ग में रुकना चाहूगा।

आशा है आप उस विषय के अध्ययन में रत हैं। सपरिवार स्वस्थ एव सानद होगी। सादर।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

होटल सुसी
जिनेवा
29 3.1935

प्रिय श्रीमती सी. वेटर,

आपका 24 मार्च का पत्र कल प्राप्त हुआ। डा. वी का संलग्नक पढकर अच्छा लगा।

भारत के एक महत्वपूर्ण गैर सरकारी समाचार-एजेंसी तथा एयरमेल पत्र आपको भिजवा रहा हूं। पत्र के उपयोगी हिस्सों पर लाल पेन से निशान लगा दिए हैं। बंगला फिल्म

का प्रचार भारत मे प्रारंभ हो चुका है और विधायिका हिल चुकी है। (असल मे सरकार को मजबूर करने के लिए विधायिका के पास वास्तविक अधिकार ही नही है) जो सूचना वे चाहते हैं क्या आप या आपका कोई मित्र एकत्रित कर सकता है ? पत्र मे आप देखेगे कि वे पता करना चाहते हैं कि–1. फिल्म-कहानी 2. चित्र-अत्यधिक आपत्तिजनक दृश्यों सहित। चित्रो की कीमत में अदा करूगा तथा बंगाल कलकत्ता मे आनद बाजार पत्रिका (बंगला का दैनिक पत्र) सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला पत्र है। सलग्न पत्र फिलहाल आप अपने पास ही रख ले।

अभी एक-दो सप्ताह और यहीं रहूगा।

डा वैटर और आपको शुभकामनाए

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

रेगीना पलास्त होटल
मुनकेन
8.4 1935

श्री एन.सी वैटर,

व्हीगिंर स्ट्रीट-या
विएना-IX
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कुछ देर ज्यूरिख में रुकने के बाद पिछली रात मैं यहा पहुचा। कुछ दिन और यहा रुककर विएना के लिए रवाना होऊंगा। आशा है कहीं और नही रुकूगा लेकिन साल्जबर्ग के बारे मे निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता।

आशा है आपको मेरा पिछला पत्र मिला होगा जिसमें मैंने बगला फिल्म से सबधित भारत से प्राप्त एक पत्र भी भेजा था।

जिनेवा छोड़ने से पूर्व श्री रोम्यां रोलां से मेरी दिलचस्प बातचीत हुई।

शुभकामनाओ सहित

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बास

ए.के.फजलूल हक को,

सैनिटोरियम रूडोल्फीनरहास
विलरॉथ स्ट्रासे
विएना
10 मई, 1935,

प्रिय श्री फजलूल हक,

लदन टाइम्स से सूचना मिली कि आप हमारे शहर के मेयर नियुक्त हुए हैं। आपका चुनाव अर्से से लंबित था। खैर, देर आयद दुरुस्त आयद।

आशा है अपना कार्यकाल सफलतापूर्वक पूरा करेंगे तथा आपके कार्यकाल के दौरान बगाल के विभिन्न सप्रदाय के लोग एकजुट होकर कार्य करेंगे जिसके परिणामस्वरूप निगम के अंदर हमें एक टीमवर्क देखने का मौका मिलेगा। कृपया एक ऐसे व्यक्ति की शुभकामनाए स्वीकार करे जो हृदय से तो आपके निकट है, किंतु हज़ारों मील दूर है।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष सी. बोस,

नाआमी सी वैटर को,

रुडोल्फीनरहॉस
15.5 1935

श्रीमान डा एन सी वैटर,

विएना-IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट-4

प्रिय श्रीमती वैटर,

आशा है आपका पिछला पत्र मिलने के बाद से अब तक आप काफी स्वस्थ होंगी। आज इस स्थान को छोडकर सैनिटोरियम वेस्टएड, पुरकरसडोर्फ बी/विएना जा रहा हू। धीरे-धीरे काफी आराम मिल रहा है। कमरपेटी की सहायता से कुछ थोडा बहुत चल लेता हू। पुराना दर्द तो खत्म हो गया है, किंतु आपरेशन के बाद की पेट की परेशानियों से अभी मुक्त नही हो पाया हू। इसमें अभी समय लगेगा। आपके स्वास्थ्य की हृदय से कामना करता हू।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष सी. बोस

नाओमी.सी. वैटर को,

कुरहास कोनिगिन अलेक्जैंड्रा
कार्ल्सबाद
17 6.1935

श्री एन.सी. वैटर

विएना-IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट-41
(आस्ट्रिया)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कल रात विएना से यहा पहुचा। प्राग तक की यात्रा में श्रीमती नेहरू साथ थीं। प्राग से मैंने दूसरी गाडी ली और डा. कटियार उनके साथ बर्लिन तक गए। इंडो-चेक सोसायटी के प्रोफेसर लेस्नी स्टेशन पर उनसे मिलने आए थे। तीन घटे मैंने उनके साथ बिताए और फिर कार्ल्सबाद के लिए रवाना हुआ। आपरेशन करवाने के बाद कल रात पहली बार मैं लगातार सात घटे सोया। आशा है अच्छी शुरूआत है। विएना की गर्मी के बाद यहा का मौसम काफी सुहावना है। आजकल यहा वैसी भीडभाड नही, जैसी कि आशा थी।

कल रात डा वैटर को भ्रमण कैसा लगा? दोनों को सादर प्रणाम।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को

कुरहॉस कोनिगिन अलैग्जैंड्रा
कार्ल्सबाद
21 6 1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

18 जून का आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई।

विएना से मैंने बगाली फिल्म के सदर्भ मे एक अनुस्मारक भेजा था। जवाब मे उनके सचिव ने लिखा है कि मालिक ने सबद्ध अधिकारियो को लिखा है कितु अभी काई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। यदि मैं चाहू तो सीधे उनसे पत्र व्यवहार कर सकता हू। अत यही था।

मुझे यह जानकर दुख हुआ कि उस सर्दी की रात में बहुत महत्वहीन लोग डा वैटर के स्वागत के लिए वहां उपस्थित थे।

कोसथ के विषय मे आपने एक पुस्तक का ज़िक्र किया था। क्या आप भारत से प्रकाशित होनेवाली अंग्रेज़ी (राष्ट्रीय) पत्रिका के लिए लेख लिखेगी? हमारे पाठक उसे पढना चाहेगे।

एक पत्र साथ भेज रहा हू जो फ्रेंच भाषा मे भिजवाना चाहता हू। मेरे लिए क्या आप इसका अनुवाद कर देगी? शायद आपको ध्यान हो कि आपने प्रो नाशे के पत्र को मेरे लिए अनुवाद किया था।

यहा का मौसम अच्छा है। वहा कैसा है?

यदि आपका स्वास्थ्य ठीक हो और आपके पास पर्याप्त समय हो तो आप एक छोटा सा लेख लिख दे जिसमें प्रोफेसर हाउर के विचारो का उल्लेख हो।

सादर ।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

कार्ल्सबाद
कुरहास कोविगिन अलैग्ज़ैंड्रा
27 6.1935

माननीय एन.सी वैटर

विएना-IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट-41
(आस्ट्रिया)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आशा है मेरा पिछला पत्र आपको समय पर मिल गया होगा। श्री गोकुलचद चाहते हैं कि डोज़ेंट पिल्लट उनकी धर्मपत्नी की जाच व इलाज (यदि आवश्यक हो तो) करे। वे चाहते हैं कि कोई उन्हे श्री डोज़ेंट से परिचित करा दे। कृपया डोज़ेट पिल्लट को फोन करके सूचित कर दें कि मेरे एक मित्र अपनी पत्नी की नेत्र चिकित्सा हेतु उनकी राय लेना चाहते हैं। मुझे लगा कि इस व्यक्ति के विषय मे डा पिल्लट से सहायता लेनी चाहिए, आशा है आप भी मेरी इस बात से सहमत होगी। ये सज्जन आजकल विएना में ही हैं।

यहा का मौसम गर्म हो रहा है। वहा कैसा है?

मुझे डर है कि गर्म मौसम मेरे लिए अधिक लाभकारी नही होगा।

शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

कुरहॉस को निलिन अलैक्जेड्रा
कार्ल्सबाद
8 7 1935

मानवीय एन सी वैटर
विएना-IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट-41
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका 26 जून का पत्र फ्रेंच अनुवाद सहित प्रप्त हुआ। बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्रीमती हार्ग्रोव का लबा पत्र भी मुझे मिला है जो आजकल ट्रायॅल मे हैं। उन्होने आशा व्यक्त की है कि शायद आप हॉफगैस्टिन जाएं, जहा वे अभी कुछ दिन बाद पहुचने वाली हैं।

आप सब लोगो का स्वास्थ्य कैसा है? सादर।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

अमिय चक्रवर्ती को,

23 जुलाई, 1935

प्रिय श्री चक्रवर्ती,

आपका और प्रोफेसर लेस्नी का पोस्टकार्ड पाकर प्रसन्नता हुई। मैं आपका आभारी हू कि आपने यहां आने का कष्ट किया। मुझे प्रसन्नता है कि मुझे दो तीन दिन आपके सपर्क मे रहने का मौका मिला और आपसे अतरंग परिचय सभव हो सका। आशा है आप प्राय: पत्र लिखते रहेंगे।

एक बार जब आप इग्लैंड गए थे, तो कुछ बुद्धिमान लोगों की राय थी कि, यह सोचना गलत है कि मनुष्य के जीवन मे बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था मे आए परिवर्तनो की भाति ही राष्ट्र के जीवन में भी परिवर्तन होता है। क्या आप इस विषय मे कोई

पुस्तक मुझे सुझा सकते हैं। मेरी अपनी राय में तो राष्ट्र जीवन भी बचपन, युवावस्था और वृद्धावस्था में से गुजरता है। अतः मैं इस विचार के विपरीत तर्क व मतो को पढ़ना चाहता हू।

आज मैंने एच.जी. वैल्स का 'द न्यू अमेरिका, द न्यू वर्ल्ड पढा'। क्या आपने पढा है?

अभी तक मैंने लदन कोई पत्र नहीं भेजा है। कृपया अपनी गतिविधियो व पते के बारे मे सूचित करें।

सदैव आपका अपना
सुभाष सी. बोस

कुरहास कोनिगिन अलेक्जेड्रा
कार्ल्सबाद (चेकोस्लोवाकिया)
24 जुलाई, 1935

श्रीमती एम ई वुड्स को,

131, मोरहेंप्टन रोड
डोनीब्रुक
डब्लिन

प्रिय श्रीमती वुड्स,

खेद है कई महीनों से आपको पत्र नही लिख पाया। दिसंबर मे मैं भारत मे था, फिर जनवरी में पुनः यूरोप लौटा हू। अप्रैल के अंत में मैंने आपरेशन कराया और आजकल कार्ल्सबाद मे इलाज के लिए रह रहा हू। आशा है अभी कुछ दिन और यहा रहूगा।

मेरे एक मित्र श्री चालिहा, जो सन् 1920 से इंडियन नेशनल काग्रेस के लिए कार्य कर रहे हैं एक दिन मुझे देखने आए थे और उन्होने डब्लिन जाने की इच्छा व्यक्त की थी।

मैंने उन्हें आपका पता दे दिया था और आपसे संपर्क करने को कहा था। श्री चालिहा भद्रपुरुष हैं और कई बार जेल जा चुके हैं। उन्हें पोस्त की बुराईयो (दुष्प्रभावों) का विशेष ज्ञान है, आप जानती ही होंगी कि ब्रिटिश राज्य इसका अधिक-से-अधिक लाभ ले रहा है। मैं चाहूगा कि श्री चालिहा न्यू आयरलैंड जाए और वहा के कुछ लोगो से मिलें, जो आयरिश स्वतत्रता के लिए कार्यरत है। आप भी उन्हे इडो-आयरिश लीग के कार्यों के बारे में अवश्य बताए।

कृपया अपने व मैडम मैकब्राइड के विषय मे सूचना अवश्य द।

सादर,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को,

कुरहाम कोनिगिन अलेक्जेंड्रा
कार्ल्सवाद
(चेकास्लोवाकिया)
5 8 35

प्रिय सुनील,

तुम्हारे दो पत्र एक फरवरी मे व दूसरा जून मे मिले। पत्रो का उत्तर नही दे पाया कृपया क्षमा करे।

आपरेशन करवाने के बाद मुझे यहा आए एक माह से ऊपर हो चुका है। पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य अच्छा है, किंतु अभी अदरूनी कमजोरी (आपरेशन के स्थान पर) है, परिणामस्वरूप प्राय: दर्द होता रहता है। पुराना दर्द तो अब नही है किंतु पाचन शक्ति अधिक सतोषजनक नही है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि धीरे-धीरे स्वास्थ्य सुधर रहा है।

पहला पत्र तुमने इस प्रकार लिखा है जैसे कोई तीसरा व्यक्ति उसे नहीं देखेगा। तुम्हें याद रखना चाहिए कि मेरे पत्र तीसरे व्यक्ति की नजर से बच नही सकते।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? आजकल क्या कर रहे हो? मुर्शिदाबाद मे सब कैसा है?

आजकल एक अन्य पुस्तक लिखने का प्रयास कर रहा हू। पहली पुस्तक के जारदार स्वागत से उत्साहित होकर यह कार्य प्रारभ किया है। मैं बाहर के लोगो को हमारे राष्ट्रीय आदोलन के विषय मे बताना चाहता हू।

तुमने एक फोटो के लिए लिखा था-भिजवा रहा हू।

पूर्ण स्वस्थ होते ही घर लौटूगा, यही मेरी इच्छा भी हैं।

तुमने लिखा है कि तुम्हारे पिता का स्वास्थ्य ठीक नही था। कृपया लिखे कि आजकल वे कैसे हैं?

आशा है आप पूर्ण स्वस्थ हैं।

प्रेम सहित।

तुम्हारा अपना
सुभाष चद्र बोस

जे. टी. सुंदरलैंड को,

कुरहॉस कोनिगिन अलेक्जैंड्रा
कार्ल्सबाद (चेकोस्लोवाकिया)
6 अगस्त, 1935

प्रिय डा. सुदरलैंड,

आपका 12 मार्च का पत्र प्राप्त हुए बहुत दिन हो गए। पत्रोत्तर देने में विलब के लिए क्षमा चाहता हू। अप्रैल के अत में मेरा एक बडा आपरेशन हुआ है। आजकल पहले की अपेक्षा स्वस्थ हू यद्यपि स्थिति संतोषजनक नहीं है। अभी कुछ माह और यूरोप में ही रहूगा। भारत पर एक और पुस्तक लिखने का प्रयास कर रहा हू, जिसमें राष्ट्रीय आदोलन को विस्तार से लिखना चाहता हू। कृपया सूचित करें कि आजकल आपका स्वास्थ्य कैसा है।

नया सविधान पारित हो गया है और जबर्दस्ती भारत पर लागू किया जाएगा। मद्रास के श्री सत्यमूर्ति के नेतृत्व में कुछ काग्रेस कार्यकर्ता संविधान पर कुछ कार्य करना चाहते हैं। फिलहाल काग्रेस ने इस विषय पर कोई विचार नहीं बनाया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप इस नए सविधान को स्वीकार करने के पूर्ण विरुद्ध हैं।

शुभकामनाओं सहित,

मैं,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

कुरहॉस कोनिगिन
अलेग्जैंड्रा, कार्ल्सबाद
17.8.1935

माननीय एन. सी. वैटर
वियना-IX
थोरिगर स्ट्रीट-41
(आस्ट्रिया)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके पिछले पत्र का उत्तर, मैंने टायरोल के पते पर, समय पर दे दिया था। उसके बाद से आपका कोई समाचार नहीं मिला। पहले मैंने सोचा कि शायद आप कुछ दिन आराम करना चाहती हैं, इसलिए पत्राचार हेतु आपको कष्ट देना उचित नहीं समझा। श्रीमती हार्प्रैव के पत्र से ज्ञात हुआ कि आप वियना जा चुकी है। उस बात को भी बहुत दिन हो गए फिर भी आपका कोई समाचार नहीं मिला। मैं बहुत चिंतित हू।

इधर कोई विशेष समाचार नहीं, सिवाय इसके कि लगभग साढ़े तीन वर्ष की नजरबंदी के बाद मेरा भाई छूट चुका है। मेरा स्वास्थ्य पहले से बेहतर है किंतु कार्य आगे नही बढ़ पा रहा।

सदैव आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

कार्ल्सबाद
6.9 1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका 27 अगस्त का पत्र समय पर मिल गया, किंतु जिस मानसिक अवस्था का आपने ज़िक्र किया उसे पढकर दुख हुआ। मैं समझ नहीं पा रहा कि आपने यह निष्कर्ष कैसे निकाल लिया कि आपके पत्रो का मेरे लिए कोई अर्थ नहीं, जबकि मैं प्रायः अपने कार्य में या कुछ अन्य चिंताओं मे घिरा हुआ था। मुझे अपने उन मित्रों से, जो घर वापिस जा रहे थे और मुझे मिलने यहां इतनी दूर नही आ सकते थे, मिलने जाने को बैगस्टीन की लंबी यात्रा करनी पड़ी। पिछले पंद्रह दिन से एक अन्य चिंता से ग्रस्त हूं क्योंकि श्रीमती नेहरू का स्वास्थ्य चिंताजनक है। यूरोप व भारत के बीच बहुत से तारों के आदान-प्रदान के बाद श्री नेहरू को जेल से केवल दो दिन के लिए छोडा गया। वे अपनी पत्नी को देखने शायद वायुयान द्वारा यूरोप आएंगे।

यहा ठहरने से मुझे काफी लाभ हुआ है, किंतु आपरेशन के उपरांत पैदा हुई परेशानियो से मैं छुटकारा नही पा सका हू। परिणामस्वरूप मुझे बैल्ट पहने रहनी होगी और अधिक परिश्रम से बचना होगा। मैंने प्रोफेसर डैमेल से उनकी राय मांगी थी, उन्होंने कहा है कि मुझे 'गैस्टीन' में उपचार कराना चाहिए। बैगस्टीन में मैंने श्रीमती हार्प्रोव से मेरे लिए कुछ बोर्डिंग हाउस आदि की जानकारी एकत्र कराने को कहा था किंतु अब सोचता हूं कि बैगस्टीन की अपेक्षा हॉफ़गस्टीन जाऊंगा। कल मैं श्रीमती नेहरू को देखने बेडनविलर (श्वार्ज़वाल्ड, जर्मनी) जाऊंगा। संभव है कुछ दिन पश्चात वहां पंडित नेहरू से भी मुलाकात हो सके। वहां से मैं हाफगॅस्टीन के लिए रवाना होऊंगा। अभी कह नहीं सकता कि कितने दिन बैडनविलर में रुकूंगा। यह श्रीमती नेहरू की अवस्था पर निर्भर करता है। वहा का मेरा पता रहेगा-द्वारा पोस्ट लेगर्ड, बैडनविलर।

श्रीमती हार्प्रोव ने लिखा है कि जब आप वहां थीं तो आपने पर्वतों पर चढने का खूब आनंद लिया। आशा है कुछ दिन बाहर रहने के उपरांत आप बेहतर महसूस कर रही होंगी। डा. वैटर कैसे हैं? दोनों का मेरी शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी बोस

नाओमी सी वैटर,

हॉफ़गैस्टीन
पोस्ट लेगर्ड
1.10.1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

खेद है कि लबे समय से आपको पत्र नहीं लिख पाया। आपका एक पत्र बेडनविलर में तथा एक दिन एक और पत्र मिला। यहां मैंने आपका सदेश श्रीमती नेहरू को भेज दिया था। दुख का विषय है कि उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नही है। यदि वर्तमान स्थिति बनी रही तो शीघ्र ही प्राणात हो जाएगा। बहरहाल यही सतोष की बात है कि उनके पति इस समय उनके समीप हैं। सभव है इस माह के अत में मैं उनसे मिलने एकबार फिर जाऊ। नवंबर के प्रारभ में मेरा पूर्वी यूरोप जाने का विचार है। किंतु अभी इस विषय में कोई निर्णय नहीं हो पाया है इसलिए कृपया इसे गुप्त ही रखें।

आजकल मैं वहा इलाज करवा रहा हू और यह इलाज इस माह के अंतिम सप्ताह तक चलेगा। मेरे कार्य में सतोषजनक प्रगति नहीं है। इसलिए शुरू में तो बहुत कष्ट होता था। अब मैं सामान्य रूप से स्वस्थ होने की कोशिश कर रहा हू, अपने कार्य की बलि देकर, क्योंकि भविष्य के लिए मेरा स्वास्थ्य अधिक महत्वपूर्ण है। वैसे भी मैं यूरोप स्वास्थ्य की दृष्टि से ही तो आया था। दूसरी ओर यदि यूरोप में रहते हुए मे यह कार्य सपन्न न कर पाया तो भारत लौटने पर इतना समय नही होगा कि इसे पूरा कर सकू।

जानकर प्रसन्नता हुई कि मेरे भाई के भाषण से आपको संतोष हुआ। उसकी दिलचस्पी विएना में मेरे उन पत्रों को पढ़कर हुई जो मैंने कलकत्ता के मेयर को लिखे थे जो वहा की प्रेस में प्रकाशित हुए। बाद में उन्होने मुझे और सूचना भेजने को कहा और मैंने उन्हें विएना निगम पर अंग्रेजी की पुस्तक प्रेषित की (और शायद, वह पुस्तक आपने ही उन्हें भेजी थी।) ऐसी संभावना है कि शायद अगले वर्ष वे मेयर चुने जाएं, यदि वे ध्यान दें तो। अभी तक तो वे पीछे ही रह हैं, लोक सम्मान या पद से परे-क्योंकि उनका मानना है कि उसी व्यक्ति को पद व सम्मान प्राप्त करने का हक है जो पूरा समय लोक हित में व्यतीत कर सके। इस सप्ताह जब मैं उन्हें पत्र लिखूगा तो उनके भाषण के संबंध में आपके विचार भी उन तक पहुंचा दूंगा जिससे निश्चय ही उन्हें प्रसन्नता होगी।

मेरी भविष्य की योजनाएं अभी निश्चित नहीं है, सिवाय इसके कि आगामी फरवरी-मार्च मे घर लौटना चाहता हू। नेशनलिस्ट पार्टी का सालाना जलसा (जो भारत की एक महत्वपूर्ण घटना है) मार्च में होगा। मैं उसमें उपस्थित रहना चाहूंगा। हाल ही में भारतीय विधानसभा में मेरे विषय में कुछ पूछताछ हुई। सरकार का कहना है कि मेरे भारत लौटने पर किसी प्रकार की रोक-टोक नहीं है। (यह मैं पहले से ही जानता था।) जब मैं बबई पहुंचूगा तो वे मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगे इस विषय पर वे चुप हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे बबई पहुचते ही सरकार मुझे सीधे जेल में डाल देगी, और इसलिए मुझे गभीरता से सोचना है कि उस दशा में मुझे क्या करना होगा। मुझे घर वापिस जाना चाहिए

या.

मुझे आशा है कि हर हाल मे इस माह के अंत में मैं विएना में होऊगा। यदि पूर्व की ओर लंबी यात्रा पर गया, शायद एक माह की, तो। उसके बाद विएना आऊगा, और यदि स्वास्थ्य ने अनुमति दी तो कुछ स्कीइंग भी करना चाहूगा।

डा वैटर का व आपका स्वास्थ्य कैसा है? आप दोनों को प्रणाम,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष सी. बोस

वी. लैस्नी को,

द्वारा पोस्ट लैगर्ड
हॉफगैस्टीन (आस्ट्रिया)
2 अक्तूबर, 1935

प्रोफेसर लेस्नी
प्रैज़ीडेंट, इडो-चेकोस्लोवाकियन सोसायटी,
प्राहा

प्रिय प्रोफेसर साहब,

आशा है आपकी सोसायटी की बैठक जल्दी ही होगी। शायद यह नए सत्र की उद्घाटन बैठक हो। इस अवसर पर मैं सोसायटी के लक्ष्यों व उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किए जा रहे निःस्वार्थ प्रयासो के लिए आपको बधाई सदेश देना चाहूगा और सोसायटी के सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए आप लोगों की प्रशासा करूगा। मैं स्वीकार करता हू कि प्रारभ में अतर्राष्ट्रीय सबधो को प्रगाढ करने में भारतीयों की सख्या अधिक नही थी, किंतु अब हर्ष का विषय है कि अधिक से अधिक महत्त्वपूर्ण भारतीय विश्व के उन्नतिशील देशों के साथ सबध प्रगाढ करने को उत्सुक हैं। मेरे विषय मे तो आप जानते ही हैं कि इंडो-चेकोस्लोवाकियन सोसायटी के कार्यों में मुझे प्रारभ से ही बहुत रुचि थी, जिसका एक कारण यह था कि आपके देश के प्रति मुझमें आकर्षण था। मुझे विश्वास है कि अगले वर्ष जब मैं भारत जाऊगा तो वहा भी आपकी सोसायटी के प्रति लोगों में रुचि उत्पन्न कर सकूंगा। आपको तथा सोसायटी के सदस्यों को विश्वास दिलाना चाहता हू कि अधिकांश भारतीय आपके कार्यों का अनुसरण कर रहे हैं और मुझे पूरा भरोसा है कि निकट भविष्य में ऐसे अंतर्राष्ट्रीय अनुबधों से दोनों ही देशों को समुचित लाभ पहुचेगा और अच्छे परिणाम सामने आएगे।

मेरा सहयोग व शुभकामनाए सदा आपके साथ हैं।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

जवाहरलाल नेहरू को,

पोर्ट लैगर्ड
हॉफगैस्टीन
4 अक्तूबर, 1935

मेरे प्रिय जवाहर,

दो और तीन तारीख का एक के बाद एक लिखा पत्र मिला।

फ्रीबर्ग सर्जन की रिपोर्ट पढ़कर सुख महसूस हुआ। आशा करता हूं कि उनकी मेडिकल साइंस रोगों की प्लूरिसी कष्ट के निवारण में सहायक सिद्ध होगी। सभव है आपने श्रीमती नेहरू को किसी अन्य जगह ले जाने की राय मांगी हो। यदि वर्तमान कष्ट में मैं आपके किसी काम आ सकूं तो आशा है आप मुझे कहने से हिचकिचाएंगे नहीं।

मेरी पुस्तक में गलती दर्शाने के लिए आपका धन्यवाद। संभव है, जैसा कि आपने कहा-कई गलतियां रही हों-किंतु मुझे विश्वास है कोई गंभीर गलती नहीं होगी।

दुर्भाग्यवश मुझे अपनी याददाश्त, विशेषरूप से तिथियों के संदर्भ में, का ही सहारा लेना पड़ा, अतः मैं स्वयं को असमर्थ महसूस करता था। उस काल का कोई साहित्य मुझे उपलब्ध नहीं हो सका, और निकट कोई ऐसा व्यक्ति भी नहीं था जो इस विषय में मेरा सहायक सिद्ध हो सकता। पंडित मोतीलालजी की मृत्यु विशेष रूप, से तिथि के संदर्भ में मैंने अपने मस्तिष्क पर बहुत जोर दिया, किंतु सफल नहीं हो सका। प्रिंटिंग की भी कुछ अशुद्धियां आपको देखने को मिलेंगी-खासतौर पर प्रूफ की अशुद्धियों के कारण। केवल एक बार-वह भी कई भागों में-मैं प्रूफ जल्दबाजी में पढ़ पाया क्योंकि मुझे भारत लौटने की जल्दी थी। फिर पुस्तक अत्यन्त दबाव में लिखी गई थी और मेरा स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नहीं था। आप द्वारा बताई गई सभी कमियों को मैंने नोट कर लिया है और उनमें आवश्यक संशोधन कर दूंगा, ताकि द्वितीय संस्करण में वे ठीक की जा सकें।

मैनचेस्टर गार्डियन में दिए गए अपने भाषण की प्रति साथ भेज रहा हूं। एक अक्तूबर को यह प्रकाशित हुआ था।

अब तक आपको खबर मिल चुकी होगी कि एबीसिनिया में युद्ध प्रारंभ हो चुका है। प्रश्न यह है कि क्या यह युद्ध इंग्लैंड और इटली के मध्य युद्ध का रूप लेगा।

आपका अपना
सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

पोस्ट लैगार्ड
हॉफगैस्टीन
12 10 1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

आशा है मेरा पिछला पत्र समय पर मिल गया होगा। यहा मौसम बहुत सुहावना है और इस माह की दो तारीख को यहां बर्फ भी पडी। मेरे विचार से विएना में काफी गर्मी होगी। इस माह के अंत में कुछ सप्ताह के लिए मैं रूम जाने की सोच रहा हू। शायद इस माह के अंतिम सप्ताह में विएना से गुजरूगा। कृपया इस सूचना को गुप्त रखे क्योंकि अभी विश्वस्त नहीं हू कि वहा जा पाऊंगा या नही।

आर.आर. पर लिखा लेख भारतीय पत्रिका में प्रकाशित हुआ, किंतु वहा के कठोर नियमो के कारण सपादक ने कुछ भाग काट दिए जिसकी वजह से उस लेख का महत्व कम, बल्कि नष्ट हो गया। किंतु उस दशा में कुछ नहीं किया जा सकता।

आपका सदेश पडित नेहरू तक पहुचा दिया है। श्रीमती नेहरू का स्वास्थ्य पहले जैसा ही है। यही अच्छी बात है कि हालत और बिगडी नहीं है।

जिस पीडा से श्रीमती फ्लूलाप मिलर गुजर रही हैं उसके बारे मे आपको सूचना मिल चुकी होगी।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

पार्क होटल
म्यूनेकन
25 10 1935

माननीय एन.सी.वैटर
विएना-IX
ब्लीगिंग स्ट्रीट-41 (आस्ट्रिया)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कुछ दिन पूर्व आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। दो दिन पूर्व मैं हॉफगैस्टीन से निकला था। अब श्रीमती नेहरू से मिलने बेडनविलर आया हू। 29 या 30 तारीख को विएना पहुचूगा। फिर तत्काल पूर्व दिशा की यात्रा पर निकलूगा। इस अल्पावधि मे विएना मे आपसे मिलने की उम्मीद रखता हू। डा वैटर व आपको शुभकामनाए।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

डा. थिरफेल्डर को,

अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
विएना-1
केरटनेरिंग-14
7 नवंबर, 1935

प्रिय डा. थिरफेल्डर,

आपकी इच्छानुसार म्यूनिख में हम दोनों के बीच हुए वार्तालाप के सार को लिखित रूप दे रहा हूं।

जैसाकि आप जानते ही हैं कि, 1933 में अपनी प्रथम जर्मनी यात्रा के दौरान मैंने जर्मनी और राष्ट्रवादी भारत के मध्य संबंधों को सुधारने का पर्याप्त प्रयास किया था। दुर्भाग्यवश कुछ ऐसी स्थितियां पैदा हो गईं जिन्होंने इस मैत्री पर अपना दुष्प्रभाव ही डाला। वास्तव में, नई सत्ता ने, जिसने जर्मनी में प्रगति व उन्नति प्राप्त की, जर्मनी और भारत के पूर्ण मैत्री संबंधों को खराब करने में बहुत योगदान दिया। यहूदियों द्वारा छेड़े गए नाजी-विरोधी उस आंदोलन का सामान्य प्रभाव नहीं था जिसने पूरे विश्व को घेर रखा था। इसके विपरीत, भारतीयों को स्वयं यह महसूस हुआ कि पहले की अपेक्षा अब भारत के प्रति जर्मनी का रुख मैत्रीपूर्ण नहीं है। *मैंने जर्मनी की कुछ विशिष्ट हस्तियों को,* स्पष्ट शब्दों में बताने का प्रयास किया है कि भारत के प्रति जर्मनी के इस रुख के कारण क्या हो सकते हैं।

वे कारण निम्न हैं।-

1 जर्मनी सरकार का ब्रिटिश सरकार के प्रति मैत्रीपूर्ण रुख।

2. जर्मनी के सामान्य लोगों के मध्य जातिवाद प्रचार, जिसने रंगभेद को बढ़ा दिया।

3. *वर्तमान भारत के प्रति जर्मनी के नेताओं में अवज्ञा का रुख* जो उनके लेखन व रिपोर्ट में भी स्पष्ट झलकता है।

4. जर्मन प्रेस में भारत के पक्ष के लेखों को रोकना या सेंसर करना और भारत-विरोधी लेखों का प्रकाशन। *जर्मनी में मेरे कई मित्र हैं, जिनमें राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी के उत्साही* सदस्य भी शामिल हैं। उनसे वार्तालाप के दौरान मैं अपनी राय प्रकट करता रहा हूं कि किस प्रकार आपसी संबंधों में प्रगाढ़ता लाई जा सकती है। मेरे सुझाव निम्नलिखित हैं।

1 जातिवाद प्रचार को खत्म करना ताकि भारतीयों के प्रति विपरीत भावना उत्पन्न न हो।

2 उच्चपदासीन नेताओं द्वारा एक विस्तृत रिपोर्ट जिसमें न्यू जर्मनी के भारत के प्रति रुख का खुलासा किया जाए।

3. जर्मनी प्रेस द्वारा भारत-विरोधी प्रचार पर रोक। इन प्रस्तावों को सामने रखते हुए, मैंने जान बूझकर ऐसी कोई मांग नहीं रखी जिसे व्यवहार में लाना कठिन हो। उदाहरणार्थ, यदि ब्रिटिश समर्थक नीति जर्मनी के लिए उपयोगी है तो मैं ब्रिटिश विरोधी नीति की माग नही करता। यद्यपि भारतीय होने के नाते हम जर्मनी के ऐसे रुख का स्वागत ही करेंगे। इसी प्रकार मैं यह भी नही कहता कि आप अपने जातिवादी सिद्धात को छोड दे। हम केवल, इसमें थोड़ा संशोधन चाहते हैं, ताकि जान-बूझकर या अनजाने मे यह भारतीयों के प्रति दुर्भावना न बढ़ाए। फिर, हमने कभी यह भी नहीं चाहा कि आप जर्मनी के पत्रों में भारतीयों के पक्ष में कुछ लिखें, यदि आप लिखना नही चाहते तो, किंतु कृपया विरोध में तो न लिखें।

समाचार-पत्रों द्वारा किया जा रहा प्रचार बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि लोगो की राय को यह प्रभावित करता है। जर्मनी एक प्रभावशाली देश है अतः यहा की प्रेस पूर्णरूप से रीक शासन तत्र राज्य के अधीन है।

इसके विपरीत भारतीय प्रेस पर न तो ब्रिटिश सरकार का पूर्ण नियत्रण है न ही वह किसी पार्टी के अधीन है। फिर भी, किसी भी जर्मन या जर्मनी के पक्षधर भारतीय लेखक के लिए, जर्मनी के पक्ष में लिखना और प्रसिद्ध भारतीय-पत्रिकाओ मे उसे प्रकाशित करना सभव है। प्रायः ऐसा हुआ भी है कि जब कभी न्यू जर्मन राज्य के विरुद्ध पत्रों में कुछ प्रकाशित हुआ है तो भारत स्थित जर्मन कांस्यूलेट ने या जर्मनी के पक्षधर भारतीय लेखक ने तत्काल उसकी भर्त्सना की है। किंतु जर्मनी मे छपे पत्रों की या भारत-विरोधी लेखो की भर्त्सना करना सभव नही है। ऐसा मैं अनुभव के आधार कह रहा हू।

भारत जर्मनी के साथ मैत्री सबंध स्थापित करने को तैयार है, यदि जर्मनी भी चाहे तो। अतः यह आवश्यक है कि वे इडो-जर्मन संबधों के मार्ग में उपस्थित बाधाओ को जान लें और बेहिचक होकर उन्हें मार्ग से हटाने का प्रयास करे। केवल बातो से कोई लाभ नहीं होगा। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि सप्रवासी फेडरेशन ऑफ इडियन स्टूडेंट्स को लिखे अपने पत्र में विदेश कार्यालय ने लिखा है कि जर्मनी प्रेस मे हो रहे भारत के प्रति दुष्प्रचार को रोकने के उपाय किए जाएंगे। पत्र में (संख्या 111 सी 3486, विदेश कार्यालय) निम्न पक्तिया हैं।

"एन एस. डी. ए. पी के जाति संबंधी राजनैतिक कार्यालय को एव लोक-शिक्षा एव प्रचार मंत्रालय को शिकायतों से अवगत करा दिया गया है और उन्होंने भारत विरोधी प्रचार को रोकने में अपना सहयोग देने की सहमति भी दी है।" किंतु अभी तक इस दिशा में कुछ भी नहीं किया गया, क्योंकि आप जानते ही हैं कि यह प्रचार अभी भी हो रहा है। इस माह के प्रारभ में फ्रैंकफर्टरजीटुग के समान लोकप्रिय अखबार ने एक महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशित किया था जिसमें भारत के लिए बनाए गए सविधान की प्रशसा की गई थी। किंतु प्रत्येक भारतीय-राजनीति के विद्यार्थी ने उसका विरोध किया।

समाप्त करने से पूर्व कुछ बातें और कहना चाहूंगा। जर्मनी में अध्ययनरत कई भारतीय विद्यार्थी ये शिकायत करते हैं कि उन्हें जर्मनी की कंपनियों मे व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु

कोई सहायता प्राप्त नहीं होती। एक उदाहरण ऐसा भी है कि जर्मन फैक्टरी एक भारतीय को अपने यहां रखने को तैयार थी किंतु जर्मन सरकार ने उन्हें आवश्यक आज्ञा नहीं दी। अभी तक जर्मनी भारतीय विद्यार्थियों को पूरा सहयोग दे रहा था क्योंकि वे सुगमता से जर्मनी की फैक्टरियों में कार्य करने को तैयार रहते थे। किंतु अब यह सुविधा उपलब्ध न हो पाई तो जर्मनी में आनेवाले भारतीय विद्यार्थियों की सख्या में निश्चय ही कमी आएगी। जिन विद्यार्थियों ने मुझसे सहयोग मांगा मैंने उन्हें चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और इटली भेजने का प्रयास किया और इसमें मुझे सफलता भी मिली।

यदि आपकी ओर से इंडो-जर्मन सबधों को सुधारने के प्रयत्न किए जाते हैं तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि, हम भी सार्थक प्रयास करेंगे। हम राष्ट्रवादी भारतीय जर्मनी के लिए वह सब कुछ करेंगे, जो जर्मनवासी हम भारतीयों के लिए करेंगे। यह तो स्पष्ट ही है कि व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्रों में तथा प्रेस-प्रचार की दृष्टि से भारत का रुख जर्मनी के प्रति, जर्मनी के भारत के प्रति रुख की अपेक्षा अधिक मैत्रीपूर्ण है। हम भारतीय ऐसी स्थिति पर पहुच चुके हैं कि या तो हम जर्मनी से पूर्णरूप से मैत्री-सबध स्थापित करना चाहेंगे या फिर कोई अन्य मार्ग खोजेंगे। यह सब जर्मनी पर निर्भर है कि वह अपनी ओर से संकेत दे कि हमें किस मार्ग को अपनाना चाहिए।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि जर्मन अकादमी ने भारतीय विद्यार्थियों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई है। साथ ही मैं यह भी चाहता हू कि भारतीय विद्यार्थियों को आर्थिक सुविधा देने के साथ-साथ उन विद्यार्थियों की भी सहायता की जाए जो स्वय के खर्चे पर जर्मनी में अध्ययन के लिए आते हैं और वहां रहकर व्यावहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। जर्मन अकादमी उनकी भी सहायता कर सकती है यदि वह उन्हें जर्मनी की फैक्टरियों में व्यवहारिक प्रशिक्षण के लिए स्थान उपलब्ध करा सके तो।

कृपया मुझे सूचित करें कि क्या आप 'जर्मन-ओरिएंट एसोसिएशन के सपर्क में हैं और क्या, यह एसोसिएशन, जर्मनी में भारतीय विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक प्रशिक्षण की सुविधा, दिलाने में सहायता सिद्ध हो सकती है।

यदि कोई विषय अस्पष्ट रह गया हो तो क्षमा करें। यह पत्र का अनुवाद है अतः सभावना हो सकती है कि कुछ भाग पूर्णतः स्पष्ट न हो पाए हो।

आपको सादर प्रणाम,

आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

संतोष कुमार वासु को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
कैरटनेंग-14
विएना-1

12 नवंबर, 1935

प्रिय संतोष बाबू,

बहुत दिनों से एक विषय पर आपको पत्र लिखना चाह रहा था। मुझे याद है मैंने कहीं समाचार-पत्रों में यह पढ़ा था कि कलकत्ता की जनता की ओर से आपने स्वामी बॉन के स्वागत में भाषण दिया था। मैं इसी व्यक्ति के सबध में आपसे कुछ कहना चाहता हू। लार्ड विलिग्टन और भारतीय उच्च अधिकारियों की अनुशसा पर ये हिंदू धर्म का प्रचार करने लदन गए थे। भारतीय कार्यालय में इनका भव्य स्वागत हुआ और कुछ दिन ये वहा के मुख्य लोगों के साथ रहे। फिर इन्होंने लार्ड जैटलैंड की अध्यक्षता मे एक समिति बनाई, ताकि वैष्णव धर्म का प्रचार कर सकें। लदन के अधिकारियों से इन्हें पूरा-पूरा सहयोग मिला-जिसके कारणों को तलाशने की आवश्यकता नही है। मेरे एक मित्र ने मुझे बताया कि जब उन्हें बकिंघम पैलेस की गार्डन पार्टी में आमत्रित किया गया तो उन्होंने हिज मैजेस्टी, किग जार्ज पचम, को बताया कि उनके लाखों शिष्य ब्रिटिश राज्य के प्रति वफादार हैं। इस मित्र ने उन्हें यह राय भी दी कि किसी भारतीय को इस बात का पता नहीं चलना चाहिए, क्योंकि वे निश्चय ही इस बात से अप्रसन्न होंगे। ग्रेट ब्रिटेन पर विजय पाने के बाद यह मसीहा विश्वयात्रा पर रवाना हुआ क्योंकि महान विश्व-विजय से कम में वे सतुष्ट होने वाले नहीं थे। क्या वे विवेकानद से महान नही? दूसरे दिन मैं म्यूनिख में गया जहा भारतीयों ने मुझे बताया कि कितना बुरा प्रभाव उन्होंने डाला है। ड्यूट्शे अकादमी की भारत संस्था अब कभी उन्हें आमत्रित नही करेगी जिसने कि उनके भाषण की व्यवस्था की थी। भारतीय-पत्रों मे कुछ टिप्पणिया छपीं जिनसे यह आभास होता था कि जर्मनी और पूर्व के बीच सास्कृतिक वार्तालाप स्थापित करने के लिए हिटलर स्वामी से परामर्श लेना चाहता है। वास्तव में, म्यूनिख में रहनेवाले कुछ भारतीयो ने मुझे बताया कि, इनकी कुटिलतापूर्ण पद्धति के कारण भविष्य मे किसी भी भारतीय के लिए जर्मनी में धर्म-प्रचार करना कठिन होगा। इसके अलावा, विश्व मे जर्मनी अतिम देश था जहां वैष्णव वाद लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर पाता। नाजी जर्मनी का विश्वास केवल शाति में है और वे भारत जैसे गुलाम देश को अवज्ञा की दृष्टि से देखते हैं।

स्वामी विएना में अपना सदेश फैलाने आए थे। उनकी सभा में ब्रिटिश राजदूत उपस्थित थे, जो कि सामान्यत: किसी राजदूत का अप्रत्याशित व्यवहार है, जो इस बात का सबूत है, कि महाद्वीप की यात्रा के दौरान भी उन्हें ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का सरक्षण प्राप्त था। जो बात मेरी समझ से बाहर है वह यह है कि एक हिंदू स्वामी जो सब कुछ त्याग चुका है उसे ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में धर्म प्रचार करने की क्या आवश्यकता है।

यदि उन्हें कोई संदेश देना ही था तो वे विवेकानंद की भांति आचरण क्यो नही कर पाए। आपने प्रवासी में पढ़ा ही होगा कि लंदन में आयोजित सम्मेलन मे अपने भाषण के दौरान उन्होंने नए संविधान की सराहना की थी। उस पर सपादक की टिप्पणी पूर्णत: सही है। इससे स्पष्ट है कि वे एक राजनीतिज्ञ सन्यासी हैं और उनकी राजनीतिक वफ़ादारी है।

समाचार-पत्रों में मैंने पढ़ा है कि वे दो जर्मन शिष्यों के साथ वापिस लौटे हैं। वे लोग कौन हैं? क्या वे बेरोजगार जवान हैं जिन्हें उन्होंने भोजन और कपडा देने की व्यवस्था करा दी है? या फिर वे संवेदनशील मूर्ख हैं जिनका दुरुपयोग वे कर रहे हैं? यह सत्य है कि पश्चिम में प्राय: आदर्शवादी, मूर्ख, सवेदनशील और अर्द्धविक्षिप्तों से पाला पडता रहता है।

यदि ये स्वामी त्रिपुरा के महाराजा की सहायता से लंदन में केंद्र स्थापित करना चाहते हैं तो भारत का भगवान ही मालिक है। यदि आप पश्चिम मे हिंदू धर्म का नाश करने के इच्छुक हैं, तो स्वामी बॉन जैसे लोगों को धर्म-प्रचारक बनाकर भेजने से अच्छा अन्य कोई उपाय नहीं है।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

एन बी. सकलातवाला को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
कैरटनेरिंग-14
विएना-1
15 नवबर, 1935

संदर्भ जी. जी. एल 252,

प्रिय महोदय एन. बी. सकलातवाला,

आपका 15 अगस्त, 1935 का पत्र मिला, बहुत-बहुत धन्यवाद। यद्यपि आपके पत्र से मुझे बहुत विस्मय हुआ और कष्ट भी पहुचा। आपके पत्र का उत्तर विलब से दे रहा हूं इसलिए क्षमा चाहता हू , इसका कारण यही था कि मैं लगातार घूमता रहा हूं और फिर यह मैंने अपना कर्तव्य समझा कि जमशेदपुर में लेबर एसोसिएशन को आपका पत्र भेज दू , उसके बाद ही आपको पत्र लिखू।

आपने लिखा है कि समझौते के तहत कपनी ने एसोसिएशन पर बकाया किराए व वर्तमान किराए के लिए कोई जोर नहीं डाला है। आपके विचार में लेबर एसोसिएशन ने उस समझौते की अवहेलना की है अतः उस छूट को रद्द किया जाना चाहिए। तर्क-कुतर्क से बचने के लिए यह मान भी लिया जाए कि अवहेलना हमारी ओर से हुई थी लेकिन यह बात मेरी समझ से परे है कि उससे पूर्व का किराया क्यों मागा जा रहा है। मेरी राय मे आप जैसी सुप्रसिद्ध कपनी द्वारा ऐसा व्यवहार सरासर अन्यायपूर्ण है। ज्यादा से ज्यादा आप उस क्षण से छूट रद्द कर सकते हैं, जब से कि समझौते की अवहेलना हुई है।

अब मैं आपके उस आरोप का उत्तर देता हू जिसमें आपने कहा है कि अलिखित समझौते की अवहेलना हुई है। आपने बडे हर्ष के साथ कहा है कि अब एसोसिएशन का कोई अस्तित्व नहीं रह गया है, क्योंकि पिछले चार वर्ष से कोई बैठक सपन्न नही हुई है। यह बहुत गंभीर आरोप है और यदि मैं कुछ कटु व स्पष्ट शब्दो मे कुछ कहूगा तो आप मुझे क्षमा करेंगे। शायद आपको याद हो कि 1928 की हड़ताल के बाद, या उसके और कुछ समय बाद तक, कपनी ने होमी से अपना कोई भी सबध होने की बात नकार दी थी। उस समय राजनीतिक हस्तक्षेप द्वारा ही होमी जीत पाया था। किंतु चूंकि होमी की कपनी ने अवहेलना की थी, इसलिए होमी कपनी व उन व्यक्तियो के प्रति, जिन्होंने उसका साथ दिया था और समझौता कराया था दोनों ही के प्रति बेरुखी का व्यवहार करता रहा। जमशेदपुर में सभी जानते हैं कि होमी की पार्टी ने रात में ही नही बल्कि दिन के उजाले में भी उन लोगों के प्रति हिंसा का रुख अपनाया था जो समझौते के पक्षधर थे। इस बात का भी सभी को आभास है कि, लेबर एसोसिएशन द्वारा आयोजित सम्मेलन में, जिसकी अध्यक्षता मैंने की थी, होमी की पार्टी के गुडो ने आक्रमण किया था। उन बुरे दिनों में प्रशासन ने हमें सुरक्षा प्रदान नही की थी, किंतु फिर भी हम समझौते के प्रति पूर्ण वफादार रहे थे, जबकि हम जानते थे कि कपनी समझौते की प्रत्येक शर्त को पूरा नही कर रही है। कुछ समय तक यही स्थिति बनी रही थी जब अचानक एक दिन प्रातः कपनी ने बहुत ही अप्रत्याशित रूप से पिछली हर बात को भुलाकर होमी से समझौता कर लिया और उन सभी लोगों को अधर में लटका छोड दिया जो समझौते के प्रति वफादार रहे थे। इसके बाद कंपनी व होमी की पार्टी के बीच अप्रत्याशित दोस्ती स्थापित हो गई तथा जब भी एसोसिएशन ने कोई बैठक आयोजित की, होमी के गुडो ने अक्रमण किया। इसके बाद नीति में एक और परिवर्तन आया। होमी पर मुकदमा चलाया गया और उसकी अनुपस्थिति में इसे रद्द भी कर दिया गया। होमी की पार्टी अदृश्य हो गई किंतु अन्य एजेंसियों ने उन गुडों को अपने साथ नत्थी रखा। मैं स्वय जमशेदपुर की उन बैठकों में उपस्थित था जिन पर होमी की पार्टी के गुडों ने आक्रमण किया था। मैंने व्यक्तिगत रूप से श्री कीनन से इस विषय में बात की थी किंतु उन्होंने किसी प्रकार की जानकारी से इकार कर दिया जब कि जमशेदपुर का बच्चा-बच्चा जानता था कि गुडे किस पार्टी से सबद्ध हैं। वही स्थिति आजतक चली आ रही है। यदि इन परिस्थितियों में लेबर एसोसिएशन कोई बैठक आयोजित करने में असफल रहती है तो क्या इसकी सारी जिम्मेदारी एसोसिएशन पर ही है? क्या कोई छाती ठोककर यह कह सकता है कि

इस बारे में कपनी की कोई जिम्मेदारी नहीं है?

यह बात मेरी समझ से बाहर है कि कंपनी ने अपनी पहचान अलग क्यों कर दी, सिद्धात रूप में भी और व्यावहारिक रूप में भी उस प्राचीन ट्रेड यूनियन आर्गेनाइज़ेशन से, जिसे जमशेदपुर में सन् 1920 में स्वर्गीय देशबधु दास, पडित मोतीलाल नेहरू तथा महात्मा गांधी जैसे प्रतिष्ठित नेताओं ने बनाया था, और जिसने कंपनी के साथ सदैव सद्व्यवहार ही किया था। क्या होमी के सगठन के टूट जाने से यह संभव है कि वर्तमान आर्गेनाइज़ेशन को भी तोड़ दिया जाए। क्या आप वाकई सोचते हैं कि आपका व्यवहार उन लोगों के प्रति उचित है, जो 1928 के समझौते के प्रति ईमानदार व वफादार हैं? मेरे सम्मुख महात्मा गाधी के उस भाषण की प्रति है, जो उन्होंने 1934 में अपनी जमशेदपुर यात्रा के दौरान दिया था और जिसमें उन्होंने जनसभा में कहा था कि उन्हें यह देखकर अत्यधिक दुख हो रहा है कि मालिकों और श्रमिकों के मध्य लाठी के बल पर समझौता हो रहा है। आप महात्मा गाधी की राजनीति के कितने भी विरोधी क्यों न हों, किंतु जमशेदपुर की अदालतों के निर्णयों को पढकर आपको पता चलेगा कि लेबर एसोसिएशन के सचिव का पठानों द्वारा बहुत अपमान हुआ था, जब वे लेबर एसोसिएशन के कार्यालय में थे तब ।

लेबर एसोसिएशन के सचिव ने मुझे बताया है कि सभी उपर्युक्त हानियों व कठिनाइयों के रहते भी, कुछ लोग इसके नियमित सदस्य हैं और एसोसिएशन की आय भी नियमित है। यद्यपि स्थिति अधिक संतोषजनक नहीं है, फिर भी छोटे-मोटे खर्च किराए के अतिरिक्त वहन करने के लिए पर्याप्त हैं, यह स्थिति तो तब है, जब लगातार परेशान किया जा रहा है और मैनेजमेंट द्वारा कुछ विरोधी संगठनों को प्रश्रय दिया जा रहा है। मुझे खेद है कि आपको कभी यह महसूस नहीं हुआ कि, मैनेजमेंट द्वारा नई संस्थाओ को प्रश्रय देना तथा जमशेदपुर की सबसे पुरानी सस्था को सहायता देने से इंकार करना अनुचित ही नही बल्कि अन्यायपूर्ण भी है।

आपने बडी प्रसन्नतापूर्वक यह बात बताई है कि श्री जॉन कुछ समाचार-पत्रों के एजेंट हैं, अर्थात ट्रेड यूनियन के कार्य से उनका कोई संबंध नहीं है। आपको तथा आपकी मैनेजमेंट को बताना चाहूंगा, यद्यपि उसे अधिक जानकारी होनी चाहिए, कि सन् 1923 से, जब से देशबधु दास ने फारवर्ड अखबार प्रारभ किया था, ही तक लेबर एसोसिएशन समाचार-पत्रों की एजेंट रही है। 20 वर्ष पूर्व जान-बूझकर यह कदम उठाया गया था ताकि लोगों मे समाचार-पत्र पढ़ने की प्रवृत्ति पैदा की जाए और साथ ही एसोसिएशन की आय में वृद्धि हो सके। इन समाचार-पत्रों की एजेंसी से होने वाली आय एसोसिएशन की निजी-संपत्ति नहीं है। श्री जॉन संभवतः निर्धन व्यक्ति हैं, किंतु मुझे गर्व है कि वे एक अच्छे कार्यकर्ता हैं तथा बुरे हाल में और अपने जीवन की कीमत पर भी वे एसोसिएशन का हर कार्य करने को तत्पर रहते हैं, और समय-समय पर विभिन्न लोगों द्वारा टाटा आयरन एड स्टील कपनी में नौकरी का लालच देने के बावजूद भी वे एसोसिएशन के कार्य में लगे हैं।

आपने बेहद प्रसन्नता से यह सूचना भी दी है कि एक मकान मे कुछ समाचार-पत्रों का एजेंट, दूसरे में दो अखबार विक्रेता, एक प्रिंटिंग प्रेस का कर्मचारी, एक होटल का

नौकर, एक आम विक्रेता व टैक्सी ड्राइवर रहते हैं। सचिव से प्राप्त जानकारी के अनुसार, उपरोक्त सभी आंकडे गलत हैं, सिवाय इसके कि कुछ कार्यकर्ता जो अखबार वितरण का कार्य करते हैं वे वहां रहते हैं। लेकिन सारे दिन वे एसोसिएशन का कार्य करते हैं, तथा पिछले कई वर्षों से वे उसी परिसर में रह रहे हैं, क्योंकि यह व्यवस्था एसोसिएशन के लिए लाभकारी है।

आपने आवासों की कमी का ज़िक्र किया है और इन दो मकानों की आवश्यकता की बात भी कही है। किंतु मैं यह नहीं समझ पा रहा कि, यह कमी लगातार क्यो चली आ रही है, जबकि आपके वार्षिक कार्यक्रम में नए आवासों का निर्माण हो रहा है और श्रमिकों की संख्या में पहले की अपेक्षा, अर्थात जब एसोसिएशन को ये दो मकान आबंटित किए गए थे, तब से, 20 प्रतिशत की कमी हुई है।

आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे क्योंकि इन परिस्थितियों में मेरी राय यही है कि इस सबके पीछे कंपनी का एकमात्र उद्देश्य एसोसिएशन को अंतिम चोट पहुचाना है। चूंकि जमशेदपुर में आप का आवास-व्यवस्था पर एकछत्र राज्य है, इसलिए आप लेबर एसोसिएशन को आवासीय सुविधा देने से इंकार करके इसके अस्तित्व को समाप्त कर देना चाहते हैं। किंतु मेरी आप से प्रार्थना है कि भूतकाल को बिल्कुल भुला न दे और उन लोगो के साथ ऐसा दुर्व्यवहार न करें जिन्होंने कपनी के साथ अपने सबध सदैव सौहार्दपूर्ण रखे हैं। जहा तक भविष्य का संबंध है, मुझे नही लगता कि हमारा अस्तित्व खतरे में है।

मैंने प्रारंभ में ही कह दिया था कि मैं स्पष्ट बातें कहना चाहूंगा अत: यदि मैंने ऐसा ही किया है तो आशा है आप मुझे क्षमा करेंगे। आपको अपनी बातों से सहमत करा पाया हूं इसकी मुझे आशा नहीं। इस तथ्य से मैं अवगत हूं कि आपके कार्यालय की बात का वजन मेरी बात की अपेक्षा निश्चय ही अधिक होगा। मैं केवल यही कह सकता हू कि मैं भी आपके अधिकारियों की ही भांति एक ईमानदार और भला मनुष्य हू। इस लंबे पत्र को लिखने का उद्देश्य यही था कि मैं आपको चित्र का दूसरा पक्ष भी दिखाना चाहता था। अपनी बातों से आपको सहमत कराने का जहां तक प्रश्न है, मुझे कोई विशेष आशा नहीं है।

लबे पत्र के लिए क्षमा चाहता हूं और अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हू।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी बोस

नाओमी सी वैटर,

पेंशन कास्मोपोलाइट
विएन-VIII
29 11.1935

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपकी इच्छानुसार एक नोट भेज रहा हूं। आशा है आप यही चाहती थीं। यह आवश्यक नही था कि डा. वैटर उसे यह नोट देते। वे यदि लिखित रूप में कुछ देना नही चाहते थे तो मौखिक रूप में ही अपनी बात कह सकते थे।

मैंने लिखा था कि मैं वह कारण जानना चाहता हूं जिसकी वजह से वीसा नही दिया गया। डा. वैटर यह जोड़ सकते हैं कि भारतीय लोगों को यह महसूस होने लगा है कि नई सोवियत-ब्रिटिश मैत्री के कारण ही वीसा देने से इकार किया गया है। इससे भारत में सोवियत सरकार की साख पर आपत्ति आएगी। वे यह भी लिख सकते हैं कि, यदि वीसा दिया जा रहा है, सभव है मैं कुछ दिन बाद रूस जाना चाहूंगा। यह आवश्यक नहीं कि डा. वैटर मेरे लिए साक्षात्कार का आयोजन करें। डा. वैटर मेरी तरफ से स्वय बात कर सकते हैं।

आप दोनों को शुभकामनाएं ।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष सी. बोस

पुनश्च :- टाइम्स से एक कटिंग भेज रहा हूं।

डा. थीरफेल्डर को,

अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
कैरटनेरिंग 14
विएना-1
9 दिसबर, 1935

जर्मनी अकादमी
प्राप्त की/प्रविष्टि 19.12.1935
स. जे 3005

माननीय डा थीरफेल्डर,

6 दिसंबर के आपके पत्र के लिए धन्यवाद ।मैं आपका आभारी हू कि आपने मिस्टर मिनीस्टीरियल-डायरेक्टर डिकोफ़ की एक मुलाकात की व्यवस्था करा दी। किंतु दुर्भाग्यवश

इस समय मैं बुखार व जुकाम से घिरा हूं। खेद है कि मैं आपको फिलहाल यह सूचित नहीं कर सकता कि कब यात्रा कर पाऊगा, क्योंकि बीमारी पता नही कितनी लबी चलेगी। इसलिए आप से अनुरोध है कि आप मिस्टर मिनिस्टीरियल-डायरेक्टर डिकोफ को एक एक्सप्रेस पत्र डाल दें व बता दें कि किन कारणों से एक बार फिर मैं बर्लिन नहीं पहुच पाऊगा। यह निश्चित है कि- 6 दिन बाद मैं आपको पुनः पत्र लिखूगा और सूचित करूगा कि कब यात्रा करने योग्य होऊंगा। यदि आप श्री डिकोफ से पता कर सकें कि वे क्रिसमस की छुट्टियों मे कितने दिन कार्यालय नही जाएंगे तो आपका आभारी होऊगा। यदि उनकी योजना का पता लग गया तो, मेरी कोशिश रहेगी कि क्रिसमस अवकाश से पूर्व या तुरत उसके बाद बर्लिन पहुच सकूं।

सभी को सादर।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को *

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस क
विएना
20 12 35

प्रिय सुनील,

तुम्हारे बहुत से पत्र मिलते रहे हैं, किंतु उनका उत्तर देने मे असमर्थ रहा, क्षमा चाहता हू। कार्ल्सबाद बहुत बड़ा शहर नही है अतः अमेरिकन एक्सप्रेस की यहा कोई ब्राच नही है। यदि तुम केवल मेरा नाम और कार्ल्सबाद भी लिख देते तो भी तुम्हारा पत्र मुझे मिल जाता। 12 नवंबर को तुम्हारा अंतिम पत्र था, जो मुझे मिला। यदि उपर्युक्त पते पर मुझे पत्र लिखोगे तो मैं कही भी रहूं तुम्हारा पत्र समय पर मुझे मिल जाएगा।

श्रीमती कमला नेहरू का स्वास्थ्य कुछ ठीक है।

मुझ पर लगाए गए प्रतिबंध अभी लागू हैं। इस ओर अभी कोई परिवर्तन नही हुआ है।

सभी यहां टिकट इकट्ठे करते हैं। अब आगे से मैं भी तुम्हारे लिए टिकट इकट्ठे करूंगा।

महात्मा गांधी की सद्भावना के लिए धन्यवाद। ऐसा प्रतीत होता है कि जवाहरलाल नेहरू ही पुनः अध्यक्ष होंगे। बंगाल की आवाज़ कौन सुनेगा? स्वर्गीय पटेल की राशि भी व्यर्थ ही जाएगी।

---

* मूल बगला से अनूदित

बंगाल में जातिवादी सघर्ष का क्या कोई अंत नही है? डा. राय का ग्रुप बहुत दिन से मेरी पार्टी होने का दावा कर रहा है। अब तो यह स्पष्ट हो चुका है कि वे अलग नीतियों का पालन कर रहे हैं। दूसरे वे मेरे प्रस्तावों को क्यों नही मानते? यदि बगाली लाग श्री एनी को मध्यस्थता स्वीकार कर सकते हैं तो एक बगाली को मध्यस्थता क्यों नही स्वीकारते? मुझे केवल यही दुख है कि इतने अपमान, कष्ट और लातें (दुत्कार) सहने के बाद भी बगाली क्षुद्र मानसिकता से ऊपर क्यों नहीं उठ पाते। आश्चर्य की बात है कि बंगालियों को विशाल हृदयता को क्या हुआ?

पंडित नेहरू से मैं दो बार मिला हूं। मैं बैडनविलर भी गया था।

पहले की अपेक्षा अब मेरा स्वास्थ्य अच्छा है, किंतु पूर्णस्वस्थ होने मे अभी भी समय लगगा। मेरा पुराना स्वास्थ्य लौट पाएगा, यह कल्पना करना कठिन है। फिर भी कुछ लाभ होने से ही मैं प्रसन्न हू और फिर घर वापिस लौट पाऊगा। अब अधिक समय विदेशी भूमि पर रहना नही चाहता। इस वर्ष कार्ल्सबाद में अधिक लाभ नही हुआ किंतु गैस्टीन में अपेक्षाकृत अच्छा रहा। इसलिए जनवरी मे पुन: गैस्टीन जाना-चाहता हू ताकि वहा जलोपचार करवा सकू। आशा है तुम ठीक ठाक हो।

प्यार व शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा शुभेच्छु
सुभाष चद्र बोस

ई वुड्स को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कम्पनी
कैरटनेरिंग-14
विएना-1
21 दिसबर, 1935

प्रिय श्रीमती वुड्स,

बहुत दिन हुए आपका पत्र मिला था, खेद है कि लबे समय से मैं आपको पत्र नहीं लिख सका। मुझे दुख है कि जिस मित्र के विषय में मैंने आपको लिखा था वह डब्लिन नहीं जा पाया। वास्तव में मेरे देशवासी अक्सर लदन तो जाते हैं किंतु डब्लिन जाने का प्रयास नही करते, जहा हाड़-मास के स्त्री-पुरुष इतिहास रच रहे हैं। भारत मे मेरे प्रात में-बगाल में-शायद ही ऐसा कोई पढ़ा-लिखा परिवार हो, जहा आयरिश हीरो की पुस्तकें न पढी जाती हों, बल्कि पढ़ने में निमग्न न रहता हो। आजकल आयरलैंड पर पुस्तकें प्राप्त करना कठिन हो गया है क्योंकि सरकार का मानना है कि आयरिश क्रातिकारियो के बारे में पढ़कर भारतीयों की आखें भी खुल जाएंगी। किंतु हम सभी जानते हैं कि, कठिनाई से उपलब्ध होने वाली पुस्तकें अधिक उत्सुकता से पढी जाती हैं। इंग्लैंड जाने की अनुमति की बहुत दिन से प्रतिक्षा कर रहा हू किंतु कोई आशा नही है। फ्री स्टेट

गवर्नमेंट से आयरिश फ्री स्टेट जाने की अनुमति मिल गई है अत: महाद्वीप से सीधे आयरलैंड जाऊंगा। फरवरी में मेरा भारत लौटने का विचार है। भारत लौटने से पूर्व आयरलैंड जाना चाहूंगा। जनवरी के अंत में या फरवरी के प्रारंभ में, जब भी सभव हुआ। निश्चय ही वहां के महत्त्वपूर्ण लोगों से मिलना चाहूगा। आप समझ ही गई होगी किन लोगो से। इडो-आयरिश लीग के भविष्य के बारे में वार्तालाप करना चाहूगा और इसको पुनर्जीवित किस प्रकार किया जाए? इस पर भी विचार करूगा। अभी तक अपनी काग्रेस की आफिशियल पार्टी के नेताओं से सपर्क नही कर पाया हू जो विदेश-प्रचार का कार्य सभाल सके। फिर भी लोगों को समर्थन के लिए प्रोत्सहित कर पाया हू। आशा है, बिना आफिशियल पार्टी की सहायता के भी इस दिशा में कदम उठाने में सफल हो पाऊगा। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कांग्रेस की आफिशियल पार्टी के षड्यत्रों के कारण, स्वर्गीय श्री वी. ज पटेल की इच्छा को कार्यरूप देनेवाले, धन दबाकर बैठे हैं। अतिम इच्छा मे अन्य जिन बातो के लिए धन व्यय करने का सकेत किया गया उनके लिए धन उपलब्ध करा दिया गया है किंतु विदेश-प्रचार के लिए मुझे दिए जाने वाले धन को रोक कर रखा गया है। बबई उच्च न्यायालय ने लगभग चौदह माह पूर्व ही इच्छा प्रमाण पत्र दे दिया था, किंतु अभी तक पैसा व्यर्थ पडा है। ऐसा लगता है कि आफिशियल पार्टी को यह बात नापसद है कि मैं इस कार्य को करू। श्री पटेल के जीते जी वे उनका विरोध करते रहे, किंतु मैंने नही सोचा था कि वे इतना नीचे भी गिर सकते हैं।

मैं आपका आभारी होऊगा यदि आप मेरा मार्गदर्शन करें कि आयरलैंड की यात्रा के लिए उपयुक्त समय कौन सा है। आपके पत्र के बाद ही मैं अपनी योजना बनाऊगा।

श्रीमती मैकब्राइड व आपको शुभकामनाए।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस,

किटी कुर्टी को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
विएना
22.12.1935

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

27 अक्तूबर का आपका कृपा पत्र मिला। प्रसन्नता हुई। उसके बाद आर आर. पर लेख भी प्राप्त हुआ। आपके पत्र का उत्तर देने में हुए विलब के लिए क्षमा चाहता हू। अपनी पुस्तक आपको भिजवाना भूल गया। क्षमा करें। आज अपने प्रकाशक को लिख रहा हू। एक सप्ताह तक वह आपको मिल जाएगी।

युवा पीढ़ी में विश्वास के प्रति आपके विचारों से मैं सहमत हूं। भारत में भी वृद्धों व युवाओं के मध्य संघर्ष जारी है। प्रायः मैंने देखा है कि वृद्ध लोग युवाओं को टोकते हैं और इस कारण कटुता पैदा होती है। किंतु हम विजयी होंगे।

संभव है मैं जनवरी में बर्लिन आऊं। फ़रवरी में घर लौटने की योजना बना रहा हूं। यदि आपका यहां आसपास आना हो तो मुझे सूचित अवश्य करें। संभव है हम मिल सकें-जैसे यहां से ब्राटिसलावा तक आसानी से जाया जा सकता है।

डा. कुर्टी व आपको सादर प्रणाम,

आपका शुभेच्छु

सुभाष सी. बोस

पुनश्च :- अक्सर मुझे आश्चर्य होता है कि आप बर्लिन में क्यों रुकी हैं। वहां का वातावरण क्या आपको दमघोंटू नहीं लगता?

अमिय चक्रवर्ती को,*

पेंशन कास्मोपोलाइट
अलसेर स्ट्रीट-23
विएना-VIII
23.12.35

प्रिय श्री चक्रवर्ती,

आपका पत्र पढ़ते-पढ़ते मुझे बहुत दुख हुआ और आप जैसे भावुक व्यक्ति को दुख होना स्वाभाविक ही है। ऐसी परिस्थितियों में व्यक्ति को अंदर से ही शांति प्राप्त हो सकती है, बाहर की कोई चीज़ उसे शांति नहीं दे सकती। आपके इन दुख के क्षणों में आपको पत्र लिखकर परेशान करना नहीं चाहता किंतु आपको यह सूचना देना चाहता था कि आप द्वारा भिजवाई गई पुस्तक 'ब्रेकडाउन बाय ब्रिफ़ाल्ट' मुझे मिल गई है। धन्यवाद। पुस्तक अद्‌भुत है। अपने कुछ एशियाई मित्रों को पढ़ने के लिए दी है। पुस्तक पढ़कर उन्हें बहुत संतोष हुआ।

संभवतः जनवरी में इलाज के लिए बैडगस्टीन जाऊंगा। पहले भी वहां मुझे लाभ हुआ था। पेरिस भी जाना चाहता हूं किंतु कह नहीं सकता कब जाना संभव हो पाएगा। आप किन दिनों पेरिस में होंगे कृपया मुझे पूर्व सूचना दें। जवाहरलाल वहां एक सप्ताह

* मूल बांग्ला से अनूदित

रहे किंतु उनकी ओर से कोई सूचना नहीं मिली कि वे अपने उद्देश्य मे कितने सफल रहे।

श्रीमती नेहरू का स्वास्थ्य पुनः बहुत खराब है, आज ही वायरलेस संदेश प्राप्त हुआ। मैं वहा जाना चाहता हूं, किंतु पिछले एक सप्ताह से जुकाम और बुखार से पीड़ित हू। इसी कारण उन्हें देखने जाने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा, क्योंकि इसके लिए मुझे वहा पहुंचने तक सत्रह घंटे की यात्रा करनी पड़ेगी।

मुझे आशा है, आपने वह रिपोर्ट देखी होगी जो हाउस ऑफ़ कामस में मुझ पर हुई चर्चा पर आधारित है। मैंने 10 तारीख के टाइम्स में प्रकाशित रिपोर्ट पढ़ी है। अभी भी उनका यह विश्वास है कि मैं गुप्त क्रांतिकारी गतिविधियों में लिप्त हू, इससे भारत पर राज्य कर रहे ब्रिटिश साम्राज्य की मानसिकता का पता चलता है। सत्य कहू तो मुझे सैम्युअल होरे के अवसान से प्रसन्नता है। भारत का शाप कार्य कर रहा है। आश्चर्य है कि पार्लियामेंट मे व्यक्ति को वास्तव में रोना पड़ा।

भारतीय समाचार-पत्रों में आपके विषय में क्या लिखा गया मुझे इस बारे में कोई सूचना नहीं है। कृपया मुझे समय पर बता दिया करें ताकि मुझे भी जानकारी रहे और इसे आवश्यक कार्य समझ कर करें।

वर्तमान दुख के क्षणों में मेरी हार्दिक संवेदनाएं आपके साथ हैं। आशा है आप स्वस्थ है ।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सत्येंद्र नाथ मजूमदार को *

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कं.
विएना
23 12.1935

प्रिय मित्र,

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। आशा है तुम स्वस्थ होगे। तुम्हारे पत्र मैंने बहुत रुचि व दिलचस्पी से पढ़े हैं। शायद तुमने जान बूझकर व्यक्तियों के नाम नहीं लिखे। जिसकी वजह से तुम्हारे विवरण में स्पष्टता का अभाव है। फिर भी राष्ट्रीयधारा को समझने में अधिक कठिनाई नहीं हुई। सबसे पहले हमें बड़ी-बडी गलतियो पर आक्रमण करना होगा। हमारे जीवन में, अदर-बाहर दोनों ही ओर से, अनुशासनहीनता आ गई है। इस अनुशासनहीनता का कारण इज्ज़त और विश्वास में आई कमी है। इस विषय मे तुम्हारा विश्लेषण बिल्कुल सही है। यदि उद्देश्य के प्रति विश्वास और इज्ज़त नहीं होगी तो अनुशासन और प्रतिबद्धता भी नहीं रहेगी।

* मूल बगला से अनूदित

कृपया आनंद बाजार-पत्रिका की सहायता से इस मूल संदेश का ज़ोरदार प्रचार करो। जीवन में अंदरूनी व बाह्य दोनों प्रकार का अनुशासन होना अति आवश्यक है। बंगालियों को एक बार फिर मिलकर कार्य करना होगा। दूसरों के प्रति आदर और सहनशीलता द्वारा ही हम उन्हें अपने निकट ला सकते हैं। यदि बंगाली एक बार पुनः एकत्रित हो जाए तो आत्म-शक्ति पैदा हो सकती है। दरअसल अभी हमारे दुर्दिन नहीं आए हैं केवल अनुशासन में कमी आई है। इसके साथ ही आदर्शवाद की लहर भी पैदा करनी होगी। इस आदर्शवाद की लहर से हमें अपने अंदर का कलुष धो देना होगा। बंगाली अन्य लोगों के प्रति अत्यधिक ईर्ष्यालु और दुर्भावनाग्रस्त रहते हैं, हमें अपनी इन कमियों को दूर करना होगा। क्षुद्र हृदयता पर आदर्शवाद द्वारा विजय पाई जा सकती है, इसीलिए आदर्शवाद की जोरदार लहर की अति आवश्यकता है।

आशा है आप सभी सानंद हैं। पहले की अपेक्षा मेरा स्वास्थ्य ठीक है, यद्यपि अभी पूर्णतः स्वस्थ नहीं हूं। इसलिए बहुत बेचैन रहता हूं। अपने देश वापिस लौटने का बहुत उत्सुक हूं।

प्रेमपूर्ण शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु को,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
विएना, आस्ट्रिया
3.1.36

प्रिय संतोष बाबू,

आप एक वकील हैं इसलिए आपने मुझसे मुंह फेर लिया है। आपने इतने दिन से कोई पत्र नहीं लिखा, इसका क्या कारण है, और सारा दोष मेरा ही है।

आपने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आह्वान का जिक्र किया है। किंतु इस वर्ष तो यह संभव नहीं है। इसके अलावा वैसे भी मैं जितनी जल्दी संभव हो भारत लौटना चाहता हूं। विदेश में रहने का कोई मजा नहीं जब हृदय से आप कहीं और हो। मैं मानता हूं कि विदेश में रहकर भी बहुत सा उपयोगी कार्य किया जा सकता है और मैं भी यहा बेकार नहीं पड़ा हूं। किंतु प्रभावी कार्य करने के लिए कुछ धन और अपने लोगों का प्रोत्साहन चाहिए। अधिक साधनों के बिना, अकेला व्यक्ति, एक सीमा में रहकर ही कार्य कर सकता है।

क्या आप बता सकते हैं कि बंगाल को क्या हुआ है? मुझे तो कुछ समझ नही आता। छोटी-छोटी बातों के लिए झगड़ने में क्या लोगों को शर्म नही आती? किसी भली चीज के लिए झगड़ते तो समझ भी आती! किंतु इन फालतू की चीजों के लिए झगड़ा।

आम जनता का क्या हाल है? वे अपने तथाकथित प्रतिनिधियों व प्रवक्ताओ के विरुद्ध आदोलन क्यों नहीं करते? अनुशासनहीनता बुरी तरह फैल चुकी है। इसी कारण अनुशासन पालन भी कठिन हो रहा है। हमें प्रारंभ से इसकी शुरुआत करनी होगी।

'लदन टाइम्स' में समाचार पढ़ा कि मुस्लिम असंतोष के कारण श्री ए के फजलूल हक व अन्य मुस्लिम काउसलरो ने त्याग-पत्र दे दिया है। ऐसे समाचार वहुत जल्दी विदेश तक पहुच जाते हैं।

मैंने 'एडवास' को 'द इनसाइड आफ बंगाल पोलिटिक्स' शीर्षक से एक लेख भेजा था। क्या आपने देखा?

कह नही सकता कि कब बगाल की जनगतिविधियों में कार्य करने योग्य हो पाऊगा। किंतु यदि यह सभव हुआ तो इस बात पर अवश्य बल दूंगा कि बगाल से निर्विरोध सहयोग मिले। किसी एक गुट का प्रमुख होकर कार्य करना नहीं चाहता। पिछले अनुभवों ने मुझे एक बात सिखाई है, वह है-धैर्य! मुझमें अनन्त धैर्य है और मैं तब तक इंतजार करूगा जब तक बुराई अपना खेल समाप्त नहीं कर देती। तब तक मैं राजनीति से बाहर रह कर बहुत सा उपयोगी कार्य करूंगा।

आपकी योजनाए और विचार क्या है,

नया वर्ष हम सब के लिए सौभाग्यदायक हो!

इजीप्टवासी अब पूर्ण जागरूक हैं? वे समय को पहचानकर कार्य कर रहे हैं। किंतु हम कहा हैं? चरखा--हरिजन, पार्लियामेंट बोर्ड-मंत्री की गद्दी--क्या यही सब मुक्ति का मार्ग है।

सुशीर बाबू और डा. सुधीर बासु कैसे हैं और आजकल कहां हैं? आपके बेटे आजकल क्या कर रहे हैं। सादर।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

वी. लैस्नी को,

पेंशन काम्मोपेलाइट
एल्सरस्ट्रासे-23
विएना-VIII
9 जनवरी, 1936

प्रिय प्रोफ्सेर लैस्नी,

आशा है मेरा पहले लिखा पत्र और साथ में इडो-चेकोस्लोवाक सोसायटी के लिए भेजी पुस्तकों का पार्सल भी मिला होगा। कल यहां विएना में हमने भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की जुबली का सफल आयोजन किया।

श्री नाबियार ने आपको मेरी प्रेस स्टेटमेंट दिखाई होगी, जिसमें मैंने सिफ़ारिश की है कि चेकोस्लोवाकिया के साथ संतुलित व्यापार संबंध कायम करने के लिए हमें जर्मनी की अपेक्षा चेकोस्लोवाकिया से अधिक खरीददारी करनी चाहिए। उस टिप्पणी से कुछ विवाद उठ खड़ा हुआ और यह दिखाने के लिए कुछ आकड़े भी प्रस्तुत किए गए कि, भारत चेकोस्लोवाकिया से पहले ही से अधिक खरीददारी करता है। मैंने प्राग की एक्सपोर्ट इंस्टीट्यूट को (श्री प्लॉस्कल) आयात-निर्यात के सही आंकड़े भेजने कि लिए लिखा है और उत्तर प्राप्त होते ही मैं भारतीय प्रेस को मुंहतोड़ जवाब दूंगा। शीघ्र ही विएना छोड़ रहा हू और 14 को प्रात: बर्लिन पहुंचूगा। बर्लिन से बेल्जियम और पेरिस जाऊगा फिर वहा से फरवरी में भारत के लिए रवाना होऊगा। घर लौटने से पहले एक बार प्रेज़ीडेंट बैनेस से अवश्य मिलना चाहूगा। आपको याद होगा सन् 1933 में मैं प्राहा यात्रा के दौरान उनसे मिला था, जब वे विदेश मंत्री थे। क्या आप 13 तारीख को मिलने का प्रबंध कर सकते है। मैं आपका आभारी रहूगा। इतने कम समय में आप से कह रहा हू, इसके लिए क्षमा चाहता हू किंतु इन असाधारण परिस्थितियों में, जिनमें मैं घिरा हूं, मुझे आशा है आप पूरा प्रयास कर मुलाकात की व्यवस्था करा ही देंगे। 13 तारीख सोमवार को कोई भी समय ठीक रहेगा। यदि मुलाकात की व्यवस्था हो जाए तो कृपया मुझे तार द्वारा सूचित कर दें।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स,

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी
कैरटेरिंग 14,
विएना-1
9 जनवरी, 1936

प्रिय श्रीमती वुड्स,

6 तारीख के पत्र के लिए शुक्रिया। अभी तक मेरी आयरलैंड यात्रा की कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है और मैं आपसे इस दिशा में मदद की अपेक्षा करता हू। फरवरी मध्य में भारत यात्रा पर निकलना चाहता हूं। अत: 20 जनवरी से 10 फ़रवरी के मध्य किसी समय मेरी आयरलैंड यात्रा हो जानी चाहिए। मेरे लिए कौन-सा समय सबसे सुविधाजनक रहेगा कृपया सूचित करें। मैं वहां एक सप्ताह अथवा दस दिन व्यतीत कर सकता हू। कृपया प्रेज़ीडेंट डी वलेरा, पार्टी नेतागण, तथा मेयर आदि से मेरी मुलाकात की आवश्यक व्यवस्था करा दें। आपको जो समय ठीक लगे वह मुलाकात के लिए निर्धारित कर सकते हैं। जहा तक मेरा संबंध है मुझे जनता के बीच भाषण देने में कोई आपत्ति नहीं है। कुछ समय पूर्व भारतीय समाचार-पत्रों में समाचार छपा था कि डब्लिन की नेशनल यूनिवर्सिटी

मुझे मानद उपाधि देना चाहती है। मैं नही जानता यह खबर कहा से उडी और कितनी सच्चाई है। किंतु आप इसकी सच्चाई तक पहुंच सकते हैं।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च :- कुछ ही दिनों में बर्लिन के लिए रवाना हो रहा हू कृपया मुझे इस पते पर लिखें-द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, अ्टर डेन लिडन, बर्लिन।

सु च बो

सतोष कुमार सेन को *

द्वारा माननीय एन डी. जावेरी
एंटवर्प, बेल्जियम
(पता अस्पष्ट)
22.1.36

प्रिय डा सेन,

19 जनवरी को मैं यहां पहुंचा। रास्ते में प्राग और बर्लिन गया था। अभी कुछ दिन यहा रहने का विचार है। फिर यहां से पेरिस के लिए रवाना होऊगा। 30 तारीख को पेरिस से आयरलैंड के लिए निकलूगा। कृपया पेंशन कास्मोपोलाइट को फोन कर कह दें कि मेरी डाक इस पते पर भेज दें। मैंने उन्हें 18 जनवरी तक डाक यहा उसके बाद पेरिस भेजने को कहा था।

क्या आप डा. ट्रानवालनर से मिले? क्या अभी भी वे बगला सीखने के इच्छुक हैं।

यदि आप काग्रेस जुबली के सबंध में विस्तृत साहित्य बुक-पोस्ट द्वारा श्री नाबियार को भेज सकें तो अच्छा रहेगा। साथ ही आप उन्हें एक पोस्टकार्ड भी लिख दे कि मेरे अनुरोध पर उन्हें यह भेजा जा रहा है और वे इसे पढ़कर मुझे भेज दे। उनका पता है-

श्री ए. सी. एन. नांबियार
प्राग-XIII
सेस्टी मिरोवा, 863/वी. सी एस. आर.

---

* मूल बगला से अनूदित

मेरा एक भारतीय मित्र कुछ उपकरण खरीदना चाहता है। उसका पत्र मैं आपको भेज रहा हू। क्या आप ये उपकरण खरीद कर उसे भिजवा सकते हैं? गैरोला को मालूम है ये उपकरण कहां से प्राप्त हो सकते हैं। उसका नाम शायद ब्रैंडनबर्ग है। कुछ माह पूर्व मैंने गैरोला की सहायता से इन सज्जन को कुछ उपकरण भिजवाए थे। आप गैरोला से कहकर, उस व्यक्ति की सहायता से, इन्हें रजिस्टर्ड-पोस्ट द्वारा उपकरण भिजवा सकते हैं।

इसका खर्च मैं आपको भिजवा दू या मेरा मित्र वहा से आप तक राशि पहुचा देगा। यदि आप वहा आर्डर दे देंगे तो ब्रैंडनबर्ग चीजें पैक करके प्रेषित कर देंगे। मेरे मित्र का पता निम्न है-

डा. एस. एन कौल, एम बी. बी एस
109, हैऊट रोड
इलाहाबाद

आशा है आप समय-समय पर श्री फाल्टिस से मिलते रहेंगे। आपको सहायता से उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा। यदि श्री माथुर कुछ समय विएना में रुक सके तो वे श्री फाल्टिस के सहायक हो सकते हैं। मेरे विचार में यह अच्छा रहेगा कि डा फाल्टिस से कहकर भारत के सास्कृतिक विषयों पर भाषण आयोजित कराए जाएं। इस दिशा में आगे कार्य करने का कष्ट करें। आशा है आप पूर्णत: स्वस्थ हैं। पत्र के प्रारभ में मैंने अपना पता लिख दिया है। सोमवार प्रात: मैं पेरिस के लिए निकलूंगा। वहा मेरा पता होगा-द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी, रू स्क्राइब-11 पेरिस

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

सतोष कुमार सेन को,

द्वारा एन डी. जावेरी
14, एवेन्यू वैन, डेन वैस्ट
एंटवर्प
(बेल्जियम)
23.1 36

प्रिय डा. सेन,

कल मैं आपको डा. कौल का पत्र भेजना भूल गया। अत: आज भेज रहा हू। यदि आप ब्रैंडनबर्ग को कह देंगे तो वे चीजे बंबई भिजवा देंगे। आपको केवल उपकरणों का चुनाव करना है और उसे कहना है कि चीजें रजिस्टर्ड-डाक द्वारा भेजें। गैरोला से कहें वह आपको ब्रैंडनबर्ग से मिलवा देगा। मुझे ठीक से उनका नाम याद नहीं लेकिन लगता है कि उनका नाम ब्रैंडनबर्ग ही है।

क्या आप मेरा एक और काम कर देंगे। क्या आप किसी ट्रांसपोर्ट कपनी से पूछकर मुझे सूचित कर सकेंगे कि यदि मैं कुछ सामान विएना से ट्रीस्टे भेजना चाहू तो इसपर कितना व्यय आएगा। मेरा विचार है हमें मालगाड़ी का उपयोग करना चाहिए। क्योकि फरवरी के अंत में मेरा जहाज ट्रीस्टे से रवाना होगा। फिर भी आप मालगाडी व पैसेंजर गाडी दोनो का किराया पूछ लें। ट्रीस्टे में जहाज़ विक्टोरिया में मेरा सामान चढाने की ज़िम्मेदारी उनकी रहेगी। इस विषय में आप लॉयड ट्रीस्टीनों से भी बात कर सकते हैं कि क्या वे इस कार्य को कर पाएंगे, इसके अलावा आप श्रीमती वैटर से भी सलाह ले सकते हैं।

27 जनवरी तक मैं यहां रहूंगा। उस दिन पेरिस के लिए रवाना होऊगा और 30 तारीख को हावरे से डब्लिन जाऊंगा। डब्लिन में मेरा पता होगा-

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी
11, रू स्क्राइब
पेरिस

13 तारीख को पुन: पेरिस से डब्लिन पहुचूंगा। आशा है आप पूर्णत: स्वस्थ हैं।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

ई वुड्स को,

द्वारा एन डी जावेरी
14 एवेन्यू वान डेन वेस्ट
एटवर्प
23.1 36

प्रिय श्रीमती वुड्स,

अब तक बर्लिन से भेजा मेरा पत्र आपको मिल चुका होगा। मैंने जहाज मे बर्थ (एस एस वाशिंगटन) बुक करा ली है जो हावरे से 30 को चलकर 31 जनवरी को कोभ पहुचेगी। आयरलैंड कितने दिन रुकूंगा वहा के कार्यक्रम पर निर्भर करेगा। वापसी के लिए दो जहाज़ हैं–एक 4 फ़रवरी को और दूसरा 12 फरवरी को। मैं कोई सी भी ले सकता हू, लेकिन 12 फरवरी तक मुझे हर हालत में पहुंचना ही है।

26 तारीख तक मैं यहा हू। 27 तारीख को पेरिस के लिए निकलूगा। वहा मेरा पता है–

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी

11 रू स्क्राइब

पेरिस-IV

बर्लिन में मुझे आपका 15 तारीख का पत्र मिला। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

मेरा टेलिग्राफिक पत्र पता है-केयर दइयाभाई, एण्टवर्प।

पेरिस में मेरा टेलिग्राफिक पता है-केयर अमेक्सको, 96, पेरिस

नाओमी सी वैटर को,

एंटवर्प
24.1.36
शुक्रवार

माननीय एन सी वैटर
विएन-IV
व्हीरिंगर स्ट्रीट 41
(आस्ट्रिया)

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपका कार्ड आज प्रातः मिला। बहुत-बहुत धन्यवाद। बर्लिन में आपके पत्र (2) मिले। आज हम कार से स्पा जा रहे हैं जहां रास्ते में वाटरलू तथा अन्य स्थान देखेंगे। कल वापिस लौटेंगे और रविवार को पेरिस के लिए रवाना होऊंगा। वहा भारतीय व्यापारियों की एक छोटी-सी कालोनी है, जो मुझे पर सदा कृपालु रहे हैं। अलग से मैं एंटवर्प पेपर भिजवा रहा हू जिसमें मेरा वह साक्षात्कार छपा है जो मैंने यहा दिया था। पेरिस में मेरा पता है-

द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी

11, रू स्क्राइब

पेरिस IX

30 तारीख को मैं हावरे से आयरलैंड के लिए रवाना होऊंगा और वहा से पेरिस वापिस लौटूगा। 28 फरवरी को पेरिस व जेनेवा होते हुए भारत के लिए रवाना होऊंगा। कृपया कार्ड के लिए क्षमा करें। सादर।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी. बोस

ई वुड्स को *

होटल अबेसेडर
16, बोलेवर्ड हौसमन
पेरिस 9
26.1 36

प्रिय श्रीमती वुड्स,

20 जनवरी का संलग्नक सहित आपका पत्र मिला। धन्यवाद। एंटवर्प से आज ही पेरिस पहुचा हूं। आशा है मेरा एंटवर्प से लिखा पत्र आपको मिल गया होगा।

जैसा कि मैं आपको पहले भी बता चुका हू, मैं 30 जनवरी को हावरे से रवाना होऊगा। वहा से डब्लिन के लिए गाडी लूगा। जब मैं कोभ पहुंचूगा तब वहा आपका सदेश पाकर प्रसन्न होऊंगा या आपके स्थान पर आपका कोई मित्र कोभ में मुझे मिल सकता है।

मैंने डब्लिन होटल में कोई कमरा बुक नहीं किया है। मेरा विचार शैल्बोन के यहा रुकने का है। यदि पहले से कमरा आरक्षित करवाना आवश्यक हो तो कृपया करवा दे।

* ....

[* पत्र का यह अंश उपलब्ध नहीं है-सपादक],

नाओमी सी वैटर को,

होटल अबेसडर
बोलेवर्ड हौसमन
पेरिस (9)
27 1 36

माननीय एन सी वैटर
विएन-IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट 41
(आस्ट्रिख)

प्रिय श्रीमती वैटर,

कृपया इस कार्ड के लिए क्षमा करें। पेरिस के पते पर भेजे आपके दो पत्र मिले, धन्यवाद। कल मैं यहां पहुंच गया था और हावरे से 30 जनवरी को नाव द्वारा डब्लिन के लिए रवाना हुआ था। उसी होटल में ठहरा हू। कृपया उपरोक्त पते पर ही पत्र लिखें।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

यूनाइटेड स्टेट्स लाइंस
वाशिंगटन जहाज पर से
(हावरे के निकट, फ्रांस)
30.1.36

प्रिय श्रीमती वैटर,

मित्रों से कुछ देर के लिए छुटकारा पाकर पत्र लिखने का कुछ समय निकाल पाया हूं। विएना छोडने के बाद से आपको कोई लंबा पत्र नही लिख पाया। क्षमा चाहता हूं, किंतु दोष सिर्फ मेरा ही नही है। जब मैं अकेला होता था तो बेहद थका हुआ होता था। जब लिखने की हालत में होता था तो मित्रों से घिरा रहता था।

पहले प्राग के बारे में, बी. से मेरा बहुत दिलचस्प वार्तालाप हुआ। अतिव्यस्त होने के बावजूद वे मुझे लेने आए। वेटिंग रूम में मुझे पता चला कि फ्रैंच और आस्ट्रियन राजदूत मेरी अगवानी कर रहे थे। उसी रात मैं बर्लिन के लिए रवाना हो गया।

बर्लिन में मैंने पाया कि, पिछले वर्ष की अपेक्षा, इस वर्ष आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। दिलचस्प बात यह थी कि लोग सरकार की आलोचना कर रहे थे, जबकि पहले वे ऐसा करने का साहस नही करते थे। 'हाउस-फ्रॉ' जाति बहुत असंतुष्ट थी, क्योंकि मक्खन, अंडे आदि मिलने में बहुत कठिनाई हो रही थी। सरकार इन महिलाओं को सुगमता से जेल में भी डाल नही सकती थी। बाहर से सब शांत प्रतीत होता था। 1933 या 1935 में जैसी आक्रामक सेना देखी थी वह भी अब नही थी। संभवतः कारण यह है कि सैनिक व्यापार शिाख्त के नियत्रण में है। कई लोगों से पता चला कि जनता अब शांति चाहती है, क्योंकि आर्थिक दशा बहुत खराब है। जर्मनी पूर्णतः ब्रिटिश साम्राज्य के पक्ष में है। बर्लिन में एक भारतीयों की कालोनी है जहां एक बैठक का आयोजन किया गया है। जनवरी को वे कांग्रेस जुबली समारोह आयोजित करेंगे।

बर्लिन से कोलोन व ब्रसेल्स गया और वहां से एंटवर्प। एंटवर्प में भारतीय व्यापारियों की एक कालोनी है जो हीरे-जवाहरात व्यापार करते हैं। मैं उनका अतिथि था अतः उन्होंने मेरा खूब स्वागत किया। वहा से हम लोग ब्रसेल्स, स्पा, वाटरलू तथा अन्य निकटवर्ती स्थल देखने गए। मैंने आपको एंटवर्प से प्रकाशित होने वाले पत्र 'ले मैटिन' की प्रति भेजी थी जिसमें मेरा साक्षात्कार छपा था।

पेरिस में मेरे पास अधिक समय नहीं था। फिर भी मुझे कुछ विशिष्ट व्यक्तियों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिनमें आंद्रेगाइड, फैलिशिन चैले (शांतिदूत), श्री डेनरी (यूनिवर्सिटी के राजनीतिशास्त्र विभाग के प्रोफेसर) मैडम ड्रीवर्ट (जिनेवा की अन्तर्राष्ट्रीय महिला लीग की भूतपर्व सचिव) आदि शामिल हैं। पद्रह दिन बाद जब पेरिस लौटूंगा तो कुछ अन्य लोगों से भी मिलूंगा। वे मेरे लिए ऐसे दो सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं जिसमें मैं ऐसे महानभावों से मिल सकूगा जो भारत के पक्ष में हैं। बॉश महोदय आजकल मत्री हैं। अतः उपलब्ध होंगे कहना कठिन है। ब्लम महोदय चुनाव में व्यस्त हैं किंतु जब

मैं पेरिस लौटूगा तो उनसे मिलने का प्रयास अवश्य करूंगा। 14 फ़रवरी को मेरा पेरिस लौटने का विचार है और फिर एक सप्ताह यहा रहूंगा।

लेटरहैड से आपको पता चल गया होगा कि मैं हावरे मे जहाज पर हू। कल दोपहर या शाम हम आयरिश बंदरगाह कोर्क पहुंचेंगे। अगली सुबह डब्लिन के लिए ट्रेन पकड़ूगा। डब्लिन के विदेश-विभाग ने मुझे सूचित किया है कि प्रेज़ीडेंट डी वेलेरा, मेरा वहा पहुचने पर, मेरी अगवानी करेंगे और सबसे पहले प्रेजीडेंट महोदय से मेरी मुलाकात आयोजित की गई है।

मेरी भारत यात्रा स्थगित हो गई है। क्योंकि भारतीय कांग्रेस मार्च के स्थान पर अप्रैल में अधिवेशन आयोजित कर रही है। इसलिए मेरा विचार बन रहा है कि पेरिस और जेनेवा का अपना कार्य पूरा करने के बाद मैं बैडगस्टीन में अपना इलाज करवा लू। यदि अधिवेशन मार्च मे होता तो मैं इटली से ट्रीस्टीनो से रवाना हो जाता किंतु अब सोचता हू कि मर्सिलेस से पी. एड ओ. जहाज़ द्वारा जाऊ। परिणामस्वरूप, मेरा विएना आना सभव नहीं हो पाएगा ।

आपके सभी पत्र 13 व 14 तारीख का पत्र, 20 जनवरी के दो पोस्टकार्ड तथा 23 जनवरी के दो पत्र मिल गए थे।

बार-बार मैंने आपके पत्रों को पढा है। आपके कृपा का धन्यवाद किस प्रकार करू? लोगों को आश्चर्य होता है कि मैंने पिछले तीन वर्षों में सबसे अधिक समय विएना मे ही क्यों बिताया, किंतु मुझे कोई आश्चर्य नही।

मैं जहां भी गया, मौसम गर्म था, जनवरी के मौसम को देखते हुए पेरिस में तो ओवरकोट में काफी गर्मी महसूस हुई और चलते समय काफी पसीना भी आया।

अभी तक मैंने भारत के लिए अपनी बर्थ बुक नही करवाई है। 28 फ़रवरी की लॉयड ट्रीस्टीनो में बुक करवाई गई बर्थ कैंसिल करवानी पडेगी और मुझे ब्रिटिश जहाज, जिसे मैं नापसन्द करता हू, से यात्रा करनी पड़ेगी। किंतु इस विषय में कुछ नही किया जा सकता, क्योंकि किसी अन्य कपनी का समय मेरे अनुकूल नहीं है।

आज फ्रेंच राजनीति हास्यास्पद स्थिति में है। लेफ्ट और राइट दोनों ही पार्टिया बहुत मजबूत हैं। आगामी चुनाव लेफ्ट पार्टी को सुदृढ़ करेंगे, किंतु अधिक नहीं। राइट पार्टिया ब्रिटिश साम्राज्य की विरोधी हैं और लेफ्ट पार्टिया उसके पक्ष में हैं तथा ब्रिटिश लेबर पार्टी के अत्यधिक निकट हैं।

डब्लिन से लौटने के बाद पेरिस में एक सप्ताह व्यतीत करने के पश्चात ही पेरिस के संबंध में कुछ लिख पाऊगा। विएना की भांति पेरिस भी स्वर्गीय राजा जार्ज के लिए शोकग्रस्त है।

पेरिस में मुझे एक भारतीय सज्जन मिले जो मानवीय अधिकारों की लीग को निकट से जानते है। वे ऐसा प्रबध कर देंगे कि पेरिस लौटने के पश्चात मैं लीग के कुछ महत्त्वपूर्ण सदस्यों (माननीय बॉश सहित) से मिल सकूंगा।

सेटेन वाट्सन के संबंध में कुछ और जानकारी चाहूंगा। क्या वे चेकोस्लोवाकिया के पक्षधर हैं? वहां एक चेकोस्लोवाकिया के पक्षधर अंग्रेजी के पत्रकार हैं जिन्होंने आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में चेकोस्लोवाकिया पर भाषण दिया था, उन्होंने कौन सी पुस्तकें लिखी हैं?

मुझे आशा है कि 'माडर्न रिव्यू' खुशी-खुशी डा. वैटर का भाषण प्रकाशित कर देगा। मैंने उन्हें कह दिया है कि जब भाषण प्रकाशित हो जाए तो वे रिव्यू की प्रति आपको आपके पते पर प्रेषित कर दें। विएना में कांग्रेस जुबली समारोह में दिया गया डा. वैटर का भाषण बहुत ही संवेदनशील, गरिमापूर्ण एवं पांडित्यपूर्ण था। चाय पार्टी (हार्टमान के यहां) में दिया उनका भाषण भावपूर्ण एवं मार्मिक था।

वहा मौसम कैसा है? विएना के बाहर सब जगह मौसम बहुत अच्छा है। आप दोनों को शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च : – मेरा लेख इतना खराब है कि आप इसे समझ भी पाएंगी या नहीं!

सु. च. बो.

अमिय चक्रवर्ती को,

डब्लिन
8.2.36

प्रिय अमिय,

7 तारीख का तुम्हारा पत्र आज मिला। 14 तारीख को मैं पेरिस पहुंचूंगा और फिर 5 से 7 दिन तक वहा रहने के बाद जेनेवा के लिए निकलूंगा। मेरा पता है-होटल अंबेसेडर, बोलेवार्ड, हॉसमान, पेरिस 9.

मित्रों ने वहां कई लोगों से मुलाकात का प्रबंध किया है। अभी पूर्ण विवरणों की जानकारी मुझे नहीं है। पेरिस पहुंचकर ही कुछ पता चलेगा। अच्छा रहेगा यदि तुम भी उसी होटल में ठहरो तो चर्चा के लिए समय मिल पाएगा।

अधिक नहीं लिखूंगा। मिलने पर ही सब विषयों पर चर्चा करेंगे।

सदैव

तुम्हारा
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी वैटर को,

होटल अबेसेडर
16 बोलेवरा हॉसमान
पेरिस
26 2.36

प्रिय श्रीमती वेटर,

बहुत दिन से पत्र नहीं लिख पाया, क्षमा प्रार्थी हू। आयरलैंड और फिर पेरिस मे बहुत व्यस्त रहा। क्या आयरिश अखबारों की कुछ कटिंग्स आपको मिली?

आज पेरिस से चलकर 29 तारीख को बैगस्टीन पहुंचूंगा। रास्ते मे लुसाने में श्री नेहरू से तथा विलेन्यूव में रोला महोदय से मिलूगा।

जब तक मैं बैगस्टीन मे निश्चित होकर बैठ नही जाता तब तक लबा पत्र नही लिख पाऊगा। वहा मैं कुरहॉस हॉकलैड मे ठहरूगा।

मैं श्री विक्टर बॉश तथा श्री ग्यूरनेट, शिक्षामंत्री से मिला। आपने परिचय करवाया इसके लिए आभारी हू।

डा वैटर व आपको अनेकों शुभकामनाए।

आपका शुभकाशी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च : ~ 20 मार्च के आस-पास भारत के लिए रवाना होऊंगा।

सु च बोस

सतोष कुमार सेन को *

कुरहॉम हाकलैंड
बैगस्टीन
3.3 36

प्रिय डा सेन,

आज प्रात: यहा पहुंचा हू। लगभग डेढ माह बाद कुछ शाति मिली है। पिछला एक-डेढ महीना अत्यधिक व्यस्तता में बीता। प्राग, बर्लिन, ब्रसेल्स, पेरिस, आयरलैंड फिर पेरिस व लूसानने आदि स्थानों की यात्रा करने के पश्चात पुन: आस्ट्रिया लौटा हू।

हिमालय की भाति ही यहा की दृश्यावली भी बहुत मोहक है। चारो ओर बर्फ

---

* मूल बंगला से अनूदित

ही बर्फ है और पर्वत शृंखलाएं सुदृढ़ता व मजबूती से खडी हैं।

फिलहाल मेरा इरादा 20 तारीख को मर्सिलेस से घर लौटने का है। आशा है घर लौटने से पूर्व आपका आधा धन आपको लौटा सकूंगा। फिलहाल मुझे घर से पर्याप्त राशि प्राप्त नहीं हुई है, इसलिए आपका पैसा लौटाने में देर हुई।

22 पौंड का एक चैक साथ में भेज रहा हूं। यदि आप वहीं चैक कैश करवा लें और पैसा मुझे भिजवा दें तो बेहतर रहेगा। आप जानते ही होंगे कि आस्ट्रिया में रजिस्टर्ड-चैक या पत्र भेजने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। चैक कैश करवाने के बाद आप मनीआर्डर द्वारा या रजिस्टर्ड पत्र द्वारा राशि मुझे भिजवा सकते हैं। रजिस्टर्ड पत्र द्वारा भेजने पर व्यय कम होगा। रजिस्टर्ड पत्र पर ठीक प्रकार मोहर लगाना न भूलें। यदि खुदरा पैसे हों तो उनकी स्टेंपस खरीद कर भिजवा दें। कृपया शीघ्र और सावधानी पूर्वक राशि भिजवाने की व्यवस्था कर दें।

आशा है आप पूर्ण स्वस्थ हैं। अब कुछ थकान सी महसूस कर रहा हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च : - 27 जनवरी का आपका पत्र बहुत दिन पूर्व मिल गया था।

जवाहरलाल नेहरू को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन, (आस्ट्रिया)
4 मार्च, 1936

प्रिय जवाहर,

लंबी और थका देनेवाली यात्रा के उपरांत कल सुबह यहां पहुंचा। यहां शांत और सुंदर वातावरण है। मैं चाहता हू कि आप अपने आपको भंवर में डालने से पूर्व यूरोप में कुछ आराम कर लेते।

आपसे मिलने के बाद से निरंतर यही विचार कर रहा हू कि जिन विषयों पर आपसे बात हुई क्या उन पर मुझे कोई मत जारी करना चाहिए। मेरा विचार है कि मुझे करना चाहिए क्योंकि इस बात की पूरी संभावना है कि मुझे पुनः जेल भेजा जाएगा, और वहां कुछ लोग ऐसे अवश्य हैं जो मेरा मत जानने के इच्छुक हैं। कम से कम शब्दों मे मैं अपना मत प्रकट करूंगा और स्पष्ट रूप में कहूंगा कि मैंने आपको सहयोग देने का दृढ़ निश्चय कर लिया है।

आज के मुख्य नेताओं में से आप ही एक ऐसे नेता हैं जो कांग्रेस को प्रगति की ओर ले जा सकते हैं। वैसे भी आपकी स्थिति अलग है और महात्मा गांधी भी, शायद

किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा, आपके प्रति अधिक उदार रहेगे। आशा है आप निर्णय लेने में अपनी लोकछवि की शक्ति का भी उपयोग करेंगे। कृपया कभी भी अपनी स्थिति को कमजोर न समझे। महात्मा गाधी ऐसा कोई कदम नही उठाएंगे जो आपके हित में न हो।

जैसाकि मैंने पिछली बातचीत के दौरान भी आपको सुझाया था कि आपका तात्कालिक कार्य द्विपक्षीय होगा। 1. हर प्रकार से कार्यालय पद से स्वय को अलग रखना। 2 कैबिनेट का अधिक से अधिक विस्तार करना। यदि आप ऐसा कर पाए तो काग्रेस को नैतिक पतन से बचाकर बर्बाद होने से बचा लेंगे। बड़ी समस्याओं का समाधान बाद मे भी खोजा जा सकता है, किंतु काग्रेस के नैतिक पतन को तत्काल रोकना आवश्यक है।

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि आप काग्रेस का विदेश-विभाग खोलना चाहते हैं। यह विचार मेरे विचारों से मेल खाता है।

पत्र को अधिक लबा नहीं करूगा क्योंकि आप जाने की जल्दी मे होगे और जाने से पूर्व कई कार्य निपटाने होंगे। यात्रा के लिए शुभकामनाए। उस दुरूह कार्य, जो आपकी प्रतीक्षा मे है, की सफलता की कामना करता हू। यदि मुझे लखनऊ आने की आज्ञा मिल सकी तो मेरी सेवाए भी आपके प्रति समर्पित होंगी।

आपका अपना
सुभाष,

सतोष कुमार सेन को *

कुरहॉस हॉकलैड
बैगस्टीन
4 3 36

प्रिय डा. सेन,

कल आपको पत्र लिखा था और एक चैक भी भेजा था। आशा है आपको जल्दी ही मिल जाएगा।

क्या उदय शकर का कोई समाचार है? मुझे शक है कही वह अग्निहोत्री के हाथों का खिलौना न बन गया हो। आपने शायद उदय शंकर के एजेंट से सपर्क किया हो या उसके पते पर उसे पत्र लिखा हो। विएना से मैंने उदय शंकर को केरो तथा अलैग्जैंड्रा के पते पर पत्र लिखे थे, किंतु उनका कोई उत्तर नहीं मिला। इस कारण मुझे चिंता हो गई है।

पेरिस में मुझे एक भारतीय विद्यार्थी ने बताया कि वे उपचार के लिए विएना जाना चाहते हैं। मैंने उन्हें तुम्हारा नाम और पता भी दिया और तुम्हें पत्र लिखने को कहा

*मूल बगला से अनूदित

है। घर पर भी दो तीन लोगो को तुम्हारा नाम व पता दिया है।

आशा है आप सभी लोग स्वस्थ हैं। आपसे विस्तृत समाचार पाने की आशा रखता हू। मैं ठीक-ठाक हू

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चन्द्र बोस

पुनश्च : - क्या कोई नया व्यक्ति वहां आया है।

सतोष कुमार सेन का *

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
4 3 36

प्रिय डा सेन,

गैरोला के लिए आज एक पत्र मिला। मुझे विएना आने के लिए आमत्रित किया है, यही कहने के लिए पत्र लिखा है। मेरा कोई खर्च नहीं होगा, क्योंकि आप, विमलाकीर्ति और गैरोला सारा खर्च वहन कर लेंगे। यात्रा का कारण यह है कि उदय शकर विएना पहुच रहा है। कृपया मुझे बताएं कि यह सब क्या है। मैं 20 मार्च या उसके आसपास मर्सिलेस से रवाना होना चाहता हू। इस दौरान यहा उपचार कराना चाहता हू। यदि विएना गया तो उपचार में बाधा उत्पन्न होगी। आर्थिक तगी तो है, किंतु वह बाधा नहीं है। अभी तक आपके तीस पाऊड लौटा नहीं पाया हू। फिर गैबरोला की आर्थिक स्थिति को देखते हुए उस पर अतिरिक्त भार डालना उचित नहीं है। विमलाकीर्ति की आर्थिक दशा का मुझे कोई ज्ञान नही है। मैं नहीं जानता कि गैयरोला ने तत्काल व स्पष्ट रूप मे लिखा है या नही। उदय शकर का संवाददाताओं का समारोह कब है? पहला प्रदर्शन कब है? एक और बात। ब्रिस्टल होटल में हमारा राष्ट्रीय झडा छूट गया था। क्या आप उस वापिस ले आए हैं?

विएना के उदाहरण का अनुकरण करते हुए बर्लिन और पेरिस मे रह रहे भारतीय फरवरी में राष्ट्रीय काग्रेस की स्वर्ण जयती मनाना चाहते हैं। अत. आपके प्रयासो के सार्थक परिणाम सामने आ रहे हैं।

यदि जहाज़ में प्रथम श्रेणी में यात्रा कर सकता तो अपने घर वायुयान स जाता, क्योंकि मर्सिलेस से बबई तक का किराया और रोम से कराची तक का वायुयान का किराया बराबर के लगभग ही होगा। वायुयान के किरायों में आजकल कमी आई है और

---

*मूल बगला से अनूदित

फिर रोम से कराची जाने में डच वायुयान केवल दो ढाई दिन लेता है। किंतु धनाभाव के कारण मुझे द्वितीय श्रेणी में यात्रा करनी पड़ेगी (तथा पी. एड. ओ.) और लॉयड ट्रीस्टीनो बम्बई समय पर नही पहुचेंगे।

माथुर ने लिखा है कि शाययद आप भी यहा आएंगे। यदि आप आ रहे हैं तो कृपया मुझे सूचित करें ताकि मैं मकान मालकिन से कहकर कमरे की व्यवस्था करा सकू। मेरा विचार है कि चिकित्सक यहाँ बिना शुल्क नहा सकते हैं। किंतु आने से पूर्व वैधानिक पत्र प्राप्त कर लें कि आप पूर्ण चिकित्सक हैं। यदि सस्ता टिकट खरीदना चाहे तो इस प्रकार टिकट खरीदें-विएना बैगस्टीन-बैगस्टीन-विएना-चेकोस्लोवाक फ्रटियर (ब्राटीस्लावा के निकट)। यदि ऐसे टिकट लेंगे तो पूरे मार्ग पर 60 प्रतिशत कम व्यय होगा। यहा ऐसा नियम है कि विदेशी को फ्रटियर स्टेशन तक का टिकट खरीदना होगा। यदि बैगस्टीन आ जाए तो विएना लौटने के बाद टिकट फाड दें। आशा है वहा सभी ठीक-ठाक है।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
5 3.30

माननीय एन. सी वैटर
विएना-IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट-41

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके दो कृपयापत्र मिले (दूसरा पत्र यहा पेरिस से मिला) । यह बताने के लिए पत्र लिख रहा हू और अभी तक उनका उत्तर नहीं दे पाया हूं। पेरिस मे बहुत व्यस्त रहा और फिर लुसाने में जहां श्रीमती नेहरू ने 28 फरवरी को दम तोडा। उनके पति व पुत्री अतिम समय में उनके पास थे। श्री नेहरू 7 मार्च को वायुयान द्वारा भारत लौट रहे हैं। यहां का मौसम शात और सुदर है (यद्यपि हवाए चल रही है) तथा छ· हफ्तो की चिता के बाद बहुत आराम है। 20 मार्च को मर्सिले से जहाज में बैठना चाहता हू। डा वैटर और आपको सादर!

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

ई. वुड्स को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
(ऑस्ट्रिया)
5.3.36

प्रिय श्रीमती ई. वुड्स,

आप सोच रही होंगी कि डब्लिन छोड़ कर कैसा अजीब व्यक्ति है, गायब हो गया। किंतु मैं अपनी इस गलती के लिए क्षमा भी नहीं माग सकता। डब्लिन छोड़ने के बाद से भंवर में फंसा हुआ था और अब जाकर कुछ समय निकाल पाया हू।

डब्लिन से रवाना होकर उसी रात कुमारी मैक्स्वीनी से मिला। अच्छा किया जो मैंने ट्रेन पकड़ ली, क्योंकि नाव अगली प्रातः रवाना होनी थी। अतः मैं कुमारी मैक्स्वीनी को अगली सुबह दुबारा नहीं मिल पाया।

समुद्र चंचल था, अतः रास्ते भर तबियत खराब रही। जहाज पर से आपको लंबा पत्र लिखने का विचार त्यागना पड़ा।

पेरिस पहुंचते ही बहुत व्यस्त हो गया और लोगों से घिरा रहा। रात में जब सोने लगा तो इतना थक गया कि लंबा पत्र लिख पाना संभव नहीं हुआ।

फिर पेरिस छोड़ कर श्रीमती व श्री नेहरू को मिलने लुसाने चला गया। श्रीमती नेहरू गंभीर रूप से बीमार थी और मैं वहीं था जब श्रीमती नेहरू ने दम तोड़ा। उनके अंतिम संस्कार आदि की व्यवस्था करनी थी अतः सारा दिन व्यस्त रहे। श्री नेहरू शीघ्र ही भारत के लिए रवाना होंगे क्योंकि उन्हें अप्रैल के प्रारंभ में लखनऊ में आयोजित राष्ट्रीय कांग्रेस सम्मेलन की अध्यक्षता करनी है। लुसाने में जलोपचार व कुछ आराम करने के लिए मैं यहां लौट आया। मदिरा की भांति यह स्थान भी अत्यधिक प्रभावी है। लगातार यात्रा के कारण बहुत थक गया हूं और कुछ चिंतित भी हूं। इस आराम से कुछ लाभ पहुंचेगा और फिर मैं 20 मार्च के आस-पास मर्सिलेस से रवाना होऊंगा।

डब्लिन में मेरे आवास के अंतिम दिनों के दौरान पेट के अंदर एक खास किस्म का दर्द होने लगा था जो लगातार रहता था। ऐसा दर्द पहले कभी नहीं हुआ। इसके बारे में मैंने किसी को कुछ नहीं बताया, क्योंकि मैं किसी को चिंता में डालना नहीं चाहता था। पेरिस आने के कुछ दिन बाद वह दर्द स्वयं खत्म हो गया ।

डब्लिन आवास के दौरान आपकी सहायता का मैं सदैव आभारी रहूंगा, मेरे पास बहुत सी खूबसूरत यादें हैं। आपकी पुत्रियों ने भी मेरा बहुत ध्यान रखा, विशेषरूप से एंडा तो बहुत देखभाल करने वाली बच्ची है। उन सभी को मेरा बहुत-बहुत धन्यवाद।

कह नहीं सकता दुबारा कब मुलाकात होगी। हमारे एक प्राचीन कवि भवभूति ने लिखा है-'समय शाश्वत है और पृथ्वी बहुत विस्तृत है।'-अतः संभव है फिर कभी भेंट हो, किंतु उस स्थिति में नहीं जैसे शैल्बर्न होटल में मैंने जेल सुपरिंटेंडेंट को आश्चर्य में

डाल दिया था।

कुछ ही दिनों मे पुन: आपको लिखूंगा कि हमें क्या करना चाहिए- क्या कर सकते हैं भारत और आयरलैंड के आपसी अनुबध को जारी रखने के लिए। मेरे डब्लिन छोडने के बाद क्या आपकी मुलाकात मैडम मैकब्राइड से हुई? उसके बाद से क्या कोई नई प्रगति हुई?

अपने बेटे-बेटियों को मेरी ओर से प्यार दे और आपको सादर प्रणाम।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

सतोष कुमार सेन को *

बैगस्टीन
(बिना तिथि के)
(पोस्टमार्क में तिथि-5.3 36-संपादक)

गैरोल के पत्र से समझ नहीं पा रहा कि उदय शंकर अग्निहोत्री के शिकंजे से आजाद हुआ या नही । यदि आपको उसका (उदय शकर) पत्र नहीं मिला तो कृपया तत्काल उसे पत्र लिखें, बुडापेस्ट के पते पर और उसे अग्निहोत्री से सावधान रहने को कहें। कृपया यह कार्य अवश्य कर दें। आप उदय शकर के एजेंट से उसका बुडापेस्ट का पता आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

सतोष कुमार सेन को *

कुरहॉस हॉकलैंड।
बैगस्टीन
6 3.36

प्रिय डा सेन,

आपका एक्सप्रेस पत्र व 587 शिलिंग आज ही मिले। मुझे आशा नहीं थी कि आप इतनी जल्दी भिजवा सकेंगे।

घर लौटने से पहले, विएना आने की मेरी बडी इच्छा थी, किंतु यह सभव नही हो पाएगा। गैरोला का पत्र मिलने के पश्चात मुझ में काफी उत्साह पैदा हो गया था, किंतु फिर गभीरता से विचार करने पर इस निर्णय पर पहुचा कि यह सभव नही होगा। विएना छोडने के बाद से इतनी जगहों की यात्रा करके और तरह-तरह का खाना खाकर बहुत कमजोर और थका हुआ महसूस कर रहा हू।

* मूल बगला स अनूदित

डब्लिन में एक दिन अचानक नए किस्म का पेट दर्द शुरू हो गया जैसा पहले कभी नही हुआ था। लुमाने में श्रीमती नेहरू की मृत्यु के कारण बहुत विषाद और कठिनाइयो का सामना करना पडा। अब घर लौटने से पूर्व दो-तीन सप्ताह तक अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना अति आवश्यक है। यहां के उपचार में 'स्नान' शामिल है। कुल मिलाकर 29 बार स्नान करना आवश्यक है जिसमे 25-27 दिन लग जाते हैं। मैं 21 'स्नान' नही कर पाऊंगा क्योंकि 20 मार्च को मुझे मर्सिलेस से रवाना होना है। इसका अर्थ है कि मुझे यहा से 18 को या उसके आस-पास चल देना होगा। इस अवधि में केवल 14 बार स्नान कर पाऊगा। यदि विएना जाऊगा तो दो-तीन दिन और छोडने पडेगे अत: मेरा बैगस्टीन आना कोई खास उपयोगी सिद्ध नहीं हो पाएगा। इन सब परिस्थितियो के कारण मुझे विएना यात्रा का प्रस्ताव अस्वीकार करना पड रहा है। आज गैरोला को भी इसी प्रकार का पत्र भेज रहा हू।

बहुत अच्छा हो यदि आप सब लोग, जिस दिन वह वहां पहुच रहा है, उसे लेने स्टेशन पहुचें। फिर आपको तो प्रेस द्वारा आयोजित सम्मान में भी उपस्थित रहना चाहिए, मैं यहा से उसके बुडापेस्ट के पते पर अग्निहोत्री के विषय मे पत्र लिख रहा हूं। आशा है मेरा पत्र उसे समय पर मिल जाएगा। यदि प्रेस द्वारा आयोजित सम्मान समारोह मे आप सब लोग उपस्थित रहेंगे तो अग्निहोत्री पर स्वतः प्रतिबध लग जाएगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

अमिय चक्रवर्ती को *

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन, अस्ट्रिया
11 3 36

प्रिय श्री चक्रवर्ती,

पेरिस में तुरत आपका पत्र मिला। खेद है मैं आपसे मिल नही पाया। जिन दो व्यक्तियो के नाम व पते आपने दिए थे, उनसे मैं मिला था। वे दोनों ही अद्भुत व्यक्ति हैं।

कई बातें आपको बताने को हैं- आज मैं एक या दो विषय उठाऊगा। अखबारो से आपको पता चल गया होगा कि हिटलर के भाषण से भारत मे कितनी उत्तेजना हैं। मुझे लगता है कि फैडरेशन की ओर से इसका तीव्र खंडन होना चाहिए। बहुत सोच-विचार के उपरात मैं ऐसा कह रहा हू। इस प्रकार के खडन मे लाभ ही होगा, हानि नही। मैं नही जानता कि जर्मनी मे रह रहे भारतीय क्या करेंगे, शायद उनके लिए कुछ कर

* मूल बगला से अनूदित

पाना कठिन भी है। हम जो लोग बाहर हैं, उनका कर्तव्य स्पष्ट है। इस विषय मे आपको बिल्कुल भी हिचकिचाना नहीं चाहिए। यदि इस खंडन के लिए फेडरेशन की अनुमति लेने में अधिक समय लगे या कोई अड़चन हो तो एक अध्यक्ष के नाते आप फेडरेशन का उत्तर दे सकते हैं। यदि कुछ डरपोक लोग बाद में इस विषय पर कोई प्रश्न उठाएंगे तो आप कह सकते हैं कि अपने देश में मुझे हमेशा लोगों की सहमति मिलती रही है और उसी के अनुरूप मैंने कार्य किया है। इसलिए जब देश के लोग ज़ोरदार शब्दों में विरोध कर रहे हैं तो हम लोगों का, जो विदेश में रह रहे हैं, दुगना कर्तव्य है कि इसका विरोध करें। बहुत सोच-विचार के उपरांत मैंने भारतीय समाचार-पत्रों (भारत मे) के लिए विरोध-पत्र भेजा है और जर्मनी के साथ व्यापार पर रोक लगाने के प्रस्ताव का समर्थन भी किया है। शीघ्र ही मैं जर्मन नेताओं के पास व्यक्तिगत विरोध भी प्रेषित करूंगा। किंतु, क्योंकि मैं किसी सगठन से सबद्ध नही हूं इसलिए मेरी आवाज का असर अधिक नही होगा। दो वर्ष पहले फेडरेशन ने जो विरोध किया था उसका कुछ प्रभाव पडा था क्योंकि विदेश कार्यालय से बहुत नर्म उत्तर प्राप्त हुआ था। अपने विरोध मे आप इस तथ्य का सदर्भ भी दे सकते है कि पत्र के भाव को ठीक प्रकार समझा नहीं गया है। बल्कि भारतीय लोगों का और अपमान किया गया है। शायद आपने देखा हो कि जापान में इसका अधिकाधिक विरोध हुआ है।

लखनऊ काग्रेस का सम्मेलन 8 अप्रैल को होगा। मुझे उससे पहले वहां पहुचना है। अत: मेरी यूरोप यात्रा समाप्त हो रही है और मुझे चलना ही चाहिए। आपके और अन्य मित्रों के विचारों की दिशा एक ही है, किंतु इन बातों पर विस्तृत विचार-विमर्श पत्रों द्वारा संभव नही है। यह कहना व्यर्थ है कि जैसे ही मैं वहां लौटूंगा, गिरफ्तार कर लिया जाऊंगा। यदि गिरफ्तार नही होता तो आपके विचारों से सहमत हूं कि हमें क्या करना चाहिए। घर जाने की जल्दी के कारण कही और आना-जाना अब सभव नही है। कुछ देशों की यात्रा की इच्छा पूर्ण हुए बिना ही रह गई, किंतु कई कारणों से इच्छा पूर्ण कर पाना सभव नही था।

अतर्राष्ट्रीय महिला लीग के प्रकाशन में आपका लेख पढ़कर प्रसन्नता हुई। आपने मुझे इस विषय पर लिखने को कहा था-किंतु अब लगता है मैंने अच्छा ही किया, नही लिखा। क्योंकि मेरे न लिखने की वजह से ही आपका इतना सुदर लेख प्रकाशित हुआ। असल में मैं बर्लिन, पेरिस और लुसाने में इतना व्यस्त था कि कोई लेख लिखने की स्थिति में नहीं था, यहा तक कि पत्रों के उत्तर भी समय पर नहीं दे पाया।

हिटलर के विषय में और अधिक लिखा जाना चाहिए। क्योंकि यह सच नही है कि विरोध के प्रकट करने से फेडरेशन से अलगाव का प्रश्न उठेगा, क्योंकि दो वर्ष पूर्व भी कडा विरोध किया गया था और उसका प्रभाव भी बुरा नही हुआ था। जर्मनी के विरुद्ध हमें (भारतीयों को) बहुत सी शिकायतें हैं। उन दिनों (जनवरी मे) जब मैं बर्लिन में था, मैंने भी विरोध प्रकट किया था। वे ताकत के प्रशंसक हैं न कि कमजोरी के। मैं तो कहता हूं, इसके लिए फेडरेशन से पृथक होने को भी तैयार हूं [illegible] हैं किंतु अन्य कारणों से, भारत के सम्मान या हित के कारण से नहीं। किंतु जर्मनी के विरुद्ध भारतीय दृष्टि से बहुत सी शिकायतें हैं।

हिटलर सरकार के शीघ्र पतन की भी कोई संभावना नहीं है। यदि युद्ध छिड़ जाए और जर्मनी को कमजोर कर दे तभी यह संभव है, वरना नहीं। किंतु यदि हमारे बहिष्कार से जर्मनी के व्यापार पर प्रभाव पड़ता है तो जर्मनी के व्यापारी हिटलर पर ज़ोर डालेंगे। आजकल जर्मनी में दो ग्रुप बहुत सफल हैं और वे हैं-सेना तथा व्यापारी।

आज इतना ही। आशा है आपका स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। बहुत से स्थानों की यात्रा और जगह-जगह का पानी पीने की वजह से बहुत थकान महसूस कर रहा हूं। डब्लिन में पेट में दर्द शुरू हो गया था। आजकल यहां आराम व जलोपचार के लिए आया हुआ हू। पिछले वर्ष इसी इलाज से लाभ पहुंचा था। आशा है इस बार भी लाभ होगा और स्वास्थ्य सुधरते ही देश के लिए रवाना हो जाऊंगा। हार्दिक शुभकामनाएं।

सदैव आपका अपना
सुभाष चद्र बोस

अमिय चक्रवर्ती को,

महोदय,

ब्रिटिश कॉन्सल से विएना में पत्र प्राप्त हुआ जो इस प्रकार है-

12 मार्च 1936

महोदय,

विदेश मंत्रालय के स्टेटसचिव के आदेश आज प्राप्त हुए कि आपको चेतावनी दे दूं कि भारतीय सरकार ने समाचार-पत्रों की प्रेस टिप्पणियों में देखा है कि इस माह आपका भारत लौटने का विचार है, और भारत सरकार आपको स्पष्ट करना चाहती है कि यदि आप ऐसा करेंगे तो स्वतंत्रा नही रह सकेंगे।

स्टेट सचिव
जे. डब्ल्यू टेलर
हिज मैजेस्टीज़ कॉन्सल

सन् 1932 में मुझे 2 जनवरी को भारत में गिरफ्तार किया गया और 22 फरवरी 1933 तक बिना मुकदमा चलाए जेल में डाले रखा गया। मैंने बार-बार मुकदमा चलाने को कहा, किंतु भारत सरकार ने न तो मुझ पर कोई आरोप लगाया और न ही मेरे विरुद्ध कोई शिकायत ही बताई। जब मैं बुरी तरह बीमार हो गया और भारत सरकार द्वारा अनेकों चिकित्सा जाच बोर्ड बैठाए गए तथा उन्होंने कहा कि या तो मुझे छोड दिया जाए अथवा इलाज के लिए यूरोप जाने की अनुमति दी जाए तब कही जाकर भारत सरकार ने मेरी गिरफ्तारी के आदेश वापस लिए और मुझे इलाज हेतु यूरोप जाने की अनुमति दी। पिछले तीन वर्षों से यूरोप में ही हू। दिसंबर 1934 में केवल एक बार

भारत गया था, जब अपने मर रहे पिता को देखने गया था और केवल 6 सप्ताह वहा ठहरा था। भारत में इस दौरान भी मुझे घर में नजरबंद बनाकर रखा गया था।

अब फिर भारत लौटना चाहता हूं तो इस प्रकार की धमकी दी जा रही है। मेरी पिछली गिरफ्तारी भी, न्यायिक व नैतिक रूप से, दोनों ही तरह गलत थी। किंतु भारत लौटने पर मेरी प्रस्तावित गिरफ्तारी ने तो सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं। क्या मैं पूछ सकता हूं कि भारत में क्या इसी प्रकार ब्रिटिश नियम लागू रहेंगे और नए सविधान के अधीन क्या हमें यही आजादी उपलब्ध होने वाली है?

आपका
सुभाष चद्र बोस
(अध्यक्ष, बगाल कांग्रेस कमेटी)

कुरहॉस हॉकलैंड, बैगस्टीन
आस्ट्रिया
17 मार्च

जवाहरलाल नेहरू को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन, आस्ट्रिया
13 मार्च, 1936

प्रिय जवाहर,

विएना में ब्रिटिश कान्सल का एक एक्सप्रेस-पत्र मुझे अभी मिला है जो इस प्रकार है-

'विदेश मंत्रालय के राज्यसचिव के आदेश आज प्राप्त हुए कि आपको चेतावनी दे दी जाए कि भारत सरकार ने समाचार-पत्रों की प्रेस टिप्पणियों में देखा है कि इस माह आपका भारत लौटने का विचार है। भारत सरकार आपको स्पष्ट करना चाहती है कि यदि आप ऐसा करेंगे तो स्वतत्र नहीं रह पाएंगे।'

हस्ता/-
जे डब्ल्यू टेलर
हिज़ मैजेस्टीज़ कान्सल

मैं अपना मार्ग निर्धारित कर रहा था जब मुझे यह नोट मिला। बुकिंग करवाने में इसलिए विलब हुआ क्योंकि मैं जलमार्ग व वायुमार्ग में होने वाले व्यय की तुलना कर रहा था। वायुयान की यात्रा से मैं उपचार पूर्ण करा सकता हूं, क्योंकि उसमें कुल 25 दिन लगेंगे। यहां, बल्कि पूरे महाद्वीप में, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिससे मैं इस विषय

में विचार-विमर्श कर सकूं। इस समय, जैसा कि आप अनुमान लगा ही सकते हैं, मेरी इच्छा है कि चेतावनी की अवहेलना करते हुए कि मैं देश वापस लौटूं। विचारणीय बात केवल यह है कि देश या जनता के हित में क्या होगा। व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए कुछ महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि मैं लोकहित में कुछ भी करने को तैयार हूं। जन मामलों से मैं एक अरसे से अलग-थलग हूं इसलिए मेरे लिए यह निर्णय कर पाना कठिन है कि जनहित में क्या होगा। मैं जानता हूं इन परिस्थितियों में किसी को राय देना आपके लिए भी कठिन होगा। शायद आप मुझे कुछ सलाह दे सकें। आप व्यक्तिगत तथ्य को भूलकर एक जन कार्यकर्ता को आसानी से वह मार्ग सुझा सकते हैं जो मार्ग जनहित में हो। लोकजीवन और देश में आपकी जो पोज़ीशन है, उसके रहते आपको जिम्मेदारी से इंकार नहीं कर सकते।

इस विषय में मैं आपको कष्ट इसलिए दे रहा हूं क्योंकि मेरी दृष्टि में आपके सिवा अन्य कोई ऐसा व्यक्ति नही है जिस पर मैं विश्वास कर सकूं। समयाभाव के कारण मैं विभिन्न लोगों से इस विषय में राय नहीं ले सकता। अपने रिश्तेदारों से राय लेना उचित नही होगा, क्योंकि शायद वे जनहित में निर्णय लेने में असमर्थ रहें। अतः मेरे पास आप की राय पर निर्भर करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। आपको 20 तारीख तक यह पत्र अवश्य मिल जाना चाहिए। यदि आप तत्काल वायरलेस से संदेश दें तो मुझे समय पर मिल जाएगा। मैं के. एल एम. जहाज़ पकड सकता हू जो 22 अप्रैल को रोम से रवाना होगा। इसलिए अगर मैं 21 को या 22 को भी देश लौटने का निर्णय करता हूं तो मुझे 2 अप्रैल को रोम से रवाना होने वाले जहाज मे सीट मिल जानी चाहिए। यह भी सभव है कि 29 मार्च को रवाना होने वाले जहाज मे ही सीट मिल जाए।

जब लखनऊ काग्रेस के लिए समय पर घर पहुचने की योजना बनाई थी तब भी यह सभावना मन में थी कि हो सकता है वहां पहुचते ही मुझे जेल में डाल दिया जाए। किंतु यह सभावना भी थी कि संभव है, कुछ समय के लिए ही सही आजाद रहने दिया जाए। दूसरी सभावना तो बिलकुल खत्म ही समझो, बल्कि अब तो घर लौटने का अर्थ है जेल जाना। यद्यपि जेल जाने का भी लाभ है। और ऐसे आदेश का उल्लघन कर जानबूझ कर जेल जाने में भी फ़ायदा है।

कृपया शीघ्र ही कोई उत्तर अवश्य दें। निम्न पते पर तार भी दे सकते हैं-बोस, कुरहॉस हॉकलैंड, बैगस्टीन, अस्ट्रिया ।

आशा है आपकी यात्रा आरामदायक रही होगी और स्वास्थ्य भी सतोषजनक हागा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष

पुनश्च :- कल प्रेस सदेश में मैंने यह संकेत दिया था कि इलाज पूरा कराने के

बाद वायुयान द्वारा स्वदेश लौटने की सभावना है।

सु च बोस

ई. वुड्स को,

कुरहॉस हॉकलैंड।
बैगस्टीन, आस्ट्रिया
17 3 36

प्रिय श्रीमती वुड्स,

9 तारीख के पत्र के लिए शुक्रिया। कुछ और कहने से पूर्व मैं आपको उस पत्र की प्रति दिखाना चाहूगा। जो मुझे विएना में ब्रिटिश कान्सल से प्राप्त हुई है-

12 मार्च 1936

'विदेश मत्रालय के राज्यसचिव के आदेश आज प्राप्त हुए हैं कि आपका चेतावनी द दी जाए कि भारत सरकार ने समाचार-पत्रों की प्रेस टिप्पणियों में देखा है कि इस माह आपका भारत लौटने का विचार है। ऐसा करेंगे तो स्वतत्र नही रह पाएग।

हस्ता/
ज डब्ल्यू टेलर
हिज मैजेस्टीज कान्सल

शायद आप इसे डब्लिन समाचार-पत्रों में, विशषरूप से आयरिश प्रम में-व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना कर छपवा सकें। यदि इस कार्य में आपको सफलता मिल जाए ता अन्य बातों के साथ निम्न भी जोड सकती हैं।

पहले भी बिना मुकदमा चलाए मुझे अक्तूबर 1924 से मई 1927 तक जेल मे डाले रखा गया। अत्यधिक बीमारी की हालत में मुझे असमय छोड़ दिया गया।

जनवरी 1932 से फरवरी 1933 में पुन: बिना मुकदमा चलाए जल मे डाला गया। जब पुन: गभीर रूप से बीमार हुआ और सरकारी चिकित्सा अधिकारियों के यह कहने पर, कि या तो मुझे छोड दिया जाए या इलाज के लिए यूरोप भेजा जाए, ही मुझ विदेश जाने की सरकारी आज्ञा मिली।

जब नवबर 1934 में मैं मृत्युशैया पर पडे अपने पिता को देखने भारत गया। बल्कि पिता की मृत्यु के बाद ही पहुचा-मुझे मेरे घर पर नजरबन्द रखा गया। जब तक भारत रहा-यानी 6 सप्ताह तक, इसी हाल में रहा।

वर्तमान गिरफ्तारी का प्रस्ताव इस भय से कि पता नहीं मैं क्या करूं। यह ब्रिटिश राज्य है।

मुझे प्रसन्नता है कि आप आयरिश लोगों को बताने में कामयाब होंगी।

कृपया तत्काल अपने समाचार दें। मैं पुनः आपको लिखने का प्रयास करूंगा।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
17.3.36

प्रिय श्रीमती वैटर,

मेरी लबी चुप्पी के लिए आपकी भावनाओं को मैं समझ सकता हू। मैं बहुत अच्छी परिस्थितियों में नहीं था। विएना में ब्रिटिश कांसिल का यह पत्र मुझे मिला है-

विदेश मत्रालय के राज्यसचिव के आदेश आज प्राप्त हुए हैं कि आपको चेतावनी दे दी जाए कि भारत सरकार ने समाचार-पत्रों की प्रेस टिप्पणियों में देखा है कि इस माह आपका भारत लौटने का विचार है। भारत सरकार स्पष्ट करना चाहती है कि यदि आप ऐसा करेंगे तो स्वतत्र नहीं रह पाएंगे।

हस्ता/-
जे. डब्ल्यू टेलर
हिज़ मैजेस्टीज़ कौंसिल

मैंने अकेले ही विषय में गंभीरतापूर्वक विचार किया और इस निर्णय पर पहुंचा हू कि इस आदेश का उल्लंघन कर परिणामों का सामना करना चाहिए। अभी मैंने यह विचार किसी को नहीं बताया और ब्रिटिश सरकार को तो यह बताना भी नही चाहता कि मैं क्या करने वाला हूं। उन्हें स्वयं खोज करने दें। यहां मुझे लग रहा है कि पुलिस मेरे क्रियाकलाप पर नजर रखे हैं । सभव है उन्हें आदेश मिले हों कि मेरी गतिविधियो की सूचना लंदन तक पहुचाए।

अभी तक मैंने अपनी सचिव, मिस शैंकल के अतिरिक्त किसी अन्य को विएना में सूचना नहीं दी है, मिस शैंकल को मैंने यहां बुलाया है, क्योंकि मुझे कुछ आवश्यक कार्य करवाना है, अपनी पुस्तक के द्वितीय संस्करण सहित, इससे पहले की जेल में जाकर बेकार बैठा रहूं। कृपया इस बात को पूर्णतः गुप्त रखें, जब तक मैं अन्य मित्रों को सूचित करने योग्य नहीं हो जाता।

मैं ब्रिटिश जहाज़ की अपेक्षा इटालियन जहाज़ से जा रहा हूं क्योंकि इनके शिकंजे में नहीं आना चाहता। यदि बर्थ न मिल पाई तो बहुत मुश्किल होगी. किंतु मुझे आशा है कि जेनेवा से 27 तारीख को रवाना होने वाले इटालियन जहाज में मुझे बर्थ अवश्य मिल जाएगी। जब तक लॉयड ट्रीस्टीनो कंपनी से कोई उत्तर नही आता, इस विषय में

आश्वस्त नही हो सकता, फलस्वरूप आपका कार्ड भरकर नही भिजवा सकता। श्रीमती हाग्रोव जानना चाहती है, कि मैं किस जहाज़ से रवाना होऊगा। अभी उन्हे कुछ नही लिखा है, किंतु कुछ दिन बाद अवश्य लिख दूंगा। इस बीच आप उन्हें कुछ न बताए।

डा वैटर व आपके विचार जो हाल ही के पत्रो में अभिव्यक्त हुए है मैं उनकी जितनी प्रशंसा करूं, कम है। विशेष रूप से अंतिम पत्र में कृपया इस पत्र को अपने मैत्रीपूर्ण पत्रों का उत्तर न समझें। कुछ ही दिन में एक लंबा पत्र अवश्य लिखूगा।

आशा है माडर्न रिव्यू डा वैटर का लेख मार्च अक मे अवश्य प्रकाशित करेगा। पत्रिका यदि जल्दी भी नहीं तो 25 मार्च तक विएना अवश्य पहुच जानी चाहिए। मैंने उन्हें कह दिया है कि वे सीधे आपके पते पर पत्रिका भेज दें।

फ्रास में एन्ड्रे गिडे, एन्डे मालरॉक्स तथा अन्य लेखको ने मुझे बहुत प्रभावित किया। बॉश का रवैया बहुत सहानुभूतिपूर्ण था। ग्वेनेट भी सहृदय है किंतु अधिकारी अधिक है। शेष अगले पत्र में।

सादर।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को *

कुरहॉस हॉकलास
बैगस्टीन, आस्ट्रिया
17.3 36

प्रिय सुनील,

26 जनवरी का तुम्हारा पत्र समय पर मिल गया था। क्योंकि मैं विभिन्न देशों की यात्रा पर था इसलिए जवाब नहीं दे पाया। फिर इतना विलंब हो गया कि मुझे लगा अब लिखने का कोई अर्थ नहीं है। बहरहाल मैंने पत्र लिखने का विचार बनाया।

तुम्हारी शादी का काम निबट चुका होगा। ऐसा अवसर जीवन मे सिर्फ एक बार ही आता है और जिस पर भविष्य का भला-बुरा बहुत कुछ निर्भर करता है। मेरी प्रार्थना है कि तुम्हारी धर्मपत्नी सदा प्रसन्न रहे और तुम लोगों का जीवन देश और देशवासियों की सेवा में व्यतीत हो। व्यक्तिगत एवं पारिवारिक प्रसन्नता का अर्थ भी तभी है जब आपका व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन देश को समर्पित हो। अत: मेरी विशेष प्रार्थना यही है कि तुम्हारा जीवन देश तथा देशवासियों की भलाई में काम आए। इसी में तुम लोगो को भी प्रसन्नता मिलेगी।

* मूल बंगला से अनूदित

पता नही दुबारा तुमसे कब मुलाकात होगी, इसलिए इतनी दूर से तुम्हे शुभकामनाए भेज रहा हू।

प्यार तथा शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

रोमिया रोला से,

विलेनेव्यू (वॉड) विलाओल्गा
20 मार्च, 1936

प्रिय सुभाष चद्र बोस,

अभी आपका पत्र मिला और तत्काल उत्तर दे रहा हू। हम अपनी शुभकामनाए दिए बिना आपको भेजना नही चाहते, ये शुभकामनाएं आपका कष्ट और सघर्ष मे साथ देंगी। आप हमारी इस इच्छा, आशा और अपेक्षा को जानते ही हैं कि हम आपके देश को पूर्ण स्वतत्र और सामाजिक प्रगति से भरपूर राष्ट्र के रूप में देखना चाहते हैं। इस द्विपक्षीय वजह से सघर्ष करने वाले व्यक्तियों के साथ हमारे विचार और शुभकामनाए सदा रहेगी। विलनेव्यू के सभी मित्रों की शुभाकामनाए।

आपका प्रेमी
रोमिया रोला

सतोष कुमार सेन को *

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
22 3.36
रविवार

प्रिय डा सेन,

आपका पत्र मिला, बहुत कुछ बताना चाहता हूं। उनमें से कुछ विषयो पर पत्र मे लिखूंगा बाकी बातें मिस शैंकल के द्वारा प्रेषित करूंगा। आज दो-तीन व्यावहारिक चीजो के लिए तुम्हें परेशान करूंगा।

1. दो चैक भेज रहा हूं। एक चैक पाउड का है। यह आपको उधार चुकाने के लिए है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

2. दूसरा चैक 27-18-6 पाउंड का है।

* मूल बगला से अनूदित

कृपया इस चैक को कैश कराकर मेरी गाड़ी की टिकट खरीद लें। साथ में अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी के नाम रेल-टिकट के लिए पत्र भेज रहा हूं। टिकट खरीदने के बाद जो राशि बचे कृपया तत्काल मुझे भिजवा दें। यह राशि मनीआर्डर द्वारा या 'वर्ट ब्रिफ' द्वारा भिजवा दें।

इस *टिकट पर मुझे आस्ट्रिया में 60 प्रतिशत और इटली में 50 प्रतिशत की छूट* मिल जाएगी। यदि वे यह छूट न दें तो कृपया टिकट न खरीदें। मैं यह टिकट हॉफगास्टीन से अगले स्टेशन रेस्बरो में खरीद लूगा। और पूरी राशि मुझे भिजवा दें।

3. सभव हो तो सोमवार दोपहर तक टिकट और पैसे भिजवा दें। 25 तारीख बुधवार मैं यहा से रवाना होने की योजना बना रहा हूं। कृपया इस विषय में किसी से बात न करें। यदि 'वर्ट-ब्रीफ' का प्रयोग करें तो पैसा और टिकट एक साथ भिजवा सकते हैं। यदि पैसा मनीआर्डर द्वारा भिजवा रहे हैं तो टिकट अलग से पंजीकृत डाक द्वारा भिजवाएं।

आज या कल अन्य विषयों पर अलग पत्र लिखूंगा। कृपया मेरे बारे में किसी को कोई सूचना न दें। यदि मेरे बारे में कोई कुछ पूछे तो कह दे मैं कुछ नही जानता। सरकार ने मुझे बता दिया है कि भारत लौटने पर मुझे अकेला छोड़ने वाले नही हैं। सरकारी पत्र की प्रति सलग्न कर रहा हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च :- यहा की पुलिस मुझ पर निगाह रखे है। वह जानना चाहती है मैं यहां से कब और कहा जाऊंगा। अत: कृपया टिकट के बारे में किसी को कुछ न बताए।

सुभाष

रोमिया रोला को,

25 मार्च, 1936

आदरणीय महोदय,

20 मार्च के अपने पत्र के लिए मेरा हार्दिक अभिनंदन स्वीकार करें और पत्र मैं प्रकट भावनाओं के प्रति धन्यवाद स्वीकारें। मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हू कि विलेन्यूव में आपसे दो बार मुलाकात सभव हुई और लंबी बातचीत का अवसर मिला। मेरे व मेरे देशवासियों के लिए यह हिम्मत बढाने और प्रोत्साहित करने की बात है कि आपके विचार और शुभकामनाए हमारे राष्ट्र व समाज की भलाई हेतु हमारे साथ हैं। भारत की प्राचीन संस्कृति की प्रशंसा तथा उसे विश्वभर में प्रसिद्धि दिलाने के आपके प्रयास का हम आदर करते हैं। उस से अधिक हम भारत के स्वाधीनता संघर्ष में आपके सहयोग

की कद्र करते हैं। विलेन्यूव में अद्भुत क्षणों की यादगार सदैव मेरे साथ रहेगी।

आपकी ओर से श्रीमती रोलां के इस विचार पर, कि मुझे फिलहाल भारत आने का विचार स्थगित कर देना चाहिए, बहुत चिंतन किया। इस विषय मे आपकी भावनाओं की कद्र करता हू, किंतु परिस्थितियोंवश, जिनका उल्लेख मैंने भारतीय प्रेस को दी स्टेटमैंट में किया है, भारत लौटना मेरा कर्तव्य है, सरकारी धमकियों के बावजूद भी यह निश्चय ही दुखद स्थिति है कि किसी व्यक्ति के जीवन के बहुमूल्य क्षण जेल की चारदीवारी में बीतें। किंतु इन्हीं कारणों से लोग आजाद नहीं हो पाए और आजादी की कीमत तो चुकानी ही पड़ेगी।

श्रीमती रोला और आपको आपकी कृपाओं व सद्भावनाओं के लिए हार्दिक धन्यवाद!

आपका अपना
सुभाष बोस

प्रो लेस्नी को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
25 मार्च, 1936

प्रिय प्रोफेसर लेस्नी,

उस दिन आपका कृपापत्र पाकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। मेरे द्वारा इंडो-चैकोस्लोवाकिया सोसायटी की सेवाओं को बढ़ा-चढ़ा कर प्रशंसा कर आपने अपने विशाल हृदय का ही परिचय दिया है और इससे दोनों देशों के मध्य वार्तालाप और आपसी समझ के द्वार ही खुले हैं। जो भी सेवा मैं कर पाया उसने मुझे अत्यधिक सुख दिया है, क्योंकि यही मेरे जीवन का उद्देश्य भी है। आपको आश्वस्त करता हू कि भविष्य में भी इसी प्रकार कार्य करता रहूंगा। श्री नाबियार ने आपको उन परिस्थितियों की सूचना दे दी होगी जिनका मुझे भारत लौटने के बाद सामना करना होगा। फिलहाल जो भी मेरे भाग्य में हो लेकिन मुझे विश्वास है कि अंततः मुझे स्वतंत्रता मिलेगी और मैं आप लोगों के हित में कार्य करने में सक्षम होऊंगा। आपके उपकारों के लिए आपका व श्रीमती लेस्नी का बहुत-बहुत धन्यवाद व ढेरों शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सतोष कुमार सेन को *

25.3 36

प्रिय डा. सेन,

इस सबंध मे मैं कुछ नही जानता। किंतु मेरा विचार है कि एसोसिएशन की ओर से इन सज्जन को पत्र लिखा जाना चाहिए। यदि सभव हो तो प्रयास करे कि लदन स्थित कोई भारतीय मित्र इनसे मिलकर एशोसिएशन के दृष्टिकोण से इन्हे परिचित करा दे।

उन्हे यह भी स्पष्ट कर दे कि यदि अग्निहोत्री इसमें शामिल हुआ तो भारतीय इसका बहिष्कार करेंगे और उद्देश्य को हानि पहुचेगी।

यदि बोर्ड का पता मिल जाए तो कृपया तत्काल एयरमेल द्वारा भारत को सूचित करे। यदि सूचना भारत में पहुंच गई तो उद्देश्य की पूर्ति हो जाएगी। अत: इस दिशा मे आपको प्रयत्न करना चाहिए।

कल प्रात: रवाना हो रहा हू अत: विएना जाना सभव नहीं हो पाएगा।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

(इस पत्र पर कोई पता नही लिखा था, किंतु विषयवस्तु से प्रतीत होता है कि भारत के लिए रवाना होने से ठीक पहले यह पत्र बैगस्टीन से ही लिखा गया-सपादक)

डा. थीरफेल्डर को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
25 मार्च,1936

प्रिय डा थिरफेल्डर,

मेरा भारत लौटने का समय आ गया है, किंतु लौटने से पूर्व मैं स्पष्ट किंतु मैत्रीपूर्ण शब्दों में, कुछ कहना चाहता हूं।

जब मैं 1933 में पहली बार जर्मनी आया था तब मुझे आशा थी कि जर्मनी जो स्वयं राष्ट्रीय शक्ति और आत्म-सम्मान के प्रति जागरुक राष्ट्र है वह अन्य देशो के प्रति, जो कि संघर्षरत हैं, सहानुभूति रखेगा। किंतु खेद है कि आज मुझे इस विचार के साथ भारत लौटना पड़ रहा है कि जर्मनी के नए राष्ट्रवाद में सकीर्णता, स्वार्थ तथा घमड के सिवाय और कुछ नही। म्यूनिख में हाल ही में हेर हिटलर के भाषण में नाजीवादी दर्शन के अतिरिक्त और कुछ भी नही था। मुझे मालूम है कि ड्यूत्से नैकरिक्स्टनबुरो

* मूल बगला से अनूदित

ने उसके भाषण पर जापान और भारत में विरोध भिजवाया है। किंतु यह अर्थहीन है, क्योंकि यह ब्रिटिश या जर्मनी के समाचार-पत्रों में प्रकाशित नहीं हुआ। नए जातिवाद के दर्शन में जिसका आधार बहुत कमजोर है, सामान्य रूप से गोरों के प्रति विशेषरूप से जर्मन के लोगों के लिए, आदर स्पष्ट है। हेर हिटलर ने कहा है कि गोरों के भाग्य में सम्पूर्ण विश्व पर राज्य करना है। किंतु ऐतिहासिक तथ्य इसके विपरीत हैं, क्योंकि यूरोप पर एशिया का राज्य, एशिया पर यूरोपियन राज्य की अपेक्षा अधिक रहा है। यूरोप पर बार-बार मंगोल, तुर्की, अरब (मूर) हूण तथा अन्य एशियाई जातियों के आक्रमण से मेरा तर्क स्वतः स्पष्ट हो जाता है। मैं यह बात इसलिए नहीं कह रहा कि मैं एक जाति पर दूसरों के शासन का पक्षधर हूं, बल्कि यह स्पष्ट करना चाह रहा हूं कि यह कहना कि-यूरोप और एशिया कभी शांतिपूर्वक एक नहीं हो सकते, ऐतिहासिक झूठ है। इस बात से हमें बहुत आघात पहुंचा है कि जर्मनी का नया राष्ट्रवाद स्वार्थी और जातिगत अभिमान से अभिप्रेरित है। हेर हिटलर ने अपनी पुस्तक 'मीन काम्फ' में जर्मनी की प्राचीन उपनिवेशवादी नीति की भर्त्सना की है। किंतु नाजी जर्मनी ने पुराने उपनिवेशवाद की चर्चा प्रारंभ कर दी है।

इस नए जातिवादी दर्शन और स्वार्थी राष्ट्रवाद के अलावा और भी कुछ बातें हैं जिन्होंने हमें अधिक प्रभावित किया है। जर्मनी ने ग्रेट-ब्रिटेन से लाभ पाने हेतु भारत व भारतवासियों का विरोध करना अधिक सुविधाजनक समझा। राष्ट्रीय समाजवादी पार्टी के इतिहास में इसके अनेकों उदाहरण हैं। लगभग दस साल पूर्व, जब पार्टी ने इंग्लैंड में प्रचार हेतु अंग्रेजी का पर्चा छपवाया था जिसमें हेर हिटलर व डा. रोजनबर्ग की पुस्तकों के भारत-विरोधी अंश प्रकाशित किए थे, ही यह प्रयास प्रारंभ हो गया था।

दोनों देशों के मध्य आपसी समझ पैदा करने के लिए आपके तथा ड्यूत्से अकादमी के प्रयत्नों की हम प्रशंसा करते हैं। किंतु मुझे खेद है कि उपरोक्त कारणों से उसका प्रभाव अधिक नहीं हो रहा। आशा है अंततः आपके अथक प्रयास विजयी होंगे, किंतु जर्मनी का वर्तमान वातावरण अधिक संतोषजनक नहीं है। पुरानी पीढ़ी जो जातिवाद व राजनीति की इस नीति के प्रभाव से रहित थी, वह इस प्रभाव के अंतर्गत पल बढ़ रही नई पीढ़ी से बिल्कुल अलग है। मुझे आशा है हमारे पुराने मित्र हमारा साथ नहीं छोड़ेंगे लेकिन यह भय भी है कि नई पीढ़ी के नए मित्र बनाना हमारे लिए कठिन होगा। जर्मनी के लोग बहुत सहृदय लोग थे, भारतीयों के प्रति विशेष मैत्री भाव रखनेवाले। किंतु तब क्या होगा जब नई पीढ़ी पर नई शिक्षा का प्रभाव पड़ेगा।

मैं आपका आभारी हूं कि आपने पिछली जनवरी में मुलाकात की व्यवस्था करा दी। मिनिस्टीरियल डायरेक्टर डिकोफ तथा डा. फ्रूफर से मेरी दो लंबी मुलाकातें हुईं। दोनों ही पहले की अपेक्षा इस बार, व्यक्तिगत रूप से मेरे प्रति सहृदय थे। मुलाकात का नतीजा कुछ नहीं निकला। मैंने उन्हें यह अनुभव करा दिया कि भारत के प्रति उनका कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं है मुझे यह भी अनुभव हुआ कि यदि भारत के प्रति जागरुकता पैदा करनी है तो कुछ और मंत्रालयों से संपर्क साधना चाहिए।

हेर हिटलर के भाषण के उपरांत, मैंने भारतीय प्रेस में एक कटु टिप्पणी भेजी है,

आशा है शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगी। यूरोप छोड़ने से पूर्व मैं यह स्पष्ट करना चाहता हू कि अभी भी मैं जर्मनी और भारत के मध्य समझौता कराने के प्रति कटिबद्ध हू। जब हम अपनी स्वतंत्रता और अपने अधिकारों के लिए विश्व के सबसे बड़े राज्य से संघर्ष कर रहे हैं। और हमें सफलता की पूरी आशा भी है, तब भला हम अपने राष्ट, जाति व संस्कृति पर किसी अन्य राज्य द्वारा किए गए आक्रमण को कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं।

मैं एक आशावादी व्यक्ति हू और अभी भी मुझे आशा है कि माहौल में परिवर्तन *आएगा तथा अतत: हम लोगों में आपसी समझ पैदा होगी।* फिलहाल मैं ड्यूत्से अकादमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशसा करता हूं इस पत्र का उत्तर देने का कष्ट न करे क्योंकि कुछ दिन बाद ही मैं यात्रा पर निकल जाऊंगा और भारत पहुंचते ही मेरी गिरफ्तारी की पूरी आशंका है।

शुभकामनाओं सहित

मैं,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च :- ये विचार मेरे व्यक्तिगत विचार ही नहीं बल्कि भारतीय राष्ट्रवादियों के विचारों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं । मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी यदि आप यह पत्र किसी मित्र, किसी महकमे को प्रेषित करें। भारत का जर्मनी के प्रति रुख स्पष्ट करने की दृष्टि से।

सु च. बो.

नाओमी सी वैटर को,

विलाख स्टेशन
26 3.36

एन. सी वैटर
विएना-IX
व्हीरिंगर स्ट्रीट- 41

प्रिय श्रीमती वैटर,

मैं अब अपनी यात्रा में हू और अगली गाडी के इतज़ार में हू। यह यात्रा बहुत थकाने वाली यात्रा है। गैस्टीन छोडना पड़ा, दुखी हूं, वहां का मौसम बहुत सुहावना था और स्नान मुझे लाभ पहुचा रहे थे। आशा है आप अब स्वस्थ होंगी। बहुत पहल से

सरकार मेरे पीछे लगी थी। कुछ घंटों बाद मैं उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर हो जाऊंगा। कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें और डा. वैटर तक भी पहुंचा दें। आप से मिले अपनेपन व प्यार के लिए हृदय से आभारी हूं। अब धार्मिक यात्रा पर हूं अतः चिंता की कोई बात नहीं।

सदैव आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

ई. वुड्स को,

लॉयड ट्रीस्टीनो
पिरस्काफो कान्टे वरडे
30.3.36

प्रिय श्रीमती वुड्स,

बैगस्टीर छोड़ने से पूर्व 22 तारीख को आपका पत्र मिला। जो कटिंग्स आपने भेजी, वे दिलचस्प थीं।

इस समय हम मध्य समुद्र में हैं। चारों ओर नीला समुद्र है और एकमात्र जहाज लहरों को काटती हवा और लहरों के मध्य चल रही है। जहाज में अधिकांश इटलीवासी हैं जो शायद एबीसीनिया जंगलों की यात्रा पर निकले हैं। कुछ भारतीय हैं, अंग्रेज कोई नहीं।

डब्लिन में बिताए दिनों को प्रायः याद करता हूं। वे दिन एक स्वप्न की भांति थे जो इतनी जल्दी बीत गए। मेरे प्रवास को इतना सुखद व दिलचस्प बनाने के लिए मैं आप सबका बहुत आभारी हूं। जो बात मुझे सबसे अच्छी लगी वह यह थी कि आपके पूरे परिवार में एक ही स्फूर्ति व आत्मा के दर्शन हुए जो प्रायः देखने को नहीं मिलता । आपके पुत्र व पुत्रियां भी बहुत सहृदय हैं।

आपने कहा था कि एडा पत्र लिखेगा लेकिन उसने अभी तक नहीं लिखा। अब उसे पत्र नहीं लिखना चाहिए क्योंकि पत्र लिखने से वह भारत सरकार की कुदृष्टि का पात्र बनेगा। वैसे भी आयरलैंड से आनेवाले पत्र को भारतीय पुलिस पास नहीं करेगी।

मैंने दो बार मैडम को पत्र लिखा, किंतु उनकी ओर से कोई उत्तर नहीं मिला । संभव है वे अस्वस्थ हों।

अलग से दो अखबार भिजवाने का भी शुक्रिया।

यदि 'एनल्स आफ एन एक्टिव लाइफ' की सेकेंड प्रति मिले तो कृपया मेरे भाई को निम्न पते पर भिजवा दें-श्री सरत बोस, 5, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। रजिस्टर-डाक द्वारा ही भेजें।

यदि कभी श्री एलेक्स लिन से भेंट हो तो उन्हें अवश्य बता दें कि उनके भाषणों

व व्यंग्य क्षमता का मैं प्रशंसक हूं।

बैगस्टीन से आपको लिखा पत्र अब तक आपको मिल गया होगा जिसमें स्वदेश लौटने के अपने विचार के बारे में लिखा था और वहां मेरा जो स्वागत होगा उसका भी संकेत दिया था। स्वदेश लौटने का संदेश मैंने प्रेस में दे दिया है। यदि उस पर अवरोध न लगा तो सभी पत्रों में प्रकाशित हो जाना चाहिए। कृपया उसे अवश्य देखें। आशा है आपको अच्छा लगेगा।

मेरा विश्वास है यदि आप कुछ आलोचना भी जारी रखें तो उपयोगी कार्य कर सकती हैं। शायद हमें मिस एम से अधिक अपेक्षाएं नहीं रखनी चाहिए । वैसे भी उनका मैडम पर अधिक प्रभाव नही है। बहरहाल। आपको अपनी कोशिश जारी रखनी चाहिए, परिणाम उत्साहवर्द्धक ही होंगे।

फ्रेंच पत्राचार के लिए, जिसके बारे में मैंने बात की थी आपने या मिस एलीन ने उन दो महिलाओं को बता दिया होगा ताकि उन्हें आश्चर्य न हो।

आप भारत की यात्रा पर कब आ रही हैं? यदि स्वयं न आ पाएं तो परिवार के किसी सदस्य को अवश्य भेजें।

कल सईद बंदरगाह पहुंचूंगा वहीं से यह पत्र डाक में डालूंगा। 8 अप्रैल को हम बंबई में होंगे।

मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें और घर में सभी छोटों को प्यार, मेरी संरक्षक देवी सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

ई वुड्स को,

काटे वरदे
स्वेज कनाल
31.3.36

प्रिय श्रीमती ई वुड्स,

कल लिखे लंबे पत्र के बावजूद आज फिर लिख रहा हूं, क्योंकि कुछ दिलचस्प बातें बताना चाहता हूं। आज प्रातः जब पोर्ट सईद पहुंचे तो पुलिस अधिकारी मेरी तलाश में जहाज़ में चढ़े। मेरा पासपोर्ट छीन लिया गया। जब तक जहाज़ चलने को हुआ तब उसे वहां से हटाया गया, और पासपोर्ट जहाज़ पर नियुक्त लेखाकार के हवाले कर दिया गया। ब्रिटिश, जो आज भी यहां शक्तिशाली स्थिति में हैं, यह नहीं चाहते कि मैं इजिप्ट में रुकूं और यहां के नेताओं से संपर्क साधूं। पिछली दफा मैं यहां के प्रमुख नेता नाहस पाशा से मिला था। महत्त्वपूर्ण घटना है न? मुझे नहीं मालूम था कि मैं इजिप्ट में भी एक खतरनाक व्यक्ति हूं।

यदि चाहें तो उपर्युक्त घटना का प्रचार करें। इससे आप अनुमान लगा सकती हैं कि बंबई में मेरा कैसा स्वागत होगा।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च :- अभी हम स्वेज् कनाल से गुज़र रहे हैं शाम तक स्वेज् पहुंच जाएंगे जहा से यह पत्र डाक में डालूगा।

सु च. बोस

सतोष कुमार सेन को,

2 4.36

डा. एस. के. सेन,
एल्सर स्ट्रासे 20/15
विएन IX आस्ट्रिया

प्रिय डा. सेन,

साथ में एक पत्र है जो विएना के पुलिस प्रेज़ीडेंट के नाम है। कृपया इसे जर्मन भाषा में अनुवाद कराकर टाइप करा लें। टाइप अनुवाद के साथ यह पत्र पुलिस प्रेजीडेंट को एक्सप्रेस व रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें। प्रेषक के बारे में न लिखे, क्योंकि यह आवश्यक नहीं है । मुझे आशा नहीं कि वे इसका जवाब देंगे। यदि वे उत्तर दे तो जैसे मैंने अपनी सेक्रेटरी को आदेश दिए हैं वैसे ही डाक के साथ रख ले।

पोर्ट सईद में पुलिस के व्यवहार का आपको पता चल ही गया होगा कि वे मुझे वहां उतरने देना नही चाहते थे। मुझे नहीं पता था कि इजिप्ट में मुझसे उन्हें इतना खतरा है। आप अनुमान लगा सकते हैं कि बबई में पुलिस का व्यवहार कैसा होगा।

आज और कुछ लिखने को शेष नही है। अभी तो समुद्र बिल्कुल शात था। कल हम मसावा पहुंचेंगे। वहीं से यह पत्र डाक में डालूंगा। आशा है शीघ्र ही यह पत्र आपको मिल जाएगा।

आशा है आप सभी स्वस्थ होंगे। पोर्ट सईद पहुंचने से पहले भी आपको पत्र लिखा था।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

सेंसर द्वारा पास इलीजिबल
24.4.36

लेफ्टिनेंट कर्नल, आई. एम. एस.
सुपरिंटेंडेंट
यरवदा सेंट्रल जेल

प्रिय श्रीमती वैटर,

भारत पहुंचने पर आपको पत्र लिखने का वायदा था, किंतु परिस्थितिवश आपको पत्र नहीं लिख पाया। भारत भूमि पर पैर रखते ही गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ दिन बंबई जेल में रहा, फिर पूना स्थानांतरित कर दिया गया जो बंबई से ट्रेन द्वारा चार घंटे की दूरी पर है।

मैं नहीं जानता क्या लिखू, क्योंकि सेंसर की तलवार मेरी गर्दन पर लटक रही है।

यहां की गर्मी थका देने वाली है। गर्मी मुझे वैसे भी नहीं सुहाती, देश के हिस्से की गर्मी वैसे भी भयानक है विशेषरूप से मेरे जैसे व्यक्ति के लिए क्योंकि मौसम में एकदम परिवर्तन आया है। एक महीने पहले मैं बैगस्टीन की बर्फ में घिरा था। काश हम आपको यहां की कुछ गर्मी देकर वहां की कुछ ठंड यहां ला पाते।

आपको यह जानकर अच्छा लगेगा कि मैं उसी जेल, उसी वार्ड में हूं। जहां महात्मा गांधी ने अपने बंदी जीवन का अधिकांश समय बिताया था।

वहां सभी मित्रों को मेरा नमस्कार कहें जिन्हें मैं अलग से पत्र नहीं भेज सकता, क्योंकि बहुत-सी पाबंदियां हैं। प्रेजीडेंट वैटर व आपको भी शुभकामनाएं। आशा है आप सभी स्वस्थ हैं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष सी बोस

यरवदा सेन्ट्रल जेल
पूना
24.4.36

श्रीमती एन सी वैटर
व्हीलिंगर स्ट्रीट-41
विएना-IX

पुनश्च :- यदि मुझे पत्र लिखें तो कलकत्ता के पते पर लिखें जहा पत्र सेंसर होते हैं। जेल के पते पर न लिखें।

सु च बोस

(प्रस्ताव) कांग्रेस अध्यक्ष (राजेंद्र प्रसाद) को

1 मई, 1936

मेरा ध्यान कांग्रेस अध्यक्ष, बाबू राजेन्द्र प्रसाद व श्री भूलाभाई देसाई के बयान की ओर आकर्षित हुआ है। भारतीय प्रचार के संबंध मे दो बातें आवश्यक हैं-1. अधीकृत प्रतिनिधि और 2. आवश्यक राशि। यह कहना अनावश्यक है कि जितना अधिक पैसा होगा उतना अधिक प्रचार भी होगा। फिर भी यदि हम कार्य करना चाहे तो अधिक धन के बिना भी बहुत सा कार्य कर सकते हैं। सच्चाई यह है कि यूरोप और अमरीका में कई ऐसे भारतीय हैं जो उपयोगी प्रचार कर रहे हैं, कुछ व्यक्तिगत तौर पर कर रहे हैं, कुछ ऐसी सस्थाओ के नाम पर कर रहे हैं जो संस्थाए बिना भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा दी गई सहायता के स्थापित की गई हैं। यदि उनमें से कुछ सस्थाओं को राष्ट्रीय कांग्रेस अपना ले और विदेश मे उन्हें अपना प्रतिनिधित्व करने की अनुमति दे तो बिना अतिरिक्त राशि के भी वे बहुत कुछ उपयोगी कार्य कर सकती हैं।

स्वर्गीय विट्ठलभाई पटेल सदा यही कहा करते थे कि यदि वे कांग्रेस के नाम पर बोलते तो विदेश में कुछ अधिक प्रभाव पड़ता। ऐसा ही अनुभव मेरे जैसे कुछ अन्य व्यक्तियों का भी है। यदि कांग्रेस की सबसे बड़ी समस्या आर्थिक तगी है तो क्या कांग्रेस मुझे (और मेरे जैसे कुछ अन्य लोगों को) कांग्रेस के नाम पर भाषण देने को प्राधिकृत करती है। इस दशा में बिना किसी आर्थिक सहायता के हम देश की बहुत सेवा कर सकते हैं और अपना अच्छा उदाहरण पेश कर सकते हैं। मैं कांग्रेस अध्यक्ष से सीधा प्रश्न पूछ रहा हू और उनसे स्पष्ट उत्तर की आशा रखता हू।

तुषार कांति घोष को,

18 मई 1936

प्रिय तुषार बाबू,

आप यह जानना चाहेंगे कि मैं कैसा हूं। पहली बात कि गर्मी से बहुत परेशान हू और उसका कोई इलाज भी नजर नहीं आता। दूसरी बात व्यायाम की कमी है। सरकार से जेल के अंदर चारदीवारी में ही सैर की अनुमति मांगी है, उत्तर की प्रतीक्षा में हू। डर है इस तरह बेकार रहने से मेरा स्वास्थ्य फिर बिगड़ आएगा। अतः आशा करता हू कि सरकार इस बात की अनुमति दे देगी।

(शेष पत्र उपलब्ध नहीं था-संपादक)

जवाहरलाल नेहरू को,

द्वारा सुपरिंटेंडेट ऑफ पुलिस
दार्जिलिंग
30 जून, 1936

प्रिय जवाहर,

22 तारीख का आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। वह पत्र मुझे 27 तारीख को मिला। समाचार-पत्रों से पता चला कि आप आजकल अत्यधिक श्रम कर रहे हैं । इसलिए मुझे आपके स्वास्थ्य की चिंता हुई। जानकर अच्छा लगा कि आप कुछ दिन आराम करने की दृष्टि से मसूरी गए थे, बेशक कम समय के लिए ही सही। मैं समझ सकता हू कि आप जैसे व्यक्ति के लिए अत्यधिक श्रम से बच पाना कितना कठिन है। फिर भी आशा करता हू कि अधिक बोझ स्वयं पर नहीं डालेंगे। यदि आपका स्वास्थ्य खराब हो गया तो सभी को हानि होगी।

आपने अपने बहनोई रणजीत के बारे में लिखा है। वह चिंता का विषय है। यही सुखद बात है कि चिकित्सकों ने किसी गभीर रोग का संकेत नहीं दिया है। आशा है आराम और परिवर्तन से उनको लाभ होगा।

मैं यहा ठीक-ठाक हू। आतों में कुछ गडबड है और फ्लू का भी आक्रमण हुआ है (शायद गले की इन्फैक्शन हो) धीरे-धीरे ठीक हो जाएगा।

यदि आपके पुस्तकालय में निम्न पुस्तकों में कोई पुस्तक हो तो कृपया सुविधानुसार एक-एक कर मुझे भिजवा दें।

1 हिस्टॉरिकल ज्योग्रफ़ी आफ यूरोप-गोर्डन ईस्ट
2 क्लैश आफ कल्चर्स एड कांटैक्ट आफ रेशज-पिट रिवर्स

3. शार्ट हिस्ट्री ऑफ् अवर टाइम्स-जे. ए. स्पेंडर
4. वर्ल्ड पालिटिक्स 1918-33-आर.पी. दत्त
5 साइंस एंड फ्यूचर- जे.बी.एस. हलडाने
6. अफ्रीका व्यू-हक्सले
7 च्वोज (गन्गेज़) खान-राल्फ फाक्स
8. द ड्यूटी आफ इंपायर-बार्न्स

इन पुस्तकों की जगह यदि हाल ही में कोई नई पुस्तक आई हो तो आप इस सूची में परिवर्तन कर सकते हैं। पत्रचार या पुस्तकें भेजने के लिए पता है-द्वारा सुपरिंटेंडेंट ऑफ पोलीस, दार्जिलिंग।

आशा है आप स्वस्थ होंगे। प्यार सहित।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष

पंडित जवाहरलाल नेहरू
इलाहाबाद

सेंसर द्वारा पास
हस्ता/-
सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग

नाओमी सी. वैटर को,

सेंसर द्वारा पास
इलीजीबल
6-7
सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग
बंगाल, भारत
5 जुलाई, 1936

प्रिय श्रीमती वैटर,

पता नहीं आपको पिछले अप्रैल की 24 तारीख का यरवदा जेल पूना से लिखा पत्र मिला या नहीं। उसके बाद से मुझे उत्तरी बंगाल में दार्जिलिंग के निकट में स्थानांतरित कर दिया गया है । श्रीमती हारग्रोव ने लिखा है कि आप आज चेकोस्लोवाकिया में है, शायद इसी कारण आपकी ओर से कोई समाचार पाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। इस

वर्ष अभी तक विएना का गर्मियों का मौसम सुधरा नही होगा। चेकोस्लोवाकिया मे मौसम कैसा है?

यह स्थान समुद्रतल से 1,000 मीटर की ऊचाई पर स्थित है। हिमालय पर्वत श्रृखला पर स्थित होने के कारण मौसम बहुत अच्छा है, हालांकि बरसात बहुत होती है। यहा के लोगों का कहना है यहा केवल दो मौसम-सर्दी और बरसात-ही होते हैं। मैं अपने भाई के घर में नजरबद हू। यद्यपि यहां भी बहुत से प्रतिबध है लेकिन फिर भी जेल के जीवन की अपेक्षा अधिक आराम है।

आजकल हमारे समाचार-पत्रों में आस्ट्रिया के समाचार प्राय: छपते रहते हैं। हिमवर और क्लैरिकल पार्टियों के मध्य चल रही रस्साकशी बहुत रोचक है। कुछ पत्रों मे समाचार था कि बसंत तक राजा हॉफ्बर्ग अथा स्कानबर्न पैलेस में लौट जाएगा। आप तो जानती ही हैं कि इन समाचार-पत्रों की भविष्यवाणियां कितनी विश्वसनीय होती हैं।

यहा से कुछ और लिखने को नहीं है, शायद आप वहा के कुछ रोचक समाचार दे। आपका और डा. वैटर का स्वास्थ्य कैसा है।

आप दोनों का सादर,

मैं,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष च बोस

पुनश्च :- कृपया नया पता नोट कर लें।

सु च बोस

श्रीमती एन सी. वैटर
विएना,

सत्येंद्र नाथ मजूमदार को *

सेसर द्वारा पास
(अस्पष्ट)
सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिग

द्वारा सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिग
18 7 36

* मूल बगला से अनूदित

प्रिय मित्र

काफी दिन पहले तुम्हारा 12 जून का पत्र मिला था। पत्रोतर देने मे विलंब हुआ क्षमा करें। पहले भी लंबे समय तक तुम्हें पत्र नहीं लिख सका था, तुम्हारी ओर से कभी देरी नहीं हुई, मेरी ही गलती थी। यहां बहुत आराम महसूस कर रहा हू, विशेष रूप से पूना की गर्मी के बाद। पेट दर्द अभी जारी है और गले में इंफैक्शन हो गई है। आतों के लिए एमीटीन के इंजैक्शन ले रहा हूं और गले के लिए आटोवैक्सीन लेने वाला हू। देखते हैं कितना लाभ होता है।

प्राय: तुम्हें याद करता हू। ईश्वर ही जानता है कि पुन: कब मिलना होगा। समय-समय पर तुम्हारे समाचार पाकर प्रसन्नता ही होगी। यदि समय पर उत्तर न दे पाऊं तो, कृपया क्षमा करें।

यहा आने के बाद आनद बाजार के बारे में पूछताछ की । किंतु मुझे पता चला कि यहा कोई एजेंट आनद बाजार पत्रिका नहीं लेता। प्रेम सहित!

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

श्री सत्येंद्र एन मजूमदार

किट्टी कुर्टी को,
सैंसेर द्वारा पास

सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिग

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिग
भारत
25 जुलाई, 1936

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

आपका कृपा पत्र मिला। 25 मई का आपका पत्र कुछ दिन पहले मिला था। पत्र का उत्तर देने में विलंब हुआ क्षमा चाहता हूँ। भारत में मेरे साथ क्या व्यवहार हुआ इसकी सूचना आपको कैसे मिली। आप तो अंग्रेजी समाचार-पत्र पढ़ती नही और मैंने बंबई पहुचने के बाद आपको पत्र लिखा नहीं। क्या बर्लिन के समाचार-पत्रों में कोई समाचार छपा था।

आपके पत्र से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप मनोविज्ञान पर अपने लेखों व कविताओं का सग्रह प्रकाशित करवा रही हैं। पता नही मैंने आपको बताया था या नही

कि मैं मनोविज्ञान का छात्र था किंतु बाद में राजनीति में आने के कारण वह सब छोड़ना पड़ा। यहा लौटने के बाद से फिर मनोविज्ञान पर पुस्तकें पढ़ने का प्रयत्न करता रहता हू। आजकल स्वप्नों पर फ्रॉयड की पुस्तक पढ़ रहा हू और अपने स्वप्नों पर उसके सिद्धात लागू करके देख रहा हूं। क्या आप किसी अन्य ऐसे लेखक के विषय में बताएगी जिसने फ्रॉयड के बाद स्वप्नों के सदर्भ में उसके विश्लेषण के सिद्धातों को आगे बढ़ाया हो। यदि ऐसा है तो कृपया मुझे पुस्तकों के नाम अवश्य लिखें और बताए कि क्या अग्रेजी में वे पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं? मेरे विचार से तो अग्रेजी में मनोवैज्ञानिको ने इस दिशा में कोई कार्य नहीं किया। सभव है जर्मन, फ्रेंच अथवा आस्ट्रियन मनोवैज्ञानिको ने फ्रॉयड के स्वप्न विज्ञान को आगे बढाया हो।

एक अन्य बात जो मैं जानने को उत्सुक हूं, किंतु आपसे पूछने में झिझकता हूं, क्योंकि यह व्यक्तिगत प्रश्न है। आपके मनोविज्ञान के अध्यापकों के नाम और आपने परीक्षा कहा से पास की जानना चाहता हू।

इस प्रश्न को पूछने का मेरा एक उद्देश्य है। जिस विषय में, विशेष रूप से शिक्षा मनोविज्ञान, आपकी रुचि है। उसमे विश्व के बहुत से स्त्री-पुरुषों की भी रुचि होगी। यदि आप किसी विश्वविद्यालय के नियमित विद्यार्थी (मेरा ख्याल है आपने मनोविज्ञान की शिक्षा किसी विश्वविद्यालय के नियमित विद्यार्थी के रूप में नही ली) इस विषय मे रुचि रखने वाले लोग, जो यूनिवर्सिटी में दाखिला नही ले सकते, वे आपके उदाहरण से लाभ उठाकर मनोविज्ञान विषय में पारंगत न हो जाए। 117879

डा जुंग, जिन्हे आप जूरिख में मिली थीं, के विषय में आपकी राय जानना चाहूगा। क्या पहले कभी उनसे मुलाकात हुई थी? क्या आप डा. जुंग की हाल ही में प्रकाशित पुस्तक या ब्रोशर के बारे में बता सकती हैं जो मनोविश्लेषण विषय से सबद्ध हो। फ्रॉयड के दमन के विचारों और मनोविश्लेषण के विचारों को उन्होंने अपने विचारों मे कितना विस्तार दिया है? पिछले दस वर्षों के उनके कार्यों से मैं पूर्णतः अनभिज्ञ हू।

आर्थर एवलॉन की पुस्तकों से तो मैं परिचित हूं, किंतु हैनरिख ज़िमर की कोई चीज नहीं पढी है। उनकी पुस्तकें कौन सी हैं और क्या उनका अंग्रेजी में अनुवाद हआ है? क्या एवलॉन की पुस्तकें आपने अंग्रेजी में पढी है?

आपने सी. जे. जुंग की पुस्तक 'सोल प्रॉब्लम्स ऑफ द प्रैजेंट टाइम' तथा 'रियेलिटी आफ द सोल' का जिक्र किया है। क्या ज्यूरिख के मनोविश्लेषक और ये एक ही व्यक्ति हैं। ये पुस्तकें पूर्णतः मनोवैज्ञानिक समस्याओं से संबद्ध हैं अथवा दर्शन से सबद्ध हैं? श्री जुंग कौन हैं और क्या करते हैं? मैं पता करूंगा कि कलकत्ता विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में ये दो पुस्तकें उपलब्ध हैं अथवा नहीं।

क्या आपकी रुचि शिक्षा मनोविज्ञान के साथ-साथ शिक्षा पद्धतियों में भी है? यदि है, तो मैं स्विटजरलैंड के कुछ व्यक्तियों के पते आपको दूंगा जिनसे आप अवश्य मिलें, वे लोग शिक्षा की नई पद्धतियों पर कार्य कर रहे हैं।

क्या आपने पिछले वर्ष जर्मन भाषा में छपी शिवट्जर की पुस्तक 'इडियन मिस्टीसिज्म

एंड एथिक्स' पढ़ी? आपको कैसी लगी?

क्या आपने प्रोफेसर हूवर का लिखा कुछ पढ़ा है? मेरे विचार से वे गोहिगन विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर हैं और ग्लूबेनसबर्ग से भी संबद्ध हैं। उनके विचारों में लोकहित बढ़ोतरी पर है अथवा गिरावट की ओर है?

लंबी चुप्पी के पश्चात काफी लंबा पत्र लिखा है। आशा है आप मेरा लेख पढ़ लेंगी। अनेकों प्रश्न पूछने के लिए कृपया क्षमा करें।

उम्मीद है ओलंपिक खेलों के कारण आप बर्लिन में बहुत व्यस्त रही होंगी।

श्री कुर्टी व आपको शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष च. बोस

श्रीमती किट्टी कुर्टी
बर्लिन

पुनश्च :- यदि मेरा वर्तमान पता आपके पास न हो तो मेरे स्थाई पते पर ही पत्र लिखें जो इस प्रकार है-1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता, वहां से डाक मुझ तक भिजवा दी जाएगी।

सु.चं.बोस

जार्ज डी. सिल्वा, उपाध्यक्ष, महाकोशल प्रोविंशियल कांग्रेस कमेटी को,

19 अगस्त, 1936

पिछला पत्र लिखने के बाद दार्जिलिंग के एक जीवाणु विज्ञानी ने मुझे एक रिपोर्ट और आटोवैक्सीन भेजे हैं जो उन्होंने थ्रोट स्वैब (गले की लार) से तैयार किए हैं। उन्होंने मुझे राय दी है कि मैं इसके आठ इंजैक्शन लगवाऊं। इसके अलावा उन्होंने कुछ अन्य दंडाणुओं की भी खोज की है जैसे-न्यूमो बैसिलिस, न्यूमोकोकस, स्ट्रैपोकोकस, माइक्रोकोकस, कैटरहेलिस, स्टैफिलोकोकस तथा कुछ डिफ्थीरियाइड बैसिली आदि। इन महाशय ने मुझे यह भी बताया है कि इनमें से कुछ बैसिली एक सामान्य व्यक्ति में विद्यमान होते हैं, अतः मुझे यह सोचना पड़ा कि ये एन्फ्लुएंजा के लक्षण हैं जो गले की इन्फैक्शन के कारण है। यदि यह सत्य है तो चिंता की कोई बात नहीं, वरना, मुझे फेफड़ों की जांच पर विचार करना पड़ता, क्योंकि शाम के समय हल्का-हल्का बुखार, हल्का कफ और वजन कम होना आदि उसी ओर संकेत करते हैं। किंतु अब मुझे कुछ आशा बंधी है।

फिलहाल मैंने एमेटीन के इंजैक्शन बंद कर के आटोवैक्सीन के कुछ अन्य इंजैक्शन लगवाने शुरू किए हैं। किंतु मुझे एमेटीन इंजैक्शनों का एक और कोर्स करना होगा, क्योंकि पहले कोर्स से मुझे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है। आंतों की परेशानी अभी भी जारी है।

कलकत्ता के एक मित्र को,

4 सितंबर, 1936

मेरा स्वास्थ्य अभी भी वैसा है जैसा तब था जब तुमने मुझे देखा था। गले की बीमारी तो ठीक नहीं हुई है बावजूद इसके कि आटोवैक्सीन के इंजैक्शन लगवाए। तुम्हारे बाद दार्जीलिंग का सिविलसर्जन मुझे देखने आया था। उसका कहना है कि गले की इफैक्शन ही बीमारी की जड है अत: और आटोवैक्सीन तैयार करना होगा। पेट दर्द व लिवर के आस-पास के दर्द के बारे में उनका मानना है कि यह विएना में कराए गए आपरेशन के बाद पैदा हुआ प्रभाव है। उसने एमीटीन इंजैक्शनों का एक और कोर्स करने की राय दी है। किसी माह मैं यह इलाज कराऊंगा और यदि फिर भी प्रगति नहीं हुई तो गंभीरता से इस पर विचार करना होगा।

संतोष कुमार सेन को,

सेंसर द्वारा पास
हस्ता/-
सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जीलिंग

सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस
दार्जीलिंग
5 सितबर 1936

प्रिय डा. सेन,

मेरे एक मित्र श्री गिरिजा प्रसन्ना सान्याल के लिए आपको कष्ट दे रहा हू। ये कलकत्ता हाईकोर्ट में वकील हैं और पुरानी व गंभीर...बीमारी (उनकी बीमारी की इससे ज्यादा व्याख्या मैं नहीं कर सकता) के इलाज के लिए विएना जा रहे हैं। ये मेरे बडे भाई सरत के सहपाठी और मित्र हैं। उनका इरादा 'कान्टे वरडे' जहाज से आने का है जो 10 सितबर को बबंई से रवाना होकर निश्चित स्थान (वेनिस या जेनेवा) पर 21 तारीख को पहुचेगा। अगले दिन उन्हें विएना पहुंच जाना चाहिए। वे वहां कुछ भारतीय चिकित्सको से राय लेना चाहते हैं कि इलाज हेतु किसे दिखाएं। इस विषय मे कोई राय देने मे मैं असमर्थ हू और विएना में अनुभवी मित्र नहीं हैं। उन्होंने प्रो वॉन नूरडैन के बारे मे सुन रखा है जो आहार विशेषज्ञ के रूप में अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं, किंतु मुझे नहीं पता कि वे जोडों के विशेषज्ञ हैं या नहीं। आप आसानी से पता कर सकते हैं कि श्री सान्याल को किससे सपर्क करना चाहिए।

मैंने उन्हें आपके पुराने घर का पता अल्सर स्ट्रासे तथा द्वारा अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन, दोनों ही दे दिए हैं और उन्हें कह दिया है कि वे आपको विएना पहुचने के समय की सही सूचना टेलिग्राम द्वारा या पत्र लिखकर सूचित करें। यदि उनका पत्र मिले तो ठीक है। वरना आप विएना स्थित लॉयड ट्रिस्टोनो के कार्यालय से पता कर

सकते हैं कि विएना के लिए अगली गाड़ी कब रवाना होगी। आप उन्हें स्टेशन पर मिल सकते हैं। मैंने उन्हें राय दी है कि यदि स्टेशन पर कोई नही मिलता तो वे होटल डी फ्रास में रुक सकते हैं। उनके वहा पहुचने पर आप भी वहां पहुच सकते हैं। यदि कान्ट वरडे में सीट उपलब्ध नहीं हुई तो वे अगले जहाज से रवाना होंगे।

आशा है आप पूर्ण स्वस्थ होंगे। आशा है उन्हें आप पूर्ण सहयोग देंगे। सभी मित्रों को मेरा यथायोग्य प्रणाम।

आपका अपना
सुभाष च. बोस

सेवा में,
डा एस के सेन
विएना।

जार्ज डा सिल्वा, उपाध्यक्ष, महाकोशल प्राविशियल काग्रेस कमेटी को,

द्वारा द सुपरिटेंडेंट ऑफ पुलिस
दार्जीलिंग
11 - सितबर, 1936

प्रिय डॉक्टर,

आपके दो पत्रों का उत्तर न दे पाने के लिए क्षमाप्रार्थी हूं। आपका 6 अगस्त का पत्र मुझे 11 अगस्त को और 16 अगस्त का पत्र 27 अगस्त को मिला।

पिछला पत्र लिखने के बाद मैंने ऑटोवेक्सीन का कोर्स पूरा कर लिया है। उनका कोई विशेष प्रभाव नही हुआ अत: और वैक्सीन तैयार करने होंगे। मुझे आशका है कि क्या ये इजैक्शन इंफैक्शन को जड से उखाड़ पाएंगे। 9 तारीख को सर नीलरत्न सरकार और दार्जिलिग के सिविलसर्जन ने सयुक्त रूप से मेरा परीक्षण किया। उन्होंने सरकार को अपनी रिपोर्ट भेजी है, पता नही वे किस नतीजे पर पहुचे हैं। जैसे ही मुझे पता चलेगा आपको सूचित करूगा, एक चिकित्सक के रूप में आपकी भी उसमें रुचि होगी।

आपने मेरे वजन का रिकार्ड मांगा है। जो इस प्रकार है- (1) अप्रैल-15, यरवदा जेल-174½ पाउड (2) जून मध्य में, कुर्सियाग-171 पाउंड (3) जुलाई के अत में कुर्सियांग-168 पाउड (4) 9 सितबर कुर्सियाग-164 पाउंड। 1932 में जब से मुझे बीमारी ने घेरा, उससे पहले, मेरा सामान्य वजन, उस समय के वजन से जब मुझे 1921 मे जनवरी माह मे सियोनी जेल में डाला गया, कहीं अधिक था। उस समय मेरा वजन 185 पाउड था।

अन्य कष्ट जो मैंने अपने पिछले पत्र में लिखे थे वे अभी भी हैं जैसे हल्का-हल्का बुखार, लिवर के आसपास मीठा-मीठा दर्द। इस दर्द का संबध खान-पान से नही है और उस तेज दर्द से भी अलग है, जो गाल-ब्लैडर में होता था और गॉल-ब्लैडर निकाल देने के बाद से गायब है। मैं एमीटीन इंजैक्शन का कोर्स कर रहा हूं और मेरी बाहें सुइयां चुभने से बेहद दर्द कर रही हैं। मरीज का दुर्भाग्य है कि आप चिकित्सकों के

हाथों यह कष्ट सहने के अलावा उसके पास दूसरा कोई रास्ता नही।

कुछ दिन मौसम बहुत साफ था किंतु अब फिर बरसात का, बेकार का मौसम शुरू हो गया है। आशा है इस वर्ष की मानसून की यह आखिरी झडी होंगी। फिर भी कुछ कहा नही जा सकता। देश के इस भाग में सितबर तक भी बरसात हो सकती है। आशा है आप सभी वहा पूर्णत· स्वस्थ हैं। शुभकामनाओं सहित।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष च बोस

डा. जार्ज डा सिल्वा
जबलपुर

अमर कृष्ण घोष को,

30 सितबर, 1936

प्रिय अमर बाबू,

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप भारतीय रिजर्व बैंक का पुनः चुनाव लड़ रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस बार आप सफल हो जाएंगे। मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें। आप समझ ही सकते हैं कि जिन परिस्थितियों में घिरा हूं, उनमें आपके किसी काम नही आ सकता और फिर शायद आपके चुनावकर्ताओं पर मेरा प्रभाव भी नहीं है। फिर भी आशा करता हू कि पिछले चुनाव के आपके सहयोगी इस चुनाव मे भी आपको सहयोग देंगे और आपको जिताने में सफल रहेंगे। एक बोर्ड के एक सदस्य के रूप में आप बहुत सा उपयोगी कार्य कर सकते हैं। मेरी शुभकामनाए आपके साथ हैं।

पिछले कुछ दिनों से मेरा स्वास्थ्य ठीक नही है। आशा है आप सभी स्वस्थ होंगे।

तुषार काति घोष को,

8 नवबर, 1936

प्रिय तुषार बाबू,

मुझे लग रहा था कि तुम्हारे पिछले पत्र का उत्तर मैंने दे दिया था और तुमने पत्र लिखना बन्द कर दिया है, किंतु, तुम्हारी फाईल देखने पर पता चला कि मैं गलत था, बहुत पहले मिले तुम्हारे पत्र का उत्तर नही दिया था। किंतु अब मैं उस गलती में सुधार कर रहा हू तुम्हें पत्र लिखकर।

दुर्गापूजा आई और चली गई और अब तुम पुनः अपने नीरस कार्य में व्यस्त हो गए होगे। एक कैदी की कोई छुट्टी नही होती।

कृपया मेरी ओर से विजयादशमी का प्यार और शुभकामनाएं स्वीकार करो और घर में भी सभी को मेरी शुभकामनाए देना। आप सब कैसे हैं?

अपने स्वास्थ्य के विषय में बताने को कुछ विशेष नहीं है सिवाय इसके कि वजन कुछ कम हुआ है। सियाटिका का दर्द पहले से ठीक है, अतः घूमने-फिरने लायक हू।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष च. बोस

सरत चन्द्र बोस को,

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस
दार्जिलिंग
4.12.36

प्रिय मेजदादा,

आपका 27 नवबर का पत्र मुझे 2 तारीख को मिला। बीच का जो पत्र आपको नही मिला वह दार्जिलिंग से समय पर भेजा गया था। होटल सिसिल, शिमला के पते पर भेजा था। शायद होटल वाले आपको देना भूल गए।

श्री कृपलानी ने भी ऐसा ही पत्र मुझे सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस, दार्जिलिंग के पते पर भेजा है। दिसम्बर को वह पत्र मिला, तुरंत उत्तर दे दिया है और अपना नाम वापस ले लिया है ताकि निर्विरोध चुनाव संभव हो सके। आशा है उन्हें समय पर पत्र मिल जाएगा।

पिछली बार जब पत्र लिखा था तब से अब तक मौसम में कुछ परिवर्तन है। पिछले 7-8 दिन से प्रातः दो तीन घंटे धूप निकलती है। यह ही काफी है। पुनः सियाटिका दर्द नही हुआ है। सभी सावधानिया बरत रहा हू। काफी सर्दी है किंतु यदि कुछ सूरज की गर्मी भी मिले तो बहुत अच्छा रहे।

उत्तरी कलकत्ता को कोई विकल्प खोजना पड़ेगा क्योंकि मैंने अपना निर्णय नही बदला है। मुझे बंगाल असेंबली का सदस्य बनाना व्यर्थ है जबकि में राज्य-कैदी हूं।

यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि श्रीमती फिलिप मिलर शीघ्र ही कलकत्ता आ रही हैं। यह बहुत अच्छा लगेगा कि वे मुझे मिलने यहां आए, किंतु उन्हें यहा आने में बहुत कठिनाई होगी। अतः आप उनका ध्यान रखें। यदि वे देश और भाषा को जानती तो बात और थी। यदि वे यहां आने को बहुत उत्सुक हों तो कृपया ध्यान रखें कि वे सप्ताहात यहां पर व्यतीत कर पाए। इस दशा में अमित और कोई एक लडकी उनके साथ होनी चाहिए। तभी वे यहा और दार्जिलिंग आने का लाभ ले पाएंगी। यदि यह विचार आपको ठीक लगे तो अमि व्यक्तिगत रूप में श्री ब्लेयर, अवर सचिव से मिलकर अनुमति ले सकता है। व्यक्तिगत रूप से मिलने से कार्य जल्दी और आसान हो जाएगा। इसके बिना मुझे आशंका है कि श्रीमती फिलिप को अत्यधिक कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

सामान्यतः मुलाकात का समय एक घंटा होता है। शेष समय वे कुर्सियांग मे क्या करेंगी और अपना समय कैसे व्यतीत करेंगी। इस विषय में गंभीरता से विचार करें और श्रीमती फ़िलिप मिलर को भी समझाए। आशा है आपके आतिथ्य में वे घर जैसा अनुभव करेंगी।

आशा है आप भी स्वस्थ होंगे। मेरा स्वास्थ्य पहले जैसा ही है कुछ पाउंड वजन और कम हुआ है।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष

एस.सी.बोस
कलकत्ता

यह पत्र गिद्धपहाड़, कुर्सियांग, जिला दार्जिलिंग के नजरबंद कैंप से लिखा था।

सीताराम सेक्सरिया को,

द्वारा डी.सी.एस.बी., सी.आई.डी.
14, लार्ड सिन्हा रोड
कलकत्ता
26.12.36

प्रिय सीताराम जी,

आपका 15 तारीख का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई, उसकी विषय-वस्तु की प्रशंसा करता हूं। आप जैसे मित्रों के प्यार के कारण ही मैं अपनी मुसीबतों से उबर पाया हू। आशका है कि अभी बहुत देर है, जब मैं एक आजाद व्यक्ति के रूप में आपसे मिल पाऊंगा। जो भी मेरे रास्ते में बाधाए आएगी मुझे उनका धैर्यपूर्वक सामना करना होगा। आप तो जानते ही हैं कि नजरबन्द कैदी को किन परिस्थितियों में मुलाकात की अनुमति दी जाती है। उन परिस्थितियों में मुलाकात में न तो मित्रों की दिलचस्पी रहती है और न मेरी। आशा है आप मेरी इस बात से सहमत होंगे। फिर मुझे मुलाकात के लिए कष्ट क्यो उठा रहे हैं।

समाचार-पत्रों से आपको खबर मिल ही गई होगी कि आजकल कलकत्ता मेडिकल कालेज अस्पताल में मेरा इलाज चल रहा है।

सभी मित्रों व आपको प्रेमपूर्ण नमस्कार।

मैं,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष च बोस

सीताराम सेक्सरिया
कलकत्ता

फिटो कुर्टी को,

कलकत्ता मेडिकल कालेज अस्पताल
5 जनवरी 1937

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

कुछ दिन पहले आपका लंबा पत्र मिला, पत्र के उत्तर मे हुए विलब के लिए क्षमा चाहता हू। आपने जो मनोविज्ञान की पुस्तकों की सूची भेजी वह भी मिली। इस बीच मुझे कलकत्ता अस्पताल में ले आया गया है, क्योकि दार्जिलिग के समीप जिस स्थान पर मुझ नजरबद किया गया था वहा मेरा स्वास्थ्य, बिगड रहा था। दिसवर मध्य से मैं यही पर हू। नही जानता अभी कितने दिन और यहा रहूगा, फिर भी अधिक दिन यहा रुकना नही होगा। इसलिए यदि आप मुझे पत्र लिखें तो कृपया मेरे घर के पत पर लिखें- 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता, मैं उस समय जहा कही भी होउगा वे वहीं मुझ पत्र भिजवा देंगे।

जानकर हर्ष हुआ कि आप तातरा पर्वतों की यात्रा पर गई थीं। चित्रो स आभास हो रहा है कि वहा दृश्य बहुत मनोरम रहे होंगे।

यहा आने के बाद से कुछ स्वस्थ महसूस कर रहा हू। चिकित्सक पूर्ण निरीक्षण कर रहे हैं, पता लगान के लिए कि मुझे क्या कष्ट है। मुख्य कष्ट गला खराब होने का है अर्थात् सेप्टिक टासिल्स।

मनोवैज्ञानिक डा जुग से मिलने आप कब जा रही हैं। यदि जिनेवा जाए तो डा श्रीमती पी गहीब को भी मिलने का प्रयत्न करें। वे ओडमवाल्ड जर्मनी में एक स्कूल चलाते थ। जर्मनी छोडकर अब उन्होंने जिनेवा के निकट स्कूल का नियत्रण अपने हाथ मे ले लिया है। उस स्कूल का नाम है-मोनीर इस्टीट्यूट जो वेरसोइक्स मे हैं जहा जिनेवा से टैक्सी द्वारा आधे घटे में पहुचा जा सकता है। आप श्रीमती गहीब व उनके स्कूल को देखकर प्रसन्न होंगी। मैं भी वहां उनसे मिला था और मुझे बहुत अच्छा लगा।

अपनी अस्वस्थता के कारण पिछले कई दिनों से कुछ विशेष अध्ययन नहीं कर पाया हू। कितु फ्रायड की पुस्तक इटरप्रेटेशन आफ ड्रीम पढ़ रहा हू और अपने स्वप्नो का विश्लेषण भी करने का प्रयास कर रहा हू। क्या विएना में आप वृद्ध फ्रॉयड से मिली? यदि मिली तो आपको वे कैसे लगे और आपने उनसे क्या बातचीत की?

अब यही समाप्त करता हू। श्री कुर्टी व आपको शुभकामनाए।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष च बोस

श्रीमती किट्टी कुर्टी
बर्लिन

रवींद्रनाथ टैगोर को,

द्वारा डी सी एस.बी. (कलकत्ता)
14, लार्ड सिन्हा रोड
कलकत्ता
30.1.37

माननीय,

आपकी सचयिता पाकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। आपने मुझे याद किया यह मेरे लिए अपार हर्ष का विषय है। आपके हाथों आशीर्वाद पाकर स्वय पर गर्व अनुभव कर रहा हू।

आप जानते ही हैं कि आपके स्वास्थ्य के विषय में हम सभी लोग सदैव चिंतित रहते हैं। कृपया मेरा सादर प्रणाम स्वीकार करें।

आपका आज्ञाकारी
सुभाष चद्र बोस

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता

नाओमी सी. वैटर को,

सेंसर द्वारा पास
इलीजिबल (अस्पष्ट)
4.2 37
कृते डी.सी एस.बी.

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
3 फरवरी, 1937

प्रिय श्रीमती वैटर,

2 जनवरी का आपका लंबा पत्र 28 तारीख को प्राप्त हुआ, प्रसन्नता हुई। पहले भी आपको लिखा था कि मुझे कलकत्ता लाया गया है। पिछले दिसबर के मध्य से मैं यहां मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हूं। पता नहीं कब तक यहा रहूंगा । इसलिए यदि आप मुझे पत्र लिखें तो कृपया मेरे घर के पते पर ही लिखें जो इस प्रकार है–1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। वहा से मेरी डाक मुझ तक पहुंचा दी जाएगी। अभी कह नही सकता कि यहां से कब और कहा ले जाया जाऊगा।

जब से यहां आया हू लगातार उपचार और परीक्षण चल रहा है। गले और जिगर

में कष्ट है, अतः उसका इलाज चल रहा है। आंखें भी कुछ कष्ट देने लगी हैं, कल जांच करवाने जाऊंगा। भारत लौटने के बाद से 10 किलो वज़न कम हुआ है । डाक्टरों की राय है कि फेफडों में कोई कष्ट नहीं है। अतः मैं स्वयं को समझाता हूं कि मैं दुबला हो रहा हू जैसा कि यूरोप में फैशन है।

शेष ऐसा कुछ नहीं जिसमें आपकी दिलचस्पी हो। यहां मैं अपने रिश्तेदारों से मिल सका हूं, जो मुझे मिलने विशेषरूप से मेरी माताजी, दार्जिलिंग तक जा नहीं सकते। चूंकि मेरी माता चल-फिर सकने में असमर्थ हैं । इसलिए सरकार ने सप्ताह में दो बार उन्हें मिलने की मुझे अनुमति दी है। यद्यपि पुलिस सरक्षण में आता-जाता हू।

आपकी पुरानी परेशानी व बीमारी को जानकर चिंता हुई। यह तो अच्छा है कि विएना में इस वर्ष अधिक ठड नहीं पड़ी, और मुझे आशा है कि वसत ऋतु प्रारभ होते ही आप बेहतर अनुभव करने लगेंगी। आपके स्वास्थ्य के लिए मेरी शुभकामना स्वीकार करें।

इससे पहले कि भूल जाऊं, एक प्रश्न पूछ लूं? कुछ समय पूर्व भारतीय समाचार-पत्रों में समाचार छपा था कि कुछ माह पूर्व चांसलर स्कूसिंग ने मरिया जेल में चुपचाप विवाह कर लिया है। किसी समाचार एजेंसी की खबर नही थी इसलिए कह नहीं सकते कि वह कोरी गप ही थी या नहीं। आजकल यूरोप में लोगों के बारे में, उन लोगों के बारे में जो लोगों की नजर में महत्त्वपूर्ण हैं, के बारे में बहुत कुछ व्यर्थ कहा और लिखा जा रहा है।

आस्ट्रिया में सैलानियों के आगमन से बढ़ी भीड़भाड़ से आस्ट्रिया रेलवे को तथा आस्ट्रियन सरकार को लाभ ही होगा। यह एक अच्छा शौक है, काश! हमारे भारतवासियों में भी ऐसा शौक पैदा हो पाता।

मैं जानना चाहूंगा कि आजकल डा. वैटर कौन सी पुस्तक लिखने में व्यस्त हैं। कब तक प्रकाशित होने की आशा है।

विएना के सबध में आपने जो बुकलेट भेजी है उसके लिए धन्यवाद! दरअसल मुझे दो बुकलेट प्राप्त हुई है-एक में केवल चित्र है और दूसरी में चित्र तथा कैलेंडर है। सेंसरवालों ने मुझे कवर नही भेजा इसलिए मैं यह नहीं समझ पाया हू कि ये बुकलैट मुझे किसने भेजी है। मेरा विचार है कि पहली बुकलेट आपने भेजी है।

कृपया अपने स्वास्थ्य के अन्य समाचार भी दें। आशा है डा. वैटर पूर्ण स्वस्थ हैं, आपके पुत्र व दामाद भी स्वस्थ होंगे। सभी को यथायोग्य ।

मैं,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष च. बोस

श्रीमती एन. सी. वैटर
विएना

सुनील मोहन घोष मौलिक को,
सेंसर द्वारा पारित
हस्ताक्षर, अस्पष्ट

द्वारा डी. सी. एस. बी. (कलकत्ता)
14, लार्ड सिन्हा रोड
कलकत्ता
22.2.37

प्रिय सुनील,

कुछ समय पूर्व तुम्हारे तीन पत्र मिले थे, लिखने को कुछ विशेष नहीं था अत: उत्तर नही दिया। सब लोग कैसे हैं?

आशा है तुम शहर छोड़कर ग्रामीण बन चुके हो, यद्यपि पंचथुपी को गांव नहीं कह सकते। वहां स्वास्थ्य कैसा है? कलकत्ता में तो शायद चिकनपॉक्स आदि फैला था।

पिछले दो माह कलकत्ता मेडिकल कालेज अस्पताल में था। यहा आने के बाद से पेट दर्द में सुधार हुआ है और गले की दशा भी पहले से बेहतर है। अन्य लक्षण अभी विद्यमान है यानी वजन कम होना और बुखार रहना आदि। देखते हैं क्या होता है। पता नही कितने दिन और यहा रहूगा।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चन्द्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक
पचथुपी, मुर्शिदाबाद

किट्टी कुर्टी को,

कलकत्ता
17 मार्च, 1937

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

30 जनवरी का आपका पत्र 3 मार्च को मिला, पत्र व इलाज के सबंध में दिए गए सुझावों के लिए धन्यवाद। ज्यूरिख के बर्शर बैनर के बारे में मैंने भी सुना है। उनकी पद्धति यूरोपवासियों के लिए ठीक है जो लोग मास व मदिरा का सेवन करने के आदी हैं, मेरे जैसे व्यक्तियों के लिए नहीं जो मीट कभी-कभार (प्राय: न के बराबर) खाते हैं और मदिरा पीते ही नहीं। फलों, सलाद आदि के विषय में आपके विचारों से मैं सहमत हू। उसी प्रकार का भोजन ले भी रहा हूं। शेष बातों के लिए मुझे तब तक इतजार करना होगा जब तक कि अपनी इच्छानुसार भोजन करने को स्वतत्र नही हो जाता।

हां, ज्यूरिख में मेरे कुछ भले मित्र हैं। वे प्राकृतिक चिकित्सा तथा शाकाहारी भोजन में विश्वास करते हैं तथा जीवन के प्रति जिनकी निष्पक्ष दृष्टि है। वासराडॉर्फ में उनकी अपनी कालोनी है जो ज्यूरिख से ट्रेन यात्रा द्वारा 20 मिनट की दूरी पर है। कृपया श्री वर्नर ज़िम्मरमन से सपर्क करें और उन्हें मेरा नमस्कार दें। उनका पता भेज रहा हू। आशा है वे अभी वहीं होंगे।

श्री वर्नर ज़िम्मरमन
विस्काफ्टरिंग गैनासनशैफ्ट ज्यूरिख, पोस्टबैग 36
हाफटबहनोफ ज्यूरिख
(टेली-एफ. 3521)

यदि आप ज्यूरिख जाएं और डा. जुग से मिले तो उनके मनोविज्ञान पर किए कार्य तथा उनके बारे में अपनी राय से मुझे भी अवगत कराएं। क्या रोला की पुस्तक 'द एन्चान्टेड सोल' का अंग्रेजी अनुवाद हुआ है?

आजकल आप हस्तलेख विज्ञान पढ रही हैं तो मेरा विश्लेषण क्यों नही करतीं?

कृपया फ्रायड व उनके परिवार के संबंध में तथा अन्य व्यक्तियों, जिनसे आप मिले, के विषय में मुझे अवश्य लिखें।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अब आप चलने-फिरने लायक हो गई हैं। आप उत्तरी अमरीका क्यों नही जाती, इससे यूरोपीय वातावरण से परिर्वतन भी होगा। आखिरकार नया विश्व पुराने (यूरोप) से पृथक है।

मैं समझ सकता हू कि अब आप कस्बे के जीवन से ऊब चुकी हैं, विशेषरूप से बर्लिन जैसी जगह में। इसलिए कुछ सप्ताह ग्रामीण क्षेत्र में जाना सुखद होगा। जब तक यह पत्र बर्लिन पहुचेगा, आप शायद स्विटजरलैंड में होंगी, किंतु मुझे आशा है कि यह पत्र आप तक वहा पहुंचा दिया जाएगा।

मैं अभी कलकत्ता अस्पताल में हूं, किंतु शीघ्र ही कही और स्थानांतरित कर दिया जाऊगा-कह नहीं सकता कहा ।

स्वास्थ्य पूर्ववत है। श्री कुर्टी को मेरा नमस्कार व शुभकामनाए।

कविताओं के लिए धन्यवाद।

कृपया मुझे स्थाई पते पर पत्र लिखें-

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चन्द्र बोस

श्रीमती किट्टी कुर्टी
बर्लिन,

नाओमी सी. वैटर,

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
5 अप्रैल, 1937

प्रिय श्रीमती वैटर,

आपके 17 और 22 मार्च के पत्र मुझे एयरमेल से प्राप्त हुए। 17 मार्च को मेरी अचानक रिहाई के बाद से लोगों ने मुझे घेर रखा है और मुझे पत्राचार करने का समय नही मिल पाया। इसलिए पहले पत्र नहीं लिख पाया, क्षमा चाहता हूं। एयरमेल से कुछ पक्तिया लिख रहा हू ताकि आप जान पाए कि आपके पत्र मुझे मिल गए और प्राय: मैं आपके विषय मे सोचता रहता हूं।

आपके द्वारा श्रीमती अस्कनासी का समाचार पाकर आश्चर्य हुआ। यह जानकर हैरानी हुई कि यहूदी अब रूस को यहूदी विरोधी मान रहे हैं।

आपके बधाई सदेश के लिए धन्यवाद। जिस दिन आपने लिखना प्रारभ किया-17 मार्च –उसी दिन मुझे आजाद कर दिया गया। सप्ताह पूर्व मैंने अपनी आजादी से सबंधित समाचारों की कटिंग्स तथा कलकत्ता म्यूनिसिपल गजट भिजवाया था। क्या कलकत्ता म्यूनिसिपल गजट आपको आजकल मिल रहा है।

एक अन्य अग्रेजी के भारतीय समाचार-पत्र की कटिंग भेज रहा हू जिसमे चांसलर श्चूसिग का समाचार छपा था।

चिकित्सकों ने मुझे केवल एक जनसभा में जाने की अनुमति दी है। कलकत्ता के लोग कल खुले स्थान पर मेरे सम्मान के आयोजन की तैयारियां जोर-शोर से कर रहे हैं। उसके पश्चात मैं कलकत्ता छोड दूगा। सिविक रिसेप्शन (म्यूनिसिपल) को तब तक के लिए स्थगित कर दिया गया है जब तक मैं कुछ माह बाद पुनः कलकत्ता नही लौटता। हार्दिक शुभकानाए व सादर प्रणाम ।

सदैव आपका शुभाकांक्षी
सुभाष च बोस

पुनश्चः- इस सप्ताह की प्रेस कटिंग्स भेजूगा। वैसे हर प्रकार स्वतत्र हू लेकिन मेरा पत्रचार अभी भी पुलिस द्वारा सेंसर किया जा रहा है।

सुभाष चन्द्र बोस

सीता धर्मवीर को,

लाहौर
9.5.37

प्रिय सीता,

आशा है उक्त संबोधन से नाराज नहीं होंगी। मुझे पता चला है कि आजकल आप बड़ी हस्ती बन गई हैं-पूर्ण डाक्टर, और कुछ अस्पताल आदि चला रही हैं। इससे मुझे घबराहट हो रही है।

खैर ! मैंने यह पत्र तुम्हें यह बताने के लिए लिखा है कि यहा सब तुम्हें बेहद याद करते हैं। लीला के बारे में (साड़ी वाली लीला, फ्रॉक वाली नहीं) प्राय: समाचार मिलते रहते हैं, किंतु तुम्हारा कोई समाचार नहीं मिलता। शायद इसी कमी को पूरा करने के लिए लीला सप्ताहांत हमारे साथ व्यतीत करने आई और हमें इस कृपा के लिए लोगों का धन्यवाद करना चाहिए। अधिक की अपेक्षा हमें नहीं रखनी चाहिए क्योंकि लीला भी तुम्हारे चरणचिन्हों पर चल रही है और घर पर रहकर, खरीददारी आदि करने के बजाय उसके पास करने को बहुत से महत्वपूर्ण कार्य हैं। जब तक मैं स्वतंत्र नहीं हो जाता और अपनी इच्छानुसार कहीं आ-जा नहीं सकता तब तक मेरी संवेदनाएं भी घर में रहने वाले लोगों के साथ हैं।

यहीं समाप्त करूंगा और तुम्हें ढेरों प्यार। शीघ्र ही हम पहाड़ों की यात्रा पर जाएंगे और तुम्हें धूप, गर्मी व धूल की दया पर छोड़ जाएंगे। यदि तुम वहां आओ तो तुम्हारा स्वागत है। यदि नहीं आ पाओगी तो तुम्हारी कमी खलेगी। शेष फिर।

तुम्हारा अपना
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च:- यहां लोगों में भ्रांति थी कि मुझे तुम्हारा और लीला का साड़ी पहनना पसंद है अथवा नहीं। इस संदर्भ में विचारों में मतभेद है। तुम क्या सोचती हो। डॉक्टर साड़ी या फ्रॉक किसके पक्ष में है।

डा. सुश्री सीता धर्मवीर
लखनऊ

ई. वुड्स को,

लाहौर
11.5 37

प्रिय श्रीमती वुड्स,

कुछ अपरिहार्य कारणों से भारत लौटने के बाद आपको पत्र नहीं लिख पाया। मेरे समाचार पाने की आपकी उत्सुकता से मन को भला लगा। दो माह तक जेल में रहा और उसके बाद दार्जिलिंग के पास पहाड़ी स्थान में अपने भाई के घर मुझे नजरबंद रखा

गया। पिछले दिसंबर में मुझे कलकत्ता अस्पताल में उपचार के लिए लाया गया। तीन माह बाद 17 मार्च को मुझे रिहा कर दिया गया। उसके बाद कई सप्ताह कलकत्ता में रहा और अब उत्तर-पश्चिम में पर्वतों की यात्रा पर जा रहा हूं। मेरा स्वास्थ्य सतोषजनक नही है और इसे सुधरने में कुछ माह लगेंगे। अगले कुछ सप्ताह तक मेरा पता होगा–

द्वारा डा एन. आर धर्मवीर
डलहौजी
पजाब, भारत

पिछले वर्ष कुछ सप्ताह तक मुझे कुछ आयरिश समाचार-पत्र प्राप्त होते रहे। सेंसर द्वारा पास किए जाते थे। फिर अचानक मिलने बद हो गए। आपकी पुत्री एलीन और डा. डे के विवाह की सूचना मिली। यद्यपि बहुत देर हो चुकी फिर भी मैं वर-वधु को बधाई देना चाहूगा और उनके सुख-समृद्धि से भरपूर पारिवारिक जीवन की कामना करता हू। आशा है श्रीमती डे आजकल अपने पति के साथ इंग्लैंड मे होगी।

मैंने अपने सभी समाचार दे दिए हैं अब आपकी बारी है। भारत के विषय में अन्य कुछ लिखने को शेष नहीं है, भारतीय समाचार-पत्रों में पढती ही होगी, आशा है पत्र आपको मिल रहे होंगे। पिछले चुनाव में कांग्रेस पार्टी की शक्ति का आभास मिला। सविधान की तोडो और राज्य करो नीति के बावजूद कांग्रेस पार्टी को 11 में से 6 राज्यो मे पूर्ण बहुत प्राप्त हुआ और शेष राज्यों में वह शक्तिशाली विपक्ष के रूप मे प्रकट हुआ है। पूर्ण बहुमत प्राप्त राज्यों में भी पार्टी ने सरकार बनाने से मना कर दिया है और शर्त रखी है कि जब तक उसके मंत्रियों को पूर्ण स्वतत्रता प्रदान नहीं की जाएगी वे सरकार का गठन नही करेंगे। ऐसा आश्वासन अभी प्राप्त नहीं हुआ है । सविधान का संघ का हिस्सा अभी लागू नही किया गया है केवल राज्यों का भाग लागू हो गया है।

लीग के क्या समाचार हैं? कृपया कुछ आयरिश समाचार-पत्रों, जो आप समझती हों उपयोगी होंगे, की प्रति भिजवाए और नया आयरिश संविधान भिजवाने का भी प्रयास करें।

सभी मित्रों को मेरा नमस्कार व स्नेह,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष च. बोस

वी. लेस्नी को,

द्वारा डा एन. आर. धर्मवीर
डलहौजी, पजाब
20 मई 1937

प्रिय प्रोफेसर,

दो महीने पूर्व मेरी अचानक रिहाई के बाद से ही मैं आपको पत्र लिखने की सोच रहा था, किंतु पूरे समय अत्यधिक व्यस्त रहा। रिहा होने के बाद कलकत्ता में श्री मजूमदार

से भेंट हुई थी, आपकी नमस्ते उन तक पहुंचा दी थी।

आजकल मैं उत्तर-पश्चिम में समुद्र तल से 6700 फीट (2000 मीटर) की ऊंचाई पर पर्वतीय स्थल पर हूं। कुछ दिन यहीं रहने का विचार है, सामान्य क्रिया-कलापों को शुरू करने से पूर्व पहले की तरह स्वस्थ होना चाहता हूं।

यह सुनकर प्रसन्नता हुई कि आप यूनिवर्सिटी के दर्शन विभाग के डीन चुने गए हैं। इस अवसर पर मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करें।

श्रीमती लेस्नी व आपको शुभकामनाएं। इधर की ओर कब आ रहे हैं? आशा है आप पूर्ण स्वस्थ हैं। कृपया सलग्न पत्र श्री नाबियार तक पहुंचा दे।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

प्रो डा. लेस्नी
प्राहा

सीता धर्मवीर को,

डलहौज़ी
22.5.37

प्रिय सीता

तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई विशेष रूप से तुमने मुझे जो संबोधन किया। मैं दीदी से विचार-विमर्श कर रहा था कि क्या 'मामा' जो अस्पष्ट था-बंगाली भाषा है या पजाबी भाषा है ? अत· निर्णय नहीं हो पाया। शायद तुम-अस्पष्ट –कुछ रोशनी डाल सको।

शायद तुम्हें सैंडी की वास्तविक कहानी का पता नहीं। दीदी को वह टोकरी उठाए चलते देखने में बहुत आनन्द आ रहा था जिसमें से बार-बार बिल्ली सिर उचकाकर झांकती थी। शिष्टतावश मैंने टोकरी उठाने का आग्रह तो किया, किंतु वह संभव नहीं था, क्योंकि दीदी स्वयं ही अपनी पालतू बिल्ली को बडी कठिनता से संभाल पा रही थी। एक महिला बोझ उठाए चले और मैं साथ-साथ खाली हाथ चलूं, यह प्रदर्शन करने की अपेक्षा मैंने दीदी को लीला के सरक्षण में छोड अपने डिब्बे में जाना बेहतर समझा। उस समय लग रहा था कि एक बार सुरक्षित डिब्बे में पहुचने के पश्चात सभी तकलीफों का अत हो जाएगा। यह नहीं पता था कि मुश्किलें तो अब शुरू होंगी। जैसे ही गाडी चली, उसके शोर से बिल्ली बुरी तरह घबरा गई और उछलने लगी। यदि उसे अकेला छोड दिया होता तो वह निश्चित रूप से डिब्बे के बाहर कूद जाती। किंतु ऐसा नही था (पता नहीं उस समय मैं दुखी होता या नहीं) हमें तो कोई कठिनाई नहीं हुई मुझे और डाक्टर को, क्योंकि हम तो खूब डटकर सोए। किंतु दीदी को सारी रात बिल्ली को पकडे रहना पड़ा। जब किसी स्टेशन पर गाडी रुकती तो बिल्ली शात होती। पठानकोट पहुचने तक

बिल्ली ने उनकी साड़ी व बदन पर अपने कई निशान छोड दिए थे। उनकी साडी का तो पता नही, किंतु उनकी बाहों पर खरोंचों के निशान मिले जो हमने यहां पहुंच कर देखे, किंतु हम कुछ भी करने में असमर्थ थे। बहरहाल इस किस्से को यही रोकता हू और कुछ अन्य बातों पर आता हू।

आशा है तुम पूर्णरूप से सुरक्षित हो जैसा कि तुमने संकेत भी किया है। प्रसिद्ध हस्ती होने के कारण, अन्य लोगों को ही आकलन करना चाहिए।

मुझे डलहौज़ी बहुत पसद आया और इससे मुझे लाभ भी होगा। पहले मे बेहतर महसूस करने लगा हूं।

दिलीप के जो चित्र तुम्हे भेजे वे पाडिचेरी मे खीचे थे।

तुम्हे आवश्यकता नही... अस्पताल चलाने की।

अस्पतालों में लबे समय तक रहने के कारण यह समझ चुका हू कि हाउस सर्जन अथवा हाउस फिजिशियन ही अस्पताल का कार्य सभालते हैं।

आज यही समाप्त करता हू क्योंकि डाकिया बाहर डाक लिए इतज़ार कर रहा है, वह लेने जा रहा हू। प्रेम सहित।

तुम्हारा अपना
सुभाष

नाओमी सी. वैटर को,

द्वारा डा एन आर धर्मवीर
डलहौजी
पजाब
27 5 37

प्रिय श्रीमती वैटर,

मेरी धृष्टता है कि मैंने बहुत दिन से आपको लंबा पत्र नही लिखा जबकि आप मुझे कई बार लिख चुकी हैं। सच्चाई यह है कि रिहाई के बाद से मैं मित्रों को मिलने में अत्यधिक व्यस्त रहा। बहुत से पत्रो का ढेर लग गया है और कभी-कभी जल्दबाजी में कुछ मित्रों को कुछ पक्तिया लिख देता हूं। शीघ्र ही सब व्यवस्थित होने की आशा है, तभी पत्रों का उत्तर ठीक प्रकार दे पाऊगा।

जैसा कि आप जानती ही हैं कि 17 मार्च को मैं रिहा हो गया था। यूरोप में किसी मित्र को केबल से सूचना नहीं दी, क्योंकि समाचार एजेंसी विदेशी समाचार-पत्रों को खबर देगी और एन अच्छा मित्र होने के नाते विएना के सभी मित्रों को सूचित कर देगा। उन्होंने यही किया और आपको समाचार की विश्वसनीयता पर शक करने की आवश्यकता नही। कलकत्ता म्यूनिसिपल गज़ट द्वारा यह समाचार आपको एक माह बाद

मिल पाता।

कलकत्ता में एक माह से अधिक रहा, एक तो आराम करने की दृष्टि से और दूसरे अपने रिश्तेदारों व मित्रों के संपर्क में रहने की दृष्टि से। फिर अप्रैल के मध्य में इलाहाबाद के लिए रवाना हुआ जहां महात्मा गाधी से मिला और पार्टी की बैठक में भाग लिया। कुछ दिन बाद लाहौर (उत्तर-पश्चिम) चला गया, जहा लगभग 10 दिन रहा। फिर 12 मई को यहां पहुचा हूं। डलहौज़ी लाहौर के उत्तर में, हिमालय पर्वत शृंखला पर, 2000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है । यहां कुछ दिन मित्रों के साथ रहना चाहता हू जब तक पूर्णत: ठीक नही हो जाता।

17 मार्च के पत्र में आपने जो लिखा, पढकर अच्छा लगा, विशेष रूप से आपको आशा थी कि मैं शीघ्र ही रिहा कर दिया जाऊगा। जब आप यह पत्र लिख रही थी तब आपको मालूम भी नही था कि ठीक उसी दिन मैं रिहा हो जाऊंगा। मेरी रिहाई अप्रत्याशित थी, क्योंकि मैं और मेरे लोग रिहाई की आशा से थक चुके थे। किंतु मैंने अपनी माताजी को बता दिया था कि या तो मार्च में रिहा हो जाऊंगा वरना फिर कम से कम छ: माह और लगेंगे।

इससे पहले कि मैं भूल जाऊ, आपको बता दू कि डा बी.सी रॉय, जो मेरे मित्र भी हैं और कलकत्ता के भूतपूर्व मेयर रह चुके हैं, कलकत्ता के सुप्रसिद्ध चिकित्सक हैं, जून (अगले माह) में किसी समय विएना आने वाले हैं। मैं उन्हें आपके बारे में तथा डा. वैटर के बारे में बताना भूल गया। किंतु मैं चाहता हूं कि वे आपसे अवश्य मिलें, बशर्ते कि आप उन दिनों शहर से बाहर न हों। क्या आप उन्हें गैरोला के पते पर लिख देंगी कि वे आपसे सपर्क करें। गैरोला का पता है-के. एन. गैरोला, होटल डी फ्रांस । मैं चाहता हू कि डा. रॉय विएना की वास्तविकता को देखें और इसके लिए सही लोगों के संपर्क में आना आवश्यक है । संदेह है कि यहूदी डाक्टर उनको गुमराह न करें, क्योंकि उन्हें पहले सचेत नही कर पाया।

श्रीमती अस्कासी के समाचार पाने को उत्सुक हूं। क्या वे वाकई सयुक्त राज्य जाने की इच्छुक हैं। तब उनके पति के व्यापार का क्या होगा? उनके क्लब का क्या होगा? क्या उनकी अनुपस्थिति में भी वह चल रहा है? यदि वे विएना पहुंच चुकी हैं तो आपको बहुत-सी दिलचस्प बातें सुनने को मिलेंगी।

हाल ही में मैंने ब्रीफाल्ट का यूरोप का अमरीकी (या शायद अंग्रेजी) संस्करण पढा है। मुझे बहुत पसद आया। अब समझ मे आया कि डा. वैटर क्यों उसका अनुवाद कर रहे थे। कुछ पैसेज को, प्राचीन काल की भांति विवादास्पद मानकर रेखांकित किया जा सकता है, किंतु मेरे विचार में समय और रुचि में तेज़ी से परिवर्तन आ रहा है। कुछ दिन पूर्व एल्डास हक्सले का उपन्यास 'आईलेस इन गाज़ा' भी पढ़ा। उसमें भी कुछ विवादास्पद पैरे हैं, किंतु इग्लैंड में उसकी अप्रत्याशित बिक्री को देखकर लगता है कि अंग्रेज समाज भी अब उतना रूढिवादी और लज्जाशील नही रहा है जितना पहले था।

पिछले कई दिन से श्रीमती हार्ग्रेव का कोई समाचार नहीं मिला है, मेरे विचार से अंतिम पत्र मेरी ओर से ही लिखा गया था। क्या आप उन्हें मेरी याद दिला देंगी और

उनके स्वास्थ की सूचना मुझे देंगी। शायद वे ध्यानयोग में लीन रहती हैं।

सी.एम.जी. को लिखा आपका पत्र मुख्य रूप से छापा गया, आपने देख ही लिया होगा। जब भी आपके पास समय हो, आप किसी भी विषय पर जो म्युनिसिपल या लोकहित मे हो, लेख लिखकर समाचार-पत्रों को भेज सकती हैं। वे उसे प्रसन्नतापूर्वक छापेंगे।

मेरी रिहाई के बाद भी मेरा स्वास्थ्य बहुत संतोषजनक नही है, किंतु आशा है शीघ्र ही प्रगति होगी। पर्वतों के मध्य यह एक शांत और सुंदर स्थान है। मकान के आगन से दूर-दूर फैले समतल स्थान व नदिया दिखाई देती हैं। दूसरी ओर पर्वत शृखला, जगह-जगह बर्फ से आच्छादित दिखाई देती है। यद्यपि यहा मुझ पर किसी प्रकार का प्रतिबध नही है। फिर भी मेरी गतिविधियो पर नजर रखी जा रही है और मेरी डाक भी चुपचाप खोलकर देखी जा रही है। जब उन्हें कहता हू तो वे मना कर देते हैं, किंतु हम सभी इसे जानते हैं। प्रायः निरीक्षण के पश्चात सभी चीजे़ मुझे सौंप दी जाती है।

जब भी आप अंग्रेज़ी मे भारतीय समाचार-पत्रों मे कुछ प्रकाशित करवाना चाहे, मुझे बताए, मैं पूरी व्यवस्था कर दूगा।

यह पत्र एयरमेल द्वारा प्रेषित करना चाहता हूं ताकि पत्र का उत्तर देने मे हुए विलब की प्रतिपूर्ति कर सकूं। अलग से लाहौर से प्रकाशित समाचार-पत्र की कटिंग भेज रहा हू तथा दो चित्र जो 12 मई को डलहौज़ी पहुंचने के पश्चात खीचे गए हैं। पता नही आप मुझे बगाली वेशभूषा में पहचान पाएगी अथवा नहीं। पहले की अपेक्षा कुछ दुबला भी हो गया हूं।

पत्र समाप्त करने से पूर्व आपकी भावनाओं का, जो पत्रों में व्यक्त हुई हैं, धन्यवाद करना चाहता हू। धन्यवाद करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मेरा धन्यवाद स्वीकार करे और डा. वैटर को शुभकामनाए दें।

आप आजकल अपना समय कैसे व्यतीत करती हैं? क्या आपको कोई और भारतीय साप्ताहिक अखबार या पत्रिका भिजवाऊ?

सदैव आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

स्तोष कुमार सेन को *

डलहौजी, पजाब
31.5 37

प्रिय डा सेन,

तीन-चार दिन पूर्व आपका 18 अप्रैल का पत्र मिला। 12 तारीख को मैं यहा पहुचा हू और कुछ माह यहीं रहना चाहता हू। देखते हैं यहा स्वास्थ्य कैसा रहता है। प्रारभ में यहा पहुचकर बहुत अच्छा लगा, कुछ समय बाद गले की परेशानी उभर आई और

* मूल बगला से अनूदित

वापिस लौटने की इच्छा होने लगी। मेरी रिहाई से पूर्व धर्मवीर मुझे यहां आने का आमत्रण दे रहे थे, फिर अचानक रिहाई के पश्चात तो इन्होंने बहुत बल दिया। सब सोच-विचार कर मैंने आमंत्रण स्वीकार किया। वे मेरी पूरी देखभाल कर रहे हैं। इनसे मेरा पुराना परिचय है, तथा श्रीमती धर्मवीर को मैं अपनी बहन मानता हूं।

मेरे स्वास्थ्य की दृष्टि से यूरोप यात्रा ठीक रहती। किंतु कई कारणों से वह सभव नही। पहली बात विदेश जाना बहुत खर्चीला है, दूसरे, घर से इतने दिन दूर रहा हू कि स्वतत्र व्यक्ति के तौर पर अपनी इच्छा से अपने देश व लोगों से दूर नहीं जाना चाहता। देश में रहकर सबसे सपर्क बनाए रखना सरल है। बेगस्टीन में स्नान के दो उपचारो से मुझे बहुत लाभ पहुचा था, अतः मुझे विश्वास है कि यदि मैं लगातार एक माह वह उपचार और करवा पाता तो मेरा स्वास्थ्य अवश्य सुधर गया होता। पहले मैं सोचता था कि स्नानोपचार महज प्रचार मात्र है, किंतु बैगस्टीन में स्वय उपचार कराने के उपरांत इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि वे बहुत लाभदायक हू। रेडियोएक्टिव स्नान करने पर ऐसा अनुभव होता है जैसे कोई 'टॉनिक' ले रहा है। खैर, अब इस विषय मे कुछ भी सोचने का कोई लाभ नही।

विएना समाज की उन्नति की कोई बड़ी आशा नहीं है। गैरोला समाज को अपने नियत्रण में रखेगा। जहा भले लोगों का स्थाई अस्तित्व नहीं वहां नया कुछ सभव नही है।

आपके शोधग्रंथ की सूचना से बहुत प्रसन्नता हुई। आप भारत के प्रसिद्ध फ़िजीसियन के पास उसे भेज सकते हैं (दो प्रतिया पत्रिकाओं के लिए) विशेषरूप से उन क्षेत्रों में जहा आप प्रैक्टिस करना चाहते हैं।

मैनचेस्टर गार्जियन को लिखा पत्र मिला। यदि समय-समय पर आप ऐसे लेख या क्लिपिंग्स भेज सकें तो प्रसन्नता होगी।

विएना में और सब कैसा है? कुमारी शैंकल से समय-समय पर समाचार मिलते रहते हैं। 'मास्टर' का कुछ अता-पता नहीं शायद वह बर्लिन में हों। गैरोला प्रायः पत्र लिखते रहते हैं और श्रीमती मूलर हाल ही में भारत आई थी। विशेष आज्ञा प्राप्त कर वे मुझसे कलकत्ता अस्पताल मिलने आईं। श्रीमती वैटर ने मुझे पिछले सप्ताह लिखा था कि आजकल यहूदियों में बहुत बेचैनी है। विएना में रह रहे हमारे कुछ यहूदी मित्र अमेरिका जाना चाह रहे हैं। सुश्री विस का क्या इरादा है? उन्होंने फैलेस्टीन जाने के विषय में मेरी राय जाननी चाही थी। उसके बाद से वहा कौन सी विध्वंसक घटनाए घटी। मेरे विचार से वर्तमान समय में और निकट भविष्य में भी, मध्य यूरोप में, यहूदियों की स्थिति बहुत अच्छी रहने वाली नही है।

आजकल आप इग्लैंड में हैं अतः उपाधि लेने से पूर्व लौटने का विचार न करें। व्यक्तिगत रूप से मैं उपाधि के पीछे भागने के खिलाफ रहा हूं। किंतु क्योंकि आपका दिल्ली में रहने का विचार है और आजकल इग्लैंड में है इसलिए आपको एडनबर्ग या लदन से डिग्री की आवश्यकता है ही। यह बात अपना स्थान बनाने की दृष्टि से है,

क्योंकि दुनिया में बहुत से दुकानदार हैं। मुझे आशा है भविष्य में विशेषज्ञों के लिए सुअवसर पैदा होंगे।

क्या दिल्ली के आधू बाबू (रासबिहारी सेन) आपके रिश्तेदार हैं?

कल श्रीमती धर्मवीर बता रही थी कि इंग्लैंड में आपको किसी भारतीय चिकित्सक के स्थान पर तीन-चार माह प्रैक्टिस करने का आमंत्रण मिला है। प्रस्ताव तो अच्छा है, किंतु वहां की प्रैक्टिस का भारत में कोई विशेष महत्व नहीं है। हा आर्थिक दृष्टि से यह उपयोगी सिद्ध हो सकता है। किंतु यदि पैसे की अधिक आवश्यकता नहीं हो तो अधिक ज्ञान प्राप्त करने में समय बिताना ही श्रेयस्कर है। यह सही है कि वहा-प्रैक्टिस करने से आपको कुछ धन तो मिलेगा। किंतु क्या उपयोगी अनुभव पा सकेंगे? फिर भी आप बेहतर जानते हैं, क्योंकि सब ओर जा चुके हैं और विएना, लदन, एडीनबरा जैसी जगहों पर घूम चुके हैं। व्यक्तिगत अनुभव से जान सकते हैं कि उच्च शिक्षा कहा पा सकते हैं।

एक बात और जो बहुत झिझक के बाद कह रहा हूं। श्रीमती धर्मवीर को तुम्हारी सीता से मैत्री की जानकारी है, किंतु डा को शायद नही मालूम। यदि मेरी ओर से कुछ सहायता चाहो तो कृपया बेझिझक होकर कहो। शेष तुम्हारी भविष्य की योजना पर निर्भर करता है।

आशा है वहा आप ठीक-ठाक हैं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

किट्टी कुर्टी को,

द्वारा डा एन.आर. धर्मवीर
डलहौजी
पजाब
3.6.37

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

खेद है एक लबे समय से आपको पत्र नहीं लिख पाया और आपके कई महीने पूर्व प्राप्त पत्रों का उत्तर भी नही दे पाया। अब तक आपको मार्च मे मेरी रिहाई की सूचना मिल ही चुकी होगी । मेरा स्वास्थ्य ठीक न होने की वजह से मैं यहा आराम करने और मौसम परिवर्तन के लिए आया हू । कुछ माह अभी यही रहूगा । यह भारत के उत्तर-पश्चिम में, समुद्र तल से 2000 मीटर की ऊचाई पर स्थित, एक पर्वतीय स्थल है ।

श्री कुर्टी व स्वय के बारे में कृपया विस्तार से लिखें । भविष्य की क्या योजना है ? प्राग कब जा रही हैं ? वहा की कोई योजना है ? क्या डा जुग से मिलने ज्यूरिख गईं ?

क्या आपको पूर्ण विश्वास है कि एनेट ही आर.आर. की पत्नी है?

फ्रॉयड परिवार के बारे मे अपने विचारो से अवगत कराएं। आपकी ओर से एक लबे पत्र की इतजार में हू। कुछ अधिक लिखने को शेष नहीं है।

कविताओं के लिए धन्यवाद-मैं उन्हें शब्दकोष की सहायता से समझने का प्रयास कर रहा हूं।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

राम मनोहर लोहिया को,

द्वारा डा. एन. आर. धर्मवीर
डलहौज़ी, पजाब,
27.6.37

प्रिय डा लोहिया,

बहुत दिनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था विशेष रूप से एक विषय के संबध में-फ्रेंच इडिया के बंदियों के बारे में, जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटिश इंडिया में बंदी बनाकर रखा हुआ है। अखबार वाले लिखते हैं कि आपका फ्रेंच-इडिया तथा फ्रेंचलीग आफ ह्यूमन राइट्स से पत्राचार चल रहा है। मैं वहां से प्राप्त उत्तर जानने को उत्सुक हू।

आपकी फ़ाइल लौट पलट कर देखने पर पाया कि एक पत्र मे आपने मेरे दर्जन के लगभग चित्र मांगे हैं। मेरे पास अच्छे चित्र नही हैं। एक चित्र संभव है, किंतु विदेश में प्रकाशित होने लायक नही है। बहरहाल, अलग से भिजवा रहा हू। यदि आपको लगेगा कि वह चल सकता है तो कृपया मुझे सूचित करें मैं उसकी प्रतिया बनवाकर आपको भिजवा दूगा।

मेरे विचार से यह आवश्यक है कि पूरे भारत में राजनैतिक बंदियों की रिहाई के लिए जबर्दस्त अभियान छेडा जाय। यह समय उपयुक्त है। आपकी इस विषय में क्या राय है?

आशा है आप पूर्ण स्वस्थ होंगे। पहले की अपेक्षा अब मैं स्वस्थ हूं यद्यपि प्रगति बहुत धीमी है।

शुभकामनाओं सहित,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डा. राम मनोहर लोहिया
इलाहाबाद,

सुधीर कुमार बासु को,

द्वारा डा एन आर धर्मवीर
डलहौजी,
पजाब
29.6 37

प्रिय सुधीर बाबू,

रिहाई के तुरंत बाद आपका टेलिग्राम पाकर प्रसन्नता हुई। उत्तर देने मे देर हुई, कृपया क्षमा करे।

आप अब कैसे हैं? क्या अभी उसी घर में रह रहे हैं? क्या अर्जुन अभी आपके साथ है और आपके लिए चाय, लूनी तथा फाउलकरी तैयार करता है?

आपका बेटा कैसा है? अब तो छुपन-छुपाई नहीं खेलता होगा।

वहा सभी मित्रो को मेरी नमस्ते कहिएगा। क्या अभी भी आप मिलानी क्लब की देखरेख करते हैं? विवेकानद समिति और महिला समिति का क्या हुआ? शायद मिलानी के विषय में कुछ भ्रम मे हू। क्या सिनेमा का नाम मिलानी नही है?

यहां आने के बाद से कुछ बेहतर महसूस कर रहा हू यद्यपि जितनी तीव्रता से स्वस्थ होना चाहता हू उतनी प्रगति नहीं है।

कलकत्ता में सतोष बाबू से भेंट हुई।

आशा है वहा सभी स्वस्थ हैं।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

सुनील मोहन घोष मौलिक को *

द्वारा डा. एन. आर धर्मवीर
डलहौजी,
पजाब
2 7 37

प्रिय सुनील,

क्या मैंने तुम्हारे 19 मार्च के पत्र का उत्तर दे दिया था? मुझे ठीक से याद नहीं। खैर। हार्दिक स्नेह प्रेषित करता हू। सभी ग्रामवासियों को मेरा प्यार व शुभकामनाए दे देना। पत्र के उत्तर में इस अत्यधिक विलब के लिए क्षमा चाहता हूं।

आप सब कैसे हैं? मेरे विचारानुसार आजकल तुम कलकत्ता क्षेत्र की ओर कम ही आ पाते हो। पढते रहने की आदत सबसे बढ़िया है वरना मानसिक पटल सिकुड जाएगा और दृष्टि भी क्षुद्र हो जाएगी।

---

* मूल बगला से अनूदित

यहां आने के बाद से मेरे स्वास्थ्य में प्रगति हुई है। वहां सभी को मेरी शुभकामनाएं।

सभी को यथायोग्य,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चन्द्र बोस

सीता धर्मवीर को,

डलहौजी
7 7.37

प्रिय सीता,

बहुत दिनों से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। क्षमा चाहता हूं। आलस्यवश यह देरी हुई।

आमों के लिए धन्यवाद। उनके साथ पूर्ण न्याय कर रहे हैं। डा साहब तो खराब होने वाले आमों को पसंद करते हैं। अतः तब तक इंतज़ार करते हैं। जब तक कि वे गलने न लगें। कभी-कभी सोचता हू कि सड़ने-गलने वाले आमों का चिकित्सा में कहीं कोई विशेष महत्व तो नहीं है। डा साहब का कहना है कि शक के बिना मर किसी चीज को बर्बाद नहीं कर देना चाहिए। वे कहते हैं कि जब गला-सड़ा मीट या मछली गंभीर रोग पैदा कर सकती हैं तो, फल ज़्यादा से ज़्यादा डायरिया आदि...

खाने की मेज पर एक और परेशानी होती है। डा. साहब हमें खरबूजा खाने पर मजबूर करते हैं। दीदी को चुपचाप खाना पड़ता है, और वे कर भी क्या सकती हैं। किंतु मीरा बहन और मैं बच जाते हैं। हमारा मानना है कि खरबूजा पेट के लिए भारी है। कभी-कभी जब मेरी प्लेट में रख दिया जाता है तो मैं गुस्से में खा लेता हूं। फल के विषय में डा. 'खरबूजा' के शब्द अंतिम शब्द है।

साखले जाति के लोग अधिक नहीं देखे। कल पहली बार मैंने देखा। दीदी ने डा. मैंडल को दोपहर चाय के लिए आमंत्रित किया है। कल शायद डा मैंडल चली जाएंगी। पंजफुला रोड अब काफी साफ़ है किंतु तुम्हारी इस राय से मैं सहमत हू कि शाम की सैर के लिए थांडराइट रोड सबसे अच्छी है। सूर्यास्त के समय हम लोग प्राय: वहीं होते हैं। मैं उसे प्रेमियों की सड़क कहता हू। कई अंग्रेज़ जोड़े उस सड़क पर नजर आते हैं।

बच्चों के विषय में जो तुमने लिखा पढ़कर बहुत आनंद आया। मेरा भी विचार यही है कि विश्व में भारतीयों ने बहुत से बच्चों को जन्म दिया पर किसलिए? केवल मरने के लिए क्योंकि कम ही बच्चे युवावस्था तक पहुंचते हैं। यह बात हमें जनसंख्या नियंत्रण के प्रश्न पर विचार करने को मजबूर करती है, जो भारत के लिए अति आवश्यक है। महात्मा गांधी का मानना है कि आत्मनियंत्रण सबसे अच्छा है, किंतु क्या लोग उनकी बात मानेंगे। इसके बावजूद डा. मैंडल का कहना है कि वे भारत के उपयोगी संत हैं।

अब यही समाप्त करता हू क्योंकि कुछ मिलने वाले लोग आ गए हैं। आशा है तुम पूर्णतः स्वस्थ हो। मेरा स्वास्थ भी ठीक है । यहां परिवार मे सब ठीक हैं, मौसम भी, प्यार सहित ।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष,

किट्टी कुर्टी को,

डलहौजी,
पजाब, भारत
10 7 37

प्रिय श्रीमती कुर्टी,

20 जून का आपका कृपा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई, पत्रोत्तर में विलब के लिए क्षमा चाहता हू। रिहाई के पश्चात स्वास्थ्य सुधारने की दृष्टि से मैं यहां आ गया। भारत के उत्तर-पश्चिम में लगभग 2000 मीटर की ऊंचाई पर यह एक शात पर्वतीय स्थल है। यहा से उत्तरी हिमालय की बर्फ से आच्छादित पहाड़ियां दीखती हैं। स्वास्थ्य बेहतर है किंतु पूर्णतः नहीं। दो माह अभी और यहा रहूगा फिर वापस अपने कार्य पर लौटूंगा। अब भारत छोड़कर जाना सभव नहीं है, क्योंकि यहीं पर बहुत सा कार्य करने को है।

आपने अपने पिछले पत्र में लिखा था कि आप मां बनने वाली हैं। आशा है अब तक आप मां बन चुकी होंगी और मां और बच्चे दोनों का स्वास्थ्य ठीक होगा।

मनोवैज्ञानिकों के विषय में आपने जो लिखा, बहुत दिलचस्प था। यह सत्य है कि यूरोप का वातावरण स्वार्थ से परिपूर्ण है। आत्मिक शांति नहीं है और प्रायः लोग तंत्रिकावसाद से ग्रस्त हैं। इसका एकमात्र इलाज आध्यात्मिक और नैतिक जीवन है। आध्यात्मिक और नैतिक जीवन का मूल निःस्वार्थ भावना है। यूरोप में निःस्वार्थ भावना मिलना कठिन है। आप अमरीका कब जा रही हैं। आशा है वहा रह कर भी आप पत्राचार जारी रखेंगी।

यहां भारत में हमारा कार्य धीमी गति से चल रहा है। एक कठिन कार्य हमारे समक्ष है, किंतु हम बहुत आशावान हैं। हमारी पार्टी की स्थिति पिछले साल की अपेक्षा काफी सुदृढ है। अब पार्टी की बहुत इज्जत है और प्रभाव भी है। किंतु हमें पता है कि जो हम चाहते हैं, इंग्लैंड हमें वह आसानी से देने वाला नही है।

श्री कुर्टी को तथा आपको शुभकामनाएं।

मैं,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सीता धर्मवीर को,

डलहौज़ी
31.7.37

प्रिय सीता,

20 तारीख का तुम्हारा पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। तब से दोनों ओर बहुत सी महत्वपूर्ण घटनाएं घटी हैं। पिछले कई दिनों से मैं डॉ साहब से लीला और तुम्हारी पढ़ाई के भविष्य की योजना पर बात कर रहा हू । यह जोर दे रहा हू कि बिना समय बर्बाद किए तुम लोगों को आगे पढाई के लिए विदेश जाना चाहिए। सिद्धात रूप में वे मान गए हैं कि भारत में काम समाप्त करने के बाद तुम लोग विदेश जा सकती हो। तुम्हारी कलकत्ता नियुक्ति के बाद एक बार फिर नए सिरे से चर्चा हुई। डॉ. साहब ने तब भी विचार व्यक्त किए कि कलकत्ता जाने की अपेक्षा आप लोग-तुम और लीला-इग्लैंड जा सकती हो। तब मैंने कहा कि इसका अर्थ है तुम लोगों को सितबर मे यहा से रवाना होना होगा। डॉ. साहब ने माना कि उन्हें इसमें कोई आपत्ति नही है। तब यह निर्णय हुआ कि डॉ. साहब को तत्काल तुम्हें पत्र लिख देना चाहिए। डॉ. साहब आज लाहौर गए हैं और इस विषय मे आज या कल लीला से बात करेंगे।

अब स्थिति यह है-तुम अब (सितबर में) कलकत्ता जाने के बजाय इंग्लैंड जा सकती हो, यदि लीला मान गई तो वह भी तुम्हारे साथ जाएगी। अब तुम्हें स्वयं निर्णय लेना है कि तुम्हें क्या करना है। यदि मैं तुम्हारी जगह होता तो प्रसन्नता से इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता।

डॉ साहब सोमवार प्रातः वापस लौट आएंगे। दीदी भी जितनी जल्दी हो सके, विदेश जाने के पक्ष में हैं जितना मैं उन्हें समझ पाया हूं।

हमारा पत्र मिलते ही, यानी कि सोमवार प्रातः तुम डॉ. साहब को अपना निर्णय वायरलेस पर क्यों नही भेज देती ?

आलुओं के प्रति पूर्ण मैत्रीभाव निभाता हूं, प्रायः खाता रहता हू, यद्यपि डॉ. साहब इसके पक्ष में नहीं हैं। उनसे प्रायः झगडा हो जाता है क्योंकि उनकी राय है कि मुझे अधिक सूप नही पीना चाहिए, जो हानिकारक है। पिछले कुछ दिन से खरबूजा कम मिल रहा है, भगवान का लाख-लाख शुक्रिया।

जून-जुलाई के बावजूद यहां का मौसम अच्छा है। देखते हैं अगस्त में कैसा रहता है। कभी-कभी खालीपन के कारण बेचैनी अनुभव करता हूं।

आज लखनऊ में विद्यार्थी सम्मेलन हो रहा है, मैंने केवल शुभकामनाओं का तार भेज दिया है।

सूर्यास्त बहुत बढ़िया होता है, किंतु कभी-कभी बहुत बादल होते हैं। सोचता हू कब रगीन चित्र ठीक प्रकार डेवलप हो पाएगा।

संतोष के पत्र प्रायः आते रहते है। प्यार सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

संतोष कुमार बासु को,

डलहौजी,
पंजाब,
5.8.37.

प्रिय संतोष बाबू,

क्या आप इस विषय मे कुछ सहायता कर सकते है? निगम के अनुभवों के आधार पर आप बता सकते हैं कि इस विषय में आगे क्या किया जाए। यहा से परामर्श देना मेरे लिए कठिन है। कृपया इस पत्र के लेखक से संपर्क कर दोनों मिलकर विचार कर लें। पहले से बेहतर हू। आशा है आप भी स्वस्थ होंगे।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कामर्शियल गजट
(स्थापना-1920)
वीकली जरनल आफ कामर्स, इडस्ट्री एड फाइनेंस

2 रॉयल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता
7 जुलाई, 1937

प्रिय बोस,

कामर्शियल गजट की एक प्रति तथा 'टेल आफ हाईटेंशन आल्टरनेटिंग करंट' लेख की प्रति आवश्यक कार्रवाई हेतु भिजवा रहा हूं।

आप तो जानते ही हैं कि पिछले तीन वर्ष के विरोध के बावजूद भी सरकार ने कलकत्ता विद्युत निगम लि की दरों पर एक जाच समिति बैठा दी है। इस विरोध के पक्ष में कामर्शियल गजट का रुख अधिक लाभप्रद नहीं है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जाच समिति जब लोगों से प्रमाण एकत्रित कर रही थी तब लोक कल्याण चाहने वाले कुछ सगठनों ने अपने प्रमाण समिति के सम्मुख पेश किए, कुछ लिखित रूप में और कुछ मौखिक रूप से। कलकत्ता विद्युत निगम की ओर से कार्रवाई देखने और पक्ष में बोलने वाले थे श्री डब्ल्यू डब्ल्यू. के. पेज, बार-एट लॉ, समिति के अध्यक्ष थे सर नलिनी रजन चटर्जी, हाईकोर्ट के पूर्व जज।

समिति की बैठक के समापन से पूर्व, आपके भाई श्री शरत चंद्र बोस ने मेरे आग्रह पर, अपने अन्य आवश्यक कार्य छोड़कर, लोगों की ओर से उनका पक्ष प्रस्तुत किया, निर्णय फिलहाल उपभोक्ताओं के पक्ष में हुआ है, अन्यथा इसके विपरीत ही होना था। यद्यपि उन्हें विद्युत की तकनीकी जानकारिया नहीं थीं फिर भी उन्होंने 14 घंटे में सब कुछ जान-समझ लिया और अल्पावधि में ही समिति के समक्ष अपना पक्ष प्रस्तुत करने को तत्पर हो गए।

यह बात तो मैं वैसे ही बता रहा था, वास्तव में जो सुझाव आपको देना चाहता हूं वह केस सगत और न्यायपूर्ण है तो, मेरे विचार में आपका मानना भी यही है, इसलिए चूंकि आप कलकत्ता विद्युत निगम लि. की कार्यप्रणाली से पूर्व परिचित हैं, तो आप बी पी. सी सी के अधिकारियों से आग्रह करें कि आगामी 29 जुलाई को विधानसभा की बैठक में वे इस मुद्दे को उठाएं।

आपके स्वास्थ्य को देखते हुए यह पत्र यद्यपि बेकार है, किंतु मुझे पूर्ण विश्वास है कि जनहित के मामलों में बात करते समय आपकी थकान आड़े नहीं आती। इन परिस्थितियों में क्या किया जाना चाहिए? क्या आप करेंगे? पत्र के साथ मैं समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया अपना पक्ष भेज रहा हूं । इस आग्रह के साथ कि कृपया 9, 10 और 18वें मुद्दे पर अवश्य कार्यवाही करें।

इस लंबे पत्र के लिए आपसे क्षमा चाहता हू तथा आपके स्वास्थ्य की पूर्ण कामना करता हूं।

आपका शुभाकांक्षी
के. घोष

श्री सुभाष चंद्र बोस
द्वारा डॉ. धर्मवीर
डलहौज़ी (पंजाब)

राम मनोहर लोहिया को,

डलहौज़ी
5.8.37

प्रिय डॉ लोहिया,

आपके पांच जुलाई के पत्र स. एफ. डी. 9/264 का उत्तर समय पर नहीं दे पाया, इसके लिए क्षमा चाहता हूं।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने फ्रेंच-इंडियन बंदियों के लिए कार्यवाई शुरू कर दी है। अंतिम सूचना से आभास होता है कि कालीचरण घोष को किसी हद तक स्वतंत्रता मिल गई है। पक्के तौर पर नहीं जानता कि क्या पूर्णरूप से वे स्वतत्र हुए हैं या नहीं।

मेरी इच्छा है कि पूरे भारत में राजनैतिक बंदियों की रिहाई के लिए प्रयत्न किए

जाने चाहिए। आपने लिखा है कि अध्यक्ष श्री नेहरू से आपकी बात हुई। काश!' वे हमारा नेतृत्व करते।

आपकी इच्छानुसार कुछ चित्र अलग मे भेज रहा हू। आशा है आप सभी स्वस्थ होगे। मैं पहले से बेहतर हू ।

सादर।

आपका आज्ञाकारी
डॉ राम महोहर लोहिया, सुभाष चद्र बोस

अनिल चंद्र गांगुली को *

डलहौजी
(पजाब)
8.8 37

प्रिय अनिल,

आपका प्यार भरा पत्र मिलने के बाद से तुम्हे पत्र लिखने की सोच रहा हू। किंतु आलस्य आडे आता रहा। इन दिनो निष्क्रिय ही नहीं रहा बल्कि जब व्यक्ति का स्वास्थ्य साथ नही देता तो वह केवल अति आवश्यक कार्य जैसे-तैसे निपटा लेता है, अत: पत्र बहुत दिन तक मेरे इंतजार मे ऐसे ही पडे रहे।

आपकी शारीरिक परेशानियो को जानकर कष्ट हुआ। युवावस्था में तो आप बहुत स्वस्थ थे, प्रसन्न और क्रियाशील। आपसे बहुत सी आशाएं थीं। किंतु अभी तक आपने कुछ नही किया। किंतु अभी भी समय है।

ईश्वर में मुझे बहुत विश्वास है । प्रार्थना में भी विश्वास रखता हू यद्यपि स्वय नहीं करता हूं। मानसिक (आप इसे आध्यात्मिक भी कह सकते है) श्रम जो मैं कर रहा हू वह दो प्रकार का है–जो मेरे मूड पर निर्भर करता है। इनमें से एक है–आत्म निरीक्षण। शातिपूर्वक बैठकर मैं सोचता रहता हू कि मैंने मानवीय दुर्बलताओ, अर्थात लोभ, लालच, भय और गुस्से पर, नियत्रण किया है या नहीं। इस क्रिया से मुझे बहुत शाति मिलती है और इसी के द्वारा मैंने अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त की है। दूसरी क्रिया है–आत्मसमर्पण। मैं चुपचाप बैठकर सोचता हू–उस दिव्यशक्ति के विषय में जो कुछ बर्गन्स की 'अलान-वाइटल' जैसी है और अपने अस्तित्व को उसमे मिला देने का प्रयास करता हू। आत्मसमर्पण के पश्चात मुझे आभास होता है कि वह दिव्यशक्ति मुझमें भी है और मैं उस दिव्यशक्ति का एक उपकरण मात्र हू। भौतिक वस्तु की कभी मैंने कोई चाह नही की। वे तो क्षुद्र और व्यर्थ की चीजें हैं। इसके विपरीत मैं अपने मन को समझाता रहता हू कि आत्मसमर्पण द्वारा तुम भी शक्तिशाली बनोगे।

जीवन एक अतहीन द्वद्व है, जब तक आप सब मनोविकारों पर विजय नही प्राप्त

---

* मूल बगला से अनूदित

कर लेते तब तक शांति नही मिल सकती। धीरे-धीरे संघर्ष में आनंद आने लगता है और जब किसी इच्छा (विचार) पर विजय मिल जाती है तो बहुत संतोष और आत्म विश्वास पैदा हो जाता है।

दर्शन में मेरी रुचि अभी भी है, किंतु आजकल अधिक समय नहीं निकाल पाता। मनोविज्ञान से अभी संपर्क बनाए हुए हूं। आजकल राजनीति पढ़ रहा हूं-यानि कि राजनीतिक दर्शन और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति। सब जनता पढ़ने की कोशिश भी करता हू, क्योंकि लोक-सेवा करने वाले व्यक्ति को सभी समस्याओं का ज्ञान होना चाहिए। यह कमी खलती है और विशेषज्ञता के रास्ते में बाधक है। इसमें कोई कुछ कर नहीं सकता, क्योंकि जीवन बहुत छोटा है और व्यक्ति की क्षमता संकुचित है। मैंने अनुभव किया है कि अनिश्चय और ख़तरे से भरी जिंदगी जीने का अपना सुख है, यदि यह जीवन किसी कारण के प्रति समर्पित किया गया है। वह आपके सभी दुखों व कष्टों की प्रतिपूर्ति कर देता है और जीवन को रोमांटिक बना देता है। सबसे अधिक कष्ट मुझे व्यक्ति के व्यवहार से पहुंचता है, प्राय: अपने मित्रों से, जिनसे कुछ अच्छे व्यवहार की आशा है।

तुम्हारी पुस्तकें पाकर प्रसन्नता हुई। खेद है उन्हें अभी तक पढ़ नही पाया हूं। केवल एक दृष्टि डाली है। मेरी शुभकामनाएं सदैव तुम्हारे साथ है। क्या आजकल उच्च न्यायालय में प्रैक्टिस कर रहे हो? क्या शादी की?

अक्सर पत्र लिखते रहा करो। प्राय: तुम्हारे और तुम्हारे भाइयों के विषय में विचार करता रहता हू। तुम्हारे प्रति कष्ट होता है कि तुम देश के प्रति बहुत अधिक कार्य नही कर पाए। किंतु अभी भी समय है और संघर्ष अभी समाप्त नही हुआ है। मेरे अनुभव सदैव आपके साथ है आपको यह बताने के लिए कि उपयोगी कार्य क्या है, कुछ भी छिपाने के लिए मेरे पास नहीं है। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहे।

ढेरो प्यार सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च : एक बात तुम्हें बताना भूल गया। मानसिक व्यायाम से मुझे बहुत लाभ पहुंचा है, आत्म विश्लेषण। जब भी मुझे समय मिलता है मैं अपने मन में झांककर देखने का प्रयास करता हू और तलाश करने का प्रयास करता हूं कि क्या मुझमे कोई कमजोरी है? इस प्रकार मुझे बहुत सी व्यर्थ की चीजें मिलीं जिन्हें मैंने जड से उखाड़ने का प्रयत्न किया। कमी को ढूंढ लेने का अभिप्राय है आपने आधी विजय पा ली। गलत और अनुपयोगी बातों का पता लगा लेने पर आत्म-निरीक्षण सरल हो जाता है और आप मानवीय कमजोरियों को आसानी से दबा सकते हैं। मानसिक परेशानियों का मुख्य कारण यही है कि हम लोग यही नहीं जान पाते कि हमारा मन क्या है। मन ऐसी अजीब चीज है कि वह स्वय को ही धोखा देता है। अत: निरंतर आत्म-विश्लेषण आवश्यक है मानसिक व्यायाम की दृष्टि से। असामान्य मनोविज्ञान और साइकोपैथोलोजी ने विश्लेषण में मेरी बहुत सहायता की है।

सुभाष चंद्र बोस

क्षितीश प्रसाद चट्टोपाध्याय, १

डलहौजी
(पजाब)
9 8 37

प्रिय क्षितीश,

20 जून का आपका पत्र समय पर मिला। बहुत उत्सुकता से उसे पढा। जानकर प्रसन्नता हुई कि वर्तमान कार्य में तुम्हें शाति और सतोष प्राप्त हुआ है। आखिरकार हम सब लोग विभिन्न प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में सतुष्टि प्राप्त करने की दृष्टि से ही कार्य करते हैं। यदि व्यक्ति को वह मिल जाए-तो और क्या कहना।

खेद है कि दिलीप नही आए। मुझे आशा थी कि हम लोग इन शात पर्वतो मे कुछ अतरग बातचीत कर पाएगे। किंतु पिछले 8 वर्ष से वे बहुत शातिपूर्ण वातावरण मे रह रहे थे और फिर कलकत्ता में आकर्षण भी तो है। यदि कलकत्ता मे उन्हें सतोष प्राप्त होता है तो मुझे कुछ नही कहना। आशा करता हू कि शीघ्र ही वे पाडिचेरी मे वापस लौट आएगे। मुझे उनका वहां व्यस्त हो जाने का विचार भला नही लगा।

मुझे तो आगे बढ़ना ही है । रास्ता लबा और नीरस है। कभी-कभी चिंतित महसूस करता हू। घोर निराशा के बादल घेर लेते हैं किंतु कभी-कभी आशा की बिजली भी चमक उठती है, किंतु उससे क्या होगा? यात्रा में बहुत आनन्द है। अभी तक घर के बिना घूमने वाला बजारा हू। शाति। शाति! अभी तक मुझे शाति और सतोष नही मिला है केवल रोशनी मुझे बहकाती नही है, बल्कि अधकार भी आकर्षित करता है। केवल उज्ज्वल भविष्य ही पुकारता नहीं, बल्कि अनिश्चित उदासी भी अपनी ओर खीचती है। यदि रोशनी तक पहुचने से पहले गिर गया तो क्या? यात्राओं में सुख है-लोगो से मिलने मे उसी प्रकार गिरने में, भी आनंद है।

तुम्हारा शुभेच्छु
सुभाष

कलकत्ता निगम के एक कार्यकर्ता को,

9 अगस्त 1937

आपने मेरी सहायता पाने की इच्छा व्यक्त की है। यदि मैं कुछ कर पाऊगा तो अवश्य करूगा। किंतु मुझे अपनी असमर्थता का भान है। आपकी धारणा मेरे प्रभाव के प्रति कुछ गलत है। लोगों पर मेरे प्रभाव का अर्थ यह नही कि निगम की चारदीवारी के अदर भी मेरी पहुच है। यदि ऐसा होता तो पिछले दो वर्षों में जो कुछ हुआ वह नही होता। 1924 मे देशबधु के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्त्ता निगम में इसलिए सम्मिलित नही हुए थे कि उच्चाधिकारियों के वेतनमान बढ़ाए जाए और बेचारे कर्मचारियो को वर्तमान वेतनमान में ही छोड़ दिया जाए। पिछले कुछ वर्षों में भाई-भतीजावाद इतना बढा है कि, उस सस्था के विषय में सोचकर, जिसमें कांग्रेस कार्यकर्ता हों या अपना प्रभाव रखते हो, मेरी गर्दन शर्म से झुक जाती है। पिछले कुछ माह पूर्व चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर ने

जब अवकाश हेतु आवेदन किया तो उसे असाधारण तवज्जो दी गई। यह एक ऐसा ही उदाहरण है। बेचारे कर्मचारियों द्वारा अपने वेतनमान की बढ़ोत्तरी की मांग के विरोध में जो तर्क दिए जा रहे हैं वे अधिकारी वर्ग को लाभ पहुंचाने के लिए हैं। मनुष्य के रूप में इस न्यायपूर्ण बात के लिए और कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप मे मेरी आत्मा इसका विरोध करती है। किंतु फिलहाल मैं असमर्थ हूं।

जब से मैं रिहा हुआ हूं तभी से मैं निगम की आंतरिक कार्य पद्धति के प्रति चिंतित हूं। जो अफवाहें और समाचार मुझ तक पहुच रहे हैं यदि उसका कुछ प्रतिशत भी सही है तो जनता को आघात पहुंचाने के लिए काफी है। यह देखकर प्रसन्नता होती है कि वर्तमान मेयर के सरक्षण में कुछ बुराई कम हुई है जिसने निगम कार्यालयो को घेर रखा था। किंतु जितना कार्य हुआ है, यह उस कार्य की अपेक्षा जो अभी नही हो पाया, बहुत कम है।

मैं इस बात से पूर्णत: सहमत हूं कि निगम में जो कुछ हो रहा है उसके लिए कुछ जिम्मेदारी, एक कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में, मेरी भी है। बेचारे कर्मचारियों के साथ हो रहे अत्याचार तथा अन्य ऐसे ही कई मुद्दे हैं जिनके लिए मुझे अपनी ज़िम्मेदारी का अहसास है। शीघ्र ही इस समस्या का हल खोजा जाना चाहिए। अभी आपको बता नही सकता कि जब वापस कार्य करने में जुटूंगा तो क्या करूंगा। यदि मैं बगाल की राजनीति में उतरूंगा तो कलकत्ता निगम के एजीन स्टेबलस को साफ करना होगा अन्यथा निगम जो भी करता है उससे कांग्रेस को अपने आपको पृथक करना होगा।

मेरे विचार से कलकत्ता निगम में जो कुछ भी हो रहा है वह बगाल की सामान्य जनजीवन की झांकी है। हमारे लोगों को जडता ने घेर रखा है। आदर्शवाद की कमी हो गई है, जो भी आदर्शवादी हैं वह या तो जेलों में बंद हैं या नजरबद हैं और जो बाहर हैं वे समय व्यतीत कर रहे हैं या फिर ज़िम्मेदारी से मुह मोड़ रहे हैं । चारों ओर छोटे-छोटे झगडे, छोटी-छोटी बातों के लिए माथापच्ची हो रही है और वास्तविक व मूल समस्याओं की ओर किसी का ध्यान नहीं। इन सब बातों से राज्य को बचाने के लिए नैतिक उत्थान और आदर्शवाद की आवश्यकता है जो हर क्षुद्र, दुखदायी और अवरोधी वस्तु को हटाकर हम लोगों के मन में, तथा लोगों के जीवन में, विश्वसनीयता, सत्यनिष्ठा और लोभ रहित सेवाभाव पैदा कर सके। मेरे विचार में ऐसे दोषपूर्ण दौर के पश्चात ही हम लोगों में जागरूकता आएगी।

सतोष कुमार बासु को,

डलहौजी
पजाब
17.8.37

प्रिय सतोष बाबू,

अनिल की शादी का आमत्रण अभी मिला। आशा है समारोह ठीक-ठाक सपन्न हो गया। मुझे आशा है कि आपने उन लोगों को भोजन कराने में, जिन्हें आवश्यकता नही

है, पैसा व्यर्थ नहीं गवाया होगा यद्यपि यह आशा करना बेकार है। हमारी सामाजिक प्रथाओ को सुधारने के लिए डिक्टेटर से कम में काम नही चल सकता। उपदेश बद करता हू। नवविवाहितों को मेरी शुभकामनाए। वधु ने जब आपके घर में कदम रखा होगा तो सास की कमी उसे खली होगी, हालांकि सास प्राय: प्रिय नहीं होतीं इसलिए उसे इस विचार से स्वय को राहत देनी चाहिए।

अपनी रिहाई के बाद से मैं कलकत्ता निगम की कार्यविधि से चिंतित हूं। एजीन स्टेब्लस को साफ करने के लिए, आपकी राय में, क्या कदम उठाया जाना चाहिए।

पहले की अपेक्षा मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। किंतु अभी कुछ दिन और यही रहूगा।

आशा है आप पूर्णत: स्वस्थ हैं। सादर।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

सीता धर्मवीर को,

डलहौजी
26.8.37

प्रिय सीता,

यदि तुम्हे जल्दबाज़ी में कलकत्ता के लिए रवाना होना हो तो मेरे भाई श्री शरत चंद्र बोस को तार दे दो। उनका तार का पता है-ई एस. सी. आई. बी. ओ एस. कलकत्ता। हावडा पहुंचने का अपना समय सूचित कर दो। हावडा स्टेशन नदी के दूसरी ओर है और कलकत्ता पहुचने के लिए तुम्हें पुल पार करना होगा। आशा है मेरा भतीजा अशोक, जिससे तुम प्राग में मिल चुकी हो, स्टेशन पर तुम्हें मिल जाएगा, यदि किसी वजह से उससे मिलना न हो पाए तो टैक्सी लेकर 1 वुडबर्न पार्क पहुच जाना। यह जगह फ्रेंच मोटर कार कपनी परिसर के निकट है जिसे सभी टैक्सी चालक जानते हैं। हावडा स्टेशन से वुडबर्न पार्क 4 किलोमीटर की दूरी पर है, वहा पहुंचने के लिए तुम्हें मैदान और शहर के यूरोपियन इलाके से गुजरना होगा।

कभी ऐसा होता है कि जहाज़ों के लिए मार्ग देने के कारण पुल खोल दिया जाता है। यदि तुम्हारे पहुंचते ही ऐसा हो, और कुली तुम्हें बताए कि कुछ देर लगेगी तो तुम नदी तक पहुच जाओ, जो प्लेटफार्म से कुछ कदमों की ही दूरी पर है। रेलवे नि:शुल्क स्टीमर नाव उपलब्ध कराता है, जिसमें बैठकर तुम नदी के कलकत्ता वाली साइड मे पहुच जाओगी। वहा टैक्सिया खड़ी होंगी। कई नावें भी किराए पर चलती हैं किंतु स्टीमर फेरी से जाना ही सुरक्षा की दृष्टि से उचित है। आशा है तुम्हारी पहली यात्रा मे तुम्हें ये अनुभव नहीं होंगे।

मेरी भाभी का कुछ दिन पूर्व आपरेशन (गाल-ब्लैडर व अपैंडिक्स का) हुआ है। अत: घर कुछ उथल-पुथल हो सकती है। आशा है तुम्हें कोई परेशानी नही होगी।

वहा पहुंचकर, आशा है, कलकत्ता तुम्हें पसंद आएगा और कुछ बगला भी सीख जाओगी। आशा है पूर्ण स्वस्थ हो। प्रेम सहित,

तुम्हारा शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च : लीला आजकल यहां है, तुम जानती ही होगी। एक दिन हम लबी सैर पर गए थे। मैं ठीक हू, यद्यपि पूर्णरूप से नहीं। लोग मुझे तत्काल बगाल मे देखना चाहते हैं। किंतु सभवतः मैं सितबर के अंत तक वहां पहुंचूगा।

सुभाष चद्र बोस

सतीश चद्र चटर्जी को,

28 अगस्त, 1937

आपके पत्रो का उत्तर देने में विलम्ब हुआ, क्षमा चाहता हू, विलब इसलिए हुआ क्योंकि जो विचार आपकी दृष्टि में हैं। मैं उन्हें आगे नही बढा सका। भारतीय वास्तुशिल्प के पुनरुद्धार के विषय में मेरे रवैये से आप परिचित ही हैं कि मैं इसे राष्ट्रीय पुनरुत्थान के लिए कितना महत्वपूर्ण मानता हू। कला और वास्तुशिल्प राष्ट्र की आत्मा की पहचान है। जब लोगो की आत्मा जाग्रत होती है तो वह विभिन्न कलाओं और वास्तुशिल्प मे ही अभिव्यक्ति पाता है। मुझमें भी कुछ ऐसी ही प्रतिबद्धताए हैं इसलिए मुझे आपकी गतिविधियो में अत्यधिक रुचि है । उत्साह और जोश के प्रति मेरा भी आग्रह है, जो उस कार्य के लिए अति आवश्यक है, जिसे आपने अपनाया है और मुझे आशा है कि कितनी ही बाधाओं व अडचनो के बावजूद, जो आपके मार्ग में आएगी, आपका विश्वास खडित नही होगा, यही आपकी सफलता का राज है।

आपके पत्र के मुद्दे पर आता हूं, और यह कहता हूं कि भारतीय वास्तुशिल्प को निश्चय ही कलकत्ता निगम आगे बढा सकता है। मैं तो यहां तक कह सकता हू कि यदि निगम पर मेरा नियत्रण होता तो मैं आपके विचारों को कार्यरूप अवश्य देता। पता नही आप मुझ पर विश्वास करेंगे अथवा नही किंतु यह सत्य है कि मेरा उस पर कोई प्रभाव नही है। यह बात आपको समझ से परे लग सकती है कि काग्रेस पार्टी का सदस्य होने के बावजूद मैं असमर्थ हू, जबकि काग्रेस पार्टी के लोग निगम मे हैं। किंतु यही सत्य है।

मैं नहीं जानता कि वास्तुशिल्प के लिए अलग से स्थान निर्धारित किया जा सकता है, क्योंकि कई सवैधानिक कठिनाइया होगी, क्योंकि निगम किसी को विशेष प्रकार के स्थापत्य के लिए बाध्य नही कर सकता। लोगों को स्थापत्य की निःशुल्क राय देने की दृष्टि से कि वे कैसा स्थापत्य अपनाएं, अलग अनुभाग बनाया जा सकता है। इस अनुभाग में नागरिकों के प्रयोग के लिए डिज़ाइन व हैंडबुक्स का स्टॉक रखा जा सकता है तथा भारतीय वास्तुशिल्प का प्रचार किया जा सकता है। कलकत्ता में लोगों के बीच भारतीय

वास्तुशिल्प को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा सकता है। यदि कलकत्ता उदाहरण पेश करे तो भारत के अन्य शहर भी अवश्य इसे अपनाएंगे।

मुख्य बात तो यह है कि मेरी बात मानेगा कौन? लोग तो छोटी-छोटी व्यर्थ की बातों के झगडों में व्यस्त हैं। परिणामतः किसी बात की आशा मुझे नही है। आप कह सकते हैं कि ऐसी स्थिति में कांग्रेस की उपस्थिति निगम में किसी काम की नहीं। शायद आपकी बात ठीक है और यही बात मुझे मेरी रिहाई के बाद से चिंतित किए हुए है। जब अपना सामान्य कार्य प्रारभ करूगा तो क्या करूंगा अभी कह नही सकता। किंतु इस समस्या का समाधान तो देर-सबेर खोजना ही होगा। तब तक मैं अपनी शुभकामनाए आपको भेज सकता हूं और आशा करता हू कि आप कभी निराश नही होंगे।

सीता धर्मवीर को,

डलहौजी
31 8 37

प्रिय सीता,

तुम्हारे तार से पता चला कि तुम सुरक्षित कलकत्ता पहुच गई हो, जानकर प्रसन्नता हुई ।

वहा तुम्हे . . क्योंकि मेरी भाभी आजकल नर्सिंग होम में हैं और मेरे भाई भी आजकल बहुत व्यस्त हैं। फिर भी आशा करता हूं कि तुम्हें कोई परेशानी नही होगी, तुम घर जैसा ही अनुभव करोगी। कृपया मेरे भतीजे अशोक को ठीक-ठीक बता देना कि तुम्हें कैसा भोजन पसंद है क्योंकि वे शाकाहारी नही हैं अतः तुम्हारी आवश्यकताओं को, यदि तुम नही बताओगी तो समझ नहीं पाएंगे। इस विषय मे कृपया कोई सकोच न करना। कलकत्ता में हर प्रकार की सब्जी और फल मिल सकता है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

वी. लेस्नी को,

डलहौजी
(पजाब) भारत
6 9 37

प्रिय प्रोफ़ेसर,

जब श्रीमती व श्री मेहता आपसे मिले तब आपका, स्ट्राज पी. राल्स्कीन से, पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। आशा है गर्मियों में वहा आराम कर आपको अच्छा लगा होगा। अब तक आप पुनः प्राहा पहुंच चुके होंगे। कृपया सूचित करें कि पुनः भारत कब आ रहे हैं। मैं यूरोप आना चाहता हू लेकिन खेद है कि यह सभव नही है। इसलिए आपको

भारत आना होगा। टैगोर पर लिखी आपकी पुस्तकों के लिए हार्दिक बधाई। आशा है आपकी पुस्तक से कवि व भारत को सेंट्रल यूरोप में पर्याप्त प्रसिद्धि मिलेगी। श्रीमती लेस्नी व आपको शुभकामनाएं। आशा है आप सब पूर्णतः स्वस्थ हैं। मैं बिल्कुल ठीक हूं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

प्रोफेसर डॉ. लेस्नी
प्राहा

ई वुड्स को,

डलहौजी
(पंजाब) भारत
9.9.37

प्रिय श्रीमती वुड्स,

2 जून के आपके पत्र व अखबारों के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। नए सविधान की प्रति भी मुझे मिल गई है।

अपनी रिहाई के बाद तत्काल मैं यहां परिवर्तन की दृष्टि से आ गया था। भारत के उत्तर-पश्चिम में 7000 फीट की ऊंचाई पर यह एक पर्वतीय स्थल है। अभी दो माह और यही रहूंगा। पहले की अपेक्षा स्वास्थ्य ठीक है, किंतु पूर्णतः नहीं।

जब मैं बधक था तो जो समाचार-पत्र आपने भेजे दे वे पुलिस ने मुझ तक पहुंचा दिए थे।

मेरी गिरफ्तारी के बाद आपने जो तार भारत को भेजा था वह लगभग सभी समाचार-पत्रों में मुख्यता से छापा गया। आपकी अति कृपा थी।

शायद अगले वर्ष मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुना जाऊंगा। चुनाव (पार्टी शाखाओं द्वारा) जनवरी 1938 में होगा।

कृपया श्रीमती एव डॉ. डे को मेरा प्रणाम कहें तथा एडा व परिवार के अन्य सदस्यों को मेरी याद। मैं प्रायः आप सब लोगों को तथा वहां बिताए प्रेमपूर्ण दिनों को याद करता हूं।

मैडम को भी मेरी शुभकामनाएं दें।

आपका स्वास्थ्य अब कैसा है?

वहां के विभिन्न गुटों की सूचना दें। (फिना फेल के अतिरिक्त) पिछले चुनावों की अपेक्षा इस बार एफ. एफ. को अधिक बहुमत मिलेगा। इस बार वे क्यों हारे ?

भारत में गतिविधियां जारी हैं। 11 राज्यों में से 7 राज्यों में कांग्रेस का शासन

है। किंतु इससे हमें अधिक लाभ नहीं है, क्योंकि केंद्रीय सरकार तो अभी भी प्रतिकूल है। आगे कठिन परीक्षा है, किंतु आज कांग्रेस की स्थिति पहले की अपेक्षा सुदृढ़ हैं। हम आशावादी हैं और आशावान हैं।

परिवार के लोगो के अतिरिक्त, अन्य मित्रो को, जिनसे वहा मुलाकात हुई थी, मेरी नमस्ते दे। आजकल मेरी सरक्षिका क्या कर रही हैं?

सादर।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

जवाहरलाल नेहरू को,

गिद्धपहाड
कुर्सियाग
17 10.37

प्रिय जवाहर,

आपके पत्र स जी-83/4101 तथा जी 60 (iii) 4126 दिनाक 8 और 9 के, समय पर मिल गए थे।

'बदे मातरम्' के संदर्भ मे हम कलकत्ता में बात करेंगे और यदि आप मुद्दा उठाएंगे तो कार्यकारिणी की समिति मे भी इसे उठाएंगे। मैंने डा. टैगोर को भी लिखा है कि जब आप शाति निकेतन आएं तो वे आपसे इस विषय में चर्चा करें।

मैं आप से इस विषय में सदा सहमत रहा हूं कि हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रश्न पर आर्थिक प्रश्न अत्यधिक महत्वपूर्ण है। साम्प्रदायिक मुसलमानों को बार-बार हौआ खडा करने की आदत है, कभी मुसलमानों को नौकरियों में कम जगह मिली है, और अब बदे मातरम को लेकर। अचानक ही बंदे मातरम का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है शायद इसलिए कि लोकसभा में इसे गाया गया और यह कांग्रेस की विजय का प्रतीक बना। राष्ट्रवादी मुसलमानो द्वारा उठाई गई कठिनाइयों व मुसीबतों पर हम सहर्ष विचार करने को तैयार हैं, किंतु सम्प्रदायवादी मुसलमानों की उठाई किसी बात को अधिक महत्व नहीं दिया जा सकता। यदि आज उनकी 'बदे मातरम' की बात पर उनकी तुष्टि करने का प्रयत्न किया गया तो कल वे कोई और नई बात उठा देंगे, केवल सांप्रदायिक भावनाओ को उभारने के लिए और कांग्रेस को दुविधा में डालने के लिए।

टिप्पराह के विषय में आपने जो लिखा है उसे पढ़कर मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। आपको शायद याद होगा कि कुछ समय पूर्व मैंने टिप्पराह जिले में गुटवाद के विषय में लिखा था और संकेत भी किया था कि केवल वैधानिक दृष्टि से इस समस्या का हल खोजना अत्यधिक कठिन कार्य है। बगाल के तीन जिलों टिप्पराह, सिलहट और फरीदपुर में इस समस्या की जडे बहुत गहरी हैं। मुझे भय है कि इस दिशा में कोई स्थाई समझौता

नही हो सकता जब तक कि मैं इन जिलों में जाकर लोगों से विनती न करूं। मैं दोनों गुटों से (फ़रीदपुर में कई गुट हैं) मैत्री स्थापित करने तथा कार्यकर्ताओं व कार्यकारिणी के सदस्यों आदि की, सहमति द्वारा, एक सूची बनाने का आग्रह करूंगा, यदि यह संभव नही हुआ तो एक पार्टी से अपने आप को पीछे हटा लेने का आग्रह करूंगा, जैसा कि 1931 में मैंने सिलहट में किया था। इन सब विषयों पर हम कलकत्ता में विचार करेंगे।

सदर्भ–अनुशासनिक कार्यवाही, कलकत्ता में मैं इस विषय में स्पष्ट निर्देश दूंगा। यदि आप नरम नीति अपनाना चाहेंगे तो वैसा ही करेंगे। अत: आपके लिए व कार्यकारिणी के लिए यह आवश्यक है कि वे यह स्पष्ट करें कि आप अनुशासन भग करने वालों के प्रति नरम या कडा रुख अपनाना चाहते हैं। जो जुर्माना हमने निर्धारित किया है क्या वह निर्णय वापस लेना होगा।

आपका आज्ञाकारी
सुभाष

सुनील मोहन घोष मौलिक को *

गिद्धपहाड़
कुर्सियोंग
19 10.37

प्रिय सुनील,

तुम्हारे दो पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। पत्रोत्तर में देरी हुई, बुरा नहीं मानना। विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाए स्वीकार करें।

मेजदादा व परिवार के अन्य सदस्य आजकल यहां हैं। मैं (और मेजदादा) अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी में एक सप्ताह के लिए कलकत्ता जा रहा हू। मेरा स्वास्थ्य पहले से बहुत बेहतर है।

तुम्हारी पत्नी की बीमारी सुनकर चिंता हुई। आशा है वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएगी।

स्वर्गीय श्री पालित द्वारा छोड़ी गई राशि के विषय में अभी तक कोई निर्णय नही हो पाया है।

आशा है आप पूर्णत: स्वस्थ हैं।

शुभकामनाओं सहित,

शुभेच्छु
सुभाष चद्र बोस

---

* मूल बगला से अनूदित

ए. सी. बनर्जी को,

6 नवंबर, 1937

प्रिय श्री बनर्जी,

19 तारीख के तुम्हारे लंबे पत्र के लिए धन्यवाद, बहुत ध्यान से पढ़ा। तुमने जो कहा है मैं उससे पूर्णतः सहमत हूं।

विजयादशमी की शुभकामनाएं।

मैं।

शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

सीता धर्मवीर को,

38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
17 11.37

प्रिय सीता,

कल प्रातः मैं एक माह के लिए यूरोप यात्रा पर विमान द्वारा रवाना हो रहा हूं। शाम के समय एक बार तुम्हें मिलना चाहता हूं। क्यों नहीं, 1 वुडबर्न पार्क में? मैं वहीं होऊंगा यदि तुम वहां आ सको तो। एक पंक्ति में उत्तर अवश्य देना या टेलिफोन पर अशोक (यदि मैं न मिलूं तो) को सूचित कर देना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

श्रीमती जे धर्मवीर को,

वायुयान से
18.11 37

प्रिय दीदी,

मुझे याद नहीं कि पिछले पत्र में मैंने आपको यूरोप जाने के विषय में लिखा था या नहीं। संभव है भूल गया होऊं। अब तक तो समाचार-पत्रों से आपको खबर मिल चुकी होगी। सीता को कल प्रातः मैंने ही बताया। रात्रिभोज पर वह हमारे साथ थी। उसने आपका पत्र और कटिंग्स मुझे दी जो मेरे पास हैं। बैगस्टीन पहुचने पर उन्हें पढूंगा, यानी कि 22 तारीख को। मेरा पता होगा-द्वारा पोस्टे रेस्टान्टे बैगस्टीन, आस्ट्रिया। मेरे लेख से आप अनुमान लगा सकती हैं कि जहाज़ कितने आराम से उड़ रहा रहा है। इस

समय हम इलाहाबाद व जोधपुर के मध्य आधे रास्ते में हैं। रात हम यहीं बिताएंगे। अगली रात हम बगदाद में बिताएंगे। 25 दिन लगातार अत्यधिक व्यस्त रहने के बाद मैं शांति महसूस कर रहा हूं। आप सब लोग कैसे हैं? नारंग और सैंडी का क्या हाल है? रघु मेरे पास परिचय पत्र लिखवाने के लिए आया था। मैंने उससे शाल व साड़ी की बात की उसने मना कर दिया। मेरी अनुपस्थिति में (जब मैं कुर्सियांग में था)उसने मेरी मां से धृष्टता की थी, इसलिए उसे वहा से निकाला गया। सीता ठीक-ठाक है और जल्दी ही वह कलकत्ता वालों जैसी बन जाएगी। जब भी विएना के प्रोफेसर डेमेल लाहौर जाए आप उन्हें चाय पर अवश्य आमंत्रित करें तथा डा. साहब व अन्य मित्रो से भी मिलवाए। डॉ. लीला व आपको सादर।

आपका
सुभाष चंद्र बोस

सेवा में,
श्रीमती जे. धर्मवीर
पेडिहम ग्रूव
लाहौर

ओरिएंटूरिस्ट लिमिटेड को,

स्टेट होटल
(जोधपुर राजपूताना)
जोधपुर व कराची के बीच
19.11.37

सेवा में,
प्रबंधक
ओरिएंटूरिस्ट लिमिटेड
कलकत्ता

प्रिय महोदय,

इससे पूर्व कि मैं भारत की सीमा पार करूं मेरी कलकत्ता से नेपल्स की हवाई जहाज़ की यात्रा की व्यवस्था के लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। एयरपोर्ट पर भी मेरी पर्याप्त देखभाल की गई। कई उलझनों व कष्टों से बच गया। यह प्रसन्नता का विषय है कि ऐसे कार्यों के लिए कोई भारतीय कंपनी है। मैं आशा करता हूं कि आपको अपने इस कार्य में पूर्ण सफलता मिलेगी और लोग अपना पूरा सहयोग आपको देंगे।

आपका शुभेच्छु
सुभाष चंद्र बोस

नाओमी सी. वैटर को,

हॉज़ एरिका
बैगस्टीन
25.11.37

प्रिय श्रीमती वैटर,

नेपल्स से बैगस्टीन जाते हुए मैंने रोम से आपको पत्र लिखा था जो आपको अवश्य मिल गया होगा।

22 तारीख की रात यहा पहुच गया था और अगले दिन स्नानोपचार शुरू कर दिया। यहा प्रवास के दौरान एक पुस्तक लिखने का विचार है। इस बार यूरोप में कम दिन रह पाऊगा, क्योंकि मुझे जनवरी के प्रथम सप्ताह में हर हाल में वापस पहुंचना है। स्वदेश लौटने से पूर्व विएना जाकर सभी मित्रों से मिलना चाहता हूं।

आशा है आप व डा. वैटर पूर्णतः स्वस्थ होंगे। आप दोनों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं,

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च :- आशा है कि आगामी जनवरी में मैं भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का अध्यक्ष चुना जाऊंगा। मेरे स्वदेश लौटने के कारणों में एक कारण यह भी है।

सुभाष चद्र बोस

मैगियोर रैपिकावोली को,

पोस्ट रेस्टांटे
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
25.11.37

प्रिय मैगियोर रैपिकावोली,

नैपोली से बैगस्टीन जाते हुए रास्ते में रोम से मैंने आपको पत्र लिखा था जो आपको अवश्य मिल गया होगा। उस पत्र में मैंने आपको सूचित किया था कि 1937 में 21 नवंबर को प्रातः नैपोली में जब मैं वायुयान से एयरपोर्ट पर उतरा तो इटली पुलिस ने मुझे काफी परेशान किया। किसी अन्य यात्री का सामान खोलकर नहीं देखा गया। किंतु मेरे सभी संदूक आदि खोलकर उलट-पुलट कर दिए गए और एक-एक वस्तु का निरीक्षण किया गया। उसके बाद वे मुझे कमरे में ले गए और मेरी जेबें देखी गईं। उसके पश्चात मैं कहां और किस मार्ग से जा रहा हू, के बारे में पूछताछ की गई। आप अनुमान लगा

सकते हैं कि मुझे कितना गुस्सा आया होगा और मैंने के.अल.एम. कंपनी, जिनके वायुयान में मैं यात्रा कर रहा था, के एजेंट को इस विषय में शिकायत की। उन्होंने मुझसे क्षमा मांगी और विश्वास दिलाया कि सामान्य कस्टम अधिकारियों के कारण यह परेशानी नही हुई है बल्कि इटली की पुलिस की वजह से यह सब हुआ है।

टरवीसियो पहुचने पर पुनः मेरे सामान, पासपोर्ट आदि का निरीक्षण किया गया और अनेकों प्रश्न पूछे गए। इटली की सीमा पार करने के पश्चात मैं सुख की सास ले पाया।

यह अनुभव मेरे लिए बिल्कुल नया था। क्योंकि पहले जब कभी भी मैं इटली आया हूं ऐसा व्यवहार मेरे साथ कभी नही हुआ। इस अनुभव के विषय में मैं भारतीय प्रेस को भी लिखने की सोच रहा हू, किंतु मैंने सोचा कि लिखने से पूर्व आपको इस विषय में कोई कार्वाई करने का मौका अवश्य दे दूं। मैं आपको केवल यह बताना चाहता हू कि मैं इस विषय में बहुत गंभीर हू।

अपना उपचार कराने के बाद, लगभग एक माह में मैं भारत वापस लौटूंगा। यदि मेरा पुनः इसी प्रकार अपमान होना है तो मैं इटली के मार्ग से जाना नहीं चाहूगा। मैं किसी अन्य एयरपोर्ट से रवाना होऊगा, यदि इटली की सरकार मुझे विश्वास नहीं दिला देती कि मुझे पुनः ऐसा अनुभव नहीं होगा।

पहले मेरा विचार सरकार के प्रमुख को सीधे पत्र लिखने का था, किंतु फिर मैंने अपने इस मामले में उन्हें कष्ट देना उचित नहीं समझा।

कृपया यथाशीघ्र उत्तर देने की व्यवस्था करें।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
(भारत से)

मारक्विस आफ जेटलैंड को,

पोस्ट रेस्टाटे
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
25.11 37

महोदय,

बहुत अल्पावधि के लिए मैं उपचार की दृष्टि से बैगस्टीन, यूरोप आया हू और शीघ्र ही स्वदेश रवाना होऊंगा ताकि जनवरी मध्य में कलकत्ता अवश्य पहुच जाऊ। वैसे तो जल्दी जाने की कोशिश करूगा।

यहा उपचार में एक माह या पाच सप्ताह का समय लगेगा और स्वदेश लौटने स पूर्व मैं कुछ समय के लिए इंग्लैंड भी आना चाहूंगा ताकि मित्रों व अपने भतीजे से, जो लदन मे अध्ययनरत है, मिलने जाना चाहता हूं। सन 1933 से 1936 के मध्य जब

मैं यूरोप में था तब मेरे लदन जाने पर प्रतिबंध था। मेरे पासपोर्ट पर इस प्रतिबध का कोई जिक्र नही है किंतु मौखिक रूप में मुझे आदेश दिए गए हैं कि मुझे इग्लैंड विशेष अनुमति लिए बिना नहीं जाना होगा, मैं उन आदेशों की कद्र करता हूं। मैं नही जानता कि वह प्रतिबध क्या अभी भी लागू हैं। यदि हैं तो मैं प्रार्थना करता हू कि वह प्रतिबंध हटा लिया जाए और मुझे इंग्लैंड जाने की अनुमति प्रदान की जाए।

यदि मुझे इंग्लैंड जाने की अनुमति दे दी जाती है तो मैं वहा ज्यादा से ज्यादा एक सप्ताह या दस दिन बिताना चाहूंगा। यदि मेरा उपचार लंबी अवधि तक चला तो वहां मेरा रुकना और कम समय के लिए भी हो सकता है, क्योकि 10 जनवरी को मुझे भारत लौटना ही है और मैं यहां अधिक समय तक रुक नहीं सकता।

यदि आप मेरी इग्लैंड यात्रा पर से प्रतिबंध हटाने के आदेश यथाशीघ्र जारी कर देंगे तो मैं आपका सदैव आभारी रहूंगा।

आपका हृदय से धन्यवाद।

मैं,

सुभाष चद्र बोस

माननीय मारक्विज आफ जेटलैंड
सैक्रेटरी आफ स्टेट फार इंडिया
व्हाइटहॉल
एस डब्ल्यू-1

श्रीमती जे. धर्मवीर को,

बैगस्टीन
आस्ट्रिया
6.12 37

प्रिय दीदी,

आपका 23 नवबर का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र 30 तारीख को मिला। मैंने ट्रिब्यून को एयरमेल द्वारा एक अपील प्रकाशित करने के लिए भेजी थी और यह भी कहा था कि संपादक भी उस पर अपनी टिप्पणी करें। उसकी प्रति आपको भी भेज रहा हू। यदि वह प्रकाशित न हो तो आप उन्हें अनुस्मारक भिजवा दें और सलग्न प्रति भी।

गाधीजी की कलकत्ता यात्रा के दौरान, विशेष रूप से 1 नवबर को उनकी असफलता के पश्चात, मेरा वहा होना असंभव था, क्योंकि हमने उन्हें 2000 बंदियों व राजनैतिक बंदियों की समस्या सुलझाने के लिए आमंत्रित किया था। स्पष्ट रूप से मैं उस वृद्ध व्यक्ति के विषय में यही कह सकता हू कि उसने मुझे वहां से हटने पर मजबूर किया और

मेरे स्वास्थ्य को सुधारने का मौका दिया। उनके आग्रह के बिना मेरा वहा से हटना कठिन था।

क्षमा करें, आपको श्री जुत्शी का समाचार कहां से मिला? मेरे विचार से आपका उनसे पत्राचार नहीं है। यदि आपका समाचार वाहक सही है तो मुझे श्री जुत्शी की परेशानी पर आश्चर्य है।

यहां मौसम बहुत अच्छा है, सब ओर बर्फ है, सूरज भी चमक रहा है। सूखी सर्दी पड़ रही है। मैं आजकल स्नानोपचार कर रहा हूं। इस माह के अंत तक करता रहूंगा। जनवरी मध्य तक वायुयान द्वारा कलकत्ता पहुंचने का प्रयास है। इस बीच यदि अनुमति मिल गई तो कुछ समय के लिए लदन भी जाऊंगा। अभी इस विषय में अनिर्णय की स्थिति बनी हुई है।

आपने प्रोफेसर डेमेल को चाय पर आमंत्रित किया, जानकर प्रसन्नता हुई। वे भले आदमी हैं और साथ ही एक अच्छे सर्जन भी हैं।

मेरे कलकत्ता से रवाना होने से पूर्व सीता ने मुझे आपका खत दिया था, किंतु सामान में न जाने कहां इधर-उधर हो गया। वह मेरे साथ नहीं आ पाया जैसा कि मैंने चाहा था।

सीता के विषय में एक बात आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उसमें आत्मविश्वास आ गया है जो अच्छी बात है। उसे देखकर प्रतीत होता है कि उसमें अपने पैरों पर खडे होने की क्षमता है और दुनिया में बिना भय और उत्सुकता के विचार कर सकती है । (पता नही अपनी बात व्यक्त कर पाया हूं अथवा नहीं)।

आपके पत्र से पता चला कि सीता शायद सुश्री नायर के साथ गाधीजी से मिलने गई थी। मैं उससे नाराज़ हूं। मैं उसका परिचय करवाता तो बात कुछ और होती। मैंने इस विषय में उससे बात की थी तब उसने गांधीजी से मिलने की कोई उत्सुकता नहीं दिखाई, मैंने भी उस पर जोर डालना उचित नहीं समझा।

मेरी मां तथा भाभी सहित परिवार के सभी सदस्य तब ठीक-ठाक थे, जब मैं कलकत्ता से रवाना हुआ। कृपया मेरी ओर से सीता को कह दें कि जब भी उसे नौकरों से कोई परेशानी हो तो वह 1 वुडबर्न पार्क, अथवा 38/2 एल्गिन रोड में लोगों से सपर्क करे या वहां चली जाए। इसमें झिझके नहीं। वहां सभी उसे बहुत चाहते हैं और प्रसन्नतापूर्वक उसकी सहायता करेंगे।

कृपया (अस्पष्ट), नौकरों तथा सैंडी को मेरी नमस्ते कहें। सोमनाथ तक मेरी सवेदनाए पहुंचा दें। डा. साहब व लड़कियों को तथा आपको प्यार।

वी

सुभाष चन्द्र बोस

ई वुड्स को,

कुरहॉस एरिका
बैगस्टीन
आस्ट्रिया
18 12 37

प्रिय श्रीमती वुड्स,

कुछ सप्ताह पूर्व परिवर्तन के लिए जब मैं यहां आया तभी से आपको पत्र लिखने की सोच रहा हू। जनवरी में पुनः भारत लौट जाऊंगा। स्वदेश लौटने से पूर्व लदन जा रहा हू, वहा 10 जनवरी को पहुंचूगा। ब्रिटिश सरकार ने अंततः मेरे इग्लैंड जाने पर लगे प्रतिबध को हटा दिया है इसलिए मैं वहां आ रहा हू।

क्या आप गुप्त रूप से यह पता लगा सकेंगी कि इग्लैंड यात्रा के दौरान मेरी मुलाकात प्रैजीडेट डी वलेरा से हो सकेगी? यह औपचारिक मुलाकात होगी। अनुमानित तिथि 16 से 19 जनवरी के मध्य है। कृपया इस विषय को बिल्कुल गुप्त रखें और प्रेंजीडेंट व उनके सचिव के अतिरिक्त किसी को इसका आभास न होने दें। पत्र का उत्तर देते समय पता लिखें-सुश्री ई शैंक्ल पोस्टे रेस्टान्टे, बैगस्टीन और इसे बंद रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजें। यह सावधानी आवश्यक और महत्वपूर्ण है, क्योंकि मैं नहीं चाहता कि मेरे डब्लिन पहुचने से पूर्व किसी को इस बात का पता भी चले।

परिवार के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं व आपको सादर प्रणाम।

आपका शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

ई वुड्स को,

कुरहॉस हॉकलैंड
(अथवा पोस्टे रेस्टाटे)
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
30 12 1937

प्रिय श्रीमती वुड्स,

22 तारीख का पत्र 26 तारीख को मुझे मिला, धन्यवाद।

मैं आपको अपना कार्यक्रम भेज रहा हूं जिससे आप सब व्यवस्था कर सकेंगी। 10 जनवरी को लदन पहुच रहा हू और 17 जनवरी तक वहा रहूंगा। 18 जनवरी को निश्चय ही डब्लिन में मुलाकात की व्यवस्था हो जानी चाहिए। डब्लिन आना ज़रूर जाना ही हो पाएगा। 17 की रात लंदन से चलूंगा और 18 को प्रातः 6.45 पर डब्लिन पहुचूगा।

उसी रात 8 बजकर 10 मिनट पर वापस लौटूंगा। 19 की प्रातः लंदन पहुंचूंगा और सायं 5.30 पर कुछ घंटे रुकने के पश्चात उपद्वीप के लिए रवाना होऊंगा, जहां से वापस भारत की यात्रा पर चल दूंगा।

यह आवश्यक नहीं कि होटल में मेरे ठहरने की व्यवस्था हो लेकिन पत्रकार मिलने आएंगे इसलिए ठीक रहेगा। शैलबर्न ठीक रहेगा, यदि वही सबसे अच्छा होटल है तो। यदि मुझे होटल जाना ही है तो सबसे अच्छे में ही क्यों न जाऊं। आप जैसा उचित समझें वैसी व्यवस्था कर दें।

8 जनवरी की प्रातः मैं यह स्थान छोड़ दूंगा।

भारतीय समाचार-पत्र प्रेसीडेंट देव और मेरा चित्र, जब मैं उनसे मिलूं तब, चाहते हैं। जब पिछली बार मैं डब्लिन आया था तब वे बहुत निराश हुए थे। क्या आप ऐसी व्यवस्था कर पाएंगी? इसका उत्तर देने की आवश्यकता नहीं, यदि प्रेसीडेंट महोदय को कोई आपत्ति न हो तो कृपया व्यवस्था कर दें। मैं उसी शाम डब्लिन पहुंच सकता हूं और जहाज ले सकता हूं तो मुझे गांव जाने में भी कोई आपत्ति नहीं होगी।

फिलहाल इस मुलाकात को गुप्त ही रखें। केवल सूचना मात्र दे दें कि यह पत्र आपको मिल गया है। नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च :- आपके पत्र का लिफाफा साथ भेज रहा हूं। क्या आपने पत्र को इसी प्रकार सील किया था, जिस हालत में वह डब्लिन से रवाना किया था।

सुभाष चंद्र बोस

मैगियोर रैपिकावोली को,

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
(आस्ट्रिया)
31.12.1937

प्रिय मैगियोर रैपिकावोली,

दो पत्रों के साथ आपके द्वारा भेजे गए तार के लिए शुक्रिया। मैं आपको पहले पत्र नहीं लिख पाया, क्योंकि अपने कार्यक्रम के बारे में निश्चित नहीं था। यद्यपि अभी भी मेरा कार्यक्रम निश्चित नहीं है, लेकिन फिर भी प्रोविजनल प्रोग्राम भेज रहा हूं।

सबसे पहले तो आपको यह बताना चाहता हूं कि नेपल्स की घटना समाप्त हो चुकी है। इस विषय में आपको जो असुविधा हुई उसके लिए क्षमा चाहता हूं।

12 जनवरी को मैं नेपल्स से डच के. अल. एम. वायुयान लूंगा। 11 या 20 जनवरी को मैं रोम से निकलूंगा। यदि सीधे भारत रवाना होऊंगा तो 12 तारीख को जहाज पकडूंगा। यदि स्वदेश लौटने से पूर्व इंग्लैंड गया तो 21 तारीख को जहाज़ लूंगा। इस बात को मद्देनजर रखते हुए कि संभवत: जनवरी में मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष चुन लिया जाऊं, ब्रिटिश सरकार ने इंग्लैंड जाने पर मुझ पर लगाए गए प्रतिबंध को हटा दिया है। लंदन के मेरे मित्र मुझ पर दबाव डाल रहे हैं कि स्वदेश लौटने से पूर्व मैं लंदन अवश्य आऊं। मेरा वहा जाना न जाना भारत से मिलने वाले निर्देशों पर निर्भर करता है। फिलहाल भारत से पत्राचार कर रहा हूं और चार पांच दिन में अंतिम निर्णय ले पाऊगा।

रोम से निकलते समय मैं चाहूंगा कि सरकार के प्रमुख से भेंट सभव हो सके। कठिनाई सिर्फ यह है कि इस बात को पूर्ण गुप्त रखा जाना चाहिए। इसमे शक नही कि यदि यह बात खुल गई तो भारत में मुझे सरकार की ओर से कठिनाइयों का सामना करना पडेगा। क्या आप समझते हैं कि मुलाकात को पूर्णत: गुप्त रख पाना सभव हो सकेगा। यदि हां तो कृपया अतिशीघ्र मुझे सूचित करें। यहां यह भी बता दूं कि सारे प्रयत्नो के बावजूद भी यदि यह समाचार फैल ही गया तो मैं साफ़ इंकार कर दूगा और आपकी ओर से भी इकार किया जाना आवश्यक है। नवंबर में जब मैं इटली से गुजर रहा था तो इटली के समाचार-पत्रों में टिप्पणी सहित यह खबर प्रकाशित हुई कि मैं सरकार प्रमुख से मिलने जा रहा हूं। लंदन द्वारा पूछताछ की गई और मुझे यह कहना पड़ा कि मैं तो इटली के अधिकारी तक से नहीं मिला, और यह सत्य भी था।

यदि पहले जहाज से लौट आया तो 9 तारीख या 10 तारीख को रोम के लिए अवश्य ही रवाना हो जाऊंगा। बाद का जहाज़ लेने पर मैं प्राग से जहाज़ द्वारा 20 तारीख को दोपहर 4 बजे रोम पहुंचूंगा और रात की गाड़ी से नेपल्स के लिए रवाना होऊंगा ताकि अगली सुबह जहाज़ पकड सकूं। अत: मुलाकात 11 तारीख अथवा 20 तारीख की दोपहर या साय 5.30 या 6 बजे निश्चित होनी चाहिए।

यदि सीधे यहा से नेपल्स गया तो ट्रेन पकडूंगा। यदि इंग्लैंड से नेपल्स गया तो वायुयान द्वारा प्राग, वेनिस, विएना और रोम होता हुआ जाऊंगा। यदि किसी कारण से मुलाकात सभव न हो पाए तो कृपया मुझे सूचित कर दें ताकि मैं अमैस्टरडम से मर्सिलेस होता हुआ नेपल्स के लिए रवाना हो जाऊ।

यदि स्वदेश रवाना होने से पूर्व इग्लैंड गया तो हर हालत में 8 जनवरी की प्रात: यह स्थान छोड दूगा।

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित।

मैं,

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

लेख, भाषण एवं बयान

देशवासियों के नाम संदेश *

अपनी यूरोप यात्रा पर रवाना होने की पूर्व संध्या पर मैं सभी मित्रों व देशभर में फैले अपने शुभचितको को, जिन्होंने मुझ मे इतनी दिलचस्पी दिखाई, प्रेमपूर्ण व हार्दिक धन्यवाद देना चाहूगा।

जब तक मैं भारत में रहा, मेरी अस्वस्थता के बावजूद भी सरकार ने, कारण वही जान सकते हैं, मुझे रिहा करना या थोड़ी सी भी आजादी देना उचित नहीं समझा। यहा तक कि बार-बार अनुरोध करने के बावजूद भी उन्होने मुझे अपने वृद्ध एव बीमार माता-पिता से मिलने की अनुमति नहीं दी।

फिर भी मैं समझता हू कि जो थोड़ी-बहुत सुविधाए सरकार ने मेरे लिए जुटाई, वह मेरे मित्रों व शुभचितकों द्वारा देशभर में किए गए आंदोलनों तथा विशेष रूप से राष्ट्रवादी प्रेस के कारण ही संभव हो पाई। उनके प्रति मैं हृदय से आभारी हू।

जनता भलीभाति जानती है कि मेरे स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति की पूरी जिम्मेदारी सरकार पर है, फिर भी उन्होंने सरकारी खर्चे पर यूरोप में मेरे उपचार के लिए मना कर दिया और भारत में मेरे मित्रों व रिश्तेदारों को भी मेरा इलाज कराने की अनुमति नही दी।

मेरे बड़े भाई श्री शरत चंद्र बोस के बंदी बनाए जाने की वजह से, पिछले एक वर्ष से मेरा परिवार आर्थिक तगी से गुजर रहा है, अतः मेरे लिए सरकार का प्रस्ताव स्वीकार करना असभव था। किंतु मेरे कुछ मित्रों व रिश्तेदारों ने स्वय ही मेरे उपचार की जिम्मेदारी लेकर धन एकत्र करना शुरू किया है ताकि यूरोप में मेरे ठहरने व इलाज का खर्च वहन किया जा सके।

अतः, उन्ही के प्रयत्नों से मेरा यूरोप जाकर इलाज करवा पाना सभव हो पाया है।

अभी मेरे लिए यह कह पाना संभव नहीं है कि मेरा स्वास्थ्य पुनः पहले सा हो पाएगा अथवा नही। भविष्य में जो भी हो मैं उन सभी को, जिन्होने मेरा यूरोप जाना संभव बनाया, हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

यद्यपि मैं बहुत संवेदनशील व्यक्ति हू, किंतु अपने मित्रों व शुभचिंतकों की सहायता को स्वीकार ने मे मुझे झिझक नही है, क्योंकि मेरा मानना है कि केवल खून का रिश्ता ही रिश्ता नहीं है, सभी देशवासी मेरा परिवार हैं, मैंने अपने देश के प्रति अपना जीवन समर्पित कर दिया है । अतः देशवासियों का भी मेरी देखभाल करने में उतना ही हक है जितना कि मेरे रिश्तेदारों का है।

---

*25 फरवरी, 1933 को यूरोप यात्रा पर रवाना होने से पूर्व, यह संदेश सुभाषचंद्र बोस ने केवल फ्री प्रेस के नाम जारी किया था।

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वह मुझे भी उसी प्रेम व स्नेह से भर दे जो प्रेम व स्नेह मुझ पर मेरे हर जाति व धर्म के देशवासियों ने न्योछावर किया है।

मेरे विदेश रवाना हो जाने के क्षणों तक मुझ पर लगी पाबंदियो के बावजूद मैं अपने साथ अपने देशवासियों के शुभविचार, शुभकामनाएं और प्रेम तथा सहानुभूति लेकर जा रहा हूं।

मैं उन्हें विश्वास दिलाना चाहता हू कि मेरे स्वास्थ्य अर्जन मे उनकी प्रार्थनाए व शुभकामनाए महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगी (यदि अधिक देर नहीं हुई है तो) क्योकि किसी भी चिकित्सक द्वारा दी जाने वाली अच्छी से अच्छी दवाई से अधिक महत्वपूर्ण अपनो की दुआए होती हैं।

साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष और साम्यवाद *

अपनी राजनैतिक स्वतत्रता की प्राप्ति के लिए हम लोग ब्रिटिश सरकार के साथ अहिसापूर्ण सघर्ष कर रहे हैं। किंतु आज हमारी स्थिति उस सेना के समान है जिसने कडे सघर्ष के दौरान अचानक दुश्मन के सम्मुख बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया हो।** यह आत्मसमर्पण भी इसलिए नही है कि राष्ट्र की यह मांग है, या राष्ट्रीय सेना ने अपने नेताओ के विरुद्ध विद्रोह किया है या युद्ध के दौरान सेना बल मे कटौती कर दी गई है बल्कि इसलिए है कि हमारे कमाडर-इन-चीफ लगातार उपवास रखकर थक गए हैं अथवा किसी विशेष कारण ने उनके निर्णय को आच्छादित कर लिया है, वह कारण उनके सिवा किसी और के लिए समझ पाना असंभव।

मैं पूछता हू कि यदि किसी अन्य देश में ऐसा होता तो क्या हुआ होता। महान युद्ध के पश्चात दुश्मन के सम्मुख आत्मसमर्पण करने वाली सरकारों की क्या नियति हुई? किंतु भारत अद्भुत जगह है।

1933 का आत्मसमर्पण 1922 के बारदोली वापसी की याद दिलाता है। किंतु 1922 की वापसी के लिए कुछ स्पष्टीकरण, चाहे असंतोषजनक ही क्यों न हो, तो दिया जा सकता है। 1922 में लोक अवज्ञा आदोलन को समाप्त करने के लिए चौरी–चौरा मे हुई हिंसा को जिम्मेदार ठहराया गया था। किंतु 1933 के आंदोलन मे आत्मसमर्पण करने के लिए क्या स्पष्टीकरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

इसमे दो राय नहीं कि असहयोग आंदोलन, जो 1920 में शुरू किया गया, आज तक किसी न किसी प्रकार अस्तित्व में था, भारत के लिए वर्ष 1920 का सबसे उपयोगी आदोलन था। इसमे भी कोई शक नही कि 1920 में जब राजनीति के क्षेत्र मे भारत अधिक आक्रामक रुख अपनाने की योजना बना रहा था तब महात्मा गाधी निर्विवाद प्रवक्ता

---

* 10 जून 1933 की लदन में तृतीय भारतीय राजनैतिक सम्मेलन में, अनुपस्थिति में पढा गया अध्यक्षीय भाषण।

** यहा बोस जन–अवज्ञा आदोलन को महात्मा गाधी द्वारा अचानक वापस लिए जाने के सबध में कह रहे हैं–सपादक

बन कर सामने आए और लोगो को विजय की ओर अग्रसर किया। इसमे भी दो राय नहीं कि पिछले दशक में भारत एक सदी आगे बढ़ा है। किंतु आज भारतीय इतिहास के चौराहे पर खड़े होकर यह सोचना आवश्यक और उचित है कि, हमने कहां-कहां गलतिया की है ताकि भविष्य में सभी गलतियों से अपने को बचाते हुए हम सही दिशा मे कदम रख सकें।

स्वतत्रता प्राप्त करने के हमारे समक्ष दो मार्ग हैं। एक तो आक्रामक मार्ग है। दूसरा मार्ग समझौते का मार्ग है। यदि हम प्रथम मार्ग का चुनाव करते हैं तो हमें स्वतंत्रता प्राप्ति तक निरतर संघर्ष करना होगा और जब तक हम स्वतंत्र नहीं हो जाते, किसी प्रकार का समझौता करने का प्रश्न ही नहीं उठेगा। किंतु यदि दूसरा मार्ग अपनाते हैं तो हमे अपनी स्थिति को सुधारने के लिए, इससे पहले कि अन्य कदम उठाए जाएं, विरोधियो से कई छोटे-मोटे समझौते करने होंगे।

सबसे पहले तो प्रत्येक व्यक्ति को यह स्पष्ट जानकारी हो जानी चाहिए कि पिछले तेरह वर्ष से चला आ रहा हमारा संघर्ष असहयोग पूर्ण आक्रामक रुख अपनाए हुए था या समझौते का रुख अपनाए हुए था। संदेहास्पद आदर्शवादी नीति ने बहुत हानि पहुचाई है। यदि हमारा रवैया अक्रामक रहा होता तो 1922 में बारदोली आत्म-समर्पण नही होता और न ही मार्च 1931 का दिल्ली समझौता ही होता। दूसरी ओर यदि समझौतावादी नीति अपनाई गई होती तो दिसबर 1931 में हमें, जबकि स्थिति भी हमारे पक्ष में थी, ब्रिटिश सरकार से लाभ मिला होता। मार्च 1931 में हमारी दृष्टि से स्थिति समझौता करने की नही थी, जब तक कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व ब्रिटिश सरकार के मध्य समझौता न किया जाता। मार्च 1931 में हमारी क्षमता को देखते हुए वह समझौता असंतोषजनक था। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि राजनैतिक योद्धाओं के रूप मे न तो हमने अक्रामक रुख ही अपनाया और न हमने राजनीति से ही काम लिया।

भारतवासियों जैसे निहत्थे लोगों व प्रथम श्रेणी के ग्रेट ब्रिटेन जैसे उपनिवेशवादियों के मध्य संघर्ष मे हमें आवश्यक स्रोतों की उपलब्धि तभी हो सकती है यदि हमारे लोगो में उत्साह बना रहे और वे सरकार के प्रति विरोधी रुख अपनाए रहें। दो हथियारबन्द व प्रशिक्षित सेनाओं के मध्य सघर्ष में मनोवैज्ञानिक तथ्य का महत्व नही जैसा कि हमारी स्थिति में आवश्यक है। सन 1922 में जब पूरा राष्ट्र पूरे मनोयोग से क्रियाशील था और लोगो से साहसपूर्ण व त्यागपूर्ण सघर्ष की पूर्ण आशा थी। उस समय में हमारे कमांडर-इन-चीफ ने समझौते का हाथ बढा दिया। यह भी ठीक उस समय हुआ जब कुछ माह पूर्व एक उपयुक्त अवसर गवा दिया गया, जो आज की स्थिति में राज्य से समझौता करने का एक अच्छा अवसर सिद्ध होता।

बीते इतिहास को याद रखना और उससे कुछ सीखना आसान नहीं है और भारत की वर्तमान स्थिति से स्पष्ट होता है कि हमने 1921 व 1922 की घटनाओं से कोई पाठ नहीं सीखा है। यह दुखद बात है कि वर्ष 1925 और 1931 मे देशबंधु सी. आर. दास व पंडित मोतीलाल नेहरू की मृत्यु के पश्चात भारतीय इतिहास के पटल से दो मुख्य राजनीतिज्ञ खो गए जो सभवतः भारत को वर्तमान स्थिति से बचा पाने में सक्षम

होते।

दिसंबर, 1927 मे जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मद्रास में बैठक हुई थी तब स्वतंत्रता के प्रस्ताव पर एकमत सहमति से सकेत मिला था कि हमारे लोग उत्साह से परिपूर्ण हैं। सन् 1928 मे जब बबई में साइमन कमीशन आया तब, सपूर्ण भारत मे हुए प्रदर्शन सन 1921 के दिनों की याद दिलाते थे। एक दृष्टि से सन 1928 की स्थिति सन 1921 की स्थिति की अपेक्षा अधिक लाभकारी थी, 1921 में भारतीय उदारवादी काग्रेस के विरोधी थे जबकि 1928 मे ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध थे तथा साइमन कमीशन के विरुद्ध सघर्ष मे कांग्रेस व लिबरल पार्टी साथ थी। अत: साइमन कमीशन के आगमन पर 1922 मे महात्मा गाधी द्वारा स्वेच्छा से स्थगित किए गए आंदोलन को पुनर्जीवित करने का अच्छा अवसर था। पिछले दो वर्षों में आगे बढ़ने की अपेक्षा हमारे कदम पीछे की ओर हटे हैं। दिसबर 1928 में कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में 900 की अपेक्षा 1300 वोट द्वारा एक प्रस्ताव पारित किया गया था, जिससे काग्रेस द्वारा प्रभुत्व की स्थिति को स्वीकार कर लेने से हम पीछे की ओर ही हटे। इस प्रकार कलकत्ता में हम न केवल दिसबर 1927 की मद्रास की अपनी स्थिति से पीछे हटे, बल्कि 1920 की नागपुर स्थिति से भी पिछडे, जहा नागपुर प्रस्ताव मे स्वराज का अर्थ पूर्ण स्वतंत्रता माना गया था न कि 'डोमिनियन स्टेटस'।

कलकत्ता काग्रेस के प्रस्ताव मे ब्रिटिश सरकार को एक वर्ष का समय दिया गया जिसके भीतर उन्हें भारत मे डोमिनियन स्टेटस कायम करना था। किंतु सरकार भारत को कोई ऐसी पेशकश देने को तैयार नही है। कांग्रेस नेताओं की स्थिति बहुत खराब हो गई है क्योंकि वर्ष 1928 बीत रहा है और कोई प्रस्ताव पेश नही हुआ है। नवबर 1929 मे लाहौर काग्रेस में नेताओ द्वारा पुन: प्रयत्न किया गया, किंतु वह भी निरर्थक रहा। सयुक्त घोषणापत्र जिसे अब दिल्ली घोषणापत्र माना जाता है--में नेताओं ने इस शर्त पर लदन मे आयोजित की जा रही गोलमेज कार्फ्रेस में भाग लेना स्वीकार किया है कि भारत को 'डोमिनियन स्टेटस' दिए जाने का आश्वासन दिया जाए।

सन 1928 के कलकत्ता काग्रेस में 'डोमिनियन स्टेटस' प्रस्ताव के विषय में मैंने महात्मा गाधी का विरोध करने का दुस्साहस किया था और नवंबर 1929 में दिल्ली घोषणापत्र का विरोध करने का विचार भी था। हमें यह समझ लेना चाहिए कि गोलमेज सम्मेलन पूर्णत: मिथ्या था, क्योंकि उसमें युद्धरत दोनों गुटों के पूर्णाधिकार प्राप्त प्रतिनिधि शामिल नही थे। सरकार द्वारा नामित अवर्गीकृत अधिकांश भारतीय इस सम्मेलन मे उपस्थित होंगे जो ब्रिटिश राजनीतिज्ञो की राय को स्वीकार कर लेंगे। इस पर भी यदि किसी कारण से सम्मेलन मे भारत के पक्ष में निर्णय हो जाते हैं तो भी वे ब्रिटिश सरकार पर लागू नही होंगे। हम बताना चाहते हैं कि इस सम्मेलन को आयोजित करने का सरकार का मुख्य उद्देश्य भारतवासियों को इग्लैंड मे बुलाना है और उन्हें आपस मे झगडवाकर स्वय तमाशा देखना है। इसलिए हमारी राय है कि जिस प्रकार सिन फिन्नर्स ने आयरिश सम्मेलन का बहिष्कार किया था, जिसका आयोजन श्री लायड जार्ज ने किया था, उसी प्रकार भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस को भी गोलमेज काफ्रेस का बहिष्कार करना चाहिए।

किंतु हमारी पुकार व्यर्थ थी। हमारे नेतागण सरकार से होने वाले सघर्ष, जिससे बचना कठिन होता जा रहा था, से अपने आपको सुरक्षित बाइज्जत बचाने के लिए बेचैन थे। किंतु सरकार कोई अवसर प्रदान नही कर रही थी। परिणामत: जब दिसंबर 1929 में लाहौर कांग्रेस की बैठक हुई तब लोग बहुत उत्तेजित थे और नेताओं के पास स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित करने के अतिरिक्त शेष कोई चारा नहीं था।

स्वतत्रता मे ब्रिटिश नियंत्रण के पृथकरण की बात थी--वह एक कड़वी गोली थी जिसे पचाना भी कठिन कार्य था। कांग्रेस ने निर्विवाद रूप से इस प्रस्ताव को स्वीकार लिया और 9 वर्ष से चली आ रही इस ढुल-मुल नीति को समाप्त कर दिया, तब हमारे देश के मध्यमार्गी लोगों में जागृति आई। हमारे नेताओं ने उन्हें भरोसा दिलाने के लिए सुंदर मुहावरों और आकर्षक नारे गढ़ लिए। हमें बताया गया कि स्वतंत्रता का अर्थ पूर्ण स्वराज है, (जिसको प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुविधानुसार अर्थ दे सकता है।) महात्मा गाधी ने सन 1930 में अपना प्रसिद्ध ग्यारह सूत्रीय कार्यक्रम बनाया जो उनके अनुसार स्वतत्रता का सार था और जिसके आधार पर सुगमता से ब्रिटिश सरकार से समझौता किया जा सकता था। इस तरह नेताओं के इन कार्यों द्वारा लाहौर कांग्रेस द्वारा पारित स्वतत्रता प्रस्ताव का प्रभाव स्वत: ही व्यर्थ हो गया।

लाहौर कांग्रेस के पश्चात नेताओं के लिए अकर्मण्य बैठना कठिन हो गया। इसलिए 26 जनवरी, 1930 में स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाकर आंदोलन का शुभारंभ किया गया। अप्रैल तक पूरा भारत आंदोलन की गिरफ्त में आ गया (अहिंसक आंदोलन ही सही)। क्रियाशील होने के आह्वान का परिणाम इतना जबर्दस्त था कि महात्मा गांधी भी चकित हो गए और उन्हें यह कहना पडा कि यह आंदोलन दो वर्ष पूर्व शुरू किया जा सकता था।

1921 के आदोलन की ही भाति 1930 के आंदोलन से सरकार अचभित रह गई और बहुत दिन तक यह निर्णय नहीं कर पाई कि इस आंदोलन को दबाने के लिए क्या प्रभावशाली कदम उठाए जाएं। अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक और राजनैतिक स्थिति ने भी भारत की सहायता की। इसलिए मार्च 1931 के दिल्ली समझौते (गांधी-इरविन समझौता) के तहत कार्रवाई को स्थगित करना भारी भूल थी। यदि नेतागण समझौता करना भी चाहते थे तो उन्हें उपयुक्त समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए थी, और वह अवसर ज़रूर आता यदि छ: माह या एक वर्ष तक आंदोलन जारी रहता। एक बार फिर व्यक्तिवाद की जीत हुई *और दिल्ली समझौता करते समय उद्देश्यों पर ध्यान नहीं दिया गया। मैं तो यहां तक कह* सकता हूं कि यदि मार्च 1931 की स्थितियों को ध्यान में रखा जाता तो भी यदि हमारे नेताओं ने राजनीति और दूरदर्शिता से काम लिया होता तो अधिक उपयोगी मुद्दों पर समझौता किया जा सकता था।

किंतु वास्तविकता यह थी कि, यह समझौता सरकार के लिए तो लाभदायक सिद्ध हुआ, किंतु हम लोगों के लिए हानिकारक सिद्ध हुआ। सरकार को कांग्रेस द्वारा सन 1930 व 1931 में अपनाए गए तरीकों के अध्ययन का अवसर मिल गया जिससे उन्होने अपने तत्र को इस काबिल बना लिया कि जब भी कांग्रेस आंदोलन करे तो वे उसे दबाने में

कामयाब हो सके। अत: यह आवश्यक हो गया कि वर्ष 1931 की समाप्ति से पूर्व सरकार द्वारा जनवरी 1932 में पारित प्रस्ताव की तथा वर्ष भर अपनाए गए तरीको की खोज की जाए। कितु कांग्रेस ने क्या किया? इस तथ्य को जानने के बावजूद भी, कि सीमावर्ती प्रातो, संघीय प्रांतों तथा बगाल मे असतोष व्याप्त है, हमारे नेताओ ने सघर्ष जारी रखने की दृष्टि से देश को तैयार नही किया। यदि मैं यह कहूं कि यह सबकुछ युद्ध की स्थिति से बचने के लिए किया गया तो मैं गलत नहीं हू।

कुल मिलाकर दिल्ली समझौते ने कोई विशेष प्रभाव नहीं डाला, क्योकि लोगों का रुख इतना आक्रामक था कि वे नम्र नारों से शांत होने वाले नही थे। यदि ऐसा न होता तो मुझे पूरा विश्वास है कि तब नेतागण निश्चय ही शत्रुतापूर्ण रवैये को दबा देने मे सफल हो जाते। भविष्य के कार्यकर्ताओं को यह अवश्य जान लेना चाहिए कि 1932 का आदोलन नेताओं द्वारा ठीक रूप में नही चलाया गया, जैसा कि चलाया जाना चाहिए था, बल्कि जबर्दस्ती उन्हें इस आदोलन में खीच लाया गया था। यदि यह बात सही है तो, इसमे कोई आश्चर्य नही होना चाहिए अगर हमारे नेतागण 1932 जनवरी मे जिस सकटपूर्ण स्थिति मे डाले गए थे, आज उससे बचने का प्रयास करें।

यदि हम मार्च, 1931 के दिल्ली समझौते को बार-बार पढे तो वह एक दुखदायी दस्तावेज है-

1 *सबसे पहली बात तो यह है कि उसमें स्वराज जैसे महत्वपूर्ण विषय के सबध* में, ब्रिटिश सरकार की ओर से, आश्वासन का एक भी शब्द नही है।

2 दूसरी बात यह कि भारतीय राजाओं के साथ फेडरेशन (सघ) के प्रस्ताव की मौन स्वीकृति शामिल है, मेरे विचार मे यह प्रस्ताव देश की राजनीतिक प्रगति मे बाधक है।

3 इसमे उन बंधक बनाए गए अहिंसक दूतों, गढ़वाली सैनिकों की रिहाई का कोई प्रावधान नही, जिन्होंने अपने निहत्थे देशवासियो पर गोली चलाने से इंकार कर दिया था।

4 उन राज्यबदियों या नजरबदियों की रिहाई का भी प्रावधान नही, जिन्हे बिना मुकदमा चलाए, बिना कसूर के बदी बना कर रखा गया था।

5 पिछले कई वर्ष से चले आ रहे मेरठ षड्यंत्र काड को वापस लेने का कोई प्रावधान नही।

6 उन राजनैतिक बदियों, जिन्होंने लोक अवज्ञा आंदोलन मे भाग नही लिया, की रिहाई का कोई प्रावधान नही।

अत. यह स्पष्ट है कि दिल्ली समझौते के अंतर्गत, गढ़वाली सैनिको, राज्यबंदियो, मेरठ षड्यत्रकाड तथा क्रातिकारी बधकों, आदि के विषय में किसी प्रकार की चर्चा नही की गई, इससे पता चलता है कि स्वयं को उपनिवेशवाद के विरुद्ध सघर्ष करने वाली केंद्रीय पार्टी मानने वाली, राष्ट्रीय कांग्रेस ने केवल सत्याग्रहियों का प्रवक्ता व प्रतिनिधि होना ही स्वीकारा ।

यदि मार्च 1931 का दिल्ली समझौता बड़ी भूल थी तो मई 1933 का आत्मसमर्पण दुर्भाग्य था। राजनीतिक युद्धनीति के सिद्धांतों के अनुसार तो लोक अवज्ञा आंदोलन को और अधिक सुदृढ़ कर सरकार पर दबाव डाला जाना चाहिए था जबकि उस समय भारत के नए संविधान की रूपरेखा पर चर्चा चल रही थी। ऐसी नाजुक स्थिति में आंदोलन को स्थगित कर देने से सारा कार्य, संघर्ष और राष्ट्र की तपस्या, जो पिछले तेरह वर्ष में की गई थी, व्यर्थ हो गई। दुःखद स्थिति तो यह है कि जो लोग इस विश्वासघात के विरुद्ध कडे शब्दों में अपने विचार व्यक्त कर पाते वे जेल में बंदी बना कर रखे गए हैं। जो जेल से बाहर हैं वे महात्मा गांधी के 21 दिन के उपवास के कारण अधिक विरोध नही कर पाए।

किंतु ढाचा बन चुका है। लोक अवज्ञा आंदोलन को एक माह स्थगित करने का अर्थ है सदा के लिए दबा देना, क्योंकि इतने लोगों की भागीदारी एक रात में नहीं बनाई जा सकती। अतः अब हमारे सामने समस्या यह है कि इस दुःखद स्थिति से कैसे निपटा जाए और भविष्य के लिए क्या योजनाएं अपनाई जाएं।

इस समस्या को हल करने से पूर्व हमें दो प्रश्नों के उत्तर और देने होंगे

(1) हमारे उद्देश्य के अंतर्गत क्या इंग्लैंड व भारत के बीच समझौता सभव है।

(2) हमारी नीतियों को देखते हुए समय-समय पर समझौते करके अथवा बिना समझौतों के अक्रामक रुख अपनाकर राजनीतिक स्वतत्रता प्राप्त की जा सकती है?

पहले प्रश्न के उत्तर में मैं कहना चाहूंगा कि यह समझौता सभव नही है। राजनैतिक समझौता तभी सम्भव है जब दोनों के रास्ते एक हों। किंतु भारत और इंग्लैंड के संदर्भ में रास्ते कतई एक नही है इसलिए इन दो राज्यों में समझौता असभव है, जैसा कि निम्न बातों से भी स्पष्ट होता है-

(1) दोनों देशों के मध्य सामाजिक रूप में कोई साम्य नहीं है।

(2) भारत और ब्रिटेन की सस्कृति में कोई साम्यता नहीं है।

(3) आर्थिक दृष्टि से, भारत ब्रिटेन को कच्चा माल उपलब्ध कराने का माध्यम मात्र है जबकि उपभोक्ता स्वयं ब्रिटेन है दूसरी ओर भारत स्वयं निर्माता बनना चाहता है ताकि पक्के माल का निर्माण करने में वह आत्मनिर्भर हो सके और न केवल कच्चे माल का अपितु पक्के माल का भी निर्यात कर सके।

(4) आजकल भारत ग्रेट ब्रिटेन के लिए सबसे बड़ा खरीददार है। इसलिए भारत का औद्योगिक विकास ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति के लिए हानिकारक है।

(5) भारत की सेना और प्रशासनिक सेवाओं में फिलहाल ब्रिटिशवासियों को नौकरिया मिली हुई हैं। किंतु इससे भारत को हानि है, भारत चाहता है कि उसके अपने बालक-बालिकाए इन पदों पर आरूढ़ हों।

(6) भारत पूर्णतः आत्मनिर्भर है और ग्रेट ब्रिटेन की किसी भी प्रकार की सहायता

के बिना भी अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है इस दिशा मे अन्य सघों की अपेक्षा भारत की स्थिति अधिक मजबूत है।

(7) ब्रिटेन ने भारत को एक अरसे से दबाया और शोषित किया है, अतः यह भय सत्य है कि यदि दोनों देशों के मध्य कोई राजनीतिक समझौता हुआ तो भारत को हानि होगी और ब्रिटेन को लाभ पहुंचेगा। इतने वर्षों की गुलामी के बाद भारत में हीनभावना पैदा गई है और यह तब तक दूर नही हो सकती जब तक कि वह ब्रिटेन साम्राज्य से पूर्ण मुक्त न हो जाए।

(8) भारत पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा चाहता है, जिसमें उसका स्वय का झडा हो, अपनी सेना हो, आर्मी, नेवी ओर वायुसेना, तथा सभी स्वतंत्र देशों की राजधानियो मे उसके अपने राजदूत हों। इस जीवनदायी की और शक्तिवर्धक स्वतंत्रता के बिना भारतवासियो को आत्म सतुष्टि नही होगी। भारत के लिए स्वतत्रता मनोवैज्ञानिक, नैतिक, सास्कृतिक, आर्थिक व राजनैतिक आवश्यकता है । भारत में नए जागरण की यह आवश्यक शर्त है । आज के बाद भारत में स्वतत्रता का अर्थ सघीय राज्य नही, जैसा कि कनाडा या आस्ट्रेलिया मे है, बल्कि पूर्ण स्वतत्रता है जैसी सयुक्त राज्य अमेरीका अथवा फ्रास में है।

(9) जब तक भारत ब्रिटिश साम्राज्य के नियंत्रण से मुक्त नहीं हो जाता तब तक वह ब्रिटिश राज्य के अधीन स्थानों मे रह रहे भारतवासियों के हित में कोई कदम नही उठा सकता। ग्रेट ब्रिटेन का झुकाव सदा गोरों के साथ रहा है और रहेगा भी, जो भारत के विरुद्ध है दूसरी ओर स्वतत्र भारत अपने उन लोगों के हित में, अधिक गभीरता से कदम उठा पाएगा, जो ब्रिटिश राज्य अधीन देशों में रह रहे है।

इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि भारत व ग्रेट ब्रिटेन के मध्य समझौता सभव नही है परिणामतः यदि भारतीय नेता इस तथ्य को नकारकर ब्रिटिश सरकार के साथ समझौता कर भी लेते है तब भी वह अधिक समय तक चलने वाला नहीं। मार्च 1931 के गांधी-इरविन समझौते की भाति ही यह भी अल्पायु सिद्ध होगा। भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शक्तिया जो भारत के भीतर रहकर कार्य कर रही हैं वह ऐसी है कि ये भारत और ब्रिटेन के मध्य तब तक समझौता नहीं होने देगी जब तक कि भारत की वैधानिक आकाक्षाए परिपूर्ण नही हो जाती।

वर्तमान गतिरोध का हल भारत की स्वतत्रता में निहित है। जिसका अर्थ है भारत मे ब्रिटिश साम्राज्य की पराजय। अब हमें भली-भांति सोचना होगा कि भारत स्वतंत्रता कैसे हासिल कर सकता है।

दूसरे प्रश्न अर्थात कौन सी विधि अपनाई जाए-के जवाब मे मैं कहना चाहूगा कि देश ने छोटे-मोटे समझौते करना भी अब अस्वीकार कर दिया है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भी देशवासियों का सहयोग इसलिए प्राप्त हो रहा था क्योंकि कांग्रेस ने स्वतंत्रता दिलाने का वादा किया था, और जब तक आजादी नहीं मिल जाती संघर्ष करते रहने की बात की थी। इसलिए भविष्य की नीति व योजना का निर्धारण करते समय हमें हमेशा के लिए, समय-समय पर समझौते करने की प्रवृत्ति को छोड़ देना पडेगा।

कांग्रेस को आशा थी कि वह सिविल प्रशासन को असहयोग व अवज्ञा आदोलन की सहायता से पगु बनाकर राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल कर लेगा। भविष्य में सफल होने की दृष्टि से हमें उन कारणों का विश्लेषण करना आवश्यक है जिनकी वजह से हम अपने उद्देश्य में असफल रहे।

आज भारत में ब्रिटिश सरकार की स्थिति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तुलना मे ठीक उस हथियारबद सेना की तरह है जो विजय की कगार पर पहुचकर अचानक विरोधी हो गई है। कितना भी हथियार बद किला क्यों न हो किंतु उसके सुरक्षित अस्तित्व के लिए चारों ओर बसे लोगो का मैत्रीपूर्ण रवैया अति आवश्यक है। किंतु यदि चारो ओर के लोग विरोधी हो जाए तब भी खतरे की कोई बात नहीं जब तक कि वे किले को जीतने के लिए आक्रामक रवैया नहीं अपनाते। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस किले के निकरवर्ती लोगों की पूरी सहानुभूति व सहयोग जीतने मे सफल रही है। भारत की ओर से यह आदोलन की प्रथम सीढी है । दूसरी सीढी के लिए निम्न दोनों मे से एक कदम उठाया जाना चाहिए।

1 साम्राज्य को आर्थिक रूप से पूर्ण असहयोग, जिससे वहा की सेना भूखो मरकर आत्मसमर्पण कर देगी।

2 सेना और हथियारों की सहायता से किले पर कब्जा।

इतिहास साक्षी है कि दोनों विधियों से सफलता मिली है पिछले महायुद्ध मे सैन्यदृष्टि से जर्मनी विजयी हुआ किंतु मित्र राष्ट्रों की आर्थिक सहायता के अभाव मे उसे आत्मसमर्पण करना ही पडा। यह इसलिए सभव हो पाया क्योंकि मित्र राष्ट्रों का समुद्र और जर्मनी तक पहुचने वाली सचार सेवाओं पर पूर्व आधिपत्य था।

भारत में शत्रु को किले को हथियारों द्वारा जीतने का कोई प्रयास अभी तक नही हुआ है क्योंकि कांग्रेस की नीति सदा अहिंसक रही है। कांग्रेस द्वारा सामान्यरूप में आर्थिक विघ्न निम्न कारणों से सभव नही हो पाया।

क. भारत की सभी बाह्य सचार प्रणालियां सरकार के अधीन है।

ख भारत के अदर त्रुटिपूर्ण सगठन, तथा एक बंदरगाह से देश के दूरदराज इलाको तक पहुचने वाली सचार प्रणाली पर कांग्रेस की अपेक्षा सरकार का नियत्रण।

ग राजस्व एकत्र करने वाले तंत्र-जिन पर भारत मे ब्रिटिश राज्य का अस्तितत्व निर्भर है-के विषय में गभीरता से कोई विचार नहीं किया गया। अधिकाश राज्य घाटे में है, अत: सरकार या तो कर बढा देती है या फिर उधार लेती है।

यह सदैव याद रखने की बात है कि राष्ट्रीय आदोलन को सफल बनाने के लिए और विदेशी सरकार को निष्क्रिय करने के लिए निम्न कदम उठाने अति आवश्यक है।

1 करों व राज्य की आय को बचाना।

2 ऐसे माध्यमों को अपनाना, जिनकी सहायता आर्थिक या सैन्य-सरकार को निराशा के क्षणों में प्राप्त होती हो ।

3 भारत ब्रिटिश सरकार के शुभचिंतको की सहानुभूति व सहयोग जीतने की कोशिश जैसे सेना, पुलिस व सिविल सेना अधिकारी ताकि आंदोलन को दबाने के लिए सरकार द्वारा दिए गए आदेशो का अनुपालन न हो सके।

4. सैन्य बल पर असली शक्ति पर कब्जा स्थापित करना।

अंतिम कदम को छोड दिया जा सकता है क्योकि काग्रेस अहिंसा के प्रति वचनबद्ध है किंतु यदि हम निम्न तरीके नही अपनाएगे तो हम वर्तमान प्रशासन को आत्म-समर्पण करने के लिए बाध्य नहीं कर पाएगे।

1 कर तथा राजस्व सग्रह करने पर रोक।

2. मज़दूर एव किसान सगठनों को सरकार तक पहुंचाई जा रही सहायताओ को रोकने का आग्रह कर।

3 अपने प्रचार की सहायता से सरकार के सहायकों की सहायता व सहानुभूति प्राप्त करना।

यदि उपर्युक्त तीन तरीके भी अपना लिए गए तो सरकारी तत्र को छिन्न-भिन्न किया जा सकता है । प्रथम तौर मर उनके लिए प्रशासनिक व्यय वहन करना कठिन हो जाएगा। दूसरे, उनके आदेशो की उनके अपने अधिकारी अवहेलना करेगे। और अत मे अन्य क्षेत्रो से मिलने वाली सहायता सरकार तक नही पहुंच पाएगी।

राजनीतिक स्वतत्रता पाने का कोई अन्य आसान मार्ग नहीं है। यदि जीत प्राप्त करनी है तो उपरोक्त तरीको को पूर्णरूप में या एक-एककर अपनाना आवश्यक होगा। काग्रेस की हार की वजह यही थी कि वह इन तीन तरीकों में से एक भी तरीका अपना नही पाई। शातिपूर्ण बैठकों, जुलूसो ओर प्रदर्शनों ने, जो पिछले कुछ वर्षों से चले आ रहे है, सरकारी प्रतिबध के बावजूद, कुछ असर तो पैदा किया है और सरकार को नाराज भी किया है, किंतु वे सरकार के अस्तित्व को कोई खतरा नहीं पहुचा पाए हैं। हमारे सभी प्रदर्शनों व जनवरी 1932 से 70 हजार लोगों की गिरफ्तारी के बावजूद भी ब्रिटिश सरकार कह सकती है कि-

1. उनकी सेना उनके प्रति वफादार है।

2. उनका पुलिस बल पूर्ण ईमानदार है।

3. उनका सिविल प्रशासन (राजस्व एवं कर एकत्र करने वाला विभाग, न्यायालय, कानून और जेल प्रशासन) अभी उनका हितैषी है।

4. सरकारी अधिकारियों का जीवन और सपत्ति अभी तक पूर्ण सुरक्षित है।

सरकार शेखी बघार सकती है कि यदि भारत की सामान्य जनता उसकी विरोधी भी हो तब भी कोई फर्क नही पडता। जब तक हम लोग आक्रामक रुख अपनाकर, आर्थिक असहयोग द्वारा सरकार पर दवाब नही डालेंगे तब तक वर्तमान सरकार अनन्त काल तक चलती रहेगी, हम चाहे जितने भी असहयोग या अवज्ञा आदोलन क्यों न कर लें।

पिछले दशक के दौरान पूरे भारत में एक अभूतपूर्व जागृति पैदा हुई है । लोगों का शात शिष्टाचारपूर्ण आचरण बदला है सारे राष्ट्र में नवजीवन का संचार हुआ है और व आजादी के लिए उत्सुक है। सरकारी धमकियों, गिरफ्तारियों और लाठीचार्ज आदि लुप्त हो चुके है। ब्रिटिश सरकार की साख गिर चुकी है। भारतवासियों में ब्रिटिश सरकार के प्रति कोई लगाव नही रहा है। ब्रिटिश साम्राज्य का मूल आधार लडखड़ा चुका है और अब वे नंगी तलवार पर खडे हैं। भारत ने संपूर्ण विश्व का विश्वास हासिल कर लिया है।

किंतु इस तथ्य से इकार नहीं किया जा सकता कि 'आजाद भारत' अभी भविष्य की बात है। हाल ही मे प्रकाशित 'सफेद दस्तावेज' मे भारत के प्रति ब्रिटिश साम्राज्य का रवैया यह स्पष्ट करता है कि वे अभी भी इस शक्ति से पृथक होने के इच्छुक नही हैं। यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश सरकार अभी भी यही समझती है कि वह भारतवासियो की माग को दबा देने में पूर्ण सक्षम है। और यदि वे हमें दबाने मे पूर्ण सक्षम हैं तो स्पष्ट है कि 1920 से चले आ रहे भारतवासियों के कठोर परिश्रम का कोई लाभ नही और हमें हमारे उद्देश्य 'स्वराज, के निकट पहुचाने में असमर्थ सिद्ध हुआ ।

इसलिए भारत को एक और सघर्ष बड़े पैमाने पर नए सिरे से छेड़ना होगा। इसके लिए बौद्धिक व व्यावहारिक स्तर पर वैज्ञानिक रुख अपनाना होगा और विषय वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान रखना होगा। बौद्धिक तैयारी के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जाने आवश्यक हैं–

1 भारतवासियो की तुलना में ब्रिटिश साम्राज्य की अच्छाइयो का वैज्ञानिक परीक्षण किया जाना चाहिए।

2 ब्रिटिश साम्राज्य की तुलना में भारतवासियों की अच्छाइयों व बुराइयो का वैज्ञानिक परीक्षण।

3 विश्व के अन्य भागों में साम्राज्यों के उत्थान एव पतन का वैज्ञानिक परीक्षण।

4. अन्य देशों में स्वतत्रता सघर्ष का इतिहास का वैज्ञानिक अध्ययन और इस विश्व मे स्वतत्रता के मथर विकास का अध्ययन।

जब तक यह अध्ययन पूरा न हो जाए तब तक हम उस कार्य की गहनता को नही माप सकते जो हमारी प्रतीक्षा में है।

हमारी अगली आवश्यकता उन स्त्री व पुरुषों की खोज करना है जो भारत के लिए पूर्ण समर्पण करने को तैयार हों। उसमें चाहे कितना भी कष्ट या बलिदान क्यों न देना पड़े। भारत का आजादी प्राप्त करना और उसे बनाए रखना इस बात पर निर्भर करेगा कि वह आवश्यक नेतृत्व खोज पाता है या नहीं। उसके नेता खोज निकालने की योग्यता पर ही उसके स्वराज पाने की योग्यता या पात्रता निर्भर है।

अगली आवश्यक वैज्ञानिक क्रिया नीति खोजना और भविष्य के लिए वैज्ञानिक कार्यक्रम बनाना है । आज ही से क्रिया-पद्धति की शुरुआत होनी चाहिए जो विजय प्राप्ति तक चलेगी। उस विधि को हमें आज यथासभव रूप में दृष्टिगत करना होगा। भविष्य की

क्रिया उद्देश्यो व वैज्ञानिक दृष्टि पर आधारित होनी चाहिए जिसमे ऐतहासिक तथ्य और मानवीय प्रकृति का पक्ष भी शामिल हो। इसलिए आत्मप्रकाश पर अत्याधिक बल दिया गया है और राजनैतिक आदोलन को चालित करने के लिए उद्देश्यगत विचारो की आवश्यकता है।

कार्य पद्धति केवल सत्ता प्राप्त कराने में ही सहायक नहीं होगी बल्कि भारत मे नई सत्ता के आ जाने पर कार्यक्रम रूप में भी सहायक सिद्ध होगी। कुछ भी अवसर पर नही छोडना होगा।

ग्रेट ब्रिटेन से सघर्ष करने वाले स्त्री-पुरुषो को ही नेतृत्व सभालना होगा और सत्ता प्राप्त कर लेने के बाद राज्य और राज्य के द्वारा देशवासियों पर, नियंत्रणकर मार्ग दिखाना होगा। यदि हमारे नेताओं को युद्ध के पश्चात के नेतृत्व के लिए तैयार नही किया गया तो सभावना हो सकती है कि सत्ता पाने के बाद अराजकतता फैल जाए और भारत की भी वही दशा हो, जो 18वी सदी में फ्रास की राज्यक्राति में हुई थी। इसलिए यह स्पष्ट किया जाना आवश्यक है कि युद्ध के दौरान चुने गए योद्धाओ को युद्ध के बाद भी कार्यक्रम चलाए रखना होगा और युद्ध के दौरान देशवासियों को दिए गए आश्वासनो और आशाओ पर खरा उतरना होगा। इन नेताओं का कार्य तब तक समाप्त नही होगा, जब तक कि नए राज्य की स्थापना के बाद स्त्री व पुरुषों की नई पीढी को शिक्षित और प्रशिक्षित न कर दिया जाए और वे देश की जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठाने के योग्य न हो हो जाए।

भविष्य की पार्टी, भारतवासियों के वर्तमान नेताओं से पृथक होगी, क्योंकि इस बात की कोई सभावना नहीं है कि ये लोग ग्रेट ब्रिटेन से कड़े संघर्ष के लिए सिद्धात, कार्यक्रम नीति और कूटनीतियो का अनुपालन करने में सक्षम सिद्ध हो पाएंगे। इतिहास मे ऐसा कोई प्रमाण नही मिलता जिससे पता चले कि एक काल के नेता दूसरे काल मे भी कार्यरत हो। समय के अनुरूप पुरुष तैयार हो जाते हैं, ऐसा ही भारत में भी होगा।

नई पार्टी के लोगों को ब्रिटेन विरोधी राष्ट्रीय आंदोलन में नेतृत्व और योद्धाओ की भूमिका निभानी होगी तथा नए भारत के निर्माताओं के रूप मे भी कार्य करना होगा, जिनकी युद्ध के बाद सामाजिक पुनर्निर्माण मे कार्य करने हेतु आवश्यकता पडेगी। भरतीय आदोलन दो स्तरो पर होगा। पहले स्तर पर ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध राष्ट्रीय सघर्ष होगा–यद्यपि इसकी बागडोर–'पार्टी फार द पीपल' के नेताओं के हाथ में होगी जो श्रमिको व अतरजातीय सघर्ष का नेतृत्व करेगे। इस आदोलन के दौरान सभी सुविधाओ, वैशिष्ट्यवाद तथा निहित स्वार्थों को जड से मिटाया जाएगा। ताकि पूर्ण समानता (सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक) की देश मे स्थापना हो सके। भविष्य में विश्व इतिहास में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। हम सभी जानते है कि सत्रहवी सदी में इंग्लैंड ने अपने विचारो, सवैधानिक और लोकतत्रीय सरकार के माध्यम से विश्व सभ्यता में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसी प्रकार अठारहवी सदी मे, फ्रास ने अपने 'आजादी–समानता और बधुत्व' के नारे से विश्व की सस्कृति में अपना उपयोगी योगदान दिया। उन्नीसवीं सदी में फ्रास ने विश्व को मार्क्सवादी दर्शन का उपहार दिया। बीसवी सदी में रूस ने अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धि, सर्वहारा क्राति, सर्वहारा सरकार और सर्वहारा संस्कृति के द्वारा विश्व की सस्कृति व सभ्यता को समृद्ध

किया। अब विश्व की सस्कृति व सभ्यता को महत्वपूर्ण योगदान से समृद्ध करने की बारी भारत की है।

प्राय: हमारे ब्रिटिश मित्र यह बताते रहते हैं कि ब्रिटिश की जनता भारतवासियों के साथ है फिर भी यदि हम प्रचार द्वारा उनकी सहानुभूति अधिकाधिक प्राप्त कर सकें तो अधिक लाभ मिलेगा। यद्यपि मुझे यह विश्वास नहीं होता कि वे हमारे प्रति चिंतित हैं क्योकि यह सभव नही है। भारत में शोषण ब्रिटिश पूजीपतियों या उद्योगपतियों द्वारा नही हो रहा बल्कि संपूर्ण भारत का सपूर्ण ग्रेट ब्रिटेन द्वारा किया जा रहा है। भारत में लगाई गई पूजी केवल उच्च वर्ग की नहीं है बल्कि मध्यम वर्ग तथा कुछ न कुछ निर्धन वर्ग की भी है । यहा तक कि ग्रेट ब्रिटेन का श्रमिक वर्ग तो लकाशायर के खर्चे पर चल रहे कपडा उद्योग की देख-रेख भी नहीं कर सकता। इसी कारण से ग्रेट ब्रिटेन मे राजनैतिक पार्टियों में भारत को एक पार्टी नही बनाया गया। इसी वजह से लदन में लेबर पार्टी के प्रशासन के बावजूद भी भारत में दमन और उत्पीड़न जारी रहा। मैं जानता हू कि लेबर पार्टी में कुछ सदस्य ऐसे हैं जो व्यक्तिगत रूप से भारत के शुभचिंतक हैं और भारत के प्रति इसाफ करना चाहते हैं। किंतु हम उनकी कितनी भी प्रशसा क्यों न कर लें या उन लोगो से हमारी कितनी भी आत्मीयता क्यो न हो, इतना तो स्पष्ट है कि वे लोग पार्टी के निर्णयो मे दखल नही दे सकते। हमारे पहले अनुभवों के आधार पर भी हम यह मान सकते हैं कि, डाउनिंग स्ट्रीट में सरकार बदल जाने मात्र से भारत की स्थिति मे कोई अतर पड़ने वाला नही है।

भारत में राजनीति और अर्थनीति दोनों एक दूसरे से गुंथी हुई हैं और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य केवल राजनीतिक तौर पर ही नही बल्कि आर्थिक तौर पर भी छाया है-अत: राजनैतिक स्वतत्रता हमारी आर्थिक आवश्यकता है। जब तक हमारा देश गुलाम रहेगा तब तक हम कपड़ा, शिक्षा, लाखों भूखों को भरपेट खाना उपलब्ध कराना, राष्ट्रवासियों के स्वास्थ्य की उन्नति आदि जैसी समस्याओं का समाधान नहीं खोज पाएंगे। राजनैतिक रूप से स्वतंत्र हुए बिना, भारत में आर्थिक और औद्योगिक उन्नति के विषय मे सोचना घोडे के आगे गाडी जोतने के समान है। प्राय: हमसे यह प्रश्न पूछा जाता है कि भारत से ब्रिटिश साम्राज्य की समाप्ती के बाद भारत की आंतरिक दशा कैसी होगी। ब्रिटिश प्रचार को धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने विश्व के सम्मुख, भारत की उस देश के रूप मे तस्वीर खडी कर दी है जिसमें कई आंतरिक सघर्ष चल रहे हैं और शाति ब्रिटिश सरकार की वजह से ही स्थापित है। पहले भारत में भी अन्य देशों की भाति आतरिक सघर्ष विद्यमान था। किंतु उन विवादों को भारतवासियों ने स्वयं ही हल कर लिया है। इसी कारण प्राचीन काल से ही भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि अशोक महान के साम्राज्य के अंतर्गत पूरे देश में शांति और संपन्नता का साम्राज्य था। आज के विवाद स्थायी है जिन्हें विदेशियों ने जानबूझकर बढा-चढा रखा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जब तक भारत में ब्रिटिश साम्राज्य रहेगा तब तक भारतवासियों में एकता लाना असभव कार्य है।

यद्यपि हम इग्लैंड की किसी राजनीतिक पार्टी से कोई आशा नहीं कर सकते फिर

भी यह तो आवश्यक है कि हमें अपने उद्देश्य की प्रतिपूर्ती के लिए भारत की ओर से अतर्राष्ट्रीय प्रचार करना चाहिए। यह प्रचार पक्ष और विपक्ष दोनों मे ही होना चाहिए। विपक्ष में हम उन सभी आरोपों का खडन कर सकते हैं जो ब्रिटिश सरकार ने विश्व भर में जानबूझकर या अनजाने मे भारत के विरुद्ध लगाए है। पक्ष में, हम भारतीय सस्कृति के सभी पक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं और भारत की शिकायतों की चर्चा कर सकते हैं। यहा यह कहना आवश्यकता नही कि अतर्राष्ट्रीय प्रचार का केंद्र लदन होना चाहिए। बहुत खेद का विषय है कि अभी तक भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस अतर्राष्ट्रीय प्रचार के महत्व और आवश्यकता को जान नही पाई है किंतु हमें विश्वास है कि हमारे देशवासी आने वाले दिनों मे अतर्राष्ट्रीय प्रचार के बढते महत्व को पहचानेंगे।

ब्रिटिश साम्राज्य की प्रचार नीति का मैं अत्यधिक कायल हू। ब्रिटिशवासी पैदाइशी प्रचारक होते हैं और उनके लिए होविट्ज़र तोप से भी अधिक महत्वपूर्ण प्रचार होता है। यूरोप मे एक और देश ने ब्रिटेन से यह गुर सीख लिया है और वह देश है रूस। इसमे दो राय नहीं कि ब्रिटेन हृदय से रूस से घृणा करता है और मन ही मन भयभीत भी है कि उन्होंने उनकी (ब्रिटेन) सफलता का रहस्य जान लिया है।

इस विश्व मे ब्रिटिश एजेटो द्वारा भारत विरोधी प्रचार इतने प्रबल रूप मे किया गया है कि यदि हमने भारत की शिकायतें व इसकी सही स्थिति विश्व के सामने रखी तो हमे तत्काल अतर्राष्ट्रीय सहानुभूति प्राप्त हो सकेगी। इस संबध मे मैं कुछ विषयो पर प्रकाश डालना चाहूगा जिनके द्वारा हम पूरे विश्व में प्रचार कर सकते है।

1 भारत में राजनैतिक बदियो के साथ दुर्व्यवहार और लंबे समय से बदी बनाकर रखे गए राजनैतिक बदियों को अस्वास्थ्यकर स्थान अडेमान द्वीप पर स्थानातरित करना, जहा दो कैदी भूख हडताल से हाल ही में मर चुके हैं।

2 भारतवासियो को पासपोर्ट देने में सरकार की अत्यधिक दडात्मक नीति (विदेश मे यह जानकारी तक नही है कि विदेश जाने के लिए हज़ारों लोगों को पासपोर्ट देने से इकार कर दिया जाता है और विदेश में रह रहे भारतीयों को भारत लौटने के पासपोर्ट नही दिए जाते)।

3 भारत में, विशेष रूप से उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्रो में ग्रामवासियो को भयभीत करने के लिए वायुयान की सहायता से योजनाबद्ध तरीके से बम गिराया जाना।

4 भारत में ग्रेट ब्रिटेन के राज्यकाल के दौरान भारत के घरेलू उद्योगों-जहाज बनाने की कपनी सहित-को समाप्त करना।

5 साम्राज्यवादी महत्व की किसी भी योजना का, ओटावा अनुबध सहित, खुले तौरपर विरोध (विश्व को बताया जाना चाहिए कि भारत ने कभी भी ओटावा समझौते को स्वीकार नही किया बल्कि यह जबरदस्ती हम पर लादा गया है)।

6. किसी भी प्रकार के कर प्रस्ताव का खुलकर विरोध क्योंकि भारत अपने लघु उद्योगो का बचाने का इच्छुक है।

7 भारत के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर इंग्लैंड द्वारा विनिमय दरों का निर्धारण। विश्व को मालूम होना चाहिए कि ग्रेट ब्रिटेन ने किस प्रकार विनिमय दरो का मनमाना निधार्रण कर भारत को करोड़ों रुपए की हानि पहुचाई है।

8. पूरे विश्व को इस तथ्य से भी आगाह किया जाना आवश्यक है कि ग्रेट ब्रिटेन ने भारत को ऋण के बोझ तले दबा दिया है जिसकी जिम्मेदारी भारतवासी उठाने को तैयार नही हैं। 1920 मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने गया अधिवेशन में सरकार को नोटिस दे दिया था कि वे इस कर्ज के जिम्मेदार नहीं हैं। यह तो सभी जानते है कि यह ऋण भारत के लाभ हेतु नही लिया गया वरन ब्रिटिश साम्राज्य के लिए लिया गया था।

यह अति आवश्यक है कि भारत की ओर से विश्व आर्थिक सम्मेलन और अपरमाणु सम्मेलन में प्रचार किया जाए। विश्व आर्थिक सम्मेलन के प्रत्येक सदस्य के सम्मुख सावधानी पूर्वक तैयार किया गया एक ज्ञापन रखा जाना चाहिए जिसमें भारत के प्रति ग्रेट ब्रिटेन की विरोधी आर्थिक नीति और उसके विरोध में भारतवासियों की आवाज स्पष्ट की जानी चाहिए।

शस्त्र-विरोधी नीति के प्रश्न पर, भारत को विश्व के सामने यह स्पष्ट रूप में कह देना चाहिए कि ब्रिटेन की विश्वसनीयता की परख भारत के सदर्भ मे की जा सकती है। एक ऐसी भूमि जहां पिछले 80 वर्ष से लोग निहत्थे हैं, जहां की पूरी आबादी पूर्णतया दुर्बल है, वहा केंद्रीय राजस्व की 50 प्रतिशत राशि सेना पर व्यय करने की क्या तुक है?

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि इस संबंध में पूरे तथ्य विश्व के सम्मुख पेश किए जाए तो इग्लैंड के विरुद्ध एक जबर्दस्त केस बनता है।

जब भी विश्व क्राग्रेस या विश्व सम्मेलन के सम्मुख भारत का मामला उठाया जाता है तो ग्रेट ब्रिटेन के समर्थकों द्वारा यह दलील पेश की जाती है कि जहा तक ब्रिटिश साम्राज्य का प्रश्न है यह भारत का घरेलू मामला है। इस स्थिति से अब भारतवासियों को इकार कर ही देना चाहिए। यदि भारत लीग ऑफ नेशंस का एक सदस्य है तो वह एक राष्ट्र है और उसे एक राष्ट्र वाले सब अधिकार और सुविधाएं मिलनी चाहिए। मैं जानता हूं कि विश्व के सम्मुख भारत की स्थिति ठीक करने के लिए कठिन परिश्रम और लगातार परिश्रम करना पड़ेगा। यह आवश्यक है कि इस प्रयास में अब अधिक देरी नही होनी चाहिए।

श्वेत पत्र की विषयवस्तु पर अधिक विचार-विमर्श करना मेरे लिए आवश्यक नही है। क्योंकि उसमे कोई परीक्षण का प्रश्न नहीं है। महाराजाओं के साथ सघ का प्रस्ताव असभव और अस्वीकार्य प्रश्न है। हमें तो सभी लोगों की एकता के लिए कार्य करना है। किंतु हम वर्तमान प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकते जिसमें लोकसभा में वर्तमान ब्लाक के लिए राजाओं को रखा जाए ताकि श्री रामसे, मैकडोनाल्ड अथवा लार्ड सैंकी की सनक को संतुष्ट किया जा सके। अतः 'स्वतत्रता' और 'सावधानी' की बात एक स्वर से कहना निरर्थक है। यदि हमें स्वतत्रता प्राप्त करनी है तो सुरक्षा का प्रश्न नही, क्योंकि स्वतत्रता ही एकमात्र ऐसी सुरक्षा है जो हमें प्राप्त करनी है। भारत के हित मे

सुरक्षा की बात करना स्वय को धोखा देना है।

अभी यह कहना कठिन है कि कब हमारा संविधान बनेगा जिसमें हमे–हमारे लोगो को कुछ अधिकार प्राप्त हो जाएगे तो लोग इस बात पर भी बल देंगे कि हमारे पास हथियार भी होने चाहिए। वे विश्व को, विशेषरूप से ब्रिटेन को कहेंगे कि वे स्वयं शस्त्र छोड दे वर्ना हमे भी हथियार सभालने होंगे। इस दुख से भरे विश्व के लिए स्वय शस्त्र अप्रसार नीति बहुत उपयोगी है, और भारत जैसे 80 वर्षों से गुलाम रहे लोगों को जबर्दस्ती हथियार छीनना एक अभिशाप है। भारत में शेखी बघारनेवाली पैक्स ब्रिटैनिका स्वस्थ जीवन की शान्ति नहीं बल्कि श्मशान की शाति है।

यदि नई पार्टी को अपने अस्तित्व की उपयोगिता सिद्ध करनी है तो उसे दोहरी भूमिका निभानी होगी जिसका जिक्र मैं पहले भी कर चुका हूं। राजनैतिक सत्ता का हस्तगत करने और उसका नए समाज निर्माण मे प्रयोग करने के लिए हमे आज ही स अपने लोगो को प्रशिक्षण देकर तैयार करना होगा। मुझे इसमें शक नहीं है कि भारत के स्वतत्र हो जाने पर, हमारी राष्ट्रीय जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए मूल विचार और नए प्रयोगो की आवश्यकता होगी तभी सफलता सभव है। पुरानी पीढी के अनुभव और पुरान शिक्षक अधिक उपयोगी सिद्ध नही होगे। स्वतत्र भारत की सामाजिक–आर्थिक स्थिति आज की स्थिति से बिल्कुल भिन्न होगी। उद्योग, कृषि, भूमि अधिग्रहण, धन, विनिमय, करेंसी, शिक्षा, जेल प्रशासन, जनस्वास्थ्य आदि के लिए नए सिद्धात और नई विधियो की खोज करनी होगी। उदाहरण के तौर पर हम जानते हैं कि रूस में एक नई राष्ट्रीय (अथवा राजनीतिक) आर्थिक नीति बनाई गई जो वहा की भूमि की अवस्था व तथ्यो के अनुरूप हो। वही स्थिति भारत की भी होगी। हमारी आर्थिक समस्याओं को हल करने मे पायगान और मार्शल अधिक सहायक नही होगे।

यूरोप और इग्लैंड में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुराने सिद्धातों के स्थान पर नए सिद्धात जन्म ले रहे हैं । उदाहरण के तौर पर सिल्वियो गैसल द्वारा जर्मनी के छोटे से वर्ग में 'फ्री-मनी' नाम की योजना लागू की गई जो बहुत संतोषदायक सिद्ध हुई। यही भारत में भी होगा। स्वतंत्र भारत सामाजिक व राजनीतिक लोकतत्र होगा। स्वतत्र भारत की समस्याए आज के भारत की समस्याओं मे अलग होंगी। अतः इसलिए हमें आज ही उन लोगों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है जो स्वतत्र भारत की कल्पना कर भविष्य की समस्याओं को हल करने की योजना बना सके। संक्षेप मे हम कह सकते हैं कि स्वतत्र भारत के भविष्य के मत्रिमडल को आज ही से शिक्षित और प्रगतिशील किया जाना आवश्यक है।

किसी भी बडे आदोलन की शुरुआत छोटी ही होती है। हमारा पहला कार्य ऐसे स्त्री व पुरुषों को एकत्र करना है जो किसी हद तक भी दुख और कष्ट सह सके और अपना बलिदान दे सकें, क्योंकि यदि हमें अपने उद्देश्य को प्राप्त करना है तो यह सब अति आवश्यक होगा। वे अपना पूर्ण समय इस आदोलन को देंगे- स्वतत्रता के नशे मे मस्त हो, जो असफलता से हतोत्साहित न हो, किसी भी प्रकार की कठिनाई से घबराए नही, केवल कार्य के प्रति वफादार हों और अपने जीवन के अतिम क्षणो तक इस महान

कार्य के लिए अपना बलिदान देने को तत्पर हों।

जब इस मानसिकता के लोग मिल जाएं तब उन्हें आवश्यक बौद्धिक प्रशिक्षण दिया जाना होगा ताकि वे अपने कार्य की गंभीरता को जान सकें। उन्हे बलिदान देना होगा और अन्य देशों के स्वतत्रता के इतिहास का अध्ययन करना होगा ताकि वे जान सके कि किन समस्याओं के समाधान के क्या तरीके अपनाए गए। ठीक इन्ही परिस्थितियों मे जिनमें आज हम घिरे हैं। उसके साथ-साथ उन्हें अन्य देशों के शासन के उत्थान और पतन का वैज्ञानिक और आलोचनात्मक इतिहास भी पढ़ना होगा। इस ज्ञान प्राप्ति के पश्चात उन्हे भारतवासियो के परिप्रेक्ष्य में ब्रिटिश साम्राज्य के व ब्रिटिश साम्राज्य के परिप्रेक्ष्य मे भारतवासियों के गुणों, अवगुणों का भी वैज्ञानिक और आलोचनात्मक अध्ययन करना होगा।

इस बौद्धिक प्रशिक्षण के पूर्ण होने पर ही हम विजय हासिल करने की योजना बना सकेंगे। वह कार्यक्रम भी तैयार कर पाएंगे जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात या सत्ता पा लेने पर नए राज्य में लागू किया जाना होगा। इससे स्पष्ट है कि हमें ऐसे स्त्री व पुरुषो की पार्टी बनानी होगी जो इस प्रयोजन के लिए वचनबद्ध हों, जिनके पास आवश्यक बौद्धिक प्रशिक्षण हो और जिन्हें स्पष्ट रूप से यह मालूम हो कि सत्ता पाने से पहले और सत्ता हासिल हो जाने के बाद उन्हें क्या कार्य करना है।

इस पार्टी का ही यह कार्य होगा कि वे विदेशी शिकजे से भारत को बाहर निकाले। भारत मे नए, स्वतंत्रता और प्रभुसत्ता संपन्न राज्य की स्थापना करना इसी पार्टी का कर्तव्य होगा। युद्ध के पश्चात सामाजिक आर्थिक पुनर्निर्माण का कार्यक्रम लागू करना भी इसी पार्टी का कर्तव्य होगा। यही पार्टी भारत में ऐसे स्त्री व पुरुषों की पीढ़ी तैयार करेगी जो जीवन के युद्ध मे हर कठिनाई का मुकाबला करने मे सक्षम हो। अतिम कार्य, विश्व के स्वतत्र देशो के मध्य भारत की छवि को उज्जवल रूप में स्थापित करना होगा।

इस पार्टी को हम 'साम्यवादी सघ' नाम दे सकते हैं। यह पूर्णरूप से अनुशासित एवं केंद्रीय (अखिल भारतीय) आल इडिया पार्टी होगी। इस पार्टी के प्रतिनिधि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, अखिल भारतीय व्यापार सघ कांग्रेस, महिला सगठन, युवा सगठनों, विद्यार्थी सगठनों, दलित वर्ग सगठनो के और यदि आवश्यकता महसूस हुई तो, अलगाववादी और सांप्रदायिक सगठनों, के भी सदस्य होंगे। विभिन्न क्षेत्रों व विभिन्न स्थानो में कार्यरत शाखाओ का नियंत्रण एवं मार्गदर्शन पार्टी की केंद्रीय समिति के हाथ में रहेगा।

यह पार्टी हर उस पार्टी के साथ सहयोग करेगी जो, थोड़ा बहुत या पूर्णरूप से, स्वतत्रता सग्राम में कार्यरत है। किसी व्यक्ति या पार्टी के प्रति यह पार्टी विद्वेष की नीति नही अपनाएगी, बल्कि इतिहास में उपर्युक्त वर्णित कार्य को, आवश्यकता पडने पर, अजाम देगी।

साम्यवादी सघ के जिन कार्यों का उल्लेख हमने ऊपर किया है, उनके अलावा इसकी शाखाए पहले-पहल देश में ही इसके उद्देश्यों, आदर्शों और योजनाओं का सामान्य प्रचार करेगी। साम्यवादी सघ, भारतवासियों की पूर्ण स्वतंत्रता- अर्थात सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक स्वतत्रता के लिए, सघर्ष करेगा। जब तक लोग पूर्णरूप से स्वतत्र नही हो जाते

तब तक हर प्रकार की गुलामी के विरुद्ध यह पार्टी संघर्षरत रहेगी। यह भारत को राजनैतिक स्वतत्रता दिलाएगी, ताकि, स्वतत्र भारत में न्याय, बराबरी और आजादी के आदर्शों पर, स्वतत्र भारत का सही रूप में निर्माण हो सके। यह भारत के उस उद्देश्य को पूर्ण करने में अपना पूरा योगदान देगी ताकि भारत विश्व को वह सदेश दे सके जो सदियो से उसकी परंपरा रही है।

विएना, प्राग, वारसा और बर्लिन के अनुभव

यूरोप मे अपने अल्पकाल के आवास के दौरान मुझे वहा के चार बडे नगरो- विएना, प्राग, वारसा और बर्लिन को देखने का अवर" मिला। निगम की कार्य प्रणाली मे मेरी सामान्य रुचि के कारण और कलकत्ता निगम से मेरा संबध होने के कारण, मैंने इन बडे शहरो के लोक विभागों और लोक उत्थान के कार्यो का बारीकी से अध्ययन किया।

इन सभी स्थानों पर वहा के मेयर ने मेरी अगवानी की और मेरे लिए ऐसी व्यवस्था उपलब्ध करा दी कि मैं जल विभाग, गैस विभाग, विद्युत विभाग, निगम विद्यालय, समाज कल्याण सस्थाओ आदि को ठीक प्रकार देख पाऊ। सभी शहरों के मेयर ने कलकत्तावासियो व कलकत्ता के मेयर को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं भी प्रेषित की। मैं कलकत्ता के मेयर को विएना, प्राग और वारसा के मेयर का सदेश तो भेज भी चुका हू और शीघ्र ही, बर्लिन के मेयर से सदेश प्राप्त होते ही, वह भी भेज दूंगा।

सभी शहरो में मैंने अनुभव किया कि न केवल वहा के मेयर बल्कि उनके अधिकारीगण भी दूर-दराज स्थित भारत की लोककल्याण सबंधी समस्याओं को सुलझाने मे अपनी सहायता देने को सदैव तत्पर है। भविष्य मे कभी भी आवश्यकता पड़ने पर हम अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए इनसे सहायता करने की प्रार्थना पूर्ण विश्वास के साथ कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त मैंने यह भी अनुभव किया कि उन सब में भारत के समीप आने की, उनसे सबध स्थापित करने की और जनजीवन सबधी समस्याओं के निवारण मे अपनी सहायता देने की वास्तविक इच्छा है।

इन सुप्रसिद्ध शहरो के भ्रमण के दौरान मैंने अनुभव किया कि इन यूरोपीय देशो की तुलना मे हमारे शहरों में भी यह क्षमता विद्यमान है कि वे अपनी समस्याओ का समाधान स्वय खोज सकते हैं। अत: यह आवश्यक है कि हम विभिन्न लाक निर्माण विभागों मे होने वाली हाल ही की उन्नति या विकास के सपर्क में रहे।

फिर भी ऐसा बहुत कुछ है जो हम इन प्रसिद्ध शहरों से सीख सकते है। इसे एक छोटे से लेख में समाहित कर पाना सभव नहीं है। मैं उन सभी मित्रो से, जो कलकत्ता निगम से सबद्ध हैं, अपील करता हू कि वे विश्व के बडे शहरों मे हो रही प्रगति का सूक्ष्म अध्ययन करें।

मैं कलकत्ता के मेयर और कलकत्ता निगम को पहले ही आश्वासन दे चुका हू कि इस क्षेत्र मे मेरी सेवाएं सदैव उपलब्ध रहेंगी। यदि वे चाहें तो, मैंने विएना और यूरोप के अन्य बडे शहरों में जो देखा और अनुभव किया उस पर एक पुस्तक लिख

सकता हूं। किंतु विशेष स्वीकृति के बिना मेरे लिए यह कार्य करना सभव नही है। इस कार्य मे न केवल राशि खर्च होगी बल्कि इसमें समय और शक्ति भी खर्च होगी जो अधिक महत्त्वपूर्ण है। मेरी वर्तमान आर्थिक दशा और स्वास्थ्य को देखते हुए, इस कार्य को प्रारभ करने से पूर्व मुझे यह आश्वासन मिलना आवश्यक है कि कलकत्ता के मेयर और कलकत्ता निगम ने अपनी स्वीकृति दे दी है।

25 नवबर, 1933
कलकत्ता निगम

1 मार्च, *1934*

सेवा में,
सपादक
मैनचेस्टर गार्जियन,

महोदय,

आपके 5 फरवरी के अक मे श्री जे.सी. फ्रेंच ने श्री नलिनी रजन सरकार को उद्धृत करते हुए अपने बयान में ज्वाइट पार्लियामेंटरी कमेटी के सम्मुख कहा है कि कलकत्ता नगर निगम दिवालिया हो गया है।

जैसा कि मैंने अपने पिछले पत्र में भी लिखा था कि विश्व सकट के कारण कलकत्ता निगम भी प्रभावित हुआ है। फिर भी वर्ष 1933-34 का पिछला बकाया 66,24,000 रुपये था जबकि आवश्यकता 6,00,000 रुपये की थी। रिपोर्ट के सदर्भ से स्पष्ट है कि श्री फ्रेंच ने तथाकथित घाटे का जो वर्णन किया है वह वर्ष की अनुमानित आय और व्यय को लेकर किया है। उन्होंने यह ध्यान नहीं दिया कि वर्ष की बकाया राशि इतनी ज्यादा है जो कि आय में शामिल की जानी चाहिए। वर्ष 1934-35 का बकाया 53,66,000 रु. होगा।

श्री सरकार ने अपनी रिपोर्ट में यह मांग की है कि वर्ष मे आय और व्यय मे सतुलन होना चाहिए ताकि बकाया राशि स्थायी राशि के रूप में बनी रह सके। कलकत्ता निगम का वर्ष का अनुमानित व्यय 2,56,82,000 रुपये है और वर्ष की बकाया राशि वार्षिक आय से 25 प्रतिशत अधिक है। श्री फ्रेंच को इसकी तुलना बंगाल सरकार के वार्षिक घाटे, 200,000,000 रुपए से करनी चाहिए, जो पिछले दशक से लगातार होता चला आ रहा है।

कलकत्ता निगम के स्कूलों में आतकवाद के पाठ पढ़ाए जाने के सदर्भ मे मैं कहना चाहता हू कि मैंने ऐसा कोई भाषण नही देखा या सुना जिसके विषय मे श्री फ्रेंच ने कहा है कि कलकत्ता निगम सशोधन बिल के विषय में बगाल विधानसभा मे 9 सितबर को मत्री महोदय ने दिया। 8 सितबर, 1933 को इस बिल को नियम बना दिया गया। बहरहाल 4 सितबर, 1933 को बगाल काउंसिल में श्री एच.पी.वी. टाउनेड, आई. सी. एस सेक्रेटरी द डिपार्टमेंट आफ लोकल सेल्फ गवर्नमेंट तथा बंगाल सरकार के प्रवक्ता ने यह जरूर कहा था-

यह सुझाव दिया गया है कि उन्होंने कहा है कि कलकत्ता निगम क्रातिकारी गतिविधियों को प्रोत्साहित कर रहा है यह सस्था सरकार विरोधी सस्था है। यह उनके भाषण की सही व्याख्या नही है। श्री टाउनेड ने आगे कहा कि इस बात को मानने के कई कारण हैं, कि निगम नियम की अवज्ञा को प्रोत्साहन दे रहा है। यह किसी ने नहीं सुझाया कि वह आतकवाद को प्रोत्साहित कर रहा है। (कलकत्ता निगम गजट, सितबर 1, 1933, पृष्ठ 6 प्रतिपूरक)

मैंने कलकत्ता निगम द्वारा आतक फैलाने के पक्ष या विपक्ष मे कुछ नही कहा है क्योंकि यह आरोप निराधार है। सशोधित बिल में किसी निगम कर्मचारी की सेवाए समाप्त करने का प्रस्ताव नही है और मेरे विचार मे सरकार ने यह बिल इसलिए पेश किया है क्योंकि कलकत्ता निगम ने पूर्व राजनीतिक बदियों को अपनी सेवा से सदा के लिए निष्कासित कर देने से इकार कर दिया है।

संशोधित बिल के अनुसार उन लोगों को अयोग्य सिद्ध किया है जो राज्य के विरोधी हैं या जो तीन माह या उससे अधिक समय जेल में रह चुके है। परिणामत. 2,000 बदी जो जेल में कैद हैं, पुराने नियम के अनुसार या नए विधान के अनुसार वे निगम की सेवा के योग्य हैं। वे काउसलर, एल्डरमान अथवा मेयर का चुनाव लड सकत हैं। सशोधित बिल के अनुसार, श्री सुरेंद्रनाथ बनर्जी, जिन्होंने मंत्री की हैसियत स वर्तमान निगम का गठन किया था, वे निगम की सेवा के अयोग्य हैं, यद्यपि वे कलकत्ता के मेयर बन सकते हैं ।

बाहर वालों के लिए यह आश्चर्यजनक बात है कि बगाल काउसिल का मत्री यह बयान दे रहा है कि यह बिल उन लोगों पर लागू नहीं होगा जो राजनैतिक अपराध करने के दोषी नही पाए जाएगे। राजनैतिक अपराध काग्रेस पार्टी की दृष्टि में वह नही है जो श्री फ्रेंच की दृष्टि में है। क्योकि वे जानते हैं कि आज यूरोप के कई देशो मे भूतपूर्व राजनैतिक बदियो का राज है । उदाहरण के लिए आयरलैंड, इटली, जर्मनी, रूस आदि मे। उनका यह भी विश्वास है कि आज जो कुछ भी हो रहा है उस सबके बावजूद भारत की सत्ता एक दिन कांग्रेस के हाथ में तो आनी ही है।

आपका
सुभाष चद्र बोस

आस्ट्रियाई पहेली *

विश्व अग्निकाड 1914 मे आस्ट्रिया से प्रारभ हुआ। अत: चारो ओर लाग यही प्रश्न पूछ रहे है-"आस्ट्रिया के 1934 के सामाजिक विद्रोह से क्या होगा?"

आज यूरोप की अवस्था इतनी उलझनभरी है कि भविष्यवाणी करना कठिन है। सन 1933 में विएना में मैं एक विद्वान, सुयोग्य अग्रेज पत्रकार से जो काफी यात्राए कर चुका

* दि माडर्न रिव्यू, कलकत्ता अप्रैल 1934 पी पी -461-8

था, आस्ट्रिया की अवस्था पर चर्चा कर रहा था। उन दिनों विएना के लोगों में बहुत जोश था और लोग कूप-डिटेट की चर्चा कर रहे थे, तब उसने कहा था "नहीं- ऐसा कुछ नहीं होगा। आस्ट्रिया के लोग कोमल हृदय हैं। मैंने कई बार ऐसा तूफान देखा है पर ऊपर से निकल जाता है। ऐसा ही एक बार फिर होगा।" उसका कहना ठीक भी था और नहीं भी।

विएना में फरवरी 1934 की घटनाओं पर टिप्पणी करते हुए मैनचैस्टर गार्जियन ने सारगर्भित शब्दों में लिखा था- आस्ट्रिया के समाजवादियों को उखाड़ फेंका गया है किंतु जर्मनी के साथियों की भाति वे झगड़े से तंग नहीं आए है। मैनचैस्टर गार्जियन का रवैया आस्ट्रियाई समाजवादियो के प्रति सहानुभूतिपूर्ण था, उन्हें वे केंद्रीय यूरोप के ससदीय लोकतंत्र और स्वाधीनता के नियामक मानते थे। दूसरी ओर लदन 'टाइम्स' का रुख वर्तमान आस्ट्रियाई सरकार के पक्ष मे था। समाजवादियों की विजय से पूरे यूरोप मे समाजवादियों की स्थिति सुदृढ होती। रूढ़िवादी अखबार टाइम्स को तो साम्यवादी रवैये का विरोधी होना ही था। इटालियन प्रेस का रुख भी कुल मिलाकर वर्तमान आस्ट्रियाई सरकार के पक्ष मे ही था। सभी जानते हैं कि वर्तमान आस्ट्रियाई सरकार के इटली की सरकार से मैत्रीपूर्ण सबध है और आस्ट्रिया में इटली के आधार पर सविधान का निर्माण भी किया जा रहा है। जर्मन प्रेस का रवैया आस्ट्रियाई सरकार के पक्ष मे नहीं क्योंकि आस्ट्रिया मे साम्यवादियों को दबाया जा रहा है और उन्हें जर्मनी के नाजी अपना दुश्मन मानते हैं। लोगो का मानना है कि इन्हीं दो कारणों से जर्मनी प्रेस का रुख ऐसा है। पहली बात, आस्ट्रिया की सरकार ने आस्ट्रियाई साम्यवादियों पर आक्रमण करने से पहले आस्ट्रियन नाजियों को दबाया, और ऐसा करने में उन्हें जर्मनी प्रेस का गुस्सा मोल लेना पड़ा। दूसरे, आस्ट्रियाई साम्यवादियो के पक्ष में रवैया अपनाने के कारण, जर्मनवासियों की यह उम्मीद थी कि वे अपने उद्देश्य में सफल हो सकेंगे क्योंकि आस्ट्रिया में अभी भी साम्यवादियों का बहुमत है। एक और तथ्य जिसकी प्राय: चर्चा होती है वह यह है कि आस्ट्रिया की सरकार ने आस्ट्रियाई साम्यवादियों पर आक्रमण करने से पहले आस्ट्रियन नाजियों को दबाया, और ऐसा करने मे उन्हे जर्मनी प्रेस का गुस्सा मोल लेना पड़ा। दूसरे आस्ट्रियाई साम्यवादियों के पक्ष में रवैया अपनाने के कारण, जर्मनवासियों को यह उम्मीद थी कि वे अपने उद्देश्य में सफल हो सकेगे क्योंकि आस्ट्रिया में अभी भी साम्यवादियों का बहुमत है। एक और तथ्य जिसकी प्राय: चर्चा होती है वह यह है कि आस्ट्रिया की सरकार को आस्ट्रिया के नाजियों को दबाने में फ्रांस का सहयोग प्राप्त हो रहा है अत: स्वाभाविक है कि जर्मनवासी नाराज़ होंगे, यद्यपि फिलहाल वे समाजवादियों को उखाड़ फेंकने में लगे हैं।

बारह माह पूर्व मैंने भारतीय समाचार-पत्रों में इस तिकोने संघर्ष, अर्थात समाजवादियों, नाजियों और हीम्वर, के विषय में लिखते हुए सकेत किया था कि अंततः आस्ट्रिया ही यूरोप के भविष्य का निर्णायक होगा। आज इनमें से एक पार्टी, समाजवादी, निष्क्रिय हो गई है और दो गुटों के मध्य भविष्य का निर्णय होना है। यदि नाजी पार्टी के हाथ में सत्ता आई तो बगैर औपचारिक सधि के आस्ट्रिया जर्मनी का हिस्सा बनेगा। इसका अभिप्राय होगा जर्मनी एक शक्तिशाली सत्ता के रूप में उभरेगा इसलिए यूरोप की शक्तिशाली सत्ताएं इसकी विरोधी हैं। चार करोड़ जनसंख्या वाला इटली यह नही चाहेगा कि सात करोड

जनसंख्या वाला जर्मनी का राज्य उसकी उत्तरी सीमा से लेकर उत्तरी समुद्र तक स्थापित हो जाए। इटली में रह रहे जर्मनी के लोग (अब इटलीवासी, जो पहले आस्ट्रियाई थे) टायरोल बेचैन होने लगेंगे जब जर्मनी बार-बार यह प्रसारित करेगा कि वह यूरोप के जर्मन भाषियो को अपने में मिला लेगी। इसलिए यदि आस्ट्रियाई नाजियो को जर्मनी का सहयोग प्राप्त होगा तो उनकी विरोधी हीम्ह्र पार्टी को इटली का सहयोग मिलेगा ही। किंतु यूरोप की वर्तमान दशा कुछ भी क्यों न हो, इतिहास के निष्पक्ष विद्यार्थी के लिए यह स्पष्ट है कि आस्ट्रियाई व हंगेरियन साम्राज्य के टूटने के पश्चात जर्मनी व आस्ट्रिया के जर्मनभाषी लोग एक राजनैतिक दल के नियंत्रण मे आएगे ही। अत्यधिक प्रतिशोधात्मक होने की वजह से मित्र राष्ट्रो ने वर्सेल्स सधि मे पुराने आस्ट्रो-हंगेरियन राज्य को टुकडे-टुकडे कर दिया और एक क्षण को भी यह विचार नही किया कि छोटे देशो, आस्ट्रिया और हगरी जैसो, के लिए अलग राज्य स्थापित कर पाना असभव होगा। अब मित्र राष्ट्रो के विचारको, स्त्री या पुरुषो, ने यह महसूस किया आस्ट्रिया या तो जर्मनी का एक हिस्सा बन कर रह सकता है या फिर आस्ट्रो-हंगेरियन राजनैतिक एकाश के रूप में। एक वर्ष पूर्व जब मैं एक अमरीकी पत्रकार के साथ आस्ट्रिया की राजनीति पर चर्चा कर रहा था तब मैंने यह टिप्पणी की थी कि यदि मित्र राष्ट्र वास्तव में चाहते है कि आस्ट्रिया जर्मनी स अलग-थलग रहे तो उन्हे राजनैतिक युद्धनीति के तहत आस्ट्रिया और हगरी मे हैप्सबर्ग राजतत्र की स्थापना कर देनी चाहिए। मुझे याद हैं कि अमरीकी पत्रकार ने उस समय मेरी ओर ऐसे देखा था जैसे मैं राजनीति में अभी बच्चा हू इसलिए मेरी टिप्पणी उसे अजीब लगी थी। किंतु आज जब मैं विभिन्न देशों में लोगो को आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य की पुनर्स्थापना के विषय में बातचीत करते सुनता हूं और यूरोप के समाचार-पत्रों में यह पढता हू कि हगरी में साम्राज्य स्थापना के लिए सहयोगी दलों की विएना मे सामान्य समस्याओं पर चर्चा के लिए बैठक हुई तो मुझे सतोष होता है कि एक वर्ष पूर्व का मेरा अनुमान सही था। हमारी अपनी राजनैतिक भविष्यवाणियां कुछ भी हो किंतु इसमें सदेह नही कि यदि मित्र राष्ट्र मध्य यूरोप के जर्मनभाषी लोगों को अलग करना चाहते हैं तो उन्हे हैप्सबर्ग राजतत्र के विरुद्ध अपने पूर्वाग्रहो को त्यागना होगा और फिर चेक, स्लोवाक और अन्य स्लॉव जातियो के आत्म-निर्णय को पहचान कर आस्ट्रो-हगरी को ज्यो का त्यों छोड देना होगा। इतिहास के एक विद्यार्थी के रूप मे मुझे तो यह सभव लगता है कि आस्ट्रिया को या तो जर्मनी से मिलना होगा या फिर हंगरी से ही एक राजनीतिक एकाश स्थापित करना होगा। वर्तमान स्थिति असतुलन की है जो अधिक देर तक स्थायी रहने वाली नही। उथले तौर पर देखने में यही लगेगा कि मैंने जो कहा, वह सत्य नही है। आस्ट्रिया मे शाति है। आस्ट्रियाई नाजी नियंत्रण में हैं जबकि आस्ट्रियाई समाजवादी पूरी तरह दबाए गए हैं। ग्रेट ब्रिटेन, फ्रास और इटली ने आस्ट्रिया की स्वतत्रता का आश्वासन दिया हुआ है और इसका मुख्य कारण यही है कि इन तीनों शक्तियो का यह दृढ निश्चय है कि आस्ट्रिया को जर्मनी से अलहदा रखा जाए। इसमें भी दो राय नही है कि ये तीनों शक्तिया आस्ट्रिया की सरकार को ऋण आदि मुहैया करा देंगी ताकि वह वर्तमान आर्थिक तगी से उबर सके। किंतु क्या आस्ट्रियावासियों को सतुष्ट करने के लिए यह पर्याप्त होगा और क्या इस प्रकार वे अपने पैरों पर खड़े हो पाएगे? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए हमें आस्ट्रिया के इतिहास का गहन अध्ययन करना होगा।

आस्ट्रिया की वर्तमान सरकार तीन पार्टियों के मेल से बनी है– जो इस प्रकार है– 1. क्रिश्चियन समाजवादी 2 होम्द्र और 3. अग्रेरियंस। इस समय हीम्द्र सबसे महत्वपूर्ण हैं और ये रूस, इटली व जर्मनी के उदाहरणों से सीख लेकर आस्ट्रिया की अन्य सभी शक्तिशाली राजनैतिक पार्टियों को खत्म करने में प्रयत्नशील हैं । हाल ही के समाचारों से स्पष्ट है कि आस्ट्रिया के वर्तमान प्रधानमंत्री, हर डोलफ्स जो क्रिश्चियन सोशलिस्ट पार्टी के नेता भी हैं, ने अपनी पार्टी को समाप्त करने की स्वीकृति दे दी है। यदि हीम्द्र अन्य सभी पार्टियों को दबाने में कामयाब हो जाते हैं तो आस्ट्रिया को भविष्य की राजनीति हीम्द्र पार्टी की आंतरिक राजनीति पर निर्भर करेगी।

हीम्द्र आस्ट्रियाई कट्टरवादी हैं जिन्होंने इटली से प्रेरणा प्राप्त की है। आस्ट्रियाई नाजी अपने जर्मन भाइयों की भांति भूरे कपड़े पहनते हैं, हीम्द्र सफेद और हरे कपडे पहनते हैं और उनके झंडे के भी यही दो रंग हैं। नाजियों से इनके विचार और पद्धतिया बहुत मिलती हैं। दोनों ही संसदीय लोकतंत्र के विरुद्ध हैं और तानाशाही के पक्षधर हैं। दूर से देखने वालों को लगेगा कि समान प्रतीत होनेवाली दो पार्टियों का संघर्ष आश्चर्यजनक है। किंतु वास्तविकता यह है कि हीम्द्र पार्टी में ही एक वर्ग ऐसा था, बल्कि अभी भी है, जो नाजियों के साथ समझौता करना चाहता है, यह भी सभी जानते हैं कि इस विषय मे वार्तालाप भी हो रहा है।

हीम्द्र जैसी कट्टरपंथी आस्ट्रियाई पार्टी के तेजी से उत्थान होने के तीन कारण हैं–

1 समाजवाद विरोधी भावना 2. राष्ट्रीय भावनाएं 3. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग। पिछले युद्ध के दौरान आस्ट्रिया में जर्मनी सरकार समाजवादी लोकतंत्रियों के हाथ में आई । यदि संघीय सरकार पर क्रिश्चियन समाजवादियों का नियंत्रण हुआ और विएना प्रांत व विएना निगम का प्रशासन समाजवादियों के हाथ में पहुंच गया। आस्ट्रियाई समाजवादी पार्टी यूरोप में मूलभूत समाजवादी पार्टी मानी जाती थी इसलिए आस्ट्रिया के रूढ़िवादी लोग इस बात से सतुष्ट नहीं थे कि ऐसी पार्टी की आस्ट्रिया की राजनीति में इतनी महत्वपूर्ण स्थिति हो। आस्ट्रिया में युद्ध के पश्चात की स्थिति बिल्कुल असंतुलन की स्थिति थी। साढ़े साठ लाख आबादी वाले देश की संघीय सरकार पर समाजवाद विरोधी क्रिश्चियन सोशल्स का शासन हुआ किंतु वे राजधानी और देश के अन्य प्रमुख प्रांतों के प्रशासन मे से आक्रामक आस्ट्रियाई समाजवादियों को निकाल पाने में सफल न हो पाए। दूसरी ओर देश की संघीय सरकार पर अपना प्रभाव जमाने में समाजवादी असफल रहे क्योंकि दूर-दराज शहरों और गांवों में उनका प्रभाव अन्य विरोधी पार्टियों की अपेक्षा बहुत कम था। इस स्थिति मे एक न एक पार्टी का उखडना अवश्यंभावी था। स्वय को सुरक्षित करने की दृष्टि से समाजवादियो ने प्राइवेट सेना का गठन किया जिसे शट्ज़बंड कहा गया। हर डोलफ्स की पूर्णतः राजनीतिक पार्टी क्रिश्चियन सोशल्स सत्ता के संघर्ष में समाजवादियों से जीत नहीं पाई। इसलिए समाजवादियों से संघर्ष करने की दृष्टि से हीम्द्र जैसी पार्टी का जन्म लेना आवश्यक था। यह पार्टी प्रारंभ से ही समाजवाद विरोधी थी इसलिए क्रिश्चियन सोशल्स और हीम्द्र में गठबंधन होने में जरा भी विलंब नहीं हुआ।

कुछ और छोटी-मोटी बातों की वजह से भी हीम्द्र और क्रिश्चियन सोशल्स समाजवादियों

के विरोधी हो गए। आस्ट्रियाई समाजवादी पूर्णतः अधार्मिक थे । कम से कम जब तक जर्मनी में समाजवादियो का शासन था वे कैथोलिक चर्च के तो खिलाफ ही रहे, अतः वे एन्कलस, जर्मनी के सघ के पक्षधर थे। समाजवादियों के धर्मविरोधी रुख के कारण क्रिश्चियन सोशल्स अर्थात कैथोलिक चर्च की, किसानों के बीच लोकप्रियता प्राप्त हुई और जो रूढिवादी विचारों के लिए पूरे विश्व मे प्रसिद्ध है। समाजवादी पार्टी के तत्वावधान में अंततः जर्मनी के विलय के डर ने हीम्व्हर पार्टी को यह सुअवसर दिया कि वह आस्ट्रियाई अभिजात्य वर्ग का सहयोग प्राप्त कर सके। यह सदा याद रखना चाहिए कि एक राज्य के तौर पर आस्ट्रिया ने ही वंश परंपरा के रूप में पवित्र रोमन साम्राज्य को प्राप्त किया है। जब तक आस्ट्रिया जर्मनी से अलग रहेगा तब तक आस्ट्रियाई अभिजात्य वर्ग का प्रभुत्व रहेगा किंतु यदि आस्ट्रिया जर्मन रीक में मिल गया तो उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। इसलिए राजकुमार स्टारहेम्बर्ग जैसे सम्भ्रांत धनिक ने हीम्व्हर पार्टी की बागडोर सभाली ताकि आस्ट्रिया राज्य की सत्यनिष्ठा की रक्षा हो सके तथा वहा के प्राचीन अभिजात्य वर्ग का प्रभाव भी कायम रह सके।

इस पार्टी को बल देने के लिए इतिहास का इस्तेमाल किया गया। जून 1933 मे जब मैं विएना में था तब आस्ट्रियाई सरकार ने तुर्कियों पर अपनी विजय की 250 वी सालगिरह मनाई थी। 1683 मे पूर्वी यूरोप पर राज्य करने के बाद विएना पर कब्जा कर लिया और तुर्कियो की हार का मुख्य कारण स्टारहेम्बर्ग था। जो वर्तमान हीम्व्हर का नेता राजकुमार स्टारहेम्बर्ग, का पूर्वज था। जून के उस आयोजन को आस्ट्रियाई जनसमूह का सहयोग स्वाभाविक रूप में प्राप्त था, किंतु उसे इस प्रकार रचा गया कि उसके परिणामस्वरूप स्टारहेम्बर्ग तथा उसकी पार्टी की इज्जत बढी। उस आयोजन में देशभर से 40,000 हीम्व्हर प्रतिनिधि सफेद व हरी पोशाक में विएना पहुचे और विएना की सडको पर मार्च किया। पूरे मार्ग पर हीम्व्हर के सहयोगी नारे लगाते मैंने स्वयं देखे– हेल स्टारहेम्बर्ग, जबकि जवाब में नाजी नारे लगा रहे थे 'हेल हिटलर' उनको पुलिस ने नारे लगाने पर खदेडा। उस आयोजन के अत में मैंने एक हीम्व्हर नेता को उनके प्रतिनिधियों द्वारा प्रदर्शित अनुशासन के लिए मुबारकबाद दी, किंतु वह अधिक उत्साहित नही लगे बल्कि उन्होने शिकायत की कि विएना के लोगो से हीम्व्हरों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया नही अपनाया बल्कि नौकरीपेशा लोगों के आवासीय क्षेत्र मे तो उन पर सड़े-गले अडों से आक्रमण भी किया गया। यह पिछले जून माह की बात है। किंतु अगले आठ माह में उन्होंने अपनी राजनीतिक स्थिति इतनी सुदृढ कर ली कि वे अपने शत्रुओं, आस्ट्रियाई नाजियों और आस्ट्रियाई साम्यवादियो के साथ सीधा दुर्व्यवहार भी कर सकते थे। उनके द्वारा अपने शत्रुओं को नीचा दिखाने के लिए एक के बाद एक उठाए गए कदमों का अध्ययन राजनीतिक युद्धनीति मे महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

पिछले युद्ध की समाप्ति पर सामान्यतः यह सोचा जा रहा था कि यूरोप से राष्ट्रीयता का युग समाप्त हो गया और शीघ्र ही सामाजिक पुनरुत्थान होगा। अब तो यह स्पष्ट हो चुका है कि राष्ट्रीयता का युग अभी समाप्त नही हुआ है। जब तक पूरे यूरोप मे आत्मविश्वास के सिद्धांतों को लागू नहीं किया जाएगा तब तक राष्ट्रीय सघर्ष समाप्त नही हो सकता। यद्यपि वर्सेल्स समझौते में आस्ट्रियाई शासन के अतर्गत चेक, पोल तथा इटली

भाषी लोगों के साथ न्याय हुआ, किंतु वहीं जर्मनी व हंगरी के लोगों के साथ काफी अन्याय भी हुआ, जिन्हें अन्य जातियों को शासन के नियंत्रण में रखा गया। वर्सेल्स संधि के दौरान इस अन्याय की संभावना थी क्योंकि संधि के बाद शाति सम्मेलन में विजेता अत्यधिक प्रतिशोधात्मक भावनाओं से प्रभावित थे। जब तक इस गलती का प्रायश्चित नहीं हो जाता तब तक यूरोप में राष्ट्रीय संघर्ष का युग समाप्त नहीं हो सकता और नहीं युद्ध की सभावना से इकार ही किया जा सकता है।

आस्ट्रिया की भूमि हीम्हर पार्टी के लिए उपयोगी सिद्ध होने के बावजूद, इस तथ्य के बावजूद भी कि प्रारभ से ही हीम्हर राष्ट्रीय भावना और परपरा को सुरक्षित रखे थे, वे आस्ट्रिया मे अन्य पार्टी की सहायता के बिना व अतर्राष्ट्रीय सहयोग के बिना अधिक सफल नही हो पाए। यहा योग्य राजनीतिक नेता हर डोलफस की सहायता भी बेकार सिद्ध हुई। उसके नेतृत्व में संघीय सरकार का निर्माण किया गया जिसमे क्रिश्चियन सोशल, हीम्हर और अग्रेरियन पार्टियों का सहयोग था और विपक्ष में समाजवादी पार्टी तथा नाजी पार्टी थी। हीम्हर जैसी युद्धप्रिय पार्टी के सहयोग के बिना हर डोलफस नाजियों और युद्धप्रिय साम्यवादियो का सामना नहीं कर पाता, जिनके पास अनुशासित प्रतिनिधियो की सेना थी। इसीलिए हर डोलफस ने उग्रवादी हीम्हरों से गठबंधन कर लिया। हीम्हरों को उलटा लाभ ही हुआ। हर डोलफस के द्वारा उन्हें क्रिश्चियन सोशल्स का सहयोग प्राप्त हुआ। डोलफस के गठबन्धन से उन्हें मित्र शक्तियों का सहयोग मिला और वे आस्ट्रियाई नाजियो के खिलाफ सघर्ष कर पाए जिन्हें जर्मनी का सहयोग प्राप्त था। इसके अलावा हर डोलफस की राजनैतिक बुद्धि व चतुरता का भी लाभ उन्हें मिला। उसकी चेतावनी और मार्गदर्शन के बिना, ये अवश्य ही जल्दबाजी में कदम उठाने के कारण हताशा का सामना करते।

1933 में ऐसा महसूस हो रहा जैसे हर डोलफस और क्रिश्चियन साम्यवादी हीम्हरों का समाजवादियों तथा आस्ट्रियाई नाजियों के विरुद्ध अपने दोहरे सघर्ष मे प्रयोग कर रहे हैं। इसमें भी शक नहीं कि आस्ट्रियाई सरकार को जो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त हो रहा था वह इसी वजह से था कि विदेश में यह प्रचार था कि वे आस्ट्रियाई नाजियों को दबाने मे लगे हैं। यदि यह आभास होता कि आस्ट्रियाई सरकार आस्ट्रिया में साम्यवादी पार्टी को इतनी बुरी तरह दबाएगी तो उससे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कतई न मिलता। आस्ट्रियाई समाजवादियो के भी फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन में मित्र थे और उन्होंने एंकुलस अथवा जर्मनी में विलय के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था और वहा नाजियों की सत्ता थी इसलिए ग्रेट ब्रिटेन व फ्रास हर डोलफस को सहयोग देने के उत्सुक नहीं थे यदि वह आस्ट्रिया मे समाजवादियों को दबाता तो। इसलिए आस्ट्रियाई सरकार की सबसे सफल चाल यही थी कि वह पहले आस्ट्रिया में नाजी पार्टी पर आक्रमण करे और ऐसा करने मे अतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करे। विश्व सद्भावना प्राप्त कर आस्ट्रिया में नाजियों को धता बताकर वे समाजवादियों के साथ सुरक्षापूर्ण तरीके से निपट सकते थे। यदि वे समाजवादियो से पहले निपटने का प्रयास करते तो मुश्किल मे पड जाते। समाजवादियों को उखाड़ने के पश्चात ऐसा लगा जैसे हीम्हर प्रधानमत्री हर डोलफस का इस्तेमाल करेंगे और वह इनका शोषण नही कर पाएगा।

मार्च 1933 में जब मैं विएना में आया तब लोअर चैंस्टर में आस्ट्रियाई सरकार का बहुमत सघीय ससद में केवल एक का था। किसी भी सरकार के लिए यह खतरनाक स्थिति होती है जो अधिक समय तक नही टिकती। अतः स्पीकर के त्यागपत्र का फायदा उठाते हुए सरकार ने मार्च 1933 में ससद भंग कर दी और स्वय आदेश जारी कर राज्य करना शुरू कर दिया। तभी से राज्य में संसद भग है । मार्च 1933 से, जर्मनी में नाजियो की शक्ति की ओर, जनता का ध्यान आकर्षित हुआ। इस प्रकार आस्ट्रियाई समाजवादियो ने इस ओर ध्यान ही नही दिया कि उनके स्वयं के घर में क्या हो रहा है। ससदीय विपक्षी दल में चूंकि नाजी और समाजवादी दोनों थे इसलिए अधिकाश समाजवादियो का विचार था कि सरकार नाजियों को अधिक महत्व दे रही है। संसद भग होने के बाद सरकार का रवैया समाजवादियों की अपेक्षा नाजियों के प्रति अधिक आक्रामक हो गया जिससे समाजवादियों में सुरक्षा की भावना जागने लगी। जब यह सब घट रहा था तब हर डोलफस की नाजियो के प्रति असंसदीय गतिविधियों का भान होने लगा था। उन दिनों समाजवादियो के प्रति आस्ट्रियाई राजनीति के रुख से यही प्रभाव पड़ता है कि उन्होने उस कठिनाई को अनुभव नही किया जो उनके सामने मुखबाए खड़ी थी। मेरे जैसा कोई भी बाहर का व्यक्ति उन दिनों यह अनुमान लगा सकता था कि वह दिन दूर नही जब आस्ट्रिया की सरकार का पासा पलटकर समाजवादियों पर आक्रमण करेगी। हर डोलफस को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने एकबार नहीं बल्कि कई बार यह स्पष्ट किया कि सरकार दो मोर्चों पर सघर्ष कर रही है, नाजियों और समाजवादियों के विरुद्ध।

मार्च 1933 में जब सरकार ने ससद भग की तब स्पीकर, जो कि विपक्षी दल का था, ने सरकार की अवज्ञा कर संसद बुलाई। लोगों में इतनी अधिक उत्सुकता और उत्साह था कि वे पूछ रहे थे- 'सरकार अब क्या करेगी?' सरकार ने पुलिस को आदेश दिया कि वह ससद की बैठक होने से रोके। किंतु पुलिस के वहा पहुंचने से पहले ही विपक्षी दल के नेता ससद भवन में पहुंच गए और संसदीय कार्यवाई ठीक समय पर सपन्न हुई। मत्रीगण और उनके सहयोगी उपस्थित नहीं थे फिर भी विपक्षी दल के नेताओ की उपस्थिति व्यर्थ नही गई। ससद सदस्यों को एकमात्र खेद यह रहा होगा कि उनके विरोध का अनुपालन विपक्षी दल ने नही किया। इसकी पूरी जिम्मेदारी समाजवादी पार्टी के नेताओ पर है। जब सरकार ने यह देखा कि विपक्षी दलों ने सरकार के ससद को भग करने के आदेश की अवहेलना की है तो उन्होंने जनता की स्वतंत्रता पर और नया आक्रमण किया। 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के आयोजन पर प्रतिबध लगा दिया। इस प्रकार का आदेश तो हैप्सबर्ग राजाओं के शासन काल में भी जारी नहीं हुआ था। पुलिस और सेना को सतर्क कर दिया गया ताकि समाजवादी शहर के भीतर किसी प्रकार का प्रदर्शन न कर सकें। यद्यपि उन्हें म्यूनिसिपल स्टेडियम में बैठक व खेल आदि आयोजित करने की छूट दी गई। मैंने इस बैठक में भाग लिया और जो कुछ मैंने वहां देखा उससे बहुत प्रभावित हुआ। उस सभा में कम से कम 60 हजार लोग उपस्थित थे। 5 हजार लडकियों और युवतियों ने ड्रिल का प्रदर्शन किया । लडकों व युवकों ने भी इसी प्रकार के प्रदर्शन किए। इस बैठक में युवाओं की उपस्थिति देखकर स्पष्ट होता था कि सोशलिस्ट पार्टी के अनुयायी प्राय: युवा वर्ग के है। पार्टी के नेताओं ने बहुत भावपूर्ण व सोद्देश्य भाषण

दिए। फिर भी मुझे उस समय महसूस हुआ कि वे अपेक्षा से अधिक गभीरता से काम ले रहे हैं। मैंने अपने समाजवादी मित्रों से कहा भी था कि उनकी पार्टी को युवा नेताओ को आगे लाना चाहिए। समाजवादी पार्टी की तुलना में नाजियो के पास अधिक युवा और ओजस्वी नेता थे। 1 मई को नाजियों ने भी एक बैठक आयोजित की, यद्यपि उन्हें शहर मे प्रदर्शन करने की मनाही थी। समाजवादियों की अपेक्षा इनकी उपस्थिति भी कम थी किंतु उन्होंने अधिक उत्साह और ओजस्विता का प्रदर्शन किया।

1 मई के बाद से सरकार ने समाजवादी पार्टी पर सीधे आक्रमण करना छोड दिया और अपना रुख नाजियों की ओर मोड दिया। इससे समाजवादी स्वय को सुरक्षित महसूस करने लगे और नाजी विरोधी अंतर्राष्ट्रीय नीति को अपना समर्थन देने लगे। यह तो सत्य है कि मई दिवस के बाद से सरकार ने समाजवादियो पर कोई और प्रतिबध नही लगाया किंतु समाजवादी पार्टी भी प्रतिबंध के प्रति अधिक उत्सुक नहीं थी। वे अपना काम चोरी छिपे कर सकते थे और उन्हें यह सांत्वना थी कि नाजी प्रतिनिधियो पर प्रतिबध लगा है। समाजवादियो की प्रमुख सस्था आर्बिटर जीटुग पर सेंसर लगा दिया गया, यद्यपि उसे किसी प्रकार दबाया नही गया जबकि नाजी समाचार-पत्रो को एक-एक कर दबाया जाने लगा। साथ ही यह आदेश भी निकाला गया कि नाजी लोग किसी भी प्रकार की यूनिफार्म नहीं पहनेंगे। इस आक्रमण की चरम सीमा तब हुई जब नाजियो के मुख्यालयो पर देशभर मे सरकार ने कब्जा कर लिया। जब आस्ट्रिया में नाजियों के साथ यह व्यवहार हो रहा था तब वे बेकार नही बैठे थे, नही वे कोई प्रतिकार ही कर रहे थे। सरकारी प्रतिबंध के बावजूद उन्होंने अपनी गतिविधियां और प्रदर्शन जारी रखे। समाजवादी इस अवधि मे अपने पर लगे प्रतिबधों के खिलाफ़ शिकायत करते रहे तथा निगम द्वारा उनके धन पर कब्जा कर लेने पर चिल्लाते तो रहे किंतु इसके विरोध मे कोई सघर्ष या प्रदर्शन आयोजित नही किया। यदि वे उसी समय सरकार के विरुद्ध नाजियों से गठजोड कर लेते तो यह कहना कठिन है कि क्या हो जाता। दुर्भाग्य से नाजियों की कठिनाइया उन्हे इतनी अधिक लग रही थी कि वे सरकार की सही स्थिति का आकलन नही कर पा रहे थे। मैंने कई बार अपने समाजवादी मित्रों को बताया कि सरकार का आस्ट्रियाई नाजियो के प्रति जो व्यवहार है वैसा तो वॉन पपन सरकार ने जर्मन नाजियों के साथ भी नही किया था किंतु मेरी इस टिप्पणी पर किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। जब सरकार नाजियो पर आक्रमण कर रही थी तब समाजवादी पार्टी जैसे शात थी वैसे ही इस वर्ष नाजी भी चुप रहे जब सरकार ने समाजवादियों के प्रति आक्रमक रुख अपनाया था। यह तो भविष्य ही बताएगा कि क्या राजनीतिक युद्धनीति की दृष्टि से आस्ट्रियाई नाजियों का व्यवहार उचित था। समाजवादी नेताओ का यह आशा करना व्यर्थ था कि सरकार नाजियो का शोषण कर उन्हें बख्श देगी। बल्कि नाजी लोगों का विचार सही है कि इस वर्ष आस्ट्रिया मे समाजवादियो के दमन से उनके कार्य में आसानी हो गई है।

पिछले वर्ष मेरी राय थी कि आस्ट्रियाई सरकार दोहरे संघर्ष को जारी रख कर राजनीतिक युद्धनीति के नियमों का उल्लघन कर रही है और यदि उसे विजय प्राप्त करनी है तो उसे एक न एक पार्टी से मैत्री करनी ही चाहिए। मैं स्वीकार करता हू कि इतिहास का विद्यार्थी होने के नाते मैंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि इस प्रकार वे (सरकार) दोनो

विपक्षी दलो को सफलतापूर्वक उखाड़ फेकेंगे। इसका श्रेय हर डोलफस द्वारा अपनाई गई राजनीतिक दूरदर्शिता का है। पिछले बारह वर्ष में उसने समय के एक-एक पल का सदुपयोग किया है। उसने अपने राजनीतिक शत्रु के साथ व्यवहार में कभी कमजोरी का प्रदर्शन नहीं किया और न ही कभी जल्दबाजी का कोई लक्षण उसके कार्यों में प्रकट हुआ। पिछले वर्ष अपने प्रतिद्वद्वियो को धराशायी करने के लिए उसने जो अतिम दो कदम उठाए उनका उल्लेख किया जाना आवश्यक है। पहला कदम हीम्वर वादियों को शस्त्रो से लैस करना और उन्हें सरकारी पुलिस में उच्च पदों पर आसीन करना है। दूसरा कदम, पिछले वर्ष विएना मे कैथोलिक काग्रेस का आयोजन करना है।

विएना मे पिछले वर्ष कई लोगो की यह राय थी कि सरकार 30,000 हथियार बद (सैनिक व पुलिस) सैनिको का नेतृत्व करने में सक्षम है जब कि समाजवादी और हीम्वर दोनों मिलकर भी उतनी ही सेना का नेतृत्व कर सकते हैं। अत· सरकार के सामने यह समस्या थी कि वे सरकार के लिए सेना की संख्या मे वृद्धि कैसे करे और गृहयुद्ध, जो कि इस वर्ष फरवरी में हुआ, की तैयारी कैसे करे। इस समस्या के हल के लिए सरकार ने हीम्वरों को सेना मे भर्ती कर उन्हें सैन्य प्रशिक्षण दिलाना प्रारभ कर दिया। हीम्वर स्वयसेवकों का महत्वपूर्ण कार्य यही था कि वे इस वर्ष समाजवादी शट्जबड से युद्ध करें और सरकार को यह दिखा दे कि उनके बिना सरकार कितनी असमर्थ है। नाजीवादी पक्ष से सहानुभूति रखने के कारण अतिरिक्त सैन्यबल की भी आवश्यकता थी। (सभी इस भेद से वाकिफ हैं कि आस्ट्रियाई पुलिस व सेना मे नाजी प्रचार जोर-शोर से हो रहा था।)

मैंने उस समय विएना की जनता में उत्साह की आवश्यकता की ओर भी सकेत किया था जिसका अनुभव पिछले वर्ष जून मे हीम्वर और सरकार के समर्थको ने भी किया। विएना की जनता में विश्वास जीतने के लिए यह आवश्यक था कि उनपर यह प्रभाव डाला जाए कि सरकार के पक्षधरों की संख्या अत्यधिक है। जून 1933 का हीम्वर प्रदर्शन इस दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हुआ किंतु इतना ही मर्याप्त न था। इसीलिए पिछले वर्ष सितबर में जर्मन भाषी लोगों का विएना में कैथोलिक काग्रेस सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर भी सौभाग्य से मैं विएना में ही था। सरकार ने आस्ट्रिया के विभिन्न भागों से आने वाले कैथोलिक लोगों व जर्मन भाषियों के स्वागत के लिए विएना मे जोर-शोर से इन्तजाम किया। महामहिम पोप ने भी इस अवसर पर अपना अपोलोस्टिक प्रतिनिधिमडल भेजा। इस अवसर पर विएना में 2,00,000 के लगभग लोग एकत्र हुए। इस अवसर पर एक मेले का भी आयोजन किया गया तथा विएना आने वाले लोगों को रेल सेवाए उपलब्ध कराई गई। विएना मेले व कैथोलिक कांग्रेस की वजह से आने वाली भीड से होटलो और धर्मशालाओं को खूब लाभ हुआ और सामान्य व्यापारियों ने भी खूब धन अर्जित किया। आर्थिक तगी के दिनों में इस आय से विएना के लोगों का अनजाने मे ही सही, सरकार के प्रति रवैया पक्ष में हुआ। इसके अतिरिक्त कैथोलिक काग्रेस के लिए विएना आने वाले विशालकाय जनसमुदाय से सभी को यह आभास हुआ कि इस सरकार के पक्ष मे बहुत बडा जनसमूह है। इसके अलावा पूरा कैथोलिक चर्च, महामहिम पोप सहित सभी हर डॉलफस के पक्ष मे हैं। मेरे जैसे बाहर के व्यक्ति ने भी, जो भीड़ के अदर व बाहर घूमता

रहा, यह महसूस किया कि लोगों में धार्मिक भक्ति तो अवश्य है । यह भी स्पष्ट था कि सरकार इस कैथोलिक कांग्रेस के द्वारा राजनीतिक लाभ उठा रही है, यद्यपि इंतजाम इतनी चतुराई से किए गए थे कि आम आदमी यह महसूस नहीं कर सकता था। कैथोलिक कांग्रेस के साथ-साथ सैन्य प्रदर्शन भी आयोजित किया गया। सितंबर के आयोजन का स्पष्ट परिणाम था कि आम आदमी को यह अहसास हुआ कि सरकार की स्थिति काफी मजबूत है, जिसे कैथोलिक चर्च सेना तथा आस्ट्रिया के ग्रामीण क्षेत्र की जनता का सहयोग प्राप्त है। इस से हर डोलफस की स्थिति भी पहले की अपेक्षा और सुदृढ़ हुई।

इसी समय के दौरान घटी एक घटना मुझे याद आ रही है। रोथमस (टाउनहाल में मेयर के कार्यालय के निकट) में आयोजित एक प्रदर्शन के दौरान, एक हीम्हर नेता ने रोथमस की ओर संकेत करते हुए कहा था कि मुझे आशा है वह दिन जल्दी ही आएगा जब सरकार बोल्शेविकों (समाजवादियों) को इस भवन से निकाल कर उनकी पार्टी को विएना पर राज्य करने का अवसर प्रदान करेगी। जब अगले दिन मैंने समाचार-पत्रों मे समाजवादी मेयर की गिरफ्तारी और रोथमस पर बलपूर्वक सरकार के कब्जे का समाचार पढा, मुझे उस हीम्हर नेता की बात भविष्यवाणी (संतवाणी) महसूस हुई।

सितंबर के आयोजनों के पश्चात सरकार शक्तिशाली रूप से विपक्षी दलो के दमन के कार्य में जुट गई। पहले कुछ माह नाजियों का दमन किया गया और जब यह कार्य सपन्न हो गया तब नए वर्ष की शुरुआत के साथ-साथ सरकार समाजवादियों के दमन कार्य में जुट गई। हाल ही के ताजा घटनाक्रम को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि समाजवादी हारी हुई बाजी खेल रहे थे। यद्यपि उनका विएना निगम प्रशासन और विएना प्रांत में नियत्रण था किंतु उनकी स्थिति अधिक मजबूत कभी नही थी। देश से बाहर उन्हे किसी का अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त नहीं था । उस पर भी जर्मनी में समाजवादी लोकतांत्रिकों की हार से आस्ट्रिया पर भी दुष्प्रभाव पड़ा था। कैथोलिक चर्च उनकी कट्टर विरोधी थी और हाल के प्रदर्शनों से स्पष्ट था कि आस्ट्रिया में कैथोलिक चर्च की स्थिति अधिक मजबूत है। आस्ट्रिया के भीतर ही उन्हें दो शक्तिशाली शत्रुओं, नाजियो व क्रिश्चियन सोशल्स तथा हीम्हरों से संघर्ष करना था। इन स्थितियों में वे और अधिक कर भी क्या सकते थे?

यह सत्य है, जैसा कि मैनचेस्टर गार्जियन ने भी लिखा है कि आस्ट्रियाई समाजवादी भी अपने जर्मन बंधुओं की भाति युद्ध हार गए। यह इतिहास की लोक दुखद घटना है कि आस्ट्रियाई समाजवादी पार्टी जैसी लोकप्रिय पार्टी और समाजसेवी सस्था को इस प्रकार कुचल कर उखाड फेंका गया। केवल यही सांत्वना है कि उन्होंने इतिहास का निर्माण किया। श्री हैराल्ड लास्की ने लदन के डेली हेराल्ड में लिखा भी था कि विएना की समाजवादी पार्टी का सघर्ष पेरिस कम्यून और रूस की 1905 की क्रांति के समकक्ष सदैव याद रहेगा। इन सब बातों को स्वीकार करने के बावजूद मैं सोचता हू कि यदि समाजवादी राजनीतिक दूरदर्शिता से पार्टी के कुछ लोग इस बात को मानते हैं कि अत तक यही आभास होता रहा कि समाजवादी नेता सरकार से समझौता करने का प्रयास कर रहे थे। समाजवादियों के चरित्र पर कोई अंगुली नहीं उठाई जा सकती क्योंकि उनके नेताओं ने

उनको जैसा बनाया उन्होंने उसी के अनुरूप कार्य किया। किंतु क्या नेताओ को यह चाहिए था कि वे पार्टी को आश्वस्त किए रहते कि वे सुरक्षित हैं और अंतिम क्षण तक संघर्ष को स्थगित करते रहते।

आस्ट्रिया से समाजवादी पार्टी का अस्तित्व खत्म होने का अभिप्राय यह नहीं कि नाजियो के साथ भी ऐसा ही होगा। जब तक जर्मनी में राष्ट्रीय समाजवाद रहेगा तब तक आस्ट्रिया मे नाजी बने रहेंगे। जर्मनी आस्ट्रिया पर आर्थिक दबाव डाल रहा है ताकि वर्तमान सरकार का पतन हो सके। क्या वर्तमान सरकार आस्ट्रियावासियों की आर्थिक समस्याओं को सुलझा पाएगी? और क्या मित्र राष्ट्र, जो आस्ट्रिया को जर्मनी से पृथक रखना चाहते है, आस्ट्रिया की सरकार को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराएगी? यदि इतिहास इन दोनो प्रश्नो के उत्तर सकारात्मक रूप में देता है तो निश्चय ही वर्तमान सरकार का कार्यकाल लबी अवधि का हो सकता है। अन्यथा आस्ट्रियावासियों के पास केवल दो ही विकल्प बचे हैं . जर्मनी से विलय अथवा हंगरी से सुलह।

फ़रवरी की घटनाओ से एक निर्णय पर तो पहुंचा ही जा सकता है कि आस्ट्रिया सरकार के पास हथियारबद अनुशासित पर्याप्त सैन्यशक्ति है, और वह आयुध की सहायता से किसी भी अच्छी सैन्यशक्ति वाली सेना का मुकाबला करने में सक्षम है।

फिलहाल आस्ट्रिया में पूर्ण शाति है, और कुछ समय तक रहेगी भी। बदलाव का कार्य बडी शीघ्रता से हो रहा है। रथौस पर हीम्द्धरों का हरा व सफेद झडा फहरा रहा है ताकि यह जान लिया जाए कि समाजवादियों की सत्ता समाप्त हो चुकी है। आस्ट्रियाई लोकतत्र की स्थापना करने वाले तीन नेताओं की मूर्ति हटाकर हर डोलफस, राजकुमार स्टारहेंबर्ग तथा मेजर फे (हीम्द्धर नेता) की मूर्तियां लगा दी गई हैं । हार्नडक्रास अथवा नाजियो के स्वास्तिक की जगह हर डोलफस ने नया क्रास बनाया है जो उसकी पार्टी का निशान है। रूस, इटली और जर्मनी जैसे देशों में अपनाई गई नीतियो, विधियो और उपकरणों को आस्ट्रिया में भी लागू किया जाएगा। किंतु मुख्य समस्या, जिस पर आस्ट्रिया की राजनीति का भविष्य निर्भर है, आर्थिक समस्या है। जब तक इस समस्या का समाधान नही हो जाता तब तक आस्ट्रिया में शांति स्थापित नही हो सकती।

बहुत सी अटकलें लगाई जा रही हैं कि हर डोलफस अब क्या नीति अपनाएगा। वह अपनी स्वतत्रता सुरक्षित रख पाएगा या हीम्द्धर के आगे पूर्ण रूप से आत्मसमर्पण कर देगा? जब उसकी पार्टी क्रिश्चियन सोशल्स का दमन कर दिया गया है तो अब उसकी स्थिति क्या रह गई? वह आस्ट्रिया के लिए किस प्रकार का सविधान लागू करेगा? इटली के सविधान की नकल होगी या उसमें कुछ फेर-बदल किया जाएगा?

'नाइनटीथ सेंचुरी' के फ़रवरी 1934 के अंक में बहुत अच्छा लेख प्रकाशित हुआ। जिसमें एलिजाबेथ विस्कमैन ने कहा कि आस्ट्रिया में कैथोलिक चर्च व समाजवादियों में समझौता हो जाना चाहिए ताकि देश राष्ट्रीय समाजवादियों के कब्जे में जाने से बच सके। फरवरी की घटनाओं के बाद समाजवादी पार्टी के परिदृश्य से पूर्णत: गायब हो जाने से माग देर से की गई प्रतीत होती है। किसी भी बाहर के व्यक्ति को स्पष्ट दीख सकता है कि हीम्द्धर की स्थिति बहुत अच्छी नही है और इनके विरुद्ध हर डोलफस अपनी स्वतत्रता

को सुरक्षित नहीं रख पाएगा। हीम्हर पार्टी की आतरिक राजनीति आस्ट्रियाई राजनीति का भविष्य निर्धारित करेगी। हीम्हर में ही नाजियों के पक्षधर विद्यमान हैं और कुछ राजतंत्रवादी भी है। फिलहाल नाजी पक्षधरों का दमन किया गया है किंतु राजतत्रवादी महत्वपूर्ण हो गए हैं। विएना के ताजा समाचारों के अनुसार राजघराने के लोग हीम्हर पार्टी से सहयोग कर रहे हैं तथा आस्ट्रिया व हगरी के राजतंत्रवादी केवल सक्रिय ही नहीं हुए बल्कि मिल-जुलकर विचार विमर्श भी कर रहे है। किसी भी समय दिलचस्प स्थितियां सामने आ सकती हैं। कुछ भी क्यों न हो जाए, इसमें शक नहीं कि फिलहाल कुछ समय तक अभी आस्ट्रिया की राजनीति को मित्र राष्ट्र प्रभावित करते रहेंगे। आस्ट्रिया यूरोपीय राजनीति का केंद्र बना रहेगा, हालांकि ऊपरी तौरपर वह शात नजर आएगा। लदन टाइम्स के विएना संवाददाता का विचार है कि बाह्य शक्तियों का हर डोलफस को संरक्षण देना जारी रखना हितकर होगा, उसकी सरकार और उसका मानना है कि वह जो सविधान आस्ट्रिया को देगा वह केवल 'कट्टरपथी प्रभाव' से युक्त होगा। आस्ट्रिया में हीम्हर के प्रभाव की दृष्टि से आज आस्ट्रिया व पार्टी तथा इटली के संबंधों में अधिक संभावनाए इसी बात की हैं कि भविष्य का संविधान इटली के आदर्शों पर निर्धारित होगा। इसमें शक नहीं कि हर डोलफस ने अपने पहले बयान में क्रिश्चियन कार्पोरेटिव राज्य की चर्चा की थी किंतु उस समय वह कैथोलिक चर्च के प्रभाव में था और उसे पपल एनसाइक्लीकल 1931 से प्रेरणा मिली थी जिसमें समाजिक पुनर्स्थापना के प्रश्न पर कैथोलिक विचारों की भरमार थी। किंतु आज हर डोलफस के लिए यह असभव है कि वह हीमहर के विरुद्ध कुछ कर सके और यह भी डर है कि क्या वह प्रधानमंत्री को भी कैथोलिक चर्च के निर्देश मानने देगे या नहीं। इसके बाद आस्ट्रिया में जो भी घटेगा उसमें पूरे विश्व की दिलचस्पी रहेगी और इसके दूरगामी प्रभाव पूरे यूरोप पर पड़ेंगे।

विट्ठल भाई पटेल की वसीयत *

अभी तक मैंने स्वयं को स्वर्गीय श्री वी. जे पटेल की अतिम इच्छा के सदर्भ को प्रेस प्रचार से अलग-थलग रखा। कुछ मित्रों से पत्राचार अवश्य किया जिन्हें इस बात मे दिलचस्पी थी। उनमें से कुछ लोगों की राय है कि उनसे जो बातचीत हुई उसे लोगों तक पहुंचाया जाना चाहिए ताकि वह उन लोगों तक भी पहुंच सके जो लोग इसमें दिलचस्पी रखते हैं।

श्रद्धेय वसीयतकार की वसीयत का आवश्यक हिस्सा-

"ऊपर लिखित चार उपहारों को दे देने के बाद मेरी शेष वस्तुए सुभाष चद्र बोस (सुपुत्र श्री जानकी नाथ बोस) निवासी, 1 वुडबर्न पार्क, कलकत्ता को सौंप दी जाए ताकि सुभाष चद्र बोस द्वारा, या उनके नामित किए गए व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा उसके निर्देशानुसार भारत के राजनैतिक उत्थान के लिए तथा भारत के हित में विदेश में प्रचार हेतु काम मे लाया जा सके।"

---

* अगस्त 1934 में युनाइटेड प्रेस को जारी किया गया बयान।

कारण तो स्वर्गीय पटेल ही बेहतर जानते हैं। संभवत: इसलिए कि उनके और मेरे विचारो मे बहुत समानता थी और उन्हें मुझपर पूर्ण विश्वास था-इसी वजह से उन्होंने मुझ पर इतनी बड़ी जिम्मेदारी डाल दी। यह जिम्मेदारी एक पवित्र विश्वास है जिसे मुझे हर हाल मे पूरा करना है।

जिन मित्रों से मेरा इस विषय मे पत्राचार हुआ है उन्हें मैंने बताया है कि इस वसीयत के कर्तव्यो को पूरा करने के लिए मुझे जनता का सहयोग और विश्वास चाहिए ताकि कार्य सपन्न हो सके और उसकी योजना सही रूप में बने तथा इस कार्य मे लगने वाले धन का भी अनुमान लगाया जा सके। जनता का सेवक के नाते भी तथा एक अन्य कारण से भी मैं इस कार्य को पूरा करना चाहता हू। स्वर्गीय नेता द्वारा छोडा गया धन अपर्याप्त हो जाएगा यदि हमें कार्य को योजनाबद्ध एवं प्रभावशाली तरीके से संपन्न करना हो तो। अत: हमें और धन एकत्र करना होगा। श्री वी. जे पटेल की हार्दिक इच्छा थी कि देश लौटने के बाद वे इस कार्य को करें। अब उनकी अनुपस्थिति मे मुझे यह कार्य पूर्ण करना होगा। यह कहना तो व्यर्थ ही होगा कि धन एकत्र करने के लिए जनता का विश्वास जीतना अति आवश्यक है।

मैं यह भी कहना चाहूगा कि इस वसीयत के उद्देश्यो को पूर्ण करने के लिए मुझे उन मित्रो की सहायता और सलाह की आवश्यकता है जो उनकी नीति व कार्यक्रम का ईमानदारी से लागू कराने के इच्छुक हैं। इस समय उन लोगो के नाम ले पाना मेरे लिए कठिन है किंतु मैं श्री के.एफ. नारीमन, श्री एस.ए. बावेरी, श्री आर भवन, श्री दीप नारायण सिह आदि की सहायता लेना चाहता हू। मैं स्वर्गीय पटेल के विचारो और उद्देश्यो को पूरा करने की जिम्मेदारी, जो मुझ पर डाली गई है, को नियमो के अतर्गत पूरा करना चाहता हू, क्योकि उनकी भी यही इच्छा थी कि कार्य नियमानुसार ही होना चाहिए।

वसीयत से स्पष्ट है कि मुझे इसका एकमात्र उत्तराधिकारी बनाया गया है। मैं इस कार्य को जनता की संतुष्टि के लिए, पूरी जिम्मेदारी से वैधानिक विधि से पूरा करना चाहता हूं ताकि वसीयत और नियमो का उल्लघन न हो और स्वर्गीय नेता के प्रति भी वफादार रहू। मैं इस उत्तरदायित्व से अपने को बचा नहीं सकता।

रोमानिया में भारतीय कर्नल *

हाल ही मे रोमानिया की यात्रा के दौरान बुखारेस्ट में मुझे एक अद्भुत व्यक्ति से मिलने का अवसर मिला। वे हैं डा. नरसिहा मुलगुड, जो रोमानिया सेना के चिकित्सा विभाग मे लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर थे। उनमें मुझे इतनी दिलचस्पी पैदा हुई कि मैंने उनसे उनके बचपन का ब्यौरा मागा जो मैं अब अपने देशवासियों के लिए लिख रहा हू।

वह जन्म से महाराष्ट्र के हैं, उनका घर ताल्लुका भुवनगीर मे है, जो दक्षिण के हैदराबाद शहर से 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। उनकी प्रारंभिक पढाई बबई मे

* दि माडर्न रिव्यू, कलकत्ता, सितम्बर 1934, पीपी 309-9

हुई और वहां से मैट्रिक पास करने के पश्चात वे कलकत्ता चले गए।

कलकत्ता में वे स्काटिश चर्चेज कालेज में भर्ती हुए जहा से उन्होने एफ.ए. की परीक्षा पास की। साथ-साथ वे डा. एस.के. मल्लिक के नेशनल मेडिकल कालेज में भी पढ़े। वहां उनके अध्यापक थे डा. एस. के. मल्लिक, डा. वाई.एम बोस, डा बी.सी. घोष तथा डा. एम.डी दास। उन्होंने स्काटिश चर्चेज कालेज से एफ.ए पास किया और एम. सी. पी. एस. की परीक्षा नेशनल मेडिकल कालेज से पास की। सन 1912 मे वे लदन गए जहा से उन्होंने एम. आर. सी. एस. का डिप्लोमा लिया। इसी दौरान तुर्की-बल्कान युद्ध छिड गया और डा मुलगुंड ने तुर्की की 'रेड क्रेसेंट मिशन' में अपनी सेवाए प्रस्तुत की। दो चिकित्सा दल थे, एक का नेतृत्व डा. अंसारी कर रहे थे और दूसरे का नेतृत्व डा. अब्दुल हुसैन व डा मुलगुंड मिलकर कर रहे थे। शटाल्जा मे उन्होंने तुर्की सेना के साथ लगभग छः माह तक सर्जन के रूप मे कार्य किया। वहां से उन्हे तुर्की सरकार से मजीदिया के कमांडर का आर्डर मिला। तुर्की-बल्कान युद्ध में यूनान, सर्बिया, बुल्गारिया आदि ने तुर्की के विरुद्ध युद्ध किया। यह युद्ध तो शीघ्र ही समाप्त हो गया, किंतु एक नया युद्ध प्रारंभ हुआ जिसमें सर्बिया और यूनान ने मिलकर बुल्गारिया पर आक्रमण किया। रोमानिया भी इस दौड में शामिल हो गया। यद्यपि तुर्की-बल्कान युद्ध के दौरान बुल्गारिया ने बहुत से तुर्की के भू-भाग पर कब्जा कर लिया था। अब तुर्की ने इस अवसर का लाभ उठाया और अपने हारे हुए भू-भाग को पुनः जीत लिया। जब रोमानिया ने बुल्गारिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की तो रोमानिया एक प्रतिनिधिमंडल गया। डा. मुलगुड ने ज़िमनिका में कार्य किया जहा युद्ध क्षेत्र में एक अस्पताल बनाया गया था। रोमानिया की सेना में हैजा फैल गया और चिकित्सक प्रतिनिधिमंडल ने उनकी बहुत देखभाल की। अपनी सेवाओं के उपलक्ष्य में डा मुलगुंड को रोमानिया सरकार से मिलिटरी वर्चू का सम्मान मिला। यह सन 1913 की बात है। द्वितीय बल्कान युद्ध के पश्चात चिकित्सा दल के अन्य लोग भारत लौट आए, किंतु डा. मुलगुड वहीं ठहर गए। उनकी इच्छा थी कि वे रोमानिया में ही अपना भविष्य निश्चित करें।

समस्या थी कि उनकी सहायता कौन करे। सौभाग्य से उसी समय सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ डा. लुपु तथा प्रो. स्टैनकुलीनु का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ। उनका भविष्य वहा की नागरिकता प्राप्त करने पर निर्भर था। इन दो मित्रों की सहायता से और युद्ध के दौरान की गई सेवाओं के आधार पर वे समय से पूर्व वहां के नागरिक बन गए। तत्काल ही उन्हें आखों के क्लीनिक में सहायक की नौकरी मिल गई, जो यूनिवर्सिटी अस्पताल से संबद्ध था। वहां उन्होंने रोमानिया की प्रांतीय परीक्षा पास की। परीक्षा पास करने के बाद वे रोमानिया सरकार की सेना के चिकित्सा विभाग सब लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हो गए।

यह बात अप्रैल 1915 को है। 15 अगस्त, 1916 में रोमानिया ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध छेड दिया। सन 1917 में डा. मुलगुंड लेफ्टीनेंट बने और 1918 में कैप्टन बन गए। 1926 में वे मेजर बने और मई 1934 में मेरे बुखारेस्ट आने से कुछ दिन पूर्व वे लेफ्टिनेंट कर्नल बने।

डा. मुलगुड बल्कि लेफ्टिनेंट कर्नल रोमानिया के सबसे अच्छे नेत्र विशेषज्ञ है। सन 1919 से 1922 तक वे ओराडिया के नेत्र-अस्पताल में प्रमुख रहे तथा 1922 से 1928 तक वे बुखारेस्ट के सैनिक अस्पताल में नेत्र विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत रहे। जिन दिनों मैं बुखारेस्ट में था उन दिनों युद्ध मंत्री ने उन्हें सेना की भलाई हेतु नेत्र अस्पताल खोलने का आमंत्रण दिया था।

लेफ्टिनेंट कर्नल मुलगुंड ने रोमानिया की लडकी से विवाह किया, उनके दो सतानें हैं, दोनो लड़कियां। खुशहाल परिवार है। बुखारेस्ट में वे काफी प्रसिद्ध हैं। उनसे मिलन से पूर्व कई मित्रों से मैं उनकी प्रशंसा सुन चुका था। बुखारेस्ट में मेरे आवास के दौरान मैंने अपना बहुत-सा समय उनके साथ बिताया। रोमानिया के लोगो और मिलेटरी के अधिकारियो मे उनके मेल-जोल को देखकर यह प्रतीत होता है कि वे उनमें केवल लोकप्रिय ही नही बल्कि लोग उनकी बहुत इज्जत भी करते हैं।

यद्यपि वे भारत से दूर रह रहे हैं और रोमानिया के नागरिक भी बन चुके हैं, फिर वे अपनी भाषा नहीं भूले हैं। मराठी के अतिरिक्त वे हिंदी भी भली-भाति बोल लेते हैं तथा सस्कृत का भी उन्हें अच्छा-खासा ज्ञान है। गीता के सस्कृत श्लोको के उद्धरण देना उन्हें प्रिय लगता है। बुखारेस्ट में डा. लेफ्टिनेंट कर्नल मुलगुड से मिलकर बहुत अच्छा लगा। मुझे विश्वास है कि जो देशवासी इसको पढ़ेगे उन्हें भी बहुत प्रसन्नता का अनुभव होगा। लेफ्टिनेंट कर्नल मुलगुड का पता है- स्ट्राडा कैनजासी 14, बुखारेस्ट।

एडन की झलक*

13 जनवरी 1935 में जब लायॅड ट्रिस्टीनो का एम.वी. विक्टोरिया जहाज बबई से यूरोप जाते समय एडन में रुका तब एडन में रह रहे कुछ भारतीय मित्र ने वहा पहुचकर मुझे कुछ घटे अपने साथ बिताने का आमत्रण दिया। मैंने प्रसन्नता से वह आमत्रण स्वीकार किया। जब मैं उनके साथ तट पर पहुचा तो वहा का दृश्य देख आश्चर्य-चकित रह गया। पिछली बार 1919 में इग्लैंड जाते हुए मैं एडन गया था किंतु तब मे और अब में कितना बदलाव आ चुका था। नई सड़कें बन चुकी थी (शायद डामर की) सडको पर बिजली की रोशनी और सुदर भवन। पूछने पर पता चला कि एडन की कुल आबादी 50,000 के लगभग है जिसमें से 2,000 भारतीय हैं। वहां रह रहे अधिकाश भारतीय व्यापारी थे और ज्यादातर लोग कठियावाड़ के रहने वाले थे। एडन बदरगाह व्यापार का केंद्र है और निरतर व्यापार में वृद्धि हो रही है। कच्चा माल जैसे पशुओं की खालें, काफी आदि दूर-दराज के क्षेत्रो से यहा लाकर यूरोप में निर्यात की जाती है । बना-बनाया माल, जैसे कपडे आदि, जो तथाकथित सभ्यता का प्रतीक माना जाता है यूरोप से यहा लाकर अरेबियन पेनिसुला में भिजवाया जाता है। प्रशासनिक अधिकारी वर्ग में प्राय: ब्रिटिश लोग है। कर्मचारी वर्ग मे या निम्नवर्ग के अधिकारी अरबवासी हैं या फिर भारतीय हैं। फिलहाल एडन में भारतीय सरकार का प्रशासन है।

* दि माडर्न रिव्यू, कलकत्ता, मार्च 1935, पी पी 314-16

एडन में रह रहे भारतीयों को जो समस्या चिंतित किए हुए है वह यह है कि भारत से इसे जुदा करने का प्रस्ताव है। उनका भयभीत होना स्वाभाविक भी है क्योंकि यदि भारत से वह कट गया तो उन्हें बहुत हानि होगी और भारतीय जनता का सहयोग भी नही मिल पाएगा। मैंने उन कारणों की खोज की जिनकी वजह से सरकार इस प्रकार का प्रस्ताव सामने रख रही है। जहां तक भारतीयों का संबंध है उनका विचार है कि इसके पीछे राजनैतिक उद्देश्य कार्यरत है। सरकार एडन को उपनिवेशवाद के हाथो सौंपना चाहती है, ताकि जब भारत को स्वराज प्राप्त हो जाए तो एडन उनके हाथो मे सुरक्षित रह सके। एडन और सिगापुर भारत के दो समुद्री मार्ग हैं, और इन दोनो पर वे पूर्ण स्वामित्व बनाए रखना चाहते हैं। पहले-पहल एडन में कुछ भारतीय रेजिमेंट थी, किंतु बाद मे उन्हें वापस भेज दिया गया और केवल ब्रिटिश सेना वहां बची जिनकी सख्या 2,000 के लगभग थी। एडन में रायॅल एयर फोर्स का भी एक महत्वपूर्ण सैन्य दल था। एडन से 25 वर्ग मील के दायरे तक की भूमि ब्रिटिश सरक्षण में थी और शेष स्थान स्वतत्र था।

लाल सागर में जाने के लिए प्रवेश द्वार होने के साथ-साथ एडन का और भी महत्व है, वह महत्व इसके सुंदर दर्शनीय स्थलों के कारण है। एडन पहाडियों से घिरा स्थल है। शहद का बडा हिस्सा पहाड़ियों के नीचे स्थित है। बहुत सुदर सडकें हैं, आधुनिकतम सरचनावाली, जो भवनों तक पहुंचती हैं। सचार सुविधाओं की दृष्टि से पहाडियों मे कुछ सुरगे भी खोदी गई हैं ।

एडन में वर्षा बहुत कम होती है अत: पीने के पानी की समस्या बनी रहती है। इस समस्या का हल अरबवासियों ने बहुत पहले बडी चतुराई से खोज निकाला था। प्राकृतिक साधनों से पहाडियो के तल में एक तालाब बनाया गया जिसमे पहाडो पर गिरने वाले वर्षा के पानी को एकत्र किया जाता है और पूरे साल उसे पीने के पानो के रूप मे इस्तेमाल किया जाता है। जिस दिन हम एडन पहुचे, उस दिन, खूब तेज बारिश हुई जिसमे वह तालाब पूरा भर गया।

मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि एडन मे रह रहे भारतीय भारत की घटनाओं मे बहुत रुचि रखते हैं। उन्होंने मुझसे ताजा गतिविधियों की पूछताछ की। एडन के बारे में पूरी जानकारी देने के पश्चात, सामूहिक बैठक में उन्होंने मुझे कांग्रेस के कार्यक्रम की सूचना देने का अनुरोध किया। बंबई कांग्रेस में भारत में खादी आदोलन के विषय में जो रचनात्मक कार्यक्रम बनाया गया था उसका सक्षिप्त परिचय मैंने उन्हें दिया। बैठक के पश्चात चाय-नाश्ता करवाया गया और पूरे नगर का मुझे भ्रमण कराया गया। जेटी पर उन्होंने मुझे भावभीनी विदाई दी। उसके बाद मैं अपने जहाज एम. वी. विक्टोरिया पर लौट आया। मध्यरात्रि में एक बार फिर हम समुद्र के बीच थे।

एडन के भारतवासियों को अत्यधिक प्रसन्नता होती है जब प्रमुख भारतीय एडन रुकते हैं और अपने देशवासियों से मिलते है। महात्मा गांधी और मदनमोहन मालवीय की यात्राओं को वे आज भी याद करते हैं। वहा भारतीयों के मध्य सस्कृति के प्रचार की पर्याप्त सभावनाए हैं और इस दृष्टि से जो भी भारतीय एडन जाएगा उसका वहा हार्दिक स्वागत

भी होगा। फिलहाल पडित कन्हैया लाल मिश्र जो बनारस के हैं—इस कार्य मे वहा जुटे है किंतु शीघ्र ही वे वहां से वापस आ जाएगे।

एडन रह रहे भारतीयों की इच्छा है कि एडन के प्रस्तावित पृथक्कीकरण के विरुद्ध भारत में जोरदार आदोलन होना चाहिए। परिणाम जो भी हों, किंतु इस विषय मे भारतवासियों की पुकार तत्काल पूरे विश्व को सुनाई जानी चाहिए।

इटली

अमृत बाजार पत्रिका को,

9 मार्च, 1935

20 जनवरी को मैं नेपल्स में उतरा, यह विचार था कि समुद्री-यात्रा बहुत हो चुकी अब नेपल्स से गाडी पकडूगा। आश्चर्य चकित रह गया जब जहाज से उतरते ही मुझे पत्रकारो और फोटोग्राफरों ने घेर लिया। इस बात से प्रसन्नता अनुभव हुई कि आखिरकार यूरोप मे कुछ लोगो के लिए भारत एक उत्सुकता का विषय बन चुका है।

नेपल्स में मैंने तीन दिन बिताए। यूरोप में कहावत प्रचलित है कि-नेपल्स देखो और मर मिटो, अर्थात नेपल्स इतना सुदर स्थल है कि कोई भी व्यक्ति उसे देखे बिना मरना नही चाहेगा। इस कहावत में कोई अतिशयोक्ति नही है। पर्वत पर स्थित, समुद्री किनारे पर सामने धुए स घिरी विसुवियस स्थली युक्त नेपल्स बहुत सुदर स्थल है। कुछ मायनो मे तो यह रिवरिया से भी सुदर स्थान है। समुद्र तट के साथ-साथ फैली पट्टी 'विया-पोर्टेनोव' घूमने की दृष्टि से सुदरतम स्थान है, जहा से हटने का मन नही करता। मैं पपाई शहर देखने भी गया जो ज्वालामुखी के लावे से नष्ट हो गया था किंतु अब बिल्कुल खाली पडा है। 2000 वर्ष पहले शहर जैसा रहा होगा वैसा आज भी दीखता हैं, किंतु निवासी अब नही हैं। शहर का खडहर ज्यो का त्यो खडा है।

नेपल्स से मैं रोम आ गया जहा लगभग एक सप्ताह रहा यद्यपि मैं वहा केवल दो या तीन दिन ही रहना चाहता था। रोम मे बहुत कुछ देखा और किया जा सकता है कि समय का पता ही नही चलता। रोम मुझे सदा ही आकर्षित करता है क्योंकि वहा प्राचीनता और नवीनता का सगम है। जब आप कोलोसियम, फोरन, रोम पैथायोन या कैटाकोबस देखते हैं तो रोम की प्राचीनता का आभास होता है। उस रोम का जिससे हम भारतीय इतिहास द्वारा परिचित है। किंतु जब हम रोम की नई बनी गलियो स गुजरते हैं या विक्टर एमुअल की प्रतिमा को देखते हैं तो नए रोम की याद आ जाती है जिसे मुसोलिनी इटली के नमूने पर बनाना चाहता था। उसने रोम को आधुनिकतम शहर बनाने के लिए बहुत परिश्रम किया है और काफी धन भी व्यय किया ताकि वह यूरोपीय शक्ति की राजधानी बनाई जा सके।

पिछले वर्ष जब मैं रोम गया तो मैंने अपना अधिकाश समय शहर को देखने मे तथा निगम प्रशासन का अध्ययन करने में व्यतीत किया। इस बार मैंने कट्टरवादियो की

कार्य प्रणाली और राष्ट्र की उन्नति हेतु सरकार के साथ मिलकर किए जाने वाले कार्यों का अध्ययन किया। पार्टी कार्यालयों में जाने के लिए, पार्टी के गठन और प्रशासन का अध्ययन करने के लिए तथा जो जानकारी मैं प्राप्त करना चाहता था उससे सबधित प्रश्न अधिकारियों से पूछ पाने के लिए मुझे पर्याप्त सुविधाएं जुटा दी गई थी। एक पत्र में अपने सब अनुभवों और पार्टी की मशीनरी पर अपने विचारों को अभिव्यक्त कर पाना कठिन कार्य है। मेरे दिमाग में जो मुख्य-मुख्य बातें हैं, उन्ही के संबंध में अपने विचार प्रकट कर सकता हूं। मैंने यह देखा और अनुभव किया कि कट्टरपंथी पार्टी अपने विचारों और आदर्शों के अनुरूप एक नए राष्ट्र की स्थापना करने का प्रयास कर रही थी। पार्टी प्रत्येक आयु वर्ग और लिंग के व्यक्ति का ध्यान रख रही थी। राज्य से कोई भी व्यक्ति पृथक नही था यह पार्टी का ही कर्तव्य था कि वह नागरिकों को राज्य के अनुरूप प्रशिक्षित करे।

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरी पुस्तक *द इंडियन स्ट्रगल* छप चुकी है। रोम में मैंने एक प्रति देखी। उसका आवरण सुदर बन पडा है। रोम मे अपने प्रवास के दौरान मेरी मुसोलिनी से मुलाकात हुई। मैंने अपनी पुस्तक उन्हें भेट मे दी। उसे पाकर वे प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि वे उसे पढ़ने का समय निकालेंगे। इटली के समाचार-पत्रों ने, जिनका नेतृत्व इटली के प्रमुख अखबार 'गियारनेल द इटालिया' ने किया, मुझसे भारत की वर्तमान स्थिति पर बातचीत की तथा संविधान संबंधी बिल पर भारतीय प्रतिक्रिया के बारे में पूछताछ की, जिसकी आजकल लंदन में बहुत चर्चा हो रही है। सभी समाचार-पत्र मेरी पुस्तक की आलोचना प्रकाशित करेंगे।

रोम में एक और दिलचस्प अनुभव मुझे हुआ, अफगानिस्तान के भूतपूर्व राजा अमानुल्लाह से मेरी मुलाकात। उन्होंने मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया और हमारी लंबी बातचीत हुई वे महात्मा गाधी, भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की स्थिति और भारत की राजनैतिक स्थिति के बारे में जानने को उत्सुक थे। उन्होने कम्युनिज्म की आलोचना की और राष्ट्रीयता की प्रशसा की। मैंने यह अनुभव किया कि उनका हृदय अपने लोगों के प्रति उदार हैं। उन्हें अपनी परवाह नहीं। उनकी इच्छा थी कि उनकी जनता स्वस्थ और खुशहाल रहे। अफगानिस्तान के भविष्य के प्रति वे पूर्णतः आशावान थे। भारतवासियों की भलाई के लिए उन्होंने अपनी शुभकामनाएं दी। एक देशभक्त राजा कि रूप में उन्हें देख में उनसे बहुत प्रभावित हुआ।

काहिरा से गुज़रते हुए *

आधुनिक मिस्र की राजधानी काहिरा जैसे और भी कई सुंदर शहर हैं। नील नदी के आंचल में, पिरामिडों की छत्रछाया में बसे इस शहर की जलवायु बहुत सुखद है, उपजाऊ भूमि है, सुंदर सडकें, आकर्षक भवन आदि विदेशियों को अपनी और आकर्षित करते हैं। कितु स्वेज नहर को पार करने वाले कितने कम भाग्यशाली लोग होंगे जो

*दि मार्डन रिव्यू, कलकत्ता, अप्रैल 1935, पी.पी 426-31

वहां से गुजरते हुए काहिरा गए होंगे।

लॉयड ट्रीस्टीनो कंपनी का आभारी हू कि उन्होंने यह प्रबंध करा दिया कि हम स्वेज पर एम. वी. विक्टोरिया से उतरकर कार द्वारा काहिरा गए, जहा एक दिन बिताकर पोर्ट सईद पर पुन: जहाज़ में सवार हो गए। 16 जनवरी, 1935 को रात्रि 9 बजे हम स्वेज में थे। समुद्र के किनारे से काफी दूर जहाज़ का लंगर डाला गया। अत: हमें फेरी द्वारा किनारे पर पहुंचना पडा। चादनी रात थी। समुद्र का पानी चंद्रमा की रोशनी से चमक रहा था। हमारे चारों ओर स्वेज नहर की तथा ट्रूफिक बंदरगाह की लाइटे चमक रही थी जिनकी परछाई समुद्र में नाच रही थी। कस्टम बैरियर पास करके हम कार में बैठे जो हमे काहिरा ले गई। शीघ्र ही शहर से निकलकर हम रेगिस्तान मे पहुच गए जो उत्तर दिशा में था। हमारे एक साथी को बैडोइन रेगिस्तान में कुछ रोचक घटना घटने का इंतजार था किंतु वह निराश हुआ। सारा रास्ता शांत था दोनों ओर अतहीन रेत फैली थी, सडक सीधी थी और आकाश से चाँद की पीली-पीली चांदनी छिटका रही थी। मध्यरात्रि मे हम काहिरा पहुचे। रात के सन्नाटे में, काहिरा रोशनी से चमकती सडके और सीधे खडे भवन जादुई दिखाई दे रहे थे।

अगली सुबह हम पिरामिड देखने गए। ठडी हवा चल रही थी, चीरकर रख देने वाली हवा से निकल कर हम नील घाटी पार कर विश्व प्रसिद्ध पिरामिडों तक पहुचे जो प्रातःकालीन सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे। हम ठीक उनके नीचे पहुचे और ऊपर गर्दन उठाकर देखने लगे। यही वे पत्थर के स्मारक थे जिन्होंने नेपोलियन जैसे योद्धा की कल्पना को ललकारा था। फ्रांसीसी राजा ने अपनी सेनाए ठीक इनके नीचे लाकर खडी कर दी थी और अपने थके-हारे सैनिकों को यह कहकर प्रोत्साहित किया था कि 5000 वर्ष झुककर उनकी ओर देख रहे हैं। इस अपील का जादुई प्रभाव हुआ और ममेल्यूक्स हवा मे धूल के कणों की तरह उड़ गए। हम पिरामिडों के चारों ओर घूमे और खडहरों के अदर बाहर घूमते हुए सोचने लगे कि ये पिरामिड हमे क्या सिखाते हैं। हा हमे भी प्रेरणा का आभास हुआ। उन दैत्याकार पिरामिडों के सामने फैले अनत रेगिस्तान मे खडे होकर मनुष्य की शक्ति और आत्मा की अनंतता का आभास होता है। इन इमारतो के शिल्पकारों ने समय को हरा दिया है। उन्होंने स्वयं को पत्थरों में सदा के लिए जिदाकर दिया और जिसे भी अंर्तदृष्टि की समझ होगी वह उनसे तादात्म्य स्थापित कर लेगा।

पिरामिडों के समीप ही शाश्वत पहेली बुझाते स्फिक्स हैं । पत्थरों का अद्भुत कार्य, उगते हुए सूर्य को देखकर खोजती आखें-आखिर क्या सदेश देते हैं। एक गाइड ने व्याख्या की कि प्राचीन मिस्रवासी सूर्य देवता के पुजारी थे अत: स्फिक्स या ता सूर्य के सूचक हैं या सूर्य पूजा के प्रतिनिधि है। किंतु वास्तविकता कौन जाने? जिस आत्मा ने स्फिक्स का निर्माण किया वह बोलती नही इसलिए वे अनबूझ पहेली बनकर रह गए। स्फिक्स के सिर पर एक चिड़िया स्थिर बैठी थी। गाइड ने "यह स्फिक्स की आत्मा है" बताते हुए हमारी कल्पना को झिझोड़ा। 'प्रत्येक प्रात: यह इन्हें मिलने आती है।' अधिक पास से देखने पर हमें महसूस हुआ कि स्फिक्स की नाक उड़ चुकी है। हमने सोचा यह भी एक पहेली है। किंतु गाइड ने हमें कुछ सोचने का मौका न दिया "नेपोलियन की

केनन बाल ने यह सब किया है।" एक गाइड ने बताया। नेपोलियन का संबध पिरामिडो से तो था ही अतः हम इस बात से भी आश्वस्त हो गए। किंतु दूसरे गाइड ने उसका विरोध किया-"ये तो अरब के मूर्ति भंजक थे जिन्होंने यह सब किया ताकि प्राचीन मिस्रवासियों की मज़ाक उडा सके।"

दुविधा की स्थिति में हम स्फिंक्स को छोड़ पिरामिडों की ओर मुडे। हमारे गाइड ने पूछा-"क्या आप पिरामिड के ऊपर तक जाना चाहेंगे?" हमारा उत्तर था-"नहीं हमारे पास समय कम है, धन्यवाद।" उसने बताया- "यहां एक आदमी ऐसा है जो केवल आठ मिनट मे ऊपर जाकर नीचे आ सकता है।" हमने सोचा यह हमे ठगना चाह रहा है अतः हमने इकार कर दिया कि हमें इसमें कोई दिलचस्पी नही है। इस सब की अपेक्षा हमने सबसे बड़े पिरामिड को घूमघाम कर देखना उचित समझा। वह अधिक कठिन कार्य नही था। पिरामिड के नीचे एक बडे कमरे की ओर जाने वाला तग रास्ता बिजली द्वारा प्रकाशित था। केवल हाल तक पहुंचते हमारी पीठ दुख गई क्योकि जब हम सीढिया चढ रहे थे तो हमे लगातार झुककर चलना था। पिरामिड 450 फीट की ऊचाई पर था और हाल तक पहुचने के लिए हमें इसकी आधी चढ़ाई करनी पडी। पुराने राजाओं की ममी को यहा सभालकर रखा जाता था, अब यह हाल खाली था क्योंकि ममियों को सग्रहालयों में पहुंचाया जा चुका था। एक और छोटा कमरा भी था जहां रानियो की ममी रखी जाती थीं।

गिजा के पिरामिड, जहां स्फिंक्स भी हैं काहिरा से लगभग नौ मील की दूरी पर है। कुल मिलाकर 9 पिरामिड हैं-तीन बड़े और छः छोटे। बड़े पिरामिड तो सही सलामत स्थिति में है, केवल कुछ जगहों पर कोटिंग उखड़ गई है। काहिरा से बहुत दूरी पर पिरामिडों का एक और समूह भी है जो 20 मील दूर प्राचीन शहर मेमाफिस के निकट है, वहा मिस्र के प्राचीन राजाओं की मूर्तियां भी विद्यमान हैं।

काहिरा का प्राचीन वस्तुओं का सग्रहालय भी पिरामिडो से कम दिलचस्प नही है। इस संग्रहालय में मिस्र भर से मिली वस्तुएं एकत्रित की गई हैं। इस सग्रहालय का सबसे आकर्षक हिस्सा वह है जहा तूतेनखामेन के मकबरे से मिली वस्तुएं रखी गई हैं जो ऊपरी मिस्र के लक्सर क्षेत्र में स्थिति था। लक्सर से मिले खजाने का, जो कि सग्रहालय में रखा है वर्णन करना असभव है और एक दो बार वहां जाकर देख पाना ही पर्याप्त नही है। प्रत्येक कदम पर प्राचीन मिस्रवासियो द्वारा 2000 ईसा पूर्व से भी पुराने समय मे अर्जित कला व सभ्यता को देख व्यक्ति आश्चर्यचकित रह जाता है। कला के नमूने आज भी ऐसे दिखाई देते है जैसे अभी-अभी बने हों, और उस कलाकारी के साथ-साथ इनको सभालकर रखने की कला भी प्रभावित करती है जिसकी वजह से समय का उन पर कोई असर नही हुआ है। मिस्र की तुलना में भारत भी अपनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता की डींग मार सकता है किंतु यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि हम उन लोगो की भाति अपनी कला व सभ्यता के नमूनों को संभाल पाने में अक्षम रहे हैं। मेरे विचार से वैसे भी हम लोग जीवन के भौतिक पक्ष-कला और कलाकारी को मिस्र वासियों की भाति विकसित नही कर पाए। हमारा जोर सभ्यता की अपेक्षा सस्कृति पर अधिक रहा, जीवन के भौतिक

पक्ष की अपेक्षा बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्ष पर हमने अधिक बल दिया। इसमे हमे कई लाभ भी हुए और कई हानियां भी हुईं। अपनी अच्छी विचार शक्ति के कारण हम मानसिक रूप से तो आक्रांताओं से प्रभावित नहीं हुए यद्यपि भौतिक रूप में कुछ समय के लिए हम लुप्त प्रायः हो गए, धीरे-धीरे हमने आक्रांताओं को अपने आप में मिला लिया जबकि प्राचीन मिस्र के लोग अरब आक्रांताओं के सामने झुक गए और पूरी तरह समाप्त हो गए। दूसरी ओर बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्ष पर बल दिए जाने की वजह से हम विज्ञान में अधिक उन्नति नहीं कर पाए जिससे भौतिक वस्तुओं मे, अर्थात आत्मा और शरीर मे, सतुलन कायम कर सकें और दोनों क्षेत्रों में उन्नति हो। क्योंकि आत्मा और शरीर का परस्पर गहरा संबंध है इसलिए शरीर का ध्यान न रखने से राष्ट्र न केवल भौतिक रूप से कमजोर होता है, बल्कि कुछ समय बाद आध्यात्मिक रूप मे भी दुर्बल हो जाता है। फिलहाल भारत केवल भौतिक रूप से ही कमजोर नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी दुर्बल हो चुका है, जिसका मुख्य कारण जीवन के एक पक्ष को भूल जाना ही है। यदि हम पुनः अपना अस्तित्व बनाना चाहते हैं तो हमें दोनों क्षेत्रो मे एक साथ उन्नति करनी होगी।

पुनः वर्णन पर आता हू । सुबह के समय सैर सपाटा कर लेने के बाद दोपहर में हमने शहर के अंदर दर्शनीय स्थलों की सैर की। काहिरा में मस्जिद और मकबरों की भरमार है और बहुत सा पुराना इतिहास इनमें दबा पड़ा है। प्रत्येक मस्जिद की अपनी सुदरता और अपनी कहानी है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि बाइबिल के सदर्भ वाले दृश्य यहा उपस्थित हैं, किंतु इनमें कितना यथार्थ है, कहना कठिन है। उदाहरणार्थ वृहत सिटेडल (काहिरा का प्राचीनतम किला) में गाइड ने मुझे एक बहुत गहरा कुआ दिखाया, जो उसके अनुसार जोज़ेफ का किला है। काहिरा का सबसे आकर्षक स्थल सिटेडल है जहा से पूरे काहिरा शहर का दृश्य देखा जा सकता है। मोहम्मद अली का किला जहा से यह दृश्य दीखता है दुर्भाग्य से आजकल उस पर किसी का ध्यान नहीं है। गाइड ने हमें वह कमरा दिखाया जहां मोहम्मद अली ने ममेल्यूक्स को रात्रिभोज पर आमन्त्रित किया था और वही अचानक पकड कर उन्हें मरवा दिया। केवल एक ममेल्यूक्स बच पाया था। इस किले के बाहर, मोहम्मद अली की मजार है जिसे आजकल काफी पैसा खर्च करवाकर पुनर्निर्मित किया जा रहा है। सुल्तान हसन का मकबरा, नीली मस्जिद, ममेल्यूक्स का मकबरा, अल अजहर विश्व विद्यालय आदि कुछ दर्शनीय स्थल हैं जो पर्यटकों का ध्यान आकर्षित करते हैं ।

पुराने मिस्र को देख लेने के बाद आधुनिक मिस्र की ओर हमारा ध्यान आकर्षित होना स्वाभाविक था। आधुनिक काहिरा शहर सुंदर शहर है और व्यक्ति उसकी प्रशसा किए बिना नही रह सकता। राजा का नया किला कोई बहुत आकर्षक रूप से बनाया गया नही है। ब्रिटिश सेनाओं की बैरकें अधिक आकर्षक हैं। हमें बताया गया था कि मिस्र का राजा है किंतु हमने देखा कि ब्रिटिश सेनाओं के बैरकों में यूनियन जैक शहर के बीचों-बीच किले पर भी लहरा रहा है। क्या स्वतत्रता है।

आधुनिक मिस्र के लोगों का क्या हाल है? मैंने मिस्र की नेशनलिस्ट पार्टी के विषय

मे सुन रखा था जिसे वाफड पार्टी कहा जाता था जिसका नेतृत्व सईद ज़गलोल पाशा ने किया था जो अपने पीछे योग्य उतराधिकारी गुस्तफ़ा-अल-नहास पाशा छोड गया था। काहिरा की यात्रा तब तक अधूरी है जब तक कि किसी नेशनलिस्ट नेता से मुलाकात न की जाए। मेरे पास समय का अभाव था किंतु सौभाग्य से मेरी मुलाकात सभव हो गई। जब मैं मुस्तफा अल-नहास पाशा से मिलने गया तो उनके दो सहयोगी श्री एम एफ नोकरशी, और श्री मकरम एबेद भी उनके साथ थे। हमारी दिलचस्प बातचीत हुई। मैं पहली ही बार में मिस्र के बारे मे सब कुछ जानलेना चाहता था जबकि वे भारत के विषय में जानने को उत्सुक थे। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि नेसीम पाशा के साम्राज्य के अंतर्गत मिस्र मे आयुध राज्य का अंत हो गया था। राष्ट्रवादी एक बार फिर खुलकर सास ले सकते थे। 8 और 9 जनवरी 1935 को काहिरा मे वाफड पार्टी का सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें लगभग 30,000 लोगों ने भाग लिया, जो एक सफल आयोजन सिद्ध हुआ। ससदीय चुनाव जल्द ही होने वाले थे और वाफड पार्टी को आशा थी कि वे चुनाव जीतेंगे। कुल मिलाकर राष्ट्रवादियों की स्थिति अच्छी थी और नेतागण उत्साहित दिखाई दे रहे थे। भारत के विषय में बात करते समय सबसे पहले गुस्तफा अल-नेहास पाशा ने महात्मा गांधी के स्वास्थ्य के बारे में पूछा। उन्होने बताया कि सन 1931 में जब महात्मा गांधी भारत लौट रहे थे तब उन्होंने अपने सचिव को पोर्ट सईद भेज कर महात्मा गाधी को काहिरा आमंत्रित किया था और अपने घर पर एक बैठक आयोजित भी की जिसमें उनकी पार्टी के प्रमुख नेता भी आमंत्रित थे। किंतु दुर्भाग्यवश महात्मा गांधी उपस्थित नही हो सकें। फिर हिंदू-मुस्लिम संबंधों पर हमारी चर्चा हुई। मुस्तफा ने उन कट्टरपथी साम्प्रदायिक व्यक्तियों की आलोचना की जो भारतीय राष्ट्रीयता के खिलाफ़ थे। उन्होंने एक-एक करके उन नेताओ के बारे में पूछा जो नेशलिस्ट पार्टी के साथ थे और जो सरकार के साथ थे। उन्होंने बताया कि मिस्र में मुसलमान और ईसाई मिल-जुलकर रह रहे हैं और दोनों सप्रदाय के लोग मिल-जुल कर मिस्र की उन्नति के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि शीघ्र ही भारत में भी ऐसा ही होगा। संक्षेप मे मैंने मुस्तफ़ा को यह आश्वासन दिलाया कि भारतवासी मिस्र के लोगों में बहुत दिलचस्पी रखते हैं और उनकी हार्दिक सवेदनाएं उनकी आजादी की लड़ाई में उनके साथ हैं। इसके प्रत्युत्तर में उन्होंने भी मिस्रवासियों की हार्दिक सहानुभूति का आश्वासन दिया और कहा कि भारत के स्वाधीनता संघर्ष में मिस्रवासी उनके साथ हैं।

मिस्र और ब्रिटिश के मध्य रीढ का कार्य करने वाले चार महत्वपूर्ण प्रश्न है। प्रथम है-ब्रिटिश सेना, दूसरे यूरोपीयन ट्रिब्यूनल का अस्तित्व जिसके प्रयास से मिस्र मे यूरोपीय समुदाय बना रहेगा, तीसरे स्वेज नहर पर कब्जा और चौथे मिस्र के बीच सूडान को मिलाना। जब गुस्तफ़ा-अल-नहास पाशा प्रधानमत्री थे तब इंग्लैंड में लेबर कैबिनेट थी, और समझौते की बातचीत चल रही थी। कई प्रश्नों पर समझौता हो भी गया था किंतु सूडान के प्रश्न पर गतिरोध आ गया था। जब लेबर पार्टी सदन से हट गई तो पूरा वातावरण बदल गया। अब जब से चीन क़े सुप्रसिद्ध सर माइल्स लॉक हैंपसन मिस्र के हाई कमिश्नर बने हैं तब से फिर माहौल बदला है।

काहिरा मे पूरा व्यस्त दिन व्यतीत करने के पश्चात हम लोग गाडी से पोर्ट सईद के लिए रवाना हुए ताकि अपना जहाज पकड़ सकें। गाड़ी में हमारे साथ कई मिस्रवासी यात्री थे, उनमें से कुछ अंग्रेजी (मिस्र में अंग्रेजी की अपेक्षा फ्रेंच अधिक बोली जाती है) बोल रहे थे, शीघ्र ही हमारी उनसे बातचीत प्रारंभ हो गई। हम वाफड पार्टी के विषय मे आम आदमी की राय जानना चाहते थे। एक यात्री, क्रिश्चियन, जो सरकारी नौकर था पहले-पहले कुछ झिझकता रहा किंतु बाद में उसने हमसे खुलकर बातचीत की। उसने मिस्र के नेताओ की अत्यधिक प्रशसा की और कहा कि और सब बातों के अलावा सभी मिस्र वासी, चाहे मुसलमान हो या क्रिश्चियन, तरबूश अथवा टोपी अवश्य पहनते हैं क्योंकि यह मिस्र की राष्ट्रीय पोशाक है। (तब तक मैं इस टोपी को मुसलमानो का द्योतक मानता था)।

रात्रि 11 बजे हम अपने जहाज़ पर थे। एक घंटे में वह चल पड़ा। मध्य सागर के प्रवेश मे हमने फ्रांसीसी इजीनियर लेसेप की मूर्ति देखी जिसने स्वेज नहर का निर्माण किया था। जल्दी ही हम समुद्र के मध्य पहुच गए। लहरों के बढ़ने के साथ-साथ पोर्ट सईद की रोशनी धीमी से धीमी होती चली गई। सुबह होते होते जहाज घूमने लगा था और हम सब बीमार अनुभव करने लगे थे।

भारतीय विद्यार्थियों के लिए विदेश में व्यावहारिक प्रशिक्षण

द्विपक्षीय व्यापार समझौते का प्रश्न

कार्ल्सबाद (एयरमेल द्वारा, अगस्त 1935 में यूनाइटेड प्रेस को प्रेषित)

पिछले युद्ध के बाद से बहुत से भारतीय विद्यार्थी यूरोप, विशेषरूप से जर्मनी मे स्नातकोत्तर शिक्षा और वहा की फैक्टरियों में व्यवहारिक प्रशिक्षण पाने के लिए जा रहे हैं। यद्यपि ब्रिटिश उद्योग भारतीय प्रशिक्षुओ पर कई प्रकार के अवरोध खडे कर रहे हैं किंतु अभी कुछ समय पूर्व तक जर्मनी उद्योग भारतीय प्रशिक्षुओं को खुले हृदय से स्वीकार कर रहे थे। सन 1920 तक बहुत से भारतीय जर्मनी विश्वविद्यालयों और उद्योगों मे अध्ययन और प्रशिक्षण पा चुके है और भारत में जर्मनी की लोकप्रियता बढा चुके हैं। दुर्भाग्य से जर्मनी के नए राज्य ने धीरे-धीरे परिवर्तन ला दिया जिससे भारतीय विद्यार्थियों पर दुष्प्रभाव पडा है। जब 1933 में मैं पहली बार जर्मनी गया तब मेरे को कई शिकायतें सुनने को मिली थी कि जर्मनी उद्योगों में भारतीय विद्यार्थियों को दाखिला नहीं दिया जा रहा। समय के साथ इन शिकायतों में निरंतर वृद्धि हुई है। मैं कुछ खास उदाहरण देना चाहूगा। एक भारतीय विद्यार्थी जिसने जर्मनी यूनिवर्सिटी से फार्मास्यूटिकल केमिस्ट्री मुख्य विषय के रूप में पढी, उसे जर्मन फैक्टरी में व्यवहारिक प्रशिक्षण के लिए दाखिला नही मिल पाया। एक अन्य विद्यार्थी जिसने जर्मन यूनिवर्सिटी से इडस्ट्रियल केमिस्ट्री में डाक्टरेट की, उसे जर्मन फैक्टरी में कोलतार डिस्टीलेशन के लिए दाखिला नहीं दिया गया। एक और होनहार छात्र जो इजीनियरिंग का अध्ययन पूरा कर रहा उसे साइमन और हाला के जैसे उद्योगो ने व्यावहारिक प्रशिक्षण देने से इकार कर दिया। एक और इजीनियरिंग का छात्र जो कपडा

मिल में स्पिनिंग का प्रशिक्षण लेना चाहता था उसे हर जगह प्रवेश देने से इंकार कर दिया और अतत: उसे पोलिश कपड़ा उद्योग में प्रवेश मिला है।

बिगड़ती स्थिति

अब मैं भारतीय लोगों व भारतीय उद्योगों से प्रश्न करता हूं कि हमने इस बिगडती स्थिति को इसी प्रकार हाथ जोड़ स्वीकार करना है या इस स्थिति का कोई हल भी खोजना है। इस बारे में मैं अपने विचार सामने रखना चाहता हू कि इन स्थितियों में अन्य देश क्या करते।

पहले तो मैं कहूगा कि वर्तमान स्थिति मे, जर्मन उद्योगो को यह स्वतत्रता प्राप्त नहीं है कि वे अपनी इच्छा से विदेशी प्रशिक्षुओं को प्रवेश दे सके। प्रत्येक मामले को जर्मन सरकार द्वारा नियुक्त बोर्ड के समक्ष निर्णय हेतु भेजा जाता है। उस बोर्ड के अध्यक्ष डा सेबाख हैं।

तुर्की, चीन, पर्शिया आदि जैसे देश जब विदेशी कंपनियों के साथ कोई आदेश पर अतिम निर्णय करते हैं तो उनकी एक शर्त रहती है कि उनके कुछ देशवासियो को उन फैक्टरियों में प्रशिक्षण भी दिलाया जाएगा। इस शर्त को विदेशी फर्म स्वीकार करती है, जर्मनी सहित। विश्व में भारत एक मात्र ऐसा देश है जो बाहर से बहुत अधिक मात्रा में माल खरीदता है किंतु अपनी कोई शर्त सामने नहीं रखता। इस स्थिति के लिए भारत सरकार और भारतीय नेता दोनों ही जिम्मेदार हैं।

वैकल्पिक उपाय

अब प्रश्न उठता है कि आखिर इसका इलाज क्या है? मैं कुछ व्यावहारिक उपाय सुझाऊंगा। ससदीय लोकसभा के सदस्यों को सरकार से अनुरोध करना चाहिए कि वे सभी उन देशों, जिनसे भारत बहुत सा सामान खरीदता है, की सरकारों से कहें कि वह भारतीय विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण की सुविधाएं दिलवाएं। यदि इस कार्य मे असफलता मिले या भारत सरकार यह कार्य करने से इंकार कर दे तो इंडियन चैंबर आफ कामर्स को सीधे सभी देशों की चैंबर आफ कामर्स से इस विषय में सपर्क करना चाहिए। यदि यह कदम भी नहीं उठाया जाता या इसमें भी असफलता हाथ लगती है तो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को चाहिए कि वह अपने प्रतिनिधियों द्वारा सभी देशो मे प्रतिवेदन करे। यदि यह कदम भी नहीं उठाया जाता या प्रभावशाली महसूस नहीं होता तो, वे सभी उद्योग जो विदेशो को माल सप्लाई के आदेश देते हैं, यह सुनिश्चित करें कि जब वे आदेश दें तो यह शर्त भी लगा दें कि उनके इतने व्यक्तियों को उन फैक्टरियों मे प्रशिक्षुओं की हैसियत से प्रवेश दिया जाए।

सबसे प्रभावी कार्य भारत सरकार को करना है। किंतु क्या वह कुछ करेगी? हमारे ससदीय प्रतिनिधियों को कुछ करना चाहिए। मुझे निजी अनुभव है कि इन सभी उपमहाद्वीप देशो में चैंबर आफ कामर्स का सरकार और उद्योगों पर अच्छा प्रभाव है। यदि भारती चैंबर आफ कामर्स गंभीरतापूर्वक इन देशों के चैंबर आफ कामर्स से सपर्क करें तो वे

अवश्य कार्यवाही करेंगे, यदि सहानुभूतिपूर्वक नही भी तो, इस भय से कि कही भारत से उनका व्यापार समाप्त न हो जाए। अतः यदि संसद का प्रयत्न असफल रहे तो चैंबर आफ कामर्स को इस कार्य को अपने हाथ में लेना चाहिए। तीसरा उपाय यह है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इसे हाथ में ले। मैं व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह सकता हू कि कई देशों में कांग्रेस की छवि सम्मानजनक है और लोगों का मानना है कि भविष्य में भारत की सरकार इन्ही की होगी। अतः यदि कांग्रेस द्वारा एक प्रतिवेदन बनाकर दिया जाए तो प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशा है। कई देशों में लोग जानते हैं कि कांग्रेस उन देशों से आयातित सामान का बहिष्कार करने की स्थिति में है जहा भारतीयो के लिए स्थिति सम्मानजनक नहीं है। अत में, उद्योगपतियों को चाहिए कि जब वे किसी देश से उपकरण खरीदें तो यह शर्त लगा दें कि उनके कुछ लोगों को उनकी फैक्टरियों मे प्रशिक्षण दिलाया जाए। मैं कुछ ऐसे भारतीय विद्यार्थियों को भी जानता हूं जो देशभक्त भारतीय उद्योगपतियो की सहायता से विदेशों में प्रवेश पाने में सफल हो गए क्योंकि उद्योगपतियों ने यह माग रखी थी। मैं ऐसे कई भारतीय उद्योगपतियों को जानता हू जो इस प्रकार भारतीय विद्यार्थियों की सहायता करने में सक्षम तो हैं किंतु मना कर देते हैं । वही उद्योगपति यह चाहते हैं कि हम उनके बनाए माल को देशभक्ति के आधार पर खरीदें।

उपरोक्त चारो विधियों को एक साथ लागू करना असंभव किंतु आवश्यक है। जर्मनी में प्रशिक्षण पाने के इच्छुक भारतीय विद्यार्थियों की स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है। अतः शीघ्र ही कदम उठाए जाने आवश्यक हैं ।

अन्य देशों से संबंध

1933 में जर्मनी में शुरू हुई कठिनाइयों की जानकारी मिलने के बाद से ही मैं अन्य देशों से सबध विकसित करने का प्रयत्न कर रहा हूं ताकि यदि जर्मनी भारतीय प्रशिक्षुओं के लिए अपने दरवाजे बंद कर लेता है तो वे एकदम बेकार न हो जाए। मुझे यह कहने में प्रसन्नता है कि कई देशों में भारतीयों के लिए मार्ग खुला है अतः उसका विस्तार किया जा सकता है। यदि हम सही योजना व उद्देश्य के तहत कार्य करे तो चेकोस्लोवाकिया की फर्म सकोडा भारतीय प्रशिक्षुओं का अवश्य स्वागत करेगी। इटली की मोरेली और पिरेली फैक्टरिया भी हर्षपूर्वक भारतीयों को स्वीकारेंगी। लोडज की पोलिश कपड़ा उद्योग मिल भी सहायक सिद्ध हो सकती है। यह कहना व्यर्थ है कि हमारे प्रशिक्षुओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराने वाले देशों के प्रति हमें भी अपना योगदान देना होगा।

औद्योगिक विकास

इस बात से तो सभी सहमत होंगे कि भारत के औद्योगिक विकास के लिए न केवल धन की आवश्यकता है अपितु श्रमिकों, राज्य सहायता तथा तकनीकी विशेषज्ञों की भी आवश्यकता है। राजनैतिक सत्ता हमारे हाथ में आते ही धन, श्रमिक और राज-सहायता स्वय उपलब्ध हो जाएगी । किंतु विशेषज्ञों का प्रशिक्षण अधिक समय ले सकता है। 1917

से रूस के अनुभव हमें बताते हैं कि हमें आज से इस गंभीर समस्या पर विचार शुरू कर देना चाहिए । यदि हम विदेशी विशेषज्ञों के सम्मुख आत्म समर्पण करना नहीं चाहते। जब दिल्ली में भारत-जापान व्यापार समझौता हो रहा था तब अनुमान लगाया जा रहा था कि जापान हमारे यहां से कपास खरीदेगा, किंतु उस समय जापानी कपड़ा उद्योगों में भारतवासियों के प्रशिक्षण पर कोई चर्चा नहीं की गई।

यह हमारे सामने द्विपक्षीय व्यापार समझौते के प्रश्न खडे करता है। हमे जर्मनी, इटली, चेकोस्लोवाकिया, यू.एस.ए. आदि के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौता कर लेना चाहिए। भारत-जापान व्यापार समझौते के उदाहरण के आधार पर इस प्रकार के समझौते हमारी आर्थिक स्थिति को देखते हुए भी और व्यापार संतुलन बनाए रखने की दृष्टि से भी अति आवश्यक है। जर्मनी जैसे देश हमसे माल कम खरीद कर अधिक माल हमे क्यो बेचें? इसके विपरीत हम चेकोस्लोवाकिया जैसे देशों से इतनी कम खरीददारी क्यो करें जबकि वे हमसे अधिक मात्रा में माल खरीदते हैं।

व्यापार समझौते

अलग-अलग देशों से व्यापार समझौते करने के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि हमारे देश के व्यापारी अन्य देशों के व्यापारियों के निकट संपर्क में आए। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अन्य देशो से मिली-जुली संस्थाओं अथवा चैंबर आफ कामर्स की स्थापना की है। अतः यदि हम चेकोस्लोवाकिया के साथ सपर्क स्थापित करना चाहते हैं तो हमें भारत मे इंडो-चेकोस्लोवाकिया सस्था या इंडो-चैकोस्लोवाकियन चैंबर्स आफ कामर्स की स्थापना करनी चाहिए। इसी प्रकार अन्य देशों के साथ भी जिनमें हमें दिलचस्पी है ऐसी सस्थाए बनाई जानी चाहिए। इस रूपरेखा पर प्राग, विएना और रोम में तो सस्थाए स्थापित करने का कार्य शुरू भी हो चुका है। यह आवश्यक है कि भारत में ऐसी संस्थाए हों जो इन सबधो के विकास हेतु लिखा-पढ़ी कर सकें और भारत तथा यूरोप मे मिले जुले चैंबर्स बनाए जाएं।

रोम्यां रोलां क्या सोचते हैं? *

बुधवार, 3 अप्रैल, 1935 । चमकती सुबह और जिनेवा सुंदर व आकर्षक दिखाई देता हुआ। दूर नीले आकाश के पार बर्फ़ से ढ़की सेलेव पहाड़िया। हमारे सामने बहती सुदर नहर जिसमें किनारे खडे भवनों की परछाइयां दिखाई दे रही थी। मैं धार्मिक स्थल की यात्रा पर था। दो वर्ष पूर्व, जब से मैं यूरोप में आया था तभी से मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं उस महान व्यक्ति एव विचारक, जो भारत का तथा भारतीय सस्कृति का अच्छा मित्र है, माननीय रोम्यां रोलां से मुलाकात करूं। अपरिहार्य कारणों से 1933 में और फिर 1934 में मैं उनसे नहीं मिल पाया किंतु तीसरा प्रयास सफल होने जा रहा था। मैं बहुत उत्साहित था किंतु कभी-कभी उत्सुकता और शक की लहर मेरे भीतर दौड

---

* दि माडर्न रिव्यू कलकत्ता, सितबर 1935 पी.पी 319-241 इस लेख को माननीय रोम्या रोला ने सशोधित किया था।

जाती। क्या यह व्यक्ति मुझे प्रेरित करेगा या मैं निराश ही वापस लौट जाऊगा। क्या यह दार्शनिक और स्वप्नकार जीवन की उन सच्चाइयों का समर्थन करेगा। उन व्यावहारिक कठिनाइयों का जिनसे गुजरकर व्यक्ति हर आयु व वर्ग में जीवन के मार्ग मे सघर्षरत होता है। क्या यह व्यक्ति उस भविष्य को पढ़ पाएगा जो भारतीय इतिहास की दीवारो पर लिखा गया है?

22 फरवरी के उनके पत्रों के कुछ शब्दों ने मुझे उत्साहित किया था- "हम विचारको को, प्रत्येक को, उन विचारों के विरुद्ध सघर्ष करना चाहिए जो हमे हतोत्साहपूर्ण व अनिश्चय की स्थिति में घेर लेते हैं। विश्व को, ईश्वर, कला, आत्मा की स्वतत्रता तथा आत्मा के रहस्यपूर्ण, झगड़ों के विरुद्ध संघर्ष करने के योग्य बनाना चाहिए। हमारी युद्धभूमि अपार समुद्र के इस पार व्यक्तियो की युद्धभूमि है।"

दो घटे तक हम लगातार उस चक्करदार मार्ग पर चलते रहे जो जिनेवा नदी को चारों ओर से घेरे है। मौसम बहुत सुहावना था और जब हम स्विस रिवेरिया के साथ-साथ चल रहे थे तो स्विटजरलैंड के सुंदर दृश्य देखने का लाभ उठाया। जैसे ही हम विलेन्युआ पहुचे कार धीमी हो गई और फिर ओल्गा विला के सामने रुक गई। यह फ्रेंच विद्वान का आवास था। सामने खूबसूरत झील। चारो ओर शांति, सौंदर्य और आकर्षण। किसी योगी के लिए अति उत्तम स्थान।

जैसे ही मैंने घटी बजाई। छोटे कद की, लेकिन सहानुभूति व प्रेम स परिपूर्ण चेहरे वाली महिला ने द्वार खोला। ये श्रीमती रोम्या रोला थी। अभी वे मेरा अभिनदन कर ही रही थीं कि सामने एक और द्वार खुला और वहां एक लंबा व्यक्ति, पीली मुखाकृति और अद्भुत भेदती आखों वाला, सामने आया। हा! यह यही चेहरा तो मैंने कई चित्रों में पहले भी देखा था, देखकर आभास होता था कि यह मानवीय दुखो से दुखी चेहरा है। उस पीले चेहरे में कही उदासी छिपी थी, कितु निराशा का कही नाम-निशान नही था। जैसे ही उसने बातचीत शुरू की, सफ़ेद गालों पर रंगत आई, आखो में अजनबी चमक आई, और जो शब्द उन्होंने बोले वे जीवन और आशा से परिपूर्ण थ।

प्रारभिक मेल-मिलाप और भारत व भारतीय मित्रों के विषय मे पूछताछ शीघ्र ही खत्म हो गई और हम लोग गंभीर विचार-विमर्श करने लगे। माननीय रोम्या रोला अग्रेजी नही बोलते- बोल सकते थे और मैं फ्रेंच नहीं बोल सकता था। मेरा उद्देश्य था कि मैं उनसे भारत की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करू और विश्व के सम्मुख पैदा हुई महत्वपूर्ण समस्याओं पर उनके विचार जानूं। इसलिए पहले मैंने भारतीय स्थिति का वर्णन अपने विश्लेषण व कल्पना के हिसाब से करने में बहुत-सा समय लगाया। दो मुख्य सिद्धातो, जिन पर हमारा पिछले 14 वर्ष का आदोलन आधारित है, जिनमें से पहला सत्याग्रह और अहिंसक अवज्ञा, तथा दूसरा हर जाति और वर्ग के लोगों का एकत्रित होकर कार्य करना अर्थात धनिक और श्रमिक तथा जमीदार व किसान आदि। भारत को पूर्ण विश्वास था कि सत्याग्रह आदोलन द्वारा शातिपूर्ण हल निकलेगा जिसमें निम्न प्रक्रिया अपनाई जानी थी। भारत मे यह आदोलन देश के प्रशासन को पगु बनाकर रख देगा। भारत के बाहर सत्याग्रह के गौरवशाली आचरण द्वारा ब्रिटिश लोगों की आत्मा को झकझोर जाएगा। इस प्रकार सघर्ष

विशेष का अंत हो जाएगा और एक समझौते पर पहुच सकेंगे जिसके द्वारा बिना झगडा किए और खून बहाए भारत को आजादी मिल सकेगी। किंतु आशा व्यर्थ रही। भारत में इस सत्याग्रह ने अहिंसक आदोलन छेड़ा इसमें शक नहीं, लेकिन उच्च सेवाएं अर्थात सिविल सेवाए और सैन्य सेवाए अप्रभावित रहीं। अत: राज का राज्य पहले की तरह चलता रहा। भारत के बाहर गाधीजी को इस आचरण से कुछ मुट्ठीभर उच्च विचारों के अंग्रेज लोग तो प्रभावित हुए, किंतु साधारण ब्रिटिश जनता इन सबसे अप्रभावित रही, आत्मस्वार्थ ने इस उच्च आचरण की अपील को धराशायी कर दिया।

स्वतंत्रता प्राप्त करने में असफल रहने पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं ने अपने आप को टटोलने का प्रयास किया। कांग्रेस के लोगों का एक वर्ग तो यह मानता था कि हमें संसदीय प्रणाली के भीतर ही रहकर अपनी पुरानी कार्य प्रणाली को अपनाना चाहिए। महात्मा गाधी व उनके रूढिवादी अनुयायी, अवज्ञा आंदोलन (सत्याग्रह) को स्थगित कर देने के बाद ग्रामवासियों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के कार्य में जुट गए। किंतु तर्कवादी गुट ने, निराशा के वशीभूत होकर, नई विचारधारा और नई कार्य योजना बनाई जिसमें कांग्रेस समाजवादी पार्टी के अधिकाश लोग भी शामिल थे।

अपनी लंबी भूमिका के पश्चात मैंने "पूछा यदि सयुक्त मोर्चा टूट गया और नए आंदोलन की शुरुआत हुई जो महात्मा गांधी के सत्याग्रह से अलग प्रकार का सत्याग्रह हुआ तो श्रीमान रोम्यां रोला का विचार इस विषय में क्या होगा?"

श्रीमान रोला ने बताया कि "यदि गांधी का सत्याग्रह आंदोलन भारत को स्वतंत्रता दिलाने में असफल रहा तो उन्हें बहुत निराशा होगी। विश्वयुद्ध के पश्चात जब पूरा विश्व खून और घृणा के विचारों से लिप्त था तब क्षितिज में एक आशा की किरण फूली थी । जब महात्मा गाधी एक नए राजनैतिक हथियार के साथ युद्ध भूमि में उतरे थे। पूरी आशा थी कि विश्वभर में गांधी का प्रभाव फैला था।"

मैंने कहा- "हमारे अनुभव के अनुसार, गाधीजी का मार्ग इस भौतिकवादी विश्व के लिए बहुत नर्म मार्ग है। एक राजनैतिक नेता के रूप में वे अपने विरोधियों से बहुत स्पष्ट रूप में बात करते हैं। हमें यह भी आभास हुआ है कि यद्यपि भारत में अंग्रेजों को कोई पसद नहीं करता फिर भी वे अपनी भौतिक शक्ति द्वारा भारत में अपना अस्तित्व कायम रखे हुए हैं भले ही सत्याग्रह आंदोलन से उन्हें असुविधा और खेद पहुंचा हो। यदि सत्याग्रह आदोलन असफल हो जाता है तो क्या रोम्यां रोलां यह पसंद करेंगे कि राष्ट्रीय सघर्ष अन्य विधियो से जारी रहे और क्या वे भारतीय आदोलन में अपनी दिलचस्पी रखनी बद कर देंगे?"

उन्होंने सहानुभूति पूर्वक उत्तर दिया-"संघर्ष हर हाल में जारी रहना चाहिए।"

"किंतु मुझे कई यूरोपीय मित्रों ने, जो भारत के पक्ष में है, बताया है कि भारत के स्वाधीनता आदोलन में उनकी रुचि केवल महात्मा गांधी के अहिंसक आदोलन की वजह से ही है।"

रोलां महोदय इस विषय में उनसे सहमत नही थे। उन्हें दुख होगा यदि सत्याग्रह

असफल रहा किंतु यदि वास्तव में यही हुआ तो वे चाहेंगे कि जीवन के सत्यो को स्वीकार कर उनका सामना करते हुए आदेलन नई रूप-रेखा में सामने आए।

यह उत्तर मेरी आकांक्षा के अनुरूप था। यह एक ऐसा आदर्शवादी व्यक्ति था जो हवाई किले बनाने की अपेक्षा धरातल पर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहता है।

मैंने कहा-"यूरोप में कुछ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि जैसे रूस में दो लगातार आंदोलन हुए-एक मध्यवर्ग का लोकतांत्रिक आंदोलन और दूसरा समाजवादी आदोलन वैसे ही भारत मे भी दो आंदोलन होंगे-एक राष्ट्रीय लोकतान्त्रिक आंदोलन और दूसरा सामाजिक आदोलन। *मेरे विचार से राजनीतिक स्वतत्रता का सघर्ष सामाजिक-आर्थिक सघर्ष के साथ-साथ* किया जाना चाहिए। जो पार्टी भारत में राजनैतिक स्वतत्रता लाएगी वही पार्टी देश में सामाजिक आर्थिक पुनर्निर्माण के कार्यक्रम को भी लागू करेगी। रोम्यां रोला साहब आपका इस विषय में क्या विचार है?"

इस विषय में वे कोई स्पष्ट राय व्यक्त करने में असमर्थ रहे क्योकि भारतीय स्थिति के तथ्यों से वे भली-भांति परिचित नहीं थे।

मैंने फिर पूछा "यदि भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस की संयुक्त मोर्चा नीति भी भारत को स्वतत्रता दिलाने में असफल रही और उसके स्थान पर किसानों और श्रमिकों के हित मे सघर्ष करने वाली नई पार्टी उभरी तो माननीय रोमा रोलां महोदय का विचार क्या होगा?"

माननीय रोलां साहब का स्पष्ट विचार था कि अब समय आ गया है जब कि काग्रेस को आर्थिक मुद्दों पर स्पष्ट निर्णय लेना चाहिए। उन्होंने बताया-'मैं गाधी को भी इस विषय में लिख चुका हूं कि उन्हें इस प्रश्न पर निर्णय ले लेना चाहिए।"

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतरी मतभेदों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि मुझे दो राजनीतिक दलों में से एक को चुनने में कोई दिलचस्पी नही है। जिसमें मेरी दिलचस्पी है या जो मेरे लिए महत्वपूर्ण है वह प्रश्न और है। राजनैतिक दल मेरे लिए कोई महत्व नहीं *रखते, यही चिता उन्हें सताती है। गांधी (अथवा कोई पार्टी)* को श्रमिकों के हित मे कार्य करना चाहिए और समाजवादी संस्था के हित मे आवश्यक कार्य होना चाहिए, और यदि गांधी (अथवा कोई पार्टी) स्वयं को श्रमिक वर्ग से अलग-थलग कर लेती है तो मैं सदा दमित श्रमिक वर्ग के पक्ष में रहूगा, मैं उनके प्रयासो में अपनी भागीदारी भी दूगा क्योंकि उन्ही के पक्ष में मानवीय समाज के विकास के लिए आवश्यक नियम और न्याय हैं।

मुझे प्रसन्नता भी हुई और आश्चर्य भी। मैंने अपने आशावादी क्षणो में भी कभी यह नही सोचा था कि यह महान विचारक इतने स्पष्ट रूप में श्रमिक वर्ग के पक्ष में बोलेगा। थकान अनुभव हो रही थी और मुझे अपने मेजबान के स्वास्थ्य की अधिक चिता थी। जब चाय की घोषणा हुई तो आराम का अनुभव हुआ और हम लोग साथ के कमरे मे गए।

चाय पीते समय भी हमारा वार्तालाप अबाध गति से चलता रहा। ढाई घटे की परिचर्चा मे कई समस्याओं पर हमारी बात हुई। श्री रोलां काग्रेस समाजवादी पार्टी के गठन

मे काफी दिलचस्पी ले रहे थे। पंडित जवाहरलाल नेहरू व अन्य नेताओं के सतत बंदी बनाए जाने की भी उन्हें अत्यधिक चिंता थी। महात्मा गांधी के कार्यों, भाषणों, लेखों, मे उनकी अद्भुत रुचि थी। उदाहरण के लिए उन्होंने अपनी पुरानी फाइलों में से महात्मा गाधी का पुराना बयान निकाला जिसमें उन्होने समाजवाद के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की थी। महात्मा गांधी व उनकी कार्य पद्धति पर हमने विस्तार से बात की। मैंने कहा कि महात्मा गाधी आर्थिक मुद्दे पर कोई निश्चित कदम नही उठाएंगे। राजनीतिक, सामाजिक व आर्थित मुद्दों पर भी उनकी स्वाभाविक रूप में नम्र नीति है। मैंने उन्हे बताया कि भारत को युवा पीढी उनको नेतृत्व, नीतियों में कुछ खामियों का अनुभव भी करती है खासतौर पर सभी चाले सामने रख देने की नीति और राजनैतिक विरोधियों के सामाजिक बहिष्कार करने की नीति का विरोध करना, ब्रिटिश सरकार के हृदय परिवर्तन की उनकी आशा आदि। उनकी आलोचना से या उनका विरोध करके हमें रत्तीभर भी सुख नहीं मिलता क्योंकि उन्होंने जितना देश के लिए किया उतना किसी भी अन्य व्यक्ति ने नही किया । उन्होंने भारत को विश्व की दृष्टि में ऊपर उठाया है। किंतु हम किसी व्यक्तित्व की अपेक्षा अपने देश को अधिक प्रेम करते हैं ।

मैंने श्री रोला को कहा कि वे सक्षेप में ये बताएं कि उन्होने अपने जीवन मे किन उद्देश्यो के लिए सघर्ष किया। उन्होंने कहा-वे मूल सिद्धांत हैं-

1 अतर्राष्ट्रीयता (सभी जाति-वर्ग के लिए बराबरी का हक)।

2 दमित श्रमिक वर्ग के प्रति न्याय-हमें ऐसे समाज का निर्माण करना चाहिए जिसमें न शोषक हो और न शोषित हों-बल्कि सभी समुदाय के सेवक हो।

3 सभी शोषित राज्यों की स्वतंत्रता।

4 'स्त्री-पुरुषों के समान अधिकार' उन्होंने इनमें से कुछ का विश्लेषण करना प्रारभ किया।

हमारा वार्तालाप समाप्त होने को था, तो मैंने कहा कि दोपहर जो विचार उन्होंने प्रकट किए, उनसे कई वर्गों में आश्चर्य पैदा होगा, क्योंकि वे उनकी हाल की जिंदगी के चिंतन के परिणाम हैं।। टिप्पणी ने बिजली के बटन का कार्य किया और विचारों की गाडी को चालू कर दिया। रोलां महोदय ने बताया कि युद्ध के पश्चात वे अपने सामाजिक विचारों और पूरे आदर्शवाद पर पुनर्विचार करते समय किस मानसिक वेदना से गुजरे हैं। यह मेरे भीतर का सघर्ष था जिसकी युद्ध भूमि बहुत विस्तृत थी, अहिंसा तो उसका एक हिस्सा मात्र था। मैंने अहिंसा के विरुद्ध निर्णय नही लिया था कितु यह निर्णय पक्का था कि इस सामाजिक क्रिया में अहिंसा केंद्रीय धुरी का कार्य नहीं कर सकती। एक साधन, एक प्रस्तावित प्रारूप हो सकता है वह भी अनुभव के आधार पर। उन्होंने आगे बताया हमारे पूरे सघर्ष का मूल उद्देश्य यह होना चाहिए कि एक सामाजिकता- अधिक मानवीय और न्यायपूर्ण -की स्थापना की जानी चाहिए। यदि हम ऐसा नही करेगे तो समाज का अस्तित्व मिट जाएगा। कार्य-विधि पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने बताया-पिछले कई वर्षों से मैं शक्तियों को एकत्रित करने की कोशिश कर रहा हूं ताकि प्राचीन स्थितियों का मुकाबला कर सकें जो मानवीयता का शोषण कर रही है। युद्ध एव कट्टरवाद के विरुद्ध

लड़ रही सभी राजनैतिक पार्टियों और विश्व काग्रेस में मेरी यही भूमिका रही है। विश्व काग्रेस 1932 में अमैस्टरडम में आयोजित हुई थी और उसमें स्थाई कमेटियों की स्थापना की गई थी। मेरा अभी भी यही मानना है कि अहिंसा एक सशक्त यद्यपि आक्रामक शक्ति है जिसका उपयोग अवश्य किया जाना चाहिए।

यहां मैंने उन्हे टोककर पूछा कि विश्व को आपके वर्तमान विचारो का पता कैसे चलेगा। इसके उत्तर में उन्होंने बताया–मेरे 15 वर्षों के कार्यों का लेखों का सकलन दो भागों मे हाल ही में प्रकाशित हुआ है। पहले भाग में क्विन्न एनस डी कम्बैट (फिफ्टीन इयर्स आफ कम्बैट) एडीशन्स रीडर, बोलेवर्ड सेंट जर्मेन 108, पैरिस VI है। जिसमें मैंने अपने अर्तद्वद्व और सामाजिक विचारो का वर्णन किया है। दूसरा भाग पार ला रेवोल्यूशनल फेक्स (बाय वार्स आफ रेवोल्यूशन टू पीस), एडीशन सोशल्स इटरनेशनल्स 24, रू रेसीनी पेरिस VI है, जिसमें युद्ध सबधी, शाति और अहिंसा सबधी प्रश्नों पर विस्तृत विचार किया है तथा पुरानी सामाजिक स्थितियों के विरुद्ध सघर्ष में समन्वय पर भी विचार किया है। इसके साथ ही उन्होने बताया कि उनके कुछ मित्र जो भी उन्होंने लिखा उसे मानने से इकार करते है और केवल उन्ही बातों को स्वीकारते हैं जो उनकी राय मे मेल खाती हैं। ये दो पुस्तकें * उनके विचारों के परिवर्तन और विकास का सही रिकार्ड होंगी।

हमारा वार्तालाप यूरोप के बहुचर्चित युद्ध पर चर्चा किए बिना समाप्त नही हुआ। मैंने टिप्पणी की कि दमित लोगो और राष्ट्रों के लिए युद्ध एक बुराई है किंतु यूरोप मे युद्ध तो बहुत दुखद घटना सिद्ध होगी। उन्होंने कहा इससे सभ्यता का अत भी सभव है। इसके लिए शाति निहायत जरूरी है ताकि वह अपने सामाजिक पुनर्निर्माण के कार्य को पूरा कर सके।

अपने मेजबान से आज्ञा लेने से पूर्व मैंने उनका आभार व्यक्त किया और उनके विचारो के प्रति अपना सतोष व्यक्त किया। भारत के प्रति उनकी सहानुभूति महत्वपूर्ण है। जब भी मैं भारत की वर्तमान स्थितियों के विषय में उनके विचारो और प्रतिक्रियाओं के बारे में सोचता था तो उत्सुक हो जाता था।

जेनेवा की झील के नीले पानी में सूर्य अभी भी चमक रहा था। मैं विला ओल्गा से बाहर आया। चारों ओर पर्वत बर्फ से ढके थे। सिर से बोझ उतर चुका था। मुझे विश्वास था कि यह महान विचारक भारत तथा उसके स्वतत्रता सग्राम में उसके साथ है, उसका भविष्य जो भी हो या भविष्य की कार्य प्रणाली कुछ भी हो। इस विचार से मैं जेनेवा एक प्रसन्न व्यक्ति के रूप में पहुंचा।

कार्ल्सबाद
2.7.35

सपादकीय टिप्पणी–[भारतीय प्रेस के नियमों, जहा तक हम उन्हे समझने मे सक्षम

* अभी मुझे उनकी दोनों पुस्तकें उनकी ओर से भेंट में प्राप्त हुई हैं। दुख का विषय है कि मैं उन्हें मूलरूप से नहीं पढ सकता। मुझे अनुभव हो रहा है कि इन पुस्तकों को पढने के लिए मुझे फ्रेंच भाषा सीखनी चाहिए।

हैं, का अनुपालन करते हुए हमने इस लेख के कुछ अंशों को काट कर वहां तारे का चिह्न लगा दिए हैं।]

एबीसीनिया का रहस्य व उसकी शिक्षा *

एबीसीनिया का भविष्य अब जलते पाव पर रखा है। संभावनाए धुंधली पड़ चुकी हैं। किंतु अफ्रीका के इस क्षेत्र में जो भी हो रहा है वह एबीसीनिया का पाठ मनुष्यता के लिए वसीयत सिद्ध होगा।

वह पाठ क्या है?

वह पाठ यह है कि 20वीं सदी में जो भी राष्ट्र स्वतंत्र होना चाहता था उसका भौतिक रूप में व सैन्य की दृष्टि में शक्तिशाली होना जरूरी था तथा साथ ही आधुनिक विज्ञान द्वारा दिए गए ज्ञान को प्राप्त करने योग्य होना भी आवश्यक था।

पूरब धीरे-धीरे पश्चिम के भौतिकवादी अतिक्रमण में घिरता चला गया क्योंकि वह अतिशिष्टता और अनंत के प्रभाव से ग्रसित जीवन जी रहा था। कई सदियों तक उसने मनुष्य की उन्नति तथा वैज्ञानिक प्रगति के साथ कदम मिलाकर चलने से इंकार किया, विशेष रूप से युद्ध क्षेत्र में। भारत और बर्मा जैसे कई पूर्वी देशों ने इसी कारण हानि उठाई। जापान, तुर्की और ईरान जैसे देशों का अस्तित्व आज भी कायम है क्योंकि उन्होंने समय के साथ अपने को आधुनिकता में ढाल लिया।

शेष पूरब की तरह, एक समय जापान भी एकान्त शांति में जीने का इच्छुक था। किंतु अमरीका की तोपें उसके कानों में चेतावनी की तरह बजती रहीं। उसे या तो वैश्विक आकाश में आर्थिक और राजनीतिक तौर पर एक शक्तिशाली आधुनिक देश के रूप में उभरना था या फिर पश्चिम के आगे घुटने टेक देना था। उसने पहला विकल्प चुना, समय पर स्वयं को संभाला और 50 वर्ष के भीतर शक्तिशाली आधुनिक देश के रूप में खड़ा हो गया। जब तक पश्चिमी देशों की ओर से उसके स्वतंत्र अस्तित्व को कोई खतरा पैदा होता, तब तक वह तैयार हो चुका था। समय पर की गई तैयारी ने उसे बचा लिया। इस कठोर विश्व में सबसे शक्तिशाली ही जी सकता है।

एबीसीनिया नई समस्या नहीं है। 19 वीं सदी के अंत से ही यूरोप के औपनिवेशिक राज्यों, ब्रिटेन, फ्रांस और इटली की निगाह उस पर थी। सभी उस धनवान राज्य पर कब्जा करना चाहते थे, किंतु वहां के बहादुर योद्धाओं से डरते थे और फिर उस देश की भौगोलिक स्थिति की वजह से भी घबराते थे। सन 1868 में ब्रिटिश ने एबीसीनिया में लार्ड नेपियर आफ मगदाला पर (मगदाला एबीसीनिया के मध्य में स्थित है) आक्रमण कर वहां के राजा थियोडोर को उखाड़ने का असफल प्रयास किया था, इस तथ्य को सभी जानते हैं। अफ्रीका की भांति एबीसीनिया का विभाजन करने में असफल रहने पर उन्होंने आसपास के क्षेत्र में कब्जा कर एबीसीनिया को समुद्र से काट दिया। यदि नक्शा देखा जाए तो

---

* माडर्न रिव्यू, नवंबर 1935 में प्रकाशित।

हम देखेंगे कि एबीसीनिया, सूडान (ब्रिटिश), 'कीनिया (ब्रिटिश) इटैलियन सोमालीलैंड, ब्रिटिश सोमालीलैंड तथा एरीटिरा (इटली) से घिरा हुआ है।

1861 मे इटली आजाद हुआ और एक हुआ। जबकि जर्मनी का एकीकरण 1870 मे हुआ था। उस समय सारा औपनिवेशिक विश्व यूरोपीय शक्तियो में विभाजित हो चुका था। अत: हम देखते हैं कि इटली और जर्मनी साम्राज्यवादी ताकतों के अधीन नही थे। बिस्मार्क के नेतृत्व में जर्मनी ने दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका के कुछ क्षेत्रों पर और इटली ने एबीसीनिया व उसके आसपास के क्षेत्र पर आंखें गड़ाए हुए था।

पिछली सदी के आठवें दशक में इटली की अफ्रीका में घुसपैठ प्रारभ हुई, जब एबीसीनिया एकजुट नही था। उत्तरी भाग पर राजा जॉन का और दक्षिण क्षेत्र पर राजा मेनलिक का कब्जा था और शेष भाग स्वतत्र थे। उस समय एबीसीनिया को जनसख्या कुछ भी हो समजातीय थी, शालीनतावश या धार्मिक दृष्टि से। डर्विश विद्रोहियो से युद्ध करने मे 1889 मे राजा जॉन की मृत्यु के पश्चात राजा मेनलिक के नेतृत्व में एबीसीनिया एकीकृत हुआ। मेनलिक जिसे कि नेगसनेगास्त (राजाओ का राजा) की उपाधि दी गई थी एक महान योद्धा और राजनीतिक था। उसके नेतृत्व में इटली का युद्ध हुआ जिसने 1896 में एडोवा से इटली सेनाओं को पूर्णतया उखाड़ फेका। तभी से इटलीवासी एडोवा की हार का बदला लेने का प्रयास कर रहे थे।

1896 के बाद 40 वर्ष तक एबीसीनिया ने सुख की सास ली। यदि वह भी जापान की भाति अपने लोगों को आधुनिकता के ढाचे मे ढाल पाता तो शायद अपना अस्तित्व कायम रख पाती। ऐसा करने में असफल रही अत: लुप्त हो गई। यह गलती एबीसीनिया के महान *राजाओं की नहीं थी वे तो देशभक्त, योग्य और राजनीतिज्ञ थ किंतु गलती* वहां की जनता की थी। उदाहरण के लिए वर्तमान राजा ने तो वर्तमान मुसीबत क क्षणो में अद्भुत कूटनीति व राजनीति का परिचय दिया है जैसा कि किसी भी उच्चकोटि के ब्रिटिश राजनेता से अपेक्षित था। किंतु जातिगत और राजवंशीय ईर्ष्या के कारण यह सब हुआ। (राजा के दामाद, जो कि राजा जॉन का उत्तरधिकारी था का साथ छोड इटली का साथ देना, जो 12 अक्तूबर को समाचार-पत्रों में घोषणा की गई, ईर्ष्यावश ही था)। यहा के नागरिक प्राय: अशिक्षित है और इसी वजह से अभी भी गुलाम प्रथा चल रही है। और अतिम बात यह कि अडोवा की विजय से कुछ बहादुर एबीसीनिया वासियों मे सुरक्षा की भावना गलत धारणा बन बैठी। यही सुरक्षा की भावना युद्धभूमि मे उनकी हार का कारण बनी जहां उन्हें आभास होगा कि 1935 के इटलीवासी 1896 के इटलीवासी नही रहे और उन्होने युद्धनीति में अब बहुत उन्नति कर ली है, वे पहले वाल इटलीवासी नही जिन्हें उन्होंने अडोवा मे उखाड फेंका था।

सेना के बल पर एबीसीनिया पर कब्जा जमाने में असफल रहने पर साम्राज्यवादी शक्तियों ने इसी सदी के प्रारभ से ही राजनीति से काम लेना शुरू करा दिया। लदन के न्यू लीडर के 23 अगस्त 1935 के अक में यह कहानी बताई गई है। (उस कहानी पर टिप्पणी करते हुए मैं केवल यही कहना चाहूंगा कि सितंबर 1923 में एबीसीनिया लीग आफ नेशस में सम्मिलित हो गया हालाकि ब्रिटिश सरकार ने इस पर आपत्ति की थी)।

योजनाबद्ध विभाजन

इससे पहले ब्रिटेन एबीसीनिया को इटली का प्रभावी क्षेत्र मान चुका था किंतु इटली की हार से ब्रिटेन का अपना अधिकार जताने में सुविधा हो गई । 1906 मे तीन साम्राज्यवादी ताकतों-ब्रिटेन, फ्रांस और इटली ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे जिससे इन तीनो देशों द्वारा एबीसीनिया के विभाजन का पूर्वाभास होता था। समझौते मे वही सामान्य पाखड पूर्ण फार्मूला था कि एबीसीनिया की एकता निश्चित रहेगी, किंतु इस सधि द्वारा ब्रिटेन को यह अधिकार प्राप्त था कि वह नील नदी के पानी का वितरण करने में प्रमुख की भूमिका निभाएगा, पश्चिमी एबीसीनिया पर इटली का आधिपत्य रहेगा और फ्रांस वहां की रेल व्यवस्था पर अपना नियंत्रण रखेगा।

इटली की खरीद

इस साम्राज्यवादी चोरी की कहानी का अगला पक्ष विश्व युद्ध के प्रारंभ होने पर सामने आया। सधि के अनुसार इटली, जर्मनी और आस्ट्रिया का हिस्सा थी किंतु फ्रांस और ब्रिटेन ने उसे खरीद लिया। उन्होंने एक गुप्त सधि की जिसके अनुसार इटली के साम्राज्य को उपनिवेशों की सीमाओं का विस्तार एबीसीनिया के खर्च पर होना चाहिए।

युद्ध के पश्चात ब्रिटेन नील नदी की साना झील बांध बनाकर नील नदी अपने अधिकार मे लेना चाहता था। इटली ने उसके इस इरादे को इस शर्त पर समर्थन देने की सहमति दे दी कि पश्चिमी एबीसीनिया की अर्थ व्यवस्था पर इटली का एकछत्र अधिपत्य रहेगा। किंतु ब्रिटेन ने इस शर्त को मानने से इकार कर दिया। ब्रिटेन फ्रांस के विरोध से डरता था और उसे यह भी विश्वास था कि वह इटली के सहयोग के बिना भी जीत जाएगा। उसने इटली को साफ-साफ बताया कि इटली का एकछत्र प्रभुत्व 1906 की संधि का उल्लघन होगा जिस में एबीसीनिया को स्वतंत्रता का आश्वासन दिया गया है।

छः वर्ष बाद स्थिति बदल गई एबीसीनिया सरकार ने ब्रिटेन की मांग का विरोध किया तब ब्रिटेन की सरकार ने इटली के सहयोग की इच्छा व्यक्त की। ब्रिटेन यह भूल गया कि 1906 की संधि में एबीसीनिया की स्वतंत्रता का आश्वासन दिया गया था। 1919 के अपने रोष के बारे में भी भूल गया। उसने पूरे पश्चिमी एबीसीनिया पर इटली के प्रभुत्व को 'प्रभुत्व क्षेत्र' के रूप में स्वीकार कर लिया।

फिर अचानक एक झटका लगा। एबीसीनिया सरकार ने इटली और ब्रिटेन के मध्य हुए समझौते को नकार दिया और लीग के सम्मुख इस साम्राज्यवादी नमूने को पेश करने की धमकी दी।

बौखलाए हुए ब्रिटेन ने नई नीति अपनाई। उसने 600 वर्गमील की ब्रिटिश सोमाली भूमि देकर एबीसीनिया को रिश्वत देने का प्रयास किया। ब्रिटिश सरकार को पूरा विश्वास था कि उसकी यह पेशकश स्वीकार कर ली जाएगी । अत: उन्होंने 1926 में नक्शे छपवाए जिनमें पोर्ट ऑफ बेलिया को एबीसीनिया क्षेत्र में दर्शाया गया। ब्रिटिश साम्राज्यवादी चकित रह गए जब एबीसीनिया ने यह पेशकश भी ठुकरा दी। वे अपनी स्वाधीनता के

बदले में रिश्वत लेने को तैयार नहीं थे। यह कहानी यही खत्म नही हुई । 1928 में इटली और एबीसीनिया में एक मैत्री-सधि हुई जिसके अतर्गत सभी झगडो को समाप्त कर वे 20 वर्ष की अवधि के लिए मैत्री में बंधे। एक और समझौते पर भी हस्ताक्षर हुए जिसके अनुसार इटालियन ऐरीटिरिया मे असब बदरगाह पर एबीसीनिया को मुक्त क्षेत्र उपलब्ध कराया गया। यह स्पष्ट है कि इस अवधि तक दोनों देशों के सबध मैत्रीपूर्ण थे। इसके बाद अचानक एबीसीनिया की विदेशनीति में परिवर्तन आया। अन्य देशो अर्थात बेल्जियम, फ्रास, ब्रिटेन और स्वीडन के तकनीकी विशेषज्ञ, राजनैतिक सलाहकार, सेना अधिकारी और लोग एबीसीनिया मे लाए गए जबकि इटलीवासियो को निकाला जाने लगा। सन 1934 के प्रारभ मे एबीसिनियाई सरकार पर इटली का प्रभाव नही के बराबर हो गया और ब्रिटिश प्रभाव बढ़ता गया। यह चर्चा जोरों पर थी कि ब्रिटिश सरकार ने एबीसीनिया सरकार से गुप्त रूप से व अलग से एक समझौता कर लिया है जो साना झील के विषय में है, इसमें इटली की सहमति नही ली गई बल्कि इटली को इसकी जानकारी भी नही है। इसके विपरीत, मुसोलिनी ने एबीसीनिया सरकार से लवल तथा फ्रास-इटालियन समझौता किया जिसके अतर्गत इटली को एबीसीनिया में पूर्ण अधिकार दिए गए।

अब तक समाचार-पत्रो मे जितने भी लेख प्रकाशित हुए हैं उनमें मे किसी मे भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता कि इस स्थिति में मुसोलिनी ने एबीसीनिया का यह मोर्चा क्यो छेडा। इसके दो कारण हो सकते हैं । पहला, मुसोलिनी ने यह महसूस किया कि एबीसीनिया मे अंग्रेजों का प्रभाव निरतर बढ़ रहा है, क्योंकि अरेबिया मे लाल समुद्र पर उनका प्रभुत्व था, और यदि इसे रोका न गया तो एबीसीनिया से इटली का प्रभुत्व बिल्कुल समाप्त हो जाएगा, दूसरा, मुसोलिनी ने सोचा होगा कि उसे दो-तीन वर्ष चैन से सास लेने के लिए मिल जाएगे, इससे पहले कि यूरोप युद्ध शुरू हो । अतः एबीसीनिया मे इटली का प्रभुत्व शुरू करने का यही सही मौका था। असल में इतिहास की दृष्टि से यूरोपीय युद्ध में एबीसीनिया आदोलन का वही स्थान है जो 1911-1913 के बल्कान युद्ध का विश्वयुद्ध 1914-18 के दौरान था।

अब उस मुद्दे के सबध में प्रश्न किए जा सकते हैं जो एबीसीनिया झगड़े के दौरान पैदा हुए। इस प्रश्न के उत्तर में मैं पुनः 23 अगस्त के लदन के समाचार-पत्र न्यू लीडर का सदर्भ देना चाहूंगा-

"अफ्रीका उपमहाद्वीप मे एबीसीनिया ही एकमात्र स्वतत्र राज्य है। अफ्रीका का शेष बडा भू-भाग तो पहले ही साम्राज्यवादी ताकतों में बांटा जा चुका है। स्वेज के बडे भू-भाग पर ब्रिटेन का आधिपत्य है। इटली अंतिम क्षेत्र पर कब्जा जमाना चाहता है इससे पहले कि कोई उसे हथियाए ।

एबीसीनिया में चार साम्राज्यवादी शताब्दियों को गहरी दिलचस्पी है।

ब्रिटिश पूजीपतियों की दिलचस्पी की वजह यह है कि एबीसीनिया में साना झील है, जिसमे नील नदी का पानी है, जो सूडान और मिस्र के कपास के खेतो को सीचती है। ब्रिटिश पूजीपतियों को इसीलिए चिंता है क्योंकि एबीसीनिया बैंक पर उनका नियत्रण है, जो कि मिस्र के बैंक का सहयोगी बैंक है।

फ्रांसीसी पूंजीपतियों का नियंत्रण केवल रेलवे पर है, जो केवल फ्रांसीसी बंदरगाह जिबूटी और एबीसीनिया की राजधानी अदीस अबाबा के मध्य चलती है।

जापानी पूंजीपति साम्राज्यवादी इसलिए दिलचस्पी ले रहे हैं क्योंकि उनके पास उस भूमि का नियंत्रण है जहां कपास की खेती होती है, लेकिन एबीसीनिया बाजार का सूती वस्त्रों पर पूर्णरूप से अधिपत्य है।

इसी से स्पष्ट है कि ब्रिटेन, फ्रांस और जापान की सरकारें क्यों इटली की मांग का विरोध कर रही हैं, क्या एबीसीनिया से प्रेम की वजह से या मानवीय आधारों पर या फिर शांति के प्रति प्रेम के कारण? स्पष्ट शब्दों में कहें तो यह चोरों के बटवारे का झगड़ा है। ब्रिटिश, फ्रांसीसी और जापानी सरकारें मुसोलिनी द्वारा माल हथियाए जाने का विरोध कर रही थीं।

जब ब्रिटिश सरकार को यह बात समझ में आई कि मुसोलिनी कोई धोखेबाजी नहीं कर रहा है तो उन्होंने अपाठ्यता का रुख अपनाया। जनरलों, एडमिरलों और सशस्त्र सेनाओं का संगठन मार्निंग पोस्ट ने इस आशय की झलक दिखाते हुए 22 अगस्त के लेख में लिखा-

एबीसीनिया हमारी क्षमता की परीक्षा है। यदि हम कोई बात शांतिपूर्वक चुपचाप स्वीकार लेते है तो यह नहीं मान लिया जाना चाहिए कि बाद में हम पर कुछ और भी लादा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि विदेश में कुछ क्षेत्रों में यह विचार प्रतिपादित किया जा रहा है कि ब्रिटिश साम्राज्य अन्य जातियों द्वारा दबाया जा रहा है जिन जातियों की किस्मत भविष्य के हाथों में है। जितनी जल्दी इस विचार को नष्ट किया जाए विश्व की शांति के लिए उतना ही ठीक है। यही समय है जब हमें सभी को यह बता देना चाहिए कि ब्रिटिश साम्राज्य न तो बिकाऊ है न ही कुछ बेचना चाहता है।

इन गहरी बातों के बावजूद भी, जनता इन रिपोर्टों से बहुत चिंतित है कि युद्ध कार्यालय ने सूडान में सेना की दूसरी बटालियन भेजने का फैसला किया है ताकि मलय और एडन में अपनी सैन्य शक्ति बढ़ा सके, एबीसीनिया की राजधानी में ब्रिटिश लेगशन गार्ड की स्थिति सुदृढ़ करने के लिए भारतीय सेना भेजने का विचार बनाया है, ताकि मध्यसागर को सेनाओं के आवागमन का मार्ग बना सके।

महत्वपूर्ण परिपत्र

एक महत्वपूर्ण पैराग्राफ समाचार-पत्रों में छपा, फिर उसे दबा दिया गया। पिछले सप्ताह ब्रिटेन के सभी सब-पोस्टमास्टरों को एक दस्तावेज मिला जिसका शीर्षक था 'पार्शियल और जनरल मोबीलाइजेशन' उसमें लिखा था-

बिना पूर्व भुगतान के तार स्वीकार करना वर्तमान आपातकाल में, युद्ध कार्यालय के सभी अंतर्देशीय और समुद्रपार के तार बिना अग्रिम भुगतान लिए प्रेषण हेतु स्वीकार किए जा सकते हैं। यदि उन्हें सेना अधिकारी या सेना कार्यालय के स्थायी सरकारी कर्मचारी द्वारा सत्यापित किया गया हो तो।

अधिकारियो ने स्पष्ट किया है कि यह आदेश गलती से जारी हुआ। इस प्रकार के 32,000 फार्म (स-सी 18149) स्टेशनरी कार्यालय द्वारा पिछले माह प्रकाशित किए गए थे। किंतु उन्हें तत्काल प्रयोग में लाने की कोई योजना नहीं थी। यही तथ्य काफी चेतावनीदायक है कि इन्हे तैयार किया गया।

इसी अंक मे न्यू लीडर ने इन युद्ध की तैयारियों की पृष्ठभूमि मे कार्यरत उद्देश्यो की चर्चा करते हुए लिखा-

इन सब योजनाओ की सफाई मे क्या कहा जा सकता है? क्या यह डर है कि एबीसीनिया में नील नदी की साना झील के पानी पर इटली का नियंत्रण हो जाएगा और वह सूडान और मिस्र के ब्रिटिश सरकार के अधीन कपास के खेतों की सिचाई को रोक देगी, यह खतरा कि एबीसीनिया में इटली का साम्राज्य होने से स्वेज नहर पर, लाल समुद्र पर और भारत के समुद्र मार्गों पर इटली का कब्जा हो जाएगा। यही कारण पर्याप्त थे कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी चिंतित हों।

मुसोलिनी यह सकेत दे रहा था कि ऐसा कोई कारण नही है कि पूर्वी मध्यसागर मे ब्रिटिश अधिकार कायम रहे। मुसोलिनी ने पूर्वी मध्यसागर और उत्तरी पूर्वी अफ्रीका की यथास्थिति को भी धमकी दी थी। दूसरे शब्दों मे वह पूर्व से, भारत से और आस्ट्रेलिया से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के सबधों को धमका रहा था।

इटली के इस उद्देश्य को समझने के कारण ही राष्ट्रीय सरकार और ब्रिटिश साम्राज्यवादियो ने यह निर्णय लिया कि वे मुसोलिनी को हर हाल मे रोकेंगे। लीग आफ नेशस को स्वीकृति देने का उत्साह शांति की वजह से या एबीसीनिया पर अधिकार जमाने की वजह से पैदा नही हुआ था। इन उद्देश्यों के पीछे ब्रिटिश साम्राज्यवादी अपनी चिंता को छिपा रहे थे और विश्वास मत हासिल कर रहे थे कि वे लीग के प्रति वफादार हैं और शांति चाहते हैं। शांति के प्रति उत्साह को दिखाकर वे साम्राज्यवादी युद्ध के लिए अंग्रेजों को तैयार कर रहे थे।

सभी ओर एबीसीनिया के प्रति इतनी हमदर्दी प्रदर्शित की जा रही थी कि बहुत कम लोगो को, फ्रास के अतिरिक्त, यह आभास था कि ग्रेट ब्रिटेन की युद्ध पार्टी का मूल उद्देश्य केवल साम्राज्यवादी था। लीग आफ नेशस के प्रति ब्रिटेन के नए-नए प्यार से फ्रास शकालु था, जिसका इटली उपहास उड़ा रहा था, क्योंकि वह अभी भी एग्लो-जर्मन नवल एग्रीमेंट से नाराज थी, जिसे फ्रास की जानकारी और अभ्युक्ति के बिना कर दिया गया था और जिसके द्वारा जर्मनी के अनैतिक शस्त्रीकरण को, जो कि वारसेलिस सधि के विरुद्ध था, नैतिक करार दे दिया गया। अपनी इस कार्रवाई को सही सिद्ध करते हुए फ्रासीसी यह तर्क दे रहे थे कि जब, जापान ने लीग को धोखा देकर मचूरिया मे चीन पर आक्रमण किया और जब बोलीविया और पारा दोनों युद्धरत हुए थे जबकि दोनों ही लीग के सदस्य थे, तब ब्रिटेन चुप रहा था।

अब मैं बताता हू कि, ब्रिटेन दूसरों पर निर्भर होने के बावजूद भी एक अन्य युद्ध में उतरने को तैयार था तब, किस प्रकार एक जादू-सा हुआ। अचानक दूर क्षितिज में हिटलर की छाया उभरी और उसने इटली पर आक्रमण के लिए तैयार ग्रेट ब्रिटेन की

सेना को निष्क्रिय बना दिया।

ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की प्रशंसा किए बिना नही रहा जा सकता, कि उन्होंने, कितनी चतुराई से ग्रेट ब्रिटेन में और विदेश में इटली के विरुद्ध नीति का प्रचार प्रसार किया। 1914 मे नारा था 'बेल्जियम बचाओ', 1935 में नारा था 'लीग आफ नेशस को बचाओ'। यहा तक कि ब्रिटिश लेबर पार्टी और ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी भी नेशनल (कजरवेटिव) सरकार के साथ थी। केवल मैक्सटन, फैनर ब्रोकवे और मैक्सिन के नेतृत्व मे इडिपेंडेंट लेबर पार्टी के कुछ मुट्ठीभर लोगों ने साहस जुटाकर ईमानदारी का परिचय दिया और यह घोषणा की कि यह एक और साम्राज्यवादी युद्ध होने वाला है जिसमे ब्रिटिश श्रमिक वर्ग का कोई रुचि नही है। किंतु स्वतत्र लेबर पार्टी के मुट्ठीभर लोगों की आवाज उस शोर मे दब गई जिसने सरकार को अपना समर्थन दिया था। सर सैम्युअल होरे, विदेश सचिव ने इस समर्थन से प्रसन्न होकर ही इटली और विश्व को लीग के मच से जेनेवा में ललकारा था।

इस प्रश्न का उत्तर मैं राजनीति के विद्यार्थियों पर ही छोड देता हू कि ब्रिटिश लेबर पार्टी और ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी परपरागत शाति नीति को इस सकट की घड़ी में दरकिनार कर कैसे बाल्डविन होरे सरकार को अपना समर्थन दिया। यह निश्चय ही कजरवेटिव कूटनीति की विजय थी।

जब ब्रिटेन युद्ध की तैयारिया कर रहा था तब इटली चुपचाप नही बैठी थी। सारा इटालियन प्रेस ब्रिटेन विरोधी जेहाद छेड़े था और इटली के तानाशाह का खुलेआम मानना था कि वह फ्रास और ब्रिटेन के साम्राज्यवादी शासन के गठन मे उनके साथ है और राह मे आने वाली हर तरह की आपत्तियों से निपटने को तैयार है। क्या यह समर्थन उस अपमान का बदला था जो 1961 में इटली का हुआ था, जिसकी वजह से वह ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध सघर्ष करने को तैयार था? नहीं मैं यह नही मानता। इटली को इस सच्चाई का ज्ञान था कि पिछले दशक के युद्ध के दौरान वायु सेना की शक्ति में जो उन्नति हुई है उसने पुरानी मान्यताओं को बदल दिया है और उसके पास ब्रिटेन की तुलना मे उत्तम वायुसेना, आधुनिक जलसेना है तथा नई और उत्तम युद्ध नीतिया हैं तथा मध्यसागर भी उसके नियत्रण में है।

इटलीवासी जो भी कहें किंतु इसमें शक नही कि ब्रिटेन के पास बडा साम्राज्य है और उसको अधिक लोगों का सहयोग प्राप्त है अत: वह इटली पर हावी ही रहेगा। दूसरी ओर इसमें भी दो राय नहीं थी कि इटली की सक्षम वायु सेना-जो विश्व की योग्यतम वायुसेना थी ब्रिटेन की जलसेना को अभूतपूर्व हानि पहुंचा सकती थी। ब्रिटेन युद्ध तो जीत जाता किंतु आज की अपेक्षा और भी अधिक कमजोर हो गया होता। अपनी पगु जल-सेना के साथ उसे नाजी जर्मनी के पुन: शस्त्रीकरण का मुकाबला करना पड़ता।

साम्राज्यवादी युद्ध नीतिज्ञों ने यह माग की कि मेमल में दूर सुनाई देने वाला शोर ग्रेट ब्रिटेन के लिए एबीसीनिया में इटली के हस्तक्षेप की अपेक्षा अधिक सिरदर्दी है । इस चेतावनी को फ्रासीसी राजनीतिज्ञों ने भी अपनी हर राय में जाहिर किया जिसमें उनकी एकमात्र चिता यह थी कि भविष्य में जर्मनी के विरुद्ध स्वयं को कैसे तैयार करें। ब्रिटेन

की ससद ने अतत: यह महसूस किया कि बहादुरी से सावधानी अधिक महत्वपूर्ण है। इसका कारण यह था कि यद्यपि हिटलर, ब्रिटेन के पक्ष में नीति अपना रहा था और उसका जर्मनी के पश्चिमी फ्रट पर आक्रामक भूमिका निभाने का मन भी नही था, उसके सभी सिद्धांत जर्मनी के पूर्वी और दक्षिणी फ्रंट के अर्थात मेमल, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया आदि के साथ थे। अधिकांश ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को जर्मनी के पुन: शस्त्रीकरण से खतरा था। वे सोचते थे कि हालाकि जर्मनी की इच्छा इग्लैंड या फ्रांस से युद्ध करने की बिल्कुल नही है, किंतु जैसे ही जर्मनी पूर्व और दक्षिण में अपना विस्तार करना शुरू करेगा, तब ऐसी स्थिति पैदा हो सकती है कि फ्रास और इग्लैंड को उससे युद्ध करना पड सकता है, यदि वे यूरोप में जर्मनी का अधिपत्य नहीं चाहते तो। इस परिस्थिति मे, पगु जलसेना के साथ ग्रेट ब्रिटेन जर्मनी की अपेक्षा अधिक हानि में रहेगा। जर्मनी की वायुसेना पूरे ब्रिटिश साम्राज्य की अपेक्षा वैसे ही अधिक सक्षम है, और शीघ्र ही जर्मनी की थल सेनाए भी, सेना में अत्यधिक भर्ती के कारण, अधिक शक्तिशाली बनती जा रही हैं। इस शक्ति परीक्षण से बचने के लिए ब्रिटेन के पास केवल एक ही मार्ग बचा था। वह था ग्रेट ब्रिटेन की वर्तमान जलसेना को बनाए रखना और उसमें वृद्धि करना।

ग्रेट ब्रिटेन मे जब ये अनुमान लगाए जा रहे थे और सोच-विचार चल रहा था तब इटली ने *यह घोषणा कर दी कि यदि एबीसीनिया नीति में फ्रास और ब्रिटेन ने उसे* धोखा दिया तो वह केंद्रीय यूरोप की राजनीति से स्वयं को पीछे खीच लेगी और हिटलर को स्वतंत्र कार्यवाही करने देगी। इस टिप्पणी का असर अद्भुत रूप से हुआ और सैन्य नोक-झोंक खत्म हो गई। इस प्रकार हिटलर की पुनर्शस्त्रीकरण की नीति ने फ्रास और ब्रिटेन को डरा दिया जिससे 1935 में यूरोप में शांति की स्थापना हुई।

इस टिप्पणी की सच्चाई के लिए हम बोर्निमाउथ में आयोजित कज़रवेटिव पार्टी काफ्रेंस में ब्रिटिश मत्री श्री बाल्डविन के भाषण का संदर्भ ले सकते हैं-

"किंतु मैं आपको बताना चाहता हू कि हाल ही की घटनाओं ने मेरे मन में उठ रही शकाओं और डर को खत्म कर दिया है, जो मेरे साथियो और मित्रों द्वारा भी समय-समय पर मेरे सामने रखे जा रहे थे। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि युद्ध के कारण व्यावहारिक रूप से नि.शस्त्रीकरण हुआ है-किसी भी अन्य देश की अपेक्षा हमारे यहा-अत: हम अधिक समय तक उस मार्ग पर नही चल सकते। जर्मनी के पुनरुत्थान के कारण पिछले एक-दो वर्ष में पूरे उपद्वीप के परिदृश्य मे अतर आया है। विरोधपूर्ण रास्ता अपनाने में कोई बुराई मैं नही देखता। किंतु इस वास्तविकता से आंखे नही मूदी जा सकतीं कि अन्य महान देशों द्वारा शस्त्र अपनाने से यूरोप का परिदृश्य बदल गया है और लीग आफ नेशस के अतर्गत किए गए समझौते को परिपूर्ण करने का रुख भी बदल चुका है। मुझसे यह छिपा नही है कि उन शर्तों को पूरा करने का अर्थ यह भी हो सकता है कि जो राष्ट्र उन्हें पूर्ण कर रहे हैं उनसे सैन्यबल पर लीग की प्रतिज्ञा पूरी कराई जाएगी।"

सभव है कि एक अन्य कारण से भी अधिकारियों का इटली के विरुद्ध सघर्ष करने में हौसला पस्त हुआ हो, वह यह कि, ब्रिटिश साम्राज्य के अतर्गत जनता की राय। इस विषय पर डेली मेल (पेरिस अंक) ने 26 सितबर को अपने मुख्य लेख में लिखा था-

हमारे कुछ खून के प्यासे शातिप्रिय पत्रकारों ने अब ऐसे लेख प्रकाशित करने प्रारंभ कर दिया है जो यह सुझाव देते हैं कि साम्राज्य स्वयं इच्छापूर्वक अपना समर्थन देंगे, यदि युद्ध हुआ, तो भी। साम्राज्य के लोगों का लीग आफ नेशंस के प्रति रवैया, इस वर्तमान झगड मे बहुत महत्वपूर्ण है। ग्रेट ब्रिटेन के लोगों के लिए भी यह जान लेना बहुत महत्वपूर्ण है कि *इटली को स्वीकृति का आवेदन–क्या इतना खतरनाक* कदम सभव है–*साम्राज्य* को भग कर देगा और इसमें गभीर मतभेद पैदा कर देगा। सबूतों के परीक्षण के आधार पर उत्तर सकारात्मक बनता है कि स्वीकृति देते ही युद्ध होगा जो साम्राज्य की राय को विभक्त कर देगा और साम्राज्यों की जनसख्या के एक बड़े भाग में अशाति फैलेगी, जिससे समुद्र पार अनको मुश्किलो को बढ़ावा मिलेगा।

महान साम्राज्य मे से सबसे पुराना साम्राज्य, कनाडा, सदैव ही प्रतिज्ञापत्र के प्रति असहज रहा है। वर्ष 1924 में उसने लीग के अतर्गत अपनी जिम्मेदारियो से हाथ खीचा, यह कहकर कि वह यूरोप से अलग है।

उसकी जनता ने भी उसका समर्थन किया। 6 सितबर को कनाडा के प्रधानमत्री, श्री बैनेट ने अपने प्रसारण में कहा कि "यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह यह देखे कि *कनाडा इस मुसीबत से न्यायपूर्ण एव इज्जतपूर्ण तरीके से अलग–थलग* रह सके। हम किसी विदेशी झगडे में फंसना नही चाहते।"

जहा तक आस्ट्रेलिया का प्रश्न है तो वहा के प्रधानमत्री श्री ल्योन्स ने वादा किया कि वे ब्रिटिश सरकार को पूर्ण सहयोग देंगे। फैडरल लेबर पार्टी के नेता श्री फोर्ड ने बिल्कुल पृथक नीति अपनाई, उन्होंने उस सगठन की नीति के बारे मे घोषणा की कि 'वह किसी भी बाह्य युद्ध में हिस्सा नहीं लेगा।' न्यू साउथ वेल्स में इस पार्टी ने एक प्रस्ताव [illegible]रित किया जिसमें यह माग रखी कि जेनेवा के प्रति आस्ट्रेलिया अपनी तटस्थता घोषित कर और यदि युद्ध होता है तो अपने प्रतिनिधियों को वापिस बुला ले। दक्षिणी अफ्रीका मे जनरल स्मट्स ने कहा कि उनका साम्राज्य तन-मन से प्रतिज्ञा पूरी करेगा।

दक्षिण अफ्रीका के रक्षामत्री श्री पिरो का विचार जनरल स्मट्स के विचार से सर्वथा भिन्न था। 15 सितबर को उन्होंने जन-समारोह में बताया–

"मैं पूर्णरूप से आश्वस्त हू कि दक्षिण अफ्रीका के वासी युद्ध नही चाहते, कुछ भी हो हम नही झगडेंगे।" इस भावना के पीछे व्यावहारिक पक्ष यह था कि दक्षिण अफ्रीका के किसानो को आशा थी कि पूर्वी अफ्रीका और एबीसीनिया मे इटली की सेनाओं के लिए मीट उपलब्ध कराने का आदेश उन्हें दिया जाएगा।

इन सब घोषणाओं को देखते हुए इतना तो स्पष्ट था कि कुछ साम्राज्य बिल्कुल अलग-थलग रहेंगे और यह भी सभव है कि लीग मे उनके सबंध बिगडेगे, अत: लीग के अतर्गत सभी राज्यों ने स्वीकृति दी। स्वाभाविक था कि लीग के उत्साहित राज्य महसूस करते कि यह उचित नही है कि इन अवस्थाओं में मतभेद पैदा किए जाए और साम्राज्य मे पृथक अस्तित्व बनाया जाए।

आस्ट्रेलिया से प्राप्त अतिम समाचार के अनुसार यह पता चलता है कि इटली के

विरुद्ध स्वीकृति के प्रश्न पर वहा मतभेद हैं, जो युद्ध की ओर अग्रसर करेगा। 12 अक्तूबर को द टाइम्स (लदन) ने लिखा कि 27 से 21 के अनुपात मे संसद प्रतिनिधियो ने आज श्री बामले द लैंग लेबर लीडर की कोशिश को बेकार कर दिया जिसमें ससद को आस्ट्रेलिया की तटस्थता तथा इटली के विरुद्ध स्वीकृति की बात के लिए मजबूर किया जा रहा था। फिलीस्तीन की स्थिति, जो ब्रिटिश की इच्छा पर निर्भर है, के सबध में 21 अक्तूबर के अक मे 'टाइम' ने लिखा-

यह आरोप लगाया जा रहा है कि इटली के पक्ष में राजनीतिक सहानुभूति का मुख्य कारण हज अमीन एफेंडी अल हुसैनी, जो यरूशलम के मुफ्ती हैं तथा इथियोपियन विवाद के कारण मुफ्ती के अखबार जामिया अल अरबिया ने इटली के पक्ष मे लेख प्रकाशित किए जबकि इसके विरोधी जो नशाशीबी पार्टी के समर्थक थे, ने उस पत्र के बारे मे भेद खोला जो अमीर शेकीब अर्सलान ने मुफ्ती को लिखा था जिसमे उनकी इटली समर्थक गतिविधियो में महत्ता की चर्चा की थी। पिछले कुछ सप्ताह से अरब प्रेस मे उस बुद्धिमत्ता की बहुत चर्चा हो रही है, जिसने वर्तमान अतर्राष्ट्रीय दुविधा का फायदा उठाते हुए अन्य अरबवासियो से सबध स्थापित किए हैं, ताकि सीरिया के निष्कासित राष्ट्रवादी नेता जो इन दिनो जेनवा में रह रहा है, को उखाड फेका जा सके।

यहूदियो मे रिविजनिस्ट पार्टी अथवा नए जियोनिस्ट्स इटली के पक्ष मे है। फिलीस्तीन के यहूदी समाचार-पत्रो मे से केवल उनका समाचार-पत्र हयार्दन ही इटली-इथियोपियन विवाद को इटालियन पक्ष मे प्रस्तुत कर रहा है।

जहा तक मिस्र का प्रश्न है, यह स्पष्ट है कि नेतागण जो खुलेआम इटली के प्रति ब्रिटिश नीति का विरोध कर रहे हैं तथा मिस्र को पूर्ण स्वतत्रता देने की माग कर रहे हैं, तभी ग्रेट ब्रिटेन के प्रति मिस्रवासियों की सहानुभूति और सहयोग प्राप्त हो पाएगी। पता नही इससे कितना लाभ वे स्वय को पहुचा पाएगे, यह तो अतर्राष्ट्रीय स्थितियो पर ही निर्भर करेगा। यदि अतर्राष्ट्रीय स्थिति धीरे-धीरे शाति की ओर अग्रसर होती हैं तो इस बात मे सशय ही है कि मिस्र के नेता कितनी सफलता पा सकेंगे। उपमहाद्वीप के अखबार तो पहले ही यह घोषणा कर चुके हैं कि ब्रिटिश के सहयोग से मिस्र से आत्मसमर्पण दूर कर दिया जाएगा। इसका अर्थ है मिस्र की अदालतों को पूरी आजादी होगी कि वे विदेशियो पर मुकदमे चला सके। यह मिस्र की स्वतंत्रता की ओर एक कदम होगा।

ग्रेट ब्रिटेन में आम राय यही है कि सरकार की इटली को स्वीकृति देने की नीति गलत है। फिलहाल ससद सदस्य स्थिति पर नजर रखे हैं। यह कहना उचित नही कि ससद ने समय पूर्व चुनाव करने का निर्णय इसलिए लिया क्योंकि वर्तमान स्थिति मे चुनाव कराना उनके पक्ष में रहेगा। वे राष्ट्र की नब्ज देखना चाहते हैं कि वे इटली के विरुद्ध स्वीकृति को किस सीमा तक लागू कर सकते हैं। इस बीच इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी, जो वर्तमान स्थिति में सदा स्पष्टवादी और समान नीति अपनाती रही है, ने उन सभी श्रमिक वर्ग सगठनों का सम्मेलन आयोजित किया जो स्वीकृति एव युद्ध के विरुद्ध हैं तथा निम्न घोषणापत्र जारी किया-

लेबर पार्टी, द ट्रेड यूनियन काग्रेस तथा कम्युनिस्ट पार्टी राष्ट्रीय सरकार तथा लीग

आफ नेशंस द्वारा लादी जा रही स्वीकृति को सहयोग देकर श्रमिक वर्ग की नीति के पीछे लगा रहे हैं जिसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी ने श्रमिकों को चेतावनी दी है कि आर्थिक और वाणिज्यिक स्वीकृति से युद्ध की शुरुआत होगी। इटली की जलसेना को रोकने की सभी व्यवस्थाएं हो चुकी हैं। सरकार की युद्ध नीति पर रोक लगाई जानी चाहिए। (द टाइम्स, 10 अक्तूबर, 1935)

इसी तारीख के टाइम्स ने यह समाचार भी छापा कि लगभग 50 कंज़रवेटिव सांसदों की श्री अल एस अमेरी के नेतृत्व में एक गुप्त बैठक बुलाई जाएगी जिसमें वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति पर विचार किया जाएगा और इटली व एबीसीनिया के मध्य युद्ध में ग्रेट ब्रिटेन के शामिल होने से पैदा होने वाले खतरों पर विचार किया जाएगा, क्योंकि उनका पक्का विश्वास है कि स्वीकृति को यदि वास्तविक रूप में लागू किया गया तो युद्ध अवश्य होगा। अब हमे यह देखना है कि ब्रिटिश संसद पर राइट व लेफ्ट दोनों के दबाव का क्या असर होता है।

अब भारत के विषय में

कांग्रेस नेताओ की नीति रही है कि वे अंतर्राष्ट्रीय मामलों मे कोई दिलचस्पी नही रखते, उसी प्रकार उन्होंने इस विषय में भी अपनी कोई नीति स्पष्ट नही की है। सत्य है, किंतु यहा की आम जनता में एबीसीनिया के प्रति अत्यधिक सहानुभूति है किंतु इस सहानुभूति को ब्रिटिश सरकार तत्काल दबाने में लगी है यद्यपि जनता के नेता कवच का कार्य कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, भारतीय सेनाओं को अदीस-अबाबा भेज दिया गया। ऐसा क्यों किया गया? जब इस विषय में कौंसिल आफ स्टेट में प्रश्न किया गया तो भारत सरकार के राजनैतिक सचिव ने उत्तर दिया-'अदीस-अबाबा में भारतीय सेनाएं इसलिए भेजी गई हैं ताकि भारतीय व ब्रिटिश प्रजा की रक्षा की जा सके।' क्या भारतवासी इतने सीधे हैं कि इस उत्तर से संतुष्ट हो जाए। एबीसीनिया अभी भी एक स्वतंत्र राष्ट्र है तब फिर वहा भारतीयों की रक्षा के लिए भारतीय सेनाओं या ब्रिटिश सेनाओं की क्या आवश्यकता है। वास्तविकता यह है कि-जैसा कि इंग्लैंड में भी बताया जा रहा है-इस विशेष प्रतिनिधित्व द्वारा एबीसीनिया की सरकार ब्रिटिश लीगेशन को विशेष छूट दे देगी और अधिक सुरक्षा प्रदान करेगी। (सामान्यतः यह सुरक्षा एबीसीनिया सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जानी चाहिए)। प्रश्न यह उठता है कि यह सुरक्षा प्रबंध भारतीय सेनाओं द्वारा क्यों? एबीसीनिया की सीमाओं, कीनिया, सूडान, मिस्र, तथा ब्रिटिश सोमालीलैंड में ब्रिटिश सेनाए उपलब्ध थी। फिर वे अदीस-अबाबा क्यों नही भेजी गई। कारण स्पष्ट है-भारतीय सेनाए इस बात को स्पष्ट करने की दृष्टि से भेजी गई कि एबीसीनिया में ब्रिटिश नीति का समर्थन भारत भी करता है तथा दूसरी ओर इटली को यह याद दिलाया जा सके कि भारत के सब संसाधन ग्रेट ब्रिटेन के नियंत्रण में हैं।

इस रहस्य से सभी परिचित है कि अगस्त-सितंबर माह में हम यूरोपीय युद्ध की कगार पर थे। किंतु जर्मनी के पुनर्शस्त्रीकरण के भय से, यदि युद्ध छिड जाता तो भारत का भी 1914 की भांति पुनः उसमें घसीट लिया जाता, इससे पहले कि भारतीय नेता

यह सोच भी पाते कि वे कहां खडे हैं। तब केवल यही अतर रह जाता कि इटली जर्मनी के स्थान पर होता और एबीसीनिया बेल्जियम की जगह होता। कोई मूर्ख ही कमांडर-इन-चीफ के सेंट्रल लैजिस्लेचर में दी गई इस टिप्पणी पर विश्वास करेगा कि इससे पहले कि भारत को युद्ध में लपेटा जाए, उसे पर्याप्त समय दिया जाएगा। वर्तमान स्थिति में यदि यूरोप में युद्ध आरभ होता तो ग्रेट ब्रिटेन ही जीतता भारत के ससाधनो के बलबूते पर, किंतु एबीसीनिया फिलीस्तीन के भाग्य का हिस्सेदार बनता और भारत पहले की भाति गुलाम बना रहता। यह खेद का विषय है कि जेनेवा मे ब्रिटेन के प्रवक्ता ने किस निर्लज्जता व ढिठाई के साथ भारत के प्रति ब्रिटेन के रवैये की चर्चा करते हुए, इटली के प्रति अपनी उत्कृष्टता सिद्ध करने के लिए, यह तर्क दिया। उसने यह भी नही सोचा कि जिस समय वह बोल रहा था, उस समय सीमा प्रांतों पर बच्चे और महिलाओ के सिरों पर बमों की वर्षा हो रही थी और भारतीय सरकार क्रिमिनियल लॉ अमेडमेंट एक्ट द्वारा भारतीय लोगो को बेडियां पहनाने की योजना बना रही थी।

यह आश्चर्यजनक स्थिति है कि इटली अन्य साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रति कडा और जोरदार विरोध कर रही थी। शायद एबीसीनिया के प्रति किए गए दुर्व्यवहार के बदले मे अपनी छवि निखारने का प्रयास कर रही थी। उदाहरण के तौर पर उसके अर्धशासी-प्रवक्ता सिग्नोर गयादा ने इटली के पत्रों में लिखा–

"तेरह की समिति यदि यह मानती है कि एबीसीनिया पर लीग द्वारा आक्रमण का प्रश्न ही नही उठता, क्योंकि जेनेवा में पहले इटली ने इसकी निंदा नही की, तो वह गलत सोचती है। फ्रास ने भी निंदा नही की जिसने मोरक्को में आदोलन को प्रेरित किया, इग्लैंड ने भी जेनेवा को उन परिस्थितियों से परिचित नहीं कराया जो भारत की पूर्वी पश्चिमी सीमाओ पर उभरी और जहा ब्रिटिश सेनाओं को स्वतंत्र जनता के लिए युद्ध करना पडा" (द टाइम्स, 7 अक्तूबर) ।

इस आदोलन का प्रभाव अन्य यूरोपीय देशों पर भी पड़ने लगा जैसे पोलिश सरकार की सस्था 'द गजेटा पोल्स्का' ने लिखा–

"ग्रेट ब्रिटेन, काली जातियों के प्रति सदा सेना का प्रयोग करने को तैयार रहने वाले ने, एबीसीनिया के सदर्भ में इटली की योजनाओं का इतना जमकर विरोध क्यो किया?"

यूरोप की सरकारों में से आस्ट्रिया और हगरी, जो इटली के प्रभाव क्षेत्र मे थे, ने जेनेवा मे खुलकर घोषणा की कि वे इटली के विरुद्ध स्वीकृति का विरोध करते हैं। जर्मनी, चूंकि लीग से बाहर थी इसलिए उसने इस प्रश्न पर अपना रवैया स्पष्ट नही किया, किंतु अपने राष्ट्र के हित में नीति का अनुपालन करेगी। इटली के विरुद्ध स्वीकृति को सहयोग देने वाले देशों मे भी ग्रेट ब्रिटेन के दिलचस्पी न लेने पर सशय व्याप्त था। इसका आभास समाचार-पत्रों से भी होता है। उदाहरण के लिए मैंने औपनिवेशिक समाचार-पत्रो मे पढा कि एबीसीनिया ने लकाशायर की कपनियों से कपडे का एक बडा आर्डर बुक किया है–लकाशायर के लिए पिछले कई वर्षों में यह अब तक का सबसे बडा आदेश था। इसी प्रकार मैंने यह समाचार भी पढा कि ब्रिटेन एडन के समीप अपने साम्राज्य को विस्तृत कर रहा है ताकि इटली की उस शक्ति का मुकाबला कर सके जो लाल समुद्र

के दूसरी ओर फैल रही है।

अब भविष्य क्या हो

फ्रेंच नीति उपमहाद्वीप की राजनीति को तथा लीग आफ नेशस को प्रभावित कर रही थी जिससे इतना तो निश्चित था कि दो बातें होंगी। पहली, लीग ऑफ नेशस की साख कायम रखने, जो कि वास्तव में फ्रास व इंग्लैंड जैसे बड़े देशो की साख थी, के लिए मिल-जुलकर आर्थिक स्वीकृति जैसे कुछ कदम उठाए जाएगे। मुसोलिनी ने ही इसका मार्ग खोला था और 2 अक्तूबर के अपने भाषण मे यह स्वीकार किया था कि कितनी भी कठिनाइया क्यो न हों, वह आर्थिक स्वीकृति प्रदान कर देगा। दूसरी, इटली के विरुद्ध कोई सैन्य कार्यवाही नहीं की जाएगी न ही कोई ऐसी भावी स्वीकृति प्रदान की जाएगी जिसकी वजह से एबीसीनिया के इटलीवासी परेशान हो। मुसोलिनी कई बार यह कह चुका है कि इस प्रकार की किसी भी कार्यवाही को वे युद्ध का कारण मानते हैं। फिर इटली ने इस बात का स्पष्ट संकेत भी दिया है कि यदि एबीसीनिया मे उसे परेशान किया गया तो वह इसके विरोध में केंद्रीय यूरोप से स्वयं को खींच लेगी और जर्मनी को पूर्ण स्वतंत्रता दे देगी। यह कहना कि युद्ध का भय समाप्त हो चुका है, अति आशावादिता ही कहलाएगी। ब्रिटिश जल सेना का सारा ध्यान मध्यसागर पर है और ब्रिटेन ने इटली के अनुरोध को, कि वह स्वय को हटा ले, मानने से इंकार कर दिया है। इस सबके अलावा ब्रिटेन के कई उग्र समाचार-पत्रों ने यह स्वीकार किया है कि युद्ध क्षेत्र में सेनाओं और युद्ध सामग्री का भेजा जाना निरतर जारी है। यह स्पष्ट है कि ग्रेट ब्रिटेन हिचक के साथ चढाई कर रहा है, किंतु उसने अभी तक युद्ध की इच्छा को त्यागा नही है। वह अपने युद्ध भूमि से लौटने को नाटकीय लबादा पहनाना चाह रहा है, यह कह कर कि यह सामूहिक कार्यवाही है।

उनका मानना है कि निराशा के पीछे आशा छिपी होती है। यही एबीसीनिया के सदर्भ मे भी सत्य है। एबीसीनिया सघर्ष करते करते यदि खत्म भी हो गई तो भी वह विश्व की आत्मा को तो हिला ही देगा। पूरे विश्व में कालों के बीच एक नयी जागृति पैदा होगी। यही जागृति दमित राज्यों के लोगों में नए जीवन का संचार करेगी। इस घटना से सभी साम्राज्यवादी परेशान हैं और जनरल स्मट्स ने तो अपने एक भाषण में इसका सकेत भी किया है। दूसरी ओर साम्राज्यवादी राष्ट्रों के विचारक लोग स्वय से यह प्रश्न पूछने लगे हैं कि क्या औपनिवेशवादी पद्धति उचित है। प्रोफेसर हैराल्ड लास्की ने मैनचेस्टर गार्जियन को लिखे एक पत्र में लिखा कि ग्रेट ब्रिटेन के सभी उपनिवेशकों को लीग आफ नेशंस को सौंप दिया जाना चाहिए। श्री लैन्सबरी भी पहले यही कह चुके हैं। अतः साम्राज्यवादियों की आत्मा उन्हे कचोटने लगी है।

साम्राज्यवाद खत्म करने के दो मार्ग हैं-या तो कोई उपनिवेश विरोधी एजेंसी इसको उलट दे अथवा साम्राज्यवादियों में ही आंतरिक द्वद्व छिड जाए। यदि इटली साम्राज्यवाद के विकास से दूसरी सभावना आगे बढती है तो एबीसीनिया का सघर्ष व्यर्थ नही जाएगा।

भारत का भविष्य *

सभी भारतवासियो को काग्रेस पर गर्व है, जो सभी भारतीयो के लिए सघर्षरत है।

इस समय भारत नया आकार ले रहा है। हम अपने लक्ष्य से दूर हैं किंतु हम अपने भविष्य पर नजर रखे हुए सघर्ष जारी रखेंगे, वह भविष्य भूतकाल की अपेक्षा अधिक उज्जवल और शानदार होगा।

एकात ठीक नही है। हमारी युवा पीढी को विश्व के सपर्क मे आना चाहिए। आज बहुत कम भारतवासी विदेश में हैं, लेकिन वह दिन दूर नही जब सब ओर हमारा अपना प्रतिनिधिमडल होगा।

जमशेदपुर का श्रमिक वर्ग-चित्र का दूसरा पहलू *

दिसबर 1935 के 'द माडर्न रिव्यू' के अक मे प्रकाशित श्री जे.एल.कीनन, मुख्य प्रबधक, टाटा आयरन एड स्टील वर्क्स, जमशेदपुर, का लेख कई कारणो से बहुत दिलचस्प है। स्टील बनाने से ऐतिहासिक एव सामाजिक अनुसंधान के अधिकार क्षेत्र में विषयातर, वह शात आत्मसतोष जिसने लेखक को प्रोत्साहित किया और बहुत सी विसगतिया जो लेख में प्रचुरता से उपलब्ध हैं।

ऐतिहासिक एव सामाजिक विषयो के संबध मे एक शब्द। जब श्री कीनन लोहे के उत्पादन की बात करते हैं तो वे ठोस धरातल पर रह कर बात करते हैं और उनका आत्मविश्वास उनका एक गुण है। किंतु जब वे प्राचीन इतिहास और समाजशास्त्र के कटीले क्षेत्र मे प्रवेश करते हैं तो उनका आत्मविश्वास बाधा बन जाता है। श्री कीनन कहते हैं-"उन्होंने (जे.एन.टाटा) ने यह महसूस किया कि मनु के समय से ही भारत पूजीपतियो और गुलामो का देश माना जाता था।" (पृष्ठ 705) यह वाणिज्यिक सत्य है कि पूजीवाद का अभ्युदय तो हाल ही में अधिक उत्पादन के परिणामस्वरूप हुआ है। इसलिए मनु काल मे या उसके बाद के समय में पूजीपतियों का प्रभुत्व कैसे सभव हो सकता है, यह बात मेरी समझ से परे है। यहा तक कि जो जमीदारी प्रथा आज हम हिंदुस्तान मे देख रहे हैं वह भी हाल ही मे विकसित हुई है। फिर प्राचीन काल में भारत मे धन-धान्य को भी सचित नही किया गया। राज्य का तो विचार था कि (प्रजातत्र हो या राजतत्र) सब कुछ जनता को बाट दिया जाना चाहिए। इसका विशेष उदाहरण राजा हर्षवर्धन है जो पाच साल में एक बार राज-सपदा लोगों मे बाट देता था।

फिर श्री कीनन कहते हैं कि "हम (टाटा) जानते हैं कि इससे पहले भारत मे श्रमिक का नाम लेना ही तिरस्कार का सूचक था" (पृष्ठ 705) यदि श्री कीनन ने 'श्रमिक' शब्द का प्रयोग कारीगर या शिल्पकार के अर्थ में किया है तो वे गलती पर हैं। भारतीय

---

* '8 जनवरी 1936 को अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की जयती पर, विएना में हिंदुस्तान एकेडमिकल एसोसिएशन के समारोह में सुभाष चंद्र बोस द्वारा दिए गए भाषण के अश

* फरवरी 1936 के माडर्न रिव्यू में प्रकाशित एवं सुभाष चद्र बोस की पुस्तक 'द् काग्रेस भाइज' में पुन प्रकाशित। (किताबिस्तान इलाहाबाद तथा लदन, 1938)

ग्रामीण क्षेत्र में कारीगर–चाहे बढ़ई हो या लुहार या बर्तन बनाने वाला–कभी भी तिरस्कृत नहीं माने गए। वे ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के आवश्यक तत्व माने जाते रहे हैं तथा गाव की शेष जनता के साथ सदा ही उनके घनिष्ठ मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं। औद्योगिक सर्वहारा वर्ग में श्रमिकों को पूंजीवाद का परिणाम माना गया और ऐसा केवल भारत में ही नही है। यदि भारत में श्रमिकों (औद्योगिक सर्वहारा वर्ग) को हेय दृष्टि से देखा जाता है ता यही स्थिति अन्य देशों में भी है। यूरोपीय उद्योगों में ऐप्रेंटिस कर रह भारतीयों से मैंन सुना है कि वहा श्रमिकों व अधिकारी वर्ग के बीच की खाई बहुत बडी है।

श्री कोनन का यह कहना भी गलत है कि "श्रमिक वर्ग के धन एकत्र करन पर प्रतिबंध था। क्योंकि वह गुलाम था, यदि उसका मालिक उसे आजाद भी कर द तब भी वह गुलाम ही रहता था।" (पृष्ठ 705) मुझे आश्चर्य है कि श्री कोनन ने यह अमूल्य सूचना कहा से जुटाई। इसके विपरीत हम जानते हैं कि भारत मे निम्नवर्ग क जन्म लोग अपनी वैयक्तिक खूबियों के आधार पर उच्च पदों तक पहुचने मे सफल हुए। यदि हम वर्तमान महाराजाओं और उनके अधिकारी वर्ग का इतिहास देखें तो इस विषय में बहुत सी महत्वपूर्ण सूचनाएं एकत्रित की जा सकती हैं। मैं यहां बंगाल के राजा कैवर्त का उदाहरण देना चाहूंगा जो तथाकथित निम्नवर्ग से सबध रखता था।

श्री कोनन ने जो आवश्यकता के श्रमिकों व उन्नति के श्रमिको की तुलना की है वह नकली है, बल्कि हम उसे आश्चर्यजनक कह सकते हैं। प्राचीनकाल मे सारा श्रमिक वर्ग आवश्यकतावश श्रमिक नही था। लोग केवल भूख मिटाने के लिए ही कार्य नही करते थे और न ही उन्हें भूख के पैसे मिलते थे। अधिकांश लोग भूख की अपेक्षा अपनी प्रसन्नता के लिए श्रम करते थे और यह कहना सही है कि प्राचीनकाल में पसीना बहाकर मेहनत करना अच्छा माना जाता था। कला के अभिलेख जिनमें आज भी कला जीवित है, वे हैं मोहनजोदाडो, हड़प्पा, ताजमहल, मदुरा, कोणार्क, क्या ये सब उन्नत शिल्प के नमूने नही हैं? यह सत्य है कि प्राचीन काल में उद्योग इतना लाभ नही देते थे जितना आज कल दे रहे हैं। किंतु हमें यह नही भूलना चाहिए कि यह अधिक लाभ औद्योगिक क्रांति का ही फल है, जिसमें अधिक उत्पादन किया जा रहा है। फिर इस लाभ को फायदा या उपलब्धि मानना उचित नहीं। सभी जगह के विचारक यह मानने लगे हैं कि औद्योगिक पूजीवाद से पैदा होने वाली बुराइयों का मुख्य कारण मुट्ठीभर लोगो के हाथो में पैसा रहना है या वह अधिक लाभ है, जो कि श्रमिकों के बलबूते पर पैदा किया जा रहा है या फिर औपनिवेशिक देशो के उपभोक्ताओं के कारण से है।

श्री कोनन शिष्टता की सभी सीमाएं लांघ जाते हैं, जब वे प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट के 'एसीस्टेड बाइ ए ग्रुप आफ एसीनाइन प्रोफेसर्स' का हवाला देते हुए वर्तमान कुठा से बाहर निकलने का मार्ग खोजते हैं। मैं प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट का पक्ष नहीं ले रहा, न ही उन्हे किसी से पक्षपात की आवश्यकता ही है, किंतु क्या कोई व्यक्ति इसे मानने से इकार कर सकता है कि विश्व में वर्तमान बेरोजगारी और कुंठा को समाप्त करने का रूस के अतिरिक्त यू.एस.ए. में प्रयोग किया जा रहा है। मैं श्री वेल्स द्वारा लिखित लेख 'द न्यू अमेरिकन इन द वर्ल्ड' का जिक्र करना चाहूगा जिसमें उन्होंने अमरीकी प्रयोग की तुलना

रूस से की थी। सयोगवश श्री वेल्स ने भी यही प्रश्न उठाया था कि रूजवेल्ट कुछ प्रोफेसरो की सहायता क्यो माग रहे हैं, जिसे श्री कीनन ने आत्मतुष्टि मे 'एसीनीन' कहा है। शायद श्री कीनन इसलिए नाराज़ हैं कि प्रेसीडेंट रूजवेल्ट आर्थिक लाभ पर आक्रमण कर उसे विभक्त करना चाहते हैं। और उसका एक भाग दमित सर्वहारा वर्ग को देना चाहते हैं। उनके विचार में उद्योग मालिको को व्यवस्थित मज़दूर-सगठनो को मान्यता देनी चाहिए और उन्हे बराबर का दर्जा भी देना चाहिए।

श्री कीनन केवल आत्मसतोषी ही नही बल्कि इससे अधिक भी बहुत कुछ हैं। उनका कहना है कि जहा तक स्टील बनाने का प्रश्न है भारत में कपनी (टाटा) ने इस उद्योग मे पर्याप्त उन्नति की है ओर मेरे विचार में कपनी को इस पर गर्व भी होना चाहिए, (पृष्ठ 707) लेकिन मैं श्री कीनन से पूछना चाहता हू कि पूजीवादी ढग से कमी को पूरा करने से क्या लाभ है। इसका अर्थ है उपभोक्ता वर्ग की खोज तथा पर्याप्त राशि ताकि और उपभोक्ताओं के लिए कपनी को चालू रखना। भारत सरकार के माध्यम स भारतवासी कपनी उदारता से श्रम उपलब्ध करा रहे हैं ताकि कपनी अधिक से अधिक आर्डर और उपभोक्ता तलाश सके। कपनी के अधिक लाभ कमाने के दो कारण हैं-विदेशी माल पर लगाए गए कर, विशेष रूप से साम्राज्यवादी देशों से लोहे पर, जिससे टाटा को लाभ मिले और वह लोगों में लोकप्रिय हो तथा दूसरा, भारत सरकार द्वारा आर्डर सीधे टाटा एड आयरल स्टील कपनी को दिए जाने। इस प्रकार भारतवासी एव भारतीय सरकार ने, इस स्टील व्यापार को, यदि वास्तव में ऐसा हुआ है तो मिल-जुल कर ऊपर उठाया है । श्री कीनन ने इन्हें धन्यवाद का एक शब्द भी नही कहा यद्यपि उन्होंने कपनी की प्रशसा की है, अर्थात अपनी प्रशसा की है अर्थात इस वर्तमान उन्नति का श्रेय उन्हे है।

मैं वर्ष 1928 से टाटा परिवार को जानता हू और मैं यह जानना चाहता हू कि क्या यह कपनी आज जिदा होती यदि मुश्किलो के क्षणो में भारतवासी श्रमिको न अपना श्रमदान न दिया होता, जब यहा के अधिकारियों को अधिक वेतन दिया जा रहा था, लेकिन हजारो श्रमिको को बिना किसी प्रकार का लाभ, बीमा आदि दिए सडको पर बेकार छोड दिया गया था। मैं यह भी जानना चाहता हू कि क्या स्टील के क्षेत्र मे यह कपनी, जैसा कि मुख्य प्रबधक ने दावा किया है, इतनी उन्नति कर पाती यदि स्टील पर इतना शुल्क नही लगाया होता या भारतीय जनता या भारत सरकार का रवैया इसके प्रति सौहार्द *एव सहानुभूति का नही होता तो। विचार विभ्रम जो लेखक ने कही-कही दर्शाया है, सहानुभूति* का पात्र है और यह कहने पर मजबूर करता है कि बेहतर होता यदि लेखक इतिहास और समाजविज्ञान के अध्ययन की अपेक्षा अर्थशास्त्र का अध्ययन करता। उनके विचारो का एक उदाहरण-'1929 और 1930 में कुछ लोगो को छोडकर हमारे मासिक कार्यकर्ता जा गिनती में बहुत कम थे, प्रगति के श्रमिक थे।' स्टील कपनी ने अपने प्रगति के श्रमिको को अधिक श्रम के लिय पुरस्कृत भी किया (पृष्ठ 707) इसका अध्ययन करने पर यह सोचने पर मजबूर होना पडता है कि कपनी की आर्थिक उन्नति का कारण वहा क कार्यकर्ताओ द्वारा 1931 व उसके बाद किया गया श्रम है जबकि सच्चाई यह है कि आर्थिक उन्नति का एकमात्र कारण टाटा कपनी को मिलने वाले अधिकाधिक आर्डर थे, जिसका ज़िक्र पहले

पैराग्राफ में भी किया जा चुका है। यदि हम प्रत्येक कर्मचारी के कार्य का आकलन करे तो हम देखेंगे कि उनके वर्ष 1929-30 और 1930-31 के कार्य में कोई अंतर नही है। मुझे भलीभांति याद है कि वर्ष 1929 और 1930 में जनरल मैनेजर की यह शिकायत रहती थी कि आर्डर कम होने के कारण वेतन कम किया जा रहा है। कुछ लोगों को नोकरी से निकाला जा रहा है तथा टाटा आयरन एड स्टील कंपनी जमशेदपुर क कुछ एकाशो को बद किया जा रहा है।

लेखक ने एक जगह लिखा है कि मेरी राय में वर्तमान समय मे आर्थिक मूढ के आधार पर पूरे विश्व के स्टील उद्योग के श्रमिक, केवल टाटा आयरन एड स्टील कपनी के श्रमिकों को छोडकर, यह भूल गए हैं कि वे उन्नति के शिल्पकार हैं, व आवश्यकता के शिल्पकार बन गए हैं। मेरे विचार से यूनाइटेड स्टेट ऑफ अमरीका म एसा कोई व्यक्ति नहीं है, कम से कम श्रमिक वर्ग में, जो आवश्यकता क श्रमिको क वर्ग से बाहर निकलने को उत्सुक हो। इसमें दो राय नहीं कि हम सभी यह महसूस करते हैं कि भारत में वर्ष 1928 से 1933 के मध्य काफी मदी आई किंतु ऐसी हालत अन्य देशो की भी थी। मेरे अनुमान से टाटा आयरन एड स्टील की है, (पृष्ठ 706-7)

उपरोक्त टिप्पणी से आशा बधती है कि जमशेदपुर इस्पात श्रमिकों के लिए स्वर्ग बन गया है, तथा विश्व के अन्य भागो की इस्पात कपनियों के लिए आदर्श है। किंतु वास्तविकता क्या है? अपने लेख के प्रारभ में लेखक ने कहा है कि अमरीका के इस्पात श्रमिको को सबसे अच्छा वेतन मिल रहा है। 30 जनवरी, 1935 की अमेरिकन आयरन एड स्टील इस्टीट्यूट की एक रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए लेखक न लिखा है-'नवबर 1934 में अमरीकी श्रमिको ने एक घटे कार्य करके 67 सेंट कमाए, जाशरी मजदूरी थी 97 सेंटस प्रति घटा और भारत में 1933 में 86 सेट प्रति घटा मजदूरों को दिया गया।' (यूरोपीय देशों में 25 सेंट प्रति घंटा के आसपास) यदि भारतीय श्रमिक को मजदूरी अमरीकी श्रमिकों को मजदूरी की 1/8 वा हिस्सा थी, और यदि टाटा आयरन एड स्टील कपनी भारत की सबसे बडी स्टील कपनी है तो मेरे विचार से तो टाटा के जनरल मैनेजर को व्यर्थ की शेखी मारने की बजाय शर्म से सिर झुका लेना चाहिए।

लेख लिखते समय लेखक को अपनी कंपनी की बुराइयों का आभास था इसका पता उनकी उक्त टिप्पणी से मिलता है, जो उन्होंने पृष्ठ 705 पर दी है-

'हम सोचते हैं कि हम भला कार्य कर रहे हैं। हम अपने अस्पतालों की शेखी मारते हैं, मजदूरी जो हम श्रमिकों को दे रहे हैं, उसे बढा-चढा कर गाते हैं, किंतु क्या हम कभी यह भी सोचते हैं कि भारत और यूरोप की अथवा अमरीका की तुलना करक देखा जाय? मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हू कि नही। हम ऐसा नही करते। हमे अपने श्रमिकों को दी जाने वाली मजदूरी की तुलना, यूरोप के श्रमिकों को दी जाने वाली मजदूरी से करके देखनी चाहिए।

अब मैं कुछ गंभीर आरोपों की बात करूंगा जो टाटा आयरन एड स्टील कपनी पर लगाए जा सकते हैं। ये आरोप निम्न शीर्षकों क अतर्गत आते हैं-

1 भारतीयता के प्रति उनका रवैया।

2 कूड़ा-करकट अथवा अवशेष नियंत्रण मे उनकी अकुशलता।

3 श्रमिकों के प्रति उनका रवैया।

टाटा के निदेशकों ने हमेशा यह दावा किया है कि उनकी कंपनी राष्ट्रीय उद्योग है और ऐसा कह कर वे भोली-भाली जनता की सहानुभूति बटोरते रहे हैं। अतः मैं इन तीन शीर्षकों के अंतर्गत अपनी बात स्पष्ट रूप में सामने रखना चाहूंगा। मैं बताना चाहूंगा कि जमशेदपुर स्थित टाटा की कंपनी तो उन भारतीय पूंजीपतियों की कपड़ा मिल से भी कम मायनों में राष्ट्रीय है, जो राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति के नाम पर जनता को लूट रहे हैं।

25 वर्ष पूर्व स्टील कंपनी की शुरुआत की गई तो एक संविदा के अंतर्गत यहां के उच्च पदों पर अमरीकी और ब्रिटेन के लोगों को नियुक्त किया गया। उन लोगों को राजसी वेतन व राजसी बोनस दिया गया और कुछ केस तो ऐसे भी थे जिनमे बोनस वेतन से भी अधिक था और जिसका उत्पादन या लाभ से कोई संबंध नहीं था। यदि मैं गलती नहीं कर रहा तो जनरल मैनेजर को 10,000 रु. प्रतिमाह तक वेतन मिलता था, जो कि किसी बड़े प्रांत के गवर्नर के वेतन के समतुल्य था। लोगों को यह बताया गया था कि जैसे ही भारतीय प्रशिक्षित हो जाएंगे उन्हें संधि के तहत नियुक्त अधिकारियों के स्थान पर नियुक्त कर दिया जाएगा। इस वादे को पूरा नहीं किया गया। 1928 से 1931 के मध्य हमने भारतीयकरण के पर्याप्त प्रयास किए, किंतु निष्फल रहे। आज स्थिति यह है कि कई अनुभागों मे भारतीय वही कार्य कर रहे हैं जो विदेशियों द्वारा किया जा रहा है, किंतु उन्हें उन लोगों की अपेक्षा आधा या एक तिहाई वेतन दिया जा रहा है। उस पर भी जब मैं जनरल मैनेजर के संपर्क में आया तो मैंने शिकायत की थी कि कई अधिकारियों के अनुबंधों का नवीनीकरण किया जा रहा है जबकि कई भारतीय उस कार्य को करने में सक्षम हैं, किंतु उस शिकायत का कोई लाभ नहीं हुआ। यदि आज जमशेदपुर में नियुक्त विदेशियों की संख्या व वेतन का निष्पक्ष तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी सबसे बेकार कंपनी सिद्ध होगी।

इसमें शक नहीं कि टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी एक बहुत बड़ा उद्योग है। इसलिए यहां के अवशेष पर रोक लगाने के प्रयास करने चाहिए। किंतु इस विषय में भी स्थिति बहुत संतोषजनक नहीं है। निदेशक प्रायः अनुपस्थित रहते हैं इसलिए उन्हें इस कंपनी की आंतरिक कार्य-प्रणाली का कोई ज्ञान नहीं है। उनके पास बहुत से और काम करने के लिए हैं और उन्हें इसमें कोई दिलचस्पी भी नहीं कि जमशेदपुर में क्या हो रहा है। परिणामस्वरूप वहां की वास्तविक कार्य-व्यवस्था विदेशियों के हाथ मे छोड़ दी गई है जो किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं, केवल अनुपस्थित रहने वाले निदेशकों के प्रति उत्तरदायी हैं जो कि वैसे ही उनके कब्जे में हैं। सितंबर 1928 में जब पहली बार मैं हड़ताल कर रहे कर्मचारियों की ओर से समझौता करने वहां गया तब मुझे बोर्ड की असहायता का ज्ञान हुआ। यदि किसी विषय में जनरल मैनेजर हां कह देता तो बोर्ड भी उसकी हां में हां मिला देता। और इसके विपरीत जनरल मैनेजर के 'न' करने पर

बोर्ड की ओर से भी उत्तर नकारात्मक ही होता।

उस समय समझौता इसी कारण संभव नहीं हो पाया था। क्योंकि तत्कालीन जनरल मैनेजर, श्री अलैग्जेंडर ने उसका विरोध किया था। उस समझौता वार्ता के पश्चात मैंने एक बार बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के चेयरमैन को यह सुझाव दिया था कि उन्हें श्रमिको से सीधा सपर्क करना चाहिए और इस उद्देश्य से उन्हें कंपनी में घूमना चाहिए बिना किसी अधिकारी को अपने साथ लिए। चेयरमैन उस समय मेरी राय से सहमत भी हुए किंतु उसे कार्य रूप नही दे पाए, क्योंकि जनरल मैनेजर इस विचार से इत्तफाक नही रखते थे। जैसे ही बोर्ड को अपनी स्थिति का आभास हुआ, तो उन्होने तत्काल अपना एक निदेशक जमशेदपुर भेजा फिर कलकत्ता भेजा ताकि बोर्ड और मैनेजमेंट के मध्य समन्वय कायम कर सकें। उसकी नियुक्ति के पश्चात जमशेदपुर के प्रबंध मे कुछ सख्ती आई। कलकत्ता व अन्य स्थानों पर बहुत से समाचार-पत्रों में विज्ञापन देकर समाचार-पत्रो को अपने पक्ष में किया। उसी का परिणाम है कि आज राष्ट्रीय समाचार-पत्रो मे टाटा आयरन एड स्टील कपनी की आलोचना उतने तीव्र स्वर में नहीं रही। किंतु वास्तविक समस्या अवशेष एव अक्षमता अभी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

जिस निदेशक का जिक्र ऊपर किया गया है वह भूतपूर्व आई सी एस अधिकारी था। अत: योग्य प्रशासक था। किंतु तकनीकी ज्ञान न होने के कारण मैनेजमेंट पर अधिक दबाव नहीं बन पाया। इसी का एक परिणाम यह था कि भारतीयकरण के मुद्दे में प्रगति अधिक सतोषजनक रूप में नहीं हो पाई। प्रतिज्ञापत्र के अतर्गत रखे गए कितने ही ऐसे अधिकारी हैं जिनका स्थान कम वेतन पर अधिक सक्षम भारतीय ले सकते हैं। वर्ष 1933 में भारतीय कर्मियों को 8 6 सेंट प्रतिदिन मजदूरी दिए जाने का जिक्र मैंने पहले भी किया है। किंतु यदि अधिक वेतन पा रहे विदेशियों का छोड दिया जाए तो प्रतिशत और भी नीचे आ जाएगा।

उच्च प्रशासनिक वर्ग जमशेदपुर के अवेशष को बहुत घटाकर प्रस्तुत करता है। यदि हम स्टोर अनुभाग में जाए तो वहां पडा बेकार सामान और उपकरणों के लिए भेजे गए आर्डर, स्पेयर पार्ट आदि मगाने के आर्डर को देखें तो पता चलेगा कि जमशेदपुर में कितना सामान व्यर्थ पडा है। लगभग सात या आठ वर्ष पहले भारतीय मुख्य विद्युत अभियता की सेवाए, जो कि कपनी का एक उपयोगी एवं लोकप्रिय कर्मचारी था, रद्द कर दी गई और उसके स्थान पर एक विदेशी को नियुक्त कर दिया गया था। तभी से विद्युत विभाग में गलत व अवैज्ञानिक विधिया अपनाए जाने के कारण बेकार वस्तुओं की मात्रा में वृद्धि होनी शुरू हुई। फैक्टरी में ईंधन की खपत भी अपशिष्ट का एक मुख्य कारण है। टाटा आयरन ऐड स्टील कंपनी जैसे बड़े उद्योग को ऐसे उपकरण इस्तेमाल करना चाहिए जिससे ईंधन की खपत कम हो और इस क्षेत्र में उन्हें लगातार, अनुसंधान करते रहना चाहिए। किंतु टाटा आयरन एड स्टील कंपनी अभी इस क्षेत्र में बहुत पिछडी हुई है। यहा के वेस्टेज के साथ-साथ प्रशासनिक बोझ के कारण भी टाटा आयरन एड स्टील कपनी आज तक अपने पैरों पर खडी नहीं हो पाई है और उसे राज्य से प्राप्त दान पर या शुल्क पर निर्भर करना पडता है। ऐसे देश में जहा मजदूरी इतनी कम है वहा कोई भी सुव्यवस्थित

कपनी राज्य की सहायता के बिना आत्मनिर्भर हो सकती है। जमशेदपुर मे ऐसी कई कपनिया हैं जो स्क्रैप आयरन (अथवा विद्युत) जैसा कच्चा माल टाटा से खरीदती हैं और उसी से उत्पादन कर लाभ कमाती हैं। सिर्फ इसलिए क्योंकि वे वेस्टेज कम करती हैं और प्रशासन पर इतना अधिक व्यय नही करती।

अतिम और हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न जिसका जिक्र मैं करना चाहता हू वह है टाटा आयरन एड स्टील कंपनी का मजदूरों के प्रति रवैया। जमशेदपुर मे पहले मजदूर सगठन को 1920 मे संगठित किया गया था और इस बीच इतनी सारी शिकायते एकत्रित हो चुकी थी कि वर्ष 1921 में गभीर श्रमिक समस्याएं उत्पन्न हो गईं। इसी बीच स्वर्गीय देशबधु सी आर दास का ध्यान जमशेदपुर के श्रमिकों की ओर गया और अपने जिंदा रहने के समय तक उन्होंने इन्हे पूरा समर्थन दिया। किंतु उस समर्थन का कोई लाभ नही हो पाया। क्योंकि 1923 के चुनाव में स्वराज पार्टी भारतीय लेजिस्लेटिव असेबली मे एक शक्तिशाली तत्व के रूप में उभरी। देशबंधु दास ने महात्मा गाधी और पडित मोतीलाल नेहरू का साथ दिया तब टाटा ने यह आवश्यक समझा की वे इन नेताओ से मैत्री कर ले क्योंकि *असेंबली शीघ्र ही टाटा आयरन एड स्टील कपनी को राज्य से मिलने वाले* अनुदान के प्रश्न पर बातचीत करने वाली है। तब टाटा ने मजदूर संघ को (श्रमिक सगठन) मान्यता दे दी और यह मान्यता दे दी और यह स्वीकार कर लिया कि वेतन दिए जाने के दिन यूनियन का अशदान भी काट लिया जाएगा और श्रमिकों की दशा मे सुधार भी किया जाएगा। कुछ समय तक श्रमिकों की दशा में सुधार भी आया, किंतु देशबधु की मृत्यु के साथ ही स्थिति पुनः बिगडने लगी।

देशबधु का स्थान श्री सी. एफ. एंड्रयूज ने लिया और उन्होंने असेबली में कांग्रेस के सहयोग से इस कार्य को जारी रखा किंतु कपनी के असंवेदनशील और लापरवाह अधिकारियो की वजह से 1928 मे हडताल की स्थिति पैदा हुई तभी से कंपनी का श्रमिको के प्रति रवैया ऐसा हो गया जैसा किसी भी राष्ट्रीय कंपनी का तो नही होगा बल्कि किसी भ्रष्ट अफसरशाही सरकार का होगा। मेरा जमशेदपुर श्रमिकों से अगस्त 1928 मे सपर्क हुआ, जब हडताल कर रहे कर्मचारियों व उनके नेता श्री होमी ने मुझ पर दबाव डाला कि मैं उनके समर्थन में कुछ कहू। मेरे हडताली कर्मचारियों के साथ मिल जाने पर कपनी को कठिनाई महसूस होने लगी तो उन्होंने श्रमिकों की मांग मानने की स्वीकृति तो दी किंतु एक शर्त भी लगा दी कि कंपनी श्री होमी से कोई वार्ता नहीं करेगी क्योकि कपनी को व्यक्तिगत रूप से श्री होमी के विरुद्ध बहुत सी शिकायतें हैं। पहले-पहल श्री होमी ने स्वय को अलग-थलग करना स्वीकार लिया यदि उनके अलग होने से श्रमिकों को लाभ होता है तो। किंतु जब जनसमूह में समझौता होने लगा तो उन्होंने अपना मन बदल लिया और समझौते का विरोध करने की दृष्टि से एक नए संगठन का निर्माण कर डाला।

समझौता होते ही कंपनी ने कुछ मुख्य मुद्दों पर कार्यान्वयन करने से इकार कर दिया, जिस से बहुत से श्रमिक होमी के नए सगठन में शामिल हो गए। कुछ माह तक तो कपनी ने नए सगठन को स्वीकृति नही दी किंतु एक दिन उनकी नीति अचानक बदल गई। उनके सबसे बडे दुश्मन श्री होमी को जनरल मैनेजर ने बुलाया और उनकी पार्टी

के सगठन को स्वीकृति प्रदान कर दी गई। पुराने संगठन, श्रमिक सगठन, को अवहेलना की गई और उसने जो समझौता किया था और जो लोग ईमानदारी से उस पर कायम थे वे अलग-थलग पड़ गए। कुछ समय बाद दृश्य में फिर परिवर्तन हुआ। श्री होमी पर विभिन्न आरोपों के अतर्गत मुकदमा चलाया गया और उन्हें जेल भेज दिया गया, उनके चले जाने से उनका संगठन भी खत्म हो गया।

जनवरी 1930 में असेंबली से कांग्रेस पार्टी ने स्वय को अलग कर लिया जिसस कपनी का श्रमिको के प्रति रवैया पुन: कठोर हो गया। श्री होमी की गिरफ्तारी के बाद, जब भी श्रमिकों की बैठक होती तो लाठियों और हथियारों से लैस कुछ गुडे आते और बैठक को न होने देते। 1931 में मैं एक बैठक की अध्यक्षता कर रहा था, जिसे इसी प्रकार रोका गया था, इसलिए मैं व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर यह बात कह रहा हू। यही स्थिति कई वर्षों तक चलती रही और 1934 में तो जमशेदपुर मे स्थित इतनी बिगड गई कि महात्मा गाधी को उस शहर के दौरे के दौरान यह कहना पडा कि "मुझे बहुत दुख हो रहा है कि श्रमिक व मालिकों के मध्य समझौता लाठी के जोर पर सपन्न हो रहा है।"

श्रमिकों की ओर से यह कहा जा सकता है कि 1930 से कपनी की नीतिया श्रमिको के विरुद्ध हो गई। दोनो श्रमिक संगठनों को दी गई स्वीकृति अस्वीकार कर दी गई, वेतन दिवस पर अशदान एकत्रित करना बंद कर दिया गया तथा ट्रेड यूनियन से सबद्ध श्रमिको पर आरोप लगाए गए, उन्हे जमशेदपुर से बहुत दूर-दराज के स्थानों पर स्थानातरित कर दिया गया। जनवरी 1934 में जब जमशेदपुर के स्थानीय सरकारी कर्मचारियों ने 40 गुडो पर मुकदमा चलाया तो टाटा के उच्च अधिकारी वर्ग ने दिलचस्पी लेकर उनके विरुद्ध चलाए गए मुकदमो से उन्हें बरी कराया।

1935 में इसकी पराकाष्ठा हो गई जब कंपनी ने श्रमिक सगठन से 4 वर्ष तक परिसर के इस्तेमाल के लिए और 4 वर्ष तक कार्यालय में सचिव के कार्यालय के किराए को बकाया राशि वसूलने की बात की, जबकि मेरे और मैनेजिंग डायरेक्टर श्री दलाल के बीच यह निर्णय हुआ था कि कपनी इस किराए को छोड़ देगी। कपनी ने सोचा होगा कि असोसिएशन यह किराया दे नही पाएगी अत: आसानी से उन्हें निकाल बाहर किया जाएगा, क्योंकि जमशेदपुर के सभी मकान कपनी ने किराए पर लिए हुए थे अत: सगठन स्वत: ही समाप्त हो जाएगा। संगठन सचिव ने कहा कि वह बकाया राशि किश्तो में दे देंगे और भविष्य में भी किराया देते रहेंगे किंतु कंपनी ने किसी प्रकार का समझौता करने से इकार कर दिया और यह सिद्ध कर दिया कि वास्तव मे वे किराया नही माग रहे बल्कि वे जमशेदपुर से श्रमिक सगठन को खत्म करना चाहते हैं।

कंपनी अपने खेल में मस्त थी कि अचानक भारतीय असेंबली में काग्रेस ने जाने का इरादा पुन: बना लिया। कंपनी को मालूम था कि दो-तीन सासद मजदूरों के प्रति कंपनी के रवैये के प्रश्न को फिर उठाएंगे। अत: उन्होंने अपनी नीति में पुन. परिवर्तन करना उचित समझा। कंपनी के सान्निध्य में मेटल वर्कर्स यूनियन की स्थापना की गई और श्रमिकों को कपनी की ओर से यह सलाह दी गई कि वे इस यूनियन में शामिल

हो। यह वर्ग कपनी का चहेता था और उसका मुख्य कार्य सरकारी व कपनी के अधिकारियो को चाय-पानी पिलाना था और जनरल मैनेजर के आदेशनुसार कार्य करना था। इसका मुख्य उद्देश्य यही था कि कपनी अपने आलोचकों को यह दिखा दे कि वह सभी श्रमिक सगठनो की विरोधी नही है।

मैं संगठित श्रमिक वर्ग के प्रति कंपनी के रवैये की तो बहुत बात कर चुका अब कुछ श्रमिकों के प्रति व्यक्तिगत रवैये की चर्चा भी करना चाहूगा। मेरे सामने उस ज्ञापन की प्रकाशित प्रति रखी है जो मेटल वर्कर्स यूनियन (जिसे जमशेदपुर में कपनी यूनियन कहा जाता है) ने जनरल मैनेजर को दिया था जिसमें लिखा है-

टाटा आयरन एड स्टील कपनी में कार्यरत अधिकांश श्रमिकों की कार्य करने की स्थितिया ठीक नही हैं, क्योंकि बहुत से लोगों को कार्यमुक्ति के आदेश दे दिए गए हैं, कुछ को जबर्दस्ती अवकाश पर भेजा गया है और उनके मामलों पर विचार भी नही किया जा रहा है। उदाहरण के लिए पुरानी रोलिंग मिल में लबी अवधि तक कार्य करने का अनुभव होने पर भी और उन्हें जबर्दस्ती लंबी अवधि के अवकाश के लिए बाध्य किया जा रहा हो।

कपनी ने हाल में 'टेपरेरी' आधार पर श्रमिकों को रखने की नीति अपनाई है और दिलचस्प बात यह है कि इस अस्थायी' अवधि का कोई निश्चित समय निर्धारित नही है। बहुत से लोग हैं जो दो वर्ष से अधिक अवधि से यहा कार्य कर रहे हैं। इससे कंपनी को बोनस, प्रावीडेंट फड आदि तथा वर्कर्स सर्विस नियमानुसार अन्य सुविधाए आदि नहीं देनी पड़ती। जबकि स्थायी कर्मचारियो को ये सब सुविधाएं देनी पड़ती हैं।

एक सप्ताह से अधिक अवधि तक कर्मचारी को कार्य से अलग रखा जाता है। किसी भी श्रमिक पर लगे आरोपों को गलत सिद्ध करने के मैनेजमेंट द्वारा दिए नए मौकों के बावजूद भी या तो नियमों का पालन नहीं होता या फिर श्रमिक द्वारा दिए गए स्पष्टीकरण पर तुरत कार्रवाई नहीं होती। वेतन कम करने जैसे अन्य आदेश दे दिए जाते हैं।

ऐसी कोई नियमित पद्धति नहीं है जिसके द्वारा श्रमिकों को पदोन्नति दी जाए या वेतन में वृद्धि की जाए। पिछले कुछ समय से तो कंपनी की नीति रही है कि उच्च वेतन वाले पदों को समाप्त कर दिया जाए और कम वेतन के लोगों से अतिरिक्त कार्य करवाया जाए किंतु उन्हें कोई अतिरिक्त लाभ न दिया जाए।

यद्यपि हम बोनस के फायदे की योजना की प्रशंसा करते हैं किंतु हमें आभास है कि यह लाभ गिने-चुने लोगों तक ही पहुंचेगा। अनुभागीय बोनस के लिए भी ऑपरेटिंग और मेंटेनेंस अनुभागों में अतर स्थापित किया जा रहा है।

अधिक कार्यभार के दिनों में कपनी ने साप्ताहिक भुगतान के तरीके पर श्रमिको को नियुक्त करने की पद्धति अपनाई। किंतु पिछले कुछ समय से हम देख रहे हैं कि साप्ताहिक कर्मचारियों को कुछ अनुभागों में स्थायी तौर पर रखा जाने लगा जिनकी सख्या जमशेदपुर में 5000 के लगभग थी (इसमें स्त्री व पुरुष दोनों श्रमिक शामिल हैं)। जो कुल श्रमिको का 20 प्रतिशत है। ऐसे श्रमिकों की कुछ सेवा 5 वर्ष तक की अवधि की हो चुकी

है। इनमें से अधिकांश श्रमिकों को 5 से 8 आने प्रतिदिन दिए जाते थे। 5 सदस्यों के परिवार का खर्च जमशेदपुर में अन्य शहरों शोलापुर और अहमदाबाद की अपेक्षा अधिक है। यह बात श्रमिकों पर रायल कमीशन द्वारा पेश किए गए आंकड़ों से भी सिद्ध होती है। आंकड़ों के अनुसार शोलापुर में मासिक खर्च 37-13-11 और अहमदाबाद मे 39-5-8 है, किंतु जमशेदपुर के 5000 श्रमिकों को केवल 5 से 8 आने प्रति दिन मिलते है।

उपर्युक्त टिप्पणी किसी सिरफिरे आंदोलनकारी की नहीं बल्कि कंपनी यूनियन की है। अतः क्या मैं श्री कीनन से पूछ सकता हू कि जमशेदपुर में ऐसे उन्नति के श्रमिक कितने हैं? मुझे शक है कि जनरल मैनेजर और कुछ प्रतिज्ञापत्र के तहत नियुक्त अधिकारियों के अलावा बहुत कम भारतवासी हैं जिन्हें प्रगति के श्रमिकों की सज्ञा दी जा सकती है।

पूरे लेख में केवल वह हिस्सा ठीक है, और उसके लिए मैं लेखक का आभारी हू, जिसमें उन्होंने टाटा खानों में मजदूरों की दयनीय दशा का वर्णन किया है। मेरे विचार से इसके पीछे श्रीमती कीनन की सहानुभूति ही है कि जनरल मैनेजर ने गरीब खनिक श्रमिकों की मजदूरी बढ़ाने की बात की।

लेखक ने केवल लोह खानों की बात की है। किंतु कोयला खानों की क्या दशा है? कुछ समय पूर्व जब मैं टाटा कोलियरी लेबर एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहा था तब मुझे टाटा कोल माइंस की अवस्था देखने का मौका मिला। उस समय कुछ खानें बंद की जा रही थीं और बहुत से श्रमिकों को कार्य मुक्त किया जा रहा था। स्वाभाविक था कि हम लोगों की मांग थी कि खानें खोली जाएं ताकि कार्य होता रहे, किंतु कंपनी ने हमारी मांग के विरोध में दो तर्क सामने रखे, पहला, कपनी के पास अन्य खानों से लंबी अवधि का अनुबंध है। अतः अब उन्हें अपनी खानों से पूर्ति की आवश्यकता नहीं। दूसरे, कपनी की खानों से उत्पादन दर मंहगी है जबकि बाजार मे उपलब्ध दर कम है।

किसी भी बाहरी व्यक्ति के लिए यह बात समझ पाना असंभव है कि कपनी ने यह अलाभकारी अनुबंध क्यों किया और साथ ही दूसरी कोयला खानों से कोयला खरीदने में धन व्यय क्यों किया। पहली बात, इस लबी अवधि के अनुबंध को करना गलत कदम था। दूसरे, यदि ऐसा करना ही था तो उन्हें अन्य कोयला खानों को खरीदना नहीं चाहिए था। तीसरी बात, एक बार जब इन खानों में कार्य करना प्रारंभ कर दिया तो उन्हें इसे बद नहीं करना चाहिए था क्योंकि जब वहा कार्य न चल रहा हो तब खानों को चालू हालत में रखने में अत्यधिक लागत आती है । चौथी बात, इन खदान कार्यालयों में उच्च प्रशासनिक अधिकारियों को रखने का क्या औचित्य था जिसके परिणामस्वरूप उत्पाद कीमत में वृद्धि हो रही थी। इन विसंगति का ही यह परिणाम था कि राज्य के लोगों को कंपनी के दुष्कर्मों का फल भोगना पड़ रहा था और भारतवासियों को कम वेतन में ही सतोष करना पड़ रहा था।

यदि जमशेदपुर के टाटा श्रमिकों को प्रगति के श्रमिक बनाना है तो उच्चाधिकारी प्रशासन वर्ग में सुधार लाना होगा तथा प्रतिज्ञापत्र के तहत नियुक्त अधिकारियों को वेस्ट

से छुटकारा पाना होगा और अक्षमता को दूर करना होगा। मुट्ठीभर कम वेतन प्राप्त श्रमिकों को बोनस देकर जमशेदपुर के श्रमिकों की स्थिति सुधर नहीं सकती, न ही इससे कंपनी को यह छूट मिल सकती है कि वह किसी अन्य कंपनी की तुलना में अपने श्रेष्ठ मालिक होने का दावा कर सके।

पोलैंड में भारत के एक मित्र *

सन् 1933 में जब मैं पोलैंड की यात्रा पर था तब मुझे कई महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलने का मौका मिला, जिन्हें भारत में बहुत दिलचस्पी थी। सामान्यतः राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के प्रति सभी को सहानुभूति थी। पोलैंड ने बहुत दिनों तक आजादी के लिए संघर्ष किया था, हाल ही में उन्हें स्वतंत्रता हासिल हुई है। अतः आज वे इस स्थिति में हैं कि स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत देशों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपना सकें। मुझे याद है, कि एक बार पोलैंड के कुछ मित्र कार में मुझे किसानों की वर्तमान स्थिति दिखाने को ले गए थे। हम ग्रामीण कृषि स्कूल में गए जो हाल ही मे सरकार द्वारा खोला गया था ताकि किसानों के बच्चों को आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति द्वारा कृषि की शिक्षा उपलब्ध कराई जा सके। वहां का रख-रखाव देखने वाली एक महिला ने हमे सारा स्कूल दिखाया और जब हम वहां से चलने लगे तो उसने हमसे महात्मा गांधी के स्वास्थ्य और आजकल उनके कार्यक्रम के बारे में पूछताछ की। हम इस बात से बहुत प्रभावित हुए।

पोलैंडवासी आजकल अपने देश का शीघ्रातिशीघ्र औद्योगीकरण करने में लगे हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने डायना नाम का एक बंदरगाह बनाया है, जिससे वे जर्मनी के बंदरगाह डैंजिग से मुक्त हो गए हैं जो कि आजकल अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह बन गई है। वे अपना विदेश व्यापार भी विकसित कर रहे हैं और इस उद्देश्य से उन्होंने अन्य देशों में जगह-जगह वाणिज्य दूतावास भी स्थापित किए हैं। भारत मे सन् 1933 में बंबई में पोलैंड वाणिज्य दूतावास की स्थापना हुई थी। पोलैंड का कपड़ा उद्योग बहुत विकसित है, सबसे बड़ा कपड़ा केंद्र लोडज है। आजकल आयरन एंड स्टील इंडस्ट्री भी तेज़ी से प्रगति कर रही है।

पोलैंड की राजधानी वारसा में, एक ओरिएंटल सोसाइटी है, जो प्राच्यविद्या मे विशेष रुचि रखती है। ओरिएंटल सोसाइटी के सौजन्य से एक सामाजिक समूह में मुझे भी आमंत्रित किया गया था, जहां मैंने पोलिश-इंडियन सोसाइटी कायम करने के बारे में अपनी इच्छा व्यक्त की जिससे दोनों देशों के सांस्कृतिक एवं वाणिज्यिक संबंध प्रगाढ़ होंगे।

विद्यार्थी, पुरुष एवं स्त्री दोनों ही बहुत जागरूक हैं। महिलाएं विदेशों से संबंध विकसित करने की, विशेष रूप से भारत से अधिक इच्छुक हैं। उन्होंने भारत के विद्यार्थी एवं युवा संगठनों की जानकारी चाही। उनकी संस्था लीग कहलाती है। प्रत्येक देश के लिए अलग केंद्र है, जिसके माध्यम से वे संबंध स्थापित करना चाहते हैं।

---

* फरवरी 1936 में दि माडर्न रिव्यू में प्रकाशित और सुभाष चंद्र बोस की पुस्तक 'थ्रू कांग्रेस आईज़' में पुन. प्रकाशित, (किताबिस्तान इलाहाबाद तथा लंदन 1938)

इस लघु लेख में मैं विशेष रूप से एक ऐसे व्यक्ति का जिक्र करना चाहूंगा जिनसे मेरी भेंट वारसा में हुई। वे थे प्रोफेसर स्टेनीस्ला एफ. मिखालस्की, जिन्होंने अपना पूरा जीवन सस्कृति और भारतीय साहित्य पढ़ने में लगा दिया और भारत के प्रति उनका अटूट प्रेम है।

प्रोफेसर मिखालस्की इवेनस्की का जन्म पोलैंड में सन 1881 मे हुआ। उन्होने 1905 से 1911 तक विएना में प्रोफेसर लियोपोल्ड वी. स्कोर्डर से तथा 1914 में जर्मनी में प्रो ओल्डनबर्ग से सस्कृत भाषा व भारतीय साहित्य पढ़ा। कुछ वर्षों तक उन्होने वारसा-वोल्ना जेकनिका स्थित पोलिश फ्री यूनिवर्सिटी में संस्कृत भाषा एवं साहित्य पढाने का कार्य किया। 1920 मे उन्होंने बोल्शेविकों के विरुद्ध संग्राम में स्वयसेवी के रूप मे भाग लिया। उसके बाद से प्रोफेसर मिखालस्की अपना पूरा समय साहित्यिक एव वैज्ञानिक कार्य मे लगा रहे हैं। सन् 1923 में उन्होंने कुछ पोलिश ओरिएंटलिस्ट के साथ मिलकर वारसा साइंटिफिक सोसायटी का ओरिएंटल अनुभाग स्थापित किया।

प्रोफेसर मिखालस्की ने पोलिश भाषा में भारत एवं भारतीय संस्कृति पर कई पुस्तकें भी लिखी हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं।

1 भगवद्गीता, 1912, द्वितीय संस्करण 1921, तृतीय सस्करण 1926

2. उपनिषद (चुने हुए) 1913, द्वितीय संस्करण-1922

3 रामा'ज़ लॉगिंग (रामायण से एक अध्याय) 1920

4. धम्मपदम (अनुवाद), 1924

5 फ़ोर्टी सौंग्स आफ ऋग्वेद, 1914

6. आत्मबोध, 1923

7. भगवद्गीता (मूलपाठ संस्कृत में, भूमिका और टिप्पणी सहित) 1921

ओडीसी (वारसा) के 1935 के पोलिश संस्करण में प्रो. मिखालस्की ने रामायण और ओडीसी के बीच सबधों का उल्लेख करते हुए यह कहा है कि यदि होमर पर अनुसधान कार्य किया जाना है तो रामायण का अध्ययन भी आवश्यक है।

पिछले कुछ वर्षों में प्रोफेसर मिखालस्की ने एक वृहत पोलिश एनसाइक्लोपीडिया प्रकाशित किया है जिसमें उन्होंने -भारत, भारतीय भाषा एवं साहित्य, भारतीय भूगोल और भारतीय इतिहास आदि पर कई लेख लिखे हैं।

सन 1924 में प्रोफेसर ने भारत के महाकाव्यों पर भाषण भी दिया। सन 1935 म उन्होंने रोटरी क्लब की वारसा शाखा में भारतीय सर्वेक्षण पर अपने विचार व्यक्त किए।

पिछले कुछ वर्षों से प्रोफेसर भारत के संबंध में एक पुस्तकालय तैयार करने मे व्यस्त हैं। फिलहाल उस पुस्तकालय में स्स्कृत भाषा, भारतीय साहित्य की प्राचीन एव आधुनिक पुस्तकों की सख्या 2,000 के लगभग हैं।

एक आतिथेय के रूप में प्रोफेसर मिखालस्की अत्यधिक स्वागत करते हैं। उन्होंने

मुझे शानदार रात्रिभोज कराया और विदाई में दक्षिणा स्वरूप अपनी पुस्तकें भेंट मे दीं।

यह हर्ष का विषय है कि एक अन्य पोलैंडवासी, प्रोफेसर स्यासिएक आजकल भारत की यात्रा पर हैं। प्रोफेसर स्यासिएक एक सुप्रसिद्ध ओरिएंटलिस्ट हैं, तथा उन्होंने यूरोप में कई केंद्रो पर प्राचीन भारतीय साहित्य व दर्शन पर भाषण भी दिए हैं।

पोलैंड मे पोलिश-इंडियन सोसाइटी के लिए भूमि तैयार की जा चुकी है, जिसकी पत्राचार शाखा भारत मे है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि कोई व्यक्ति इसका नेतृत्व करे।

जर्मनी में भारतवासी *

जब से जर्मनी मे नई सत्ता आई है, तब से भारतवासियों की दशा में काफी गिरावट आई है। मुख्य रूप से चार समस्याएं पैदा हो गई हैं। प्रथम, भारतीय विद्यार्थियो को, इनमे जर्मनी विश्वविद्यालय से स्नातक उपाधि प्राप्त विद्यार्थी भी शामिल हैं, जर्मनी की फैक्टरियो मे व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने में कठिनाई आ रही है, दूसरे प्रेस और फिल्मो मे भारत-विरोधी प्रचार बढ़ा है जबकि भारत के पक्ष में प्रचार को दबाया जा रहा है। तीसरे जातिवादी कानून से एशियावासियों को अलग करने की धमकी तथा चौथे, जर्मनी भारत से आयात कम कर रही है जबकि निर्यात की मात्रा बढी है।

इनमे से कुछ समस्याए ऐसी हैं जिनके लिए एसोसिएशन द्वारा सघर्ष कर पाना कठिन है, फिर भी मुझे आशा है कि एसोसिएशन इस विषय में अवश्य कुछ कार्य करेगी क्योकि बर्लिन मे भारतीयो की ऐसी कोई संस्था नही है। मुझे यह भी आशा है कि बर्लिन फेडरेशन आफ इडियन चेबर्स आफ कामर्स एड इडस्ट्री के नए प्रतिनिधि, डॉ. के. गागुली इस क्षेत्र में तथा व्यापार संबधी समझौता के तहत भारत की शिकायतों को दूर करने का प्रयास अवश्य करेगे। वाणिज्य मंत्रालय से डॉ. गांगुली इस आशय का विश्वास प्राप्त कर चुके हैं कि भारतीय प्रशिक्षुओं की शिकायतों पर ध्यान दिया जाएगा।

अंत में मैं खेद प्रकट करूंगा कि प्रशासन ने इस्लामिक एसोसिएशन द्वारा आयोजित बैठक पर प्रतिबंध लगा दिया जिसका आयोजन वे 'बंगला' फिल्म के विरोध स्वरूप कर रहे थे। मुझे आशा है कि भविष्य में भारतीय उपनिवेश ऐसे किसी सरकारी हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करेगा।

डब्लिन यात्रा **

एक टिप्पणी

उन्होंने (बोस) बुधवार रात डब्लिन छोड़ दिया। फिर भी सोमवार को आपको लिखने से पहले उनकी कृषि एवं भूमि मंत्री से आगे बातचीत हुई। उन्होंने उनसे बातचीत के दौरान

---

* 4 फरवरी, 1936 में इडियन स्टूडेंटस एसोसिएशन में दिए गए भाषण के कुछ अश।

** सुभाष चद्र बोस ने आयरलैंड 25 फरवरी, 1936 को छोडा (उनके ऊपर प्रकाशित समाचार)।

कहा कि उनकी नीति बड़ी-बड़ी संपदाओं को खरीद कर किसानों में वितरित करने की है। भारत में इसकी व्यावहारिकता पर भी उन्होंने बात की। अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने अध्यक्ष सिनफिन तथा संगठन के अन्य अधिकारियों को भारत तथा आयरलैंड की राष्ट्रीय स्थिति की जानकारी दी। संगठन की गतिविधियों से वे काफी प्रभावित हुए यद्यपि वे इसके सभी कार्यों को पूर्ण सहमति नहीं दे पाए। फिर भी दोनों एकमत थे कि भारत और आयरलैंड के मध्य संबंध स्थापित होना चाहिए, ताकि दोनों देश विदेशी साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपने स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण नतीजे प्राप्त कर सकें।

श्रमिक संगठनों से, पत्रकारिता से तथा साहित्यिक कार्यों से सम्बद्ध होने की वजह से आयरिश प्रेस ने जो कि फिनाफेल पार्टी का अंग है, उन्हें अपने यहा आमंत्रित किया। संपादक एवं जनरल मैनेजर ने उनकी अगवानी की। वे उन लोगों की व्यवस्था करने की क्षमता से अत्यधिक प्रभावित हुए जो प्रमुख समाचार-पत्रों का प्रकाशन कर रहे हैं। स्वाभाविक था कि वे संपादक से अपनी बातचीत के दौरान आयरिश प्रेस की विदेश नीति के संबध में भी चर्चा करते। उन्होंने आयरिश पत्रकारों को भारतवासियों द्वारा चलाए जा रहे समाचार-पत्रों की कठिनाइयों के बारे में बताया और उस प्रेस नियम की जानकारी भी दी जिसके तहत अखबारों की स्वतंत्रता पर रोक लगाई जा रही है।

कोर्क के लिए रवाना होने से पूर्व उन्होंने भारतीय आतिथ्य का परिचय देते हुए शेलबर्न होटल में एक स्वागत समारोह आयोजित किया। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि भारतीय लोग कई कारणों से पिछले लंबे अरसे से आयरलैंड के प्रति उत्सुक रहे हैं। केवल राजनीतिक दृष्टि से ही आयरिश आंदोलन में लोगों की रुचि नहीं है। आयरलैंड मे उन्होंने यह देखा कि प्रत्येक जाति व वर्ग के लोगों को भारत में रुचि है। अन्य वक्ता थे मैडम गोन मैक्ब्राइड, श्रीमती वुड्स, डॉ. हैनिगन आदि। विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक संगठनों का भी पर्याप्त उल्लेख हुआ। हमें यूनिवर्सिटीज रिपब्लिकन के श्री टी. ओ कैरोल तथा आयरिश प्रेस की महिला संपादक मिस मेरी कॉफरफोर्ड से बातचीत करने का भी सुअवसर मिला।

बहुत से भारतवासियों व भारतीय स्वतंत्रता के समर्थक मित्रों ने उन्हें बुधवार की रात बैगट स्टेशन से कोर्क के लिए विदाई दी। अगले दिन अमरीकी जहाज छोड़ने से पहले उन्होंने एक्जीक्यूटिव काउंसिल के वाइस. प्रेसीडेंट श्री सीन टी ओ केली से अंतिम वार्ता की। उन्होंने भारत तथा आयरिश फ्री स्टेट के मध्य प्रोफेसरों के आदान-प्रदान की संभावना पर भी बात की। मुझे पता चला है कि श्री ओ. कैली ने उन्हें इस बात को ध्यान में रखने का आश्वासन भी दिया।

उनके विदा होने से कुछ समय पूर्व मुझे कुछ भारतीय नेताओं से बात करने का अवसर भी मिला। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि मैंने भारतीय नेताओं से बात की सिर्फ बंगाली नेताओं से नहीं, क्योंकि जब मैंने किसी आयरिश मित्र से उनका यह कहकर परिचय कराया कि ये बंगाल के सुप्रसिद्ध नेता हैं तो उन्होंने इस पर आपत्ति की। मुझे नहीं पता था कि मैं अनजाने में उनके साथ अन्याय कर रहा हूं। उन्होंने कहा-"आप मुझे बंगाली नेता क्यों कह रहे हैं? मैं प्रांतीयता का पक्षधर नहीं हूं।" मैंने उनका विरोध चुपचाप स्वीकार

किया। पिछले कुछ वर्षों में मुझे उनके भाषण तथा लेख पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैं निश्चित रूप से यह कह सकता हूं कि उन्होंने मुझे भारतीय देशभक्त के रूप में पहले प्रभावित किया उसके बाद बंगाली नेता के रूप में।

जब मैंने उनका ध्यान इस अफवाह की तरफ आकर्षित किया कि शहर में यह चर्चा है कि सादी वर्दी में कुछ लोग उन पर नजर रखे हैं तो उन्होंने उसकी परवाह किए बिना बात को नजर अंदाज कर दिया। उनका विचार था कि इस चर्चा में कोई दम नहीं है, यद्यपि मेरे कुछ आयरिश मित्रों के विचार इसके विपरीत हैं। इस तथ्य को भुलाया नही जा सकता कि कुछ आयरिशवासी ब्रिटिश सरकार से वेतन पा रहे हैं किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि सभी आयरिशवासी देशद्रोही हैं और वे ग्रेट ब्रिटेन के पक्षधर हैं। मुझे तीन वर्ष पुरानी घटना याद आई। डब्लिन की यात्रा पर आए एक भारतवासी का पीछा एक आयरिशवासी ने किया, जो बाद में उसके पीछे-पीछे लदन भी पहुचा और उसने स्काटलैंड यार्ड को उसका विवरण बताया। अगले दिन स्काटलैंड यार्ड का एक प्रतिनिधि उस आयारिश व्यक्ति के साथ उस भारतीय के घर पहुंचा ताकि उससे पूछताछ कर सके। इस अवसर पर जिस बात से मुझे बहुत आनंद आया वह यह थी कि वह भारतीय चुपचाप वहां से लदन और डब्लिन चला गया जबकि वे दो सज्जन उसके घर पर व्यर्थ मे उसका इतजार करते रहे।

प्रेस से बातचीत

भारत की स्थिति, भारत और जर्मनी तथा लीग आफ नेशंस *

भारतीय मित्रों से बातचीत किए बिना इन प्रश्नों का निश्चित उत्तर देना कठिन है। किंतु इस अवस्था में मैं केवल यही कह सकता हूं। पिछले कुछ माह मे मैंने पंडित नेहरू से भारत की स्थिति और उसके प्रति हमारे कर्त्तव्यों पर विस्तृत चर्चा की है। और मैंने यह महसूस किया है कि व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों ही दृष्टि से मुझे उनको यथा सभव अपना सहयोग देना चाहिए। मेरे विचार से लखनऊ में कांग्रेस के सामने जो सबसे बड़ी समस्या है वह अति संविधानवाद के प्रति बढ़ता हुआ आक्रोश है।

सामान्य यूरोपीय स्थिति के संबध में पूछे गए प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि-"आप मुझे क्षमा करें क्योंकि इस प्रश्न पर विस्तृत चर्चा करने के लिए मैं मन से तैयार नही हू। किंतु मैं केवल एक विषय में कुछ कहना चाहूंगा। पिछले कई सप्ताह से भारतवासियो के प्रति जर्मन शासक के द्वारा कहे गए अपमानजनक शब्दों की वजह से मैं बहुत परेशान हू। यह पहली बार नहीं है कि भारतवासियों का नाजी जर्मनी के नेता ने अपमान किया है। यह तो स्पष्ट ही है कि भारत का अपमान कर जर्मनी इंग्लैंड से पक्षपात कर रहा है। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं कि जर्मनवासी अंग्रेजों के तलवे चाटें, किंतु यदि वे सोचते हैं कि 1936 में भारतीयों को बेइज्जत करते रहेंगे और हम इसे चुपचाप सहते रहेंगे तो वे भारी भूल कर रहे हैं। मुझे कुछ सकेत मिले हैं कि इस प्रश्न पर लोगों का मत

* सुभाष चद्र बोस ने मार्च 1936 में जेनेवा में यह बयान दिया।

भी बन रहा है और मुझे आशा है कि हम शीघ्र ही यह सिद्ध कर देंगे कि भारतवासी चुपचाप अपना अपमान सहते नहीं रहेंगे।"

दि लीग आफ नेशंस

लीग आफ नेशंस के विषय में चर्चा करते हुए श्री बोस ने कहा कि उन्हें प्रसन्नता है कि लीग आफ नेशस ने भारत में रुचि दिखाई है और हाल ही मे श्री पेल्ट को डायरेक्टर आफ इन्फार्मेशन सेंटर बना कर भारत यात्रा पर भेजा है ताकि वे एक रिपोर्ट बना सकें।

मुझे कुछ सूचनाए मिली हैं कि ये सज्जन भारत के प्रति बिल्कुल भी सहानुभूति नही रखते। ये वही सज्जन हैं जिन्होंने मुझे सूचना उपलब्ध कराने से इंकार कर दिया था। किंतु जब मैंने लीग आफ नेशंस के सचिव को सीधा लिखा तो इन्हें बाध्य होकर मुझे संतोषजनक उत्तर देना पड़ा। फ़िलहाल भारत, जो कि 2,00,000 रु. का अंशदान लीग आफ नेशंस को दे रहा है, के चार भारतीय अधिकारी अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक कार्यलय में कार्यरत हैं तथा एक क्लर्क लीग सैक्रेटेरिएट में कार्यरत है। यह सर्व विदित है कि लीग के उच्च अधिकारियों में भारत के प्रति विद्वेष की भावना है। किंतु श्री पेल्ट जैसे विभगाध्यक्ष भारत विरोधी न हों तो भारत की दशा सही हो सकती है। मुझे बहुत प्रसन्नता होगी यदि श्री पेल्ट, भारत के प्रति मैत्रीपूर्ण रवैया अपनाए तो, किंतु अभी तक प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर पता चला है कि वे पूर्णतः भारत विरोधी हैं।

14 फरवरी के टाइम्स आफ इंडिया में मैंने पढ़ा कि संवाददाता को दिए एक साक्षात्कार में श्री पेल्ट ने कहा कि उनका भारत आने का एक उद्देश्य भारतवासियों व प्रचारकों से भेंट करना भी है। यह बात ठीक लगती है किंतु यह संवाददाता यह प्रश्न पूछने का लोभ सवरण नही कर पा रहा है कि क्या लीग के सूचना विभाग के निदेशक ने उन विशिष्ट भारतवासियों से भी कभी मुलाकात की जो जेनेवा की यात्रा पर गए थे? क्या उन्होंने कभी भारतीय स्थिति का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया, क्या वे बता सकते हैं कि भारत में वे किस प्रकार के लोगों से मिलेंगे?

भारतीय स्थिति तथा विश्व की राय *

अपने भाषण के दौरान उन्होंने (बोस) कहा कि वे उन लोगों के आभारी हैं कि उन्होंने भारतीय स्थिति पर चर्चा हेतु उन्हें इस बैठक में आमंत्रित किया, क्योंकि यह अति आवश्यक था कि भारतीय विश्व को भारतीय स्थिति की सही जानकारी उपलब्ध कराए। उन्होंने कहा-अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर देने के बाद से यह आंदोलन अगभग मर ही गया है, अतः विदेश में यह प्रचारित किया जा रहा है कि भारत मे पूर्ण शांति है। इस प्रभाव को और पक्का किया जा रहा है, जिसमें यह प्रचार किया जा रहा है कि इंडियन फैडरल कांस्टीट्यूशन द्वारा भारतवासियों को बहुत लाभ होगा। यह सरासर गलत

---

* 17 मार्च 1936 में पेरिस में दिया गया भाषण।

है, यद्यपि यह सच है कि कुछ समय के लिए जोरदार आदोलन को दबा दिया गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस चैन की नीद सो गई है। इसका अर्थ केवल यह है कि कांग्रेस के कार्यक्रमों के एक भाग को कुछ दिन के लिए मुल्तवी कर दिया गया है।

कांग्रेस अब पहले की अपेक्षा अधिक उत्साह से शैक्षिक व सामाजिक कार्य कर रही है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अतिरिक्त कई साम्राज्यवाद विरोधी सगठन हैं जो किसानो और श्रमिकों में कार्यरत हैं। अतः अपने दिमाग से यह विचार निकाल दें कि भारत में पूर्ण शाति है। जब तक हम स्वतंत्रता नहीं पा लेते तब तक यह स्थिति आ ही नहीं सकती।

नया संविधान भारत के लिए निराशाजनक है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा अन्य सगठनो ने नए संविधान की भर्त्सना की है। एक तो यह असतोषजनक है दूसरे इससे भारत की स्थिति और भी बिगड़ेगी। इसने कुछ नए तथ्यों को इस स्थिति में पेश किया है कि लिबरल फेडरेशन तथा उस जैसे अन्य सगठन जो आज तक ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति नम्र रुख अपनाए हुए थे वे भी यथासभव इस संविधान का जोरदार विरोध कर रहे है। अतः भारत की ऐसी एक भी पार्टी नहीं जो इस सविधान का विरोध न कर रही हो। भारत की आज की स्थिति बिल्कुल वैसी है जैसी युद्ध समाप्ति के दिनों में थी, जब महात्मा गाधी ने आदोलन छेड़ा था।

आज आप लोगों से बात करने का अवसर मुझे मिला इसका मैं आभारी हूं क्योंकि भारत मे यह आम राय बन चुकी है कि वहां के साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन को विदेश के साम्राज्यवाद विरोधी आदोलनों से जोड़ा जाना चाहिए। आधुनिक सचार माध्यमो ने इस कार्य को सुगम बना दिया है और हम लोगो को इसका अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए। अभी तक हम इस दिशा में कोई कदम नहीं उठा पाए हैं, किंतु भारतवासी यह महसूस करने लगे हैं कि साम्राज्यवाद तथा कट्टरवाद जैसी राजनीतिक अवस्था से सपूर्ण मानवता पर प्रभाव पड़ता है। अतः हमें विश्वास है कि यदि हम भारतीय स्थिति को सही रूप मे विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे तो सारे विश्व का समर्थन और सहानुभूति हमारे साथ होगी। यह सहानुभूति हमें मागने पर नहीं मिल रही बल्कि स्वतः ही प्राप्त हो रही है। यदि हम भारत की स्थिति से विश्व को अवगत कराएंगे तो हम विश्व की सहायता ही करेंगे।

भारत के आदोलन को दो परिप्रेक्ष्य में वर्गीकृत किया जा सकता है। 1 राष्ट्रीय स्वतंत्रता 2. सामाजिक न्याय के आधार पर सामाजिक समानता को प्रतिस्थापित करना।

नया सामाजिक परिदृश्य कैसा होगा इसका अनुमान लगाना कठिन है। हम राष्ट्रीय स्वतत्रता के लिए आदोलन करने वाले भारतवासी मुट्ठीभर जमीदारों के हाथ में देश नही सौंप सकते। हम गोरों के स्वामित्व से निकलकर कालों के स्वामित्व में जाना नही चाहते। हम ऐसा समाज चाहते हैं जहां सभी व्यक्ति जाति, लिग और धन की विसगतियों से स्वतत्र हों। हम इनको नष्ट कर देना चाहते हैं।

भारत को साम्राज्यवाद से स्वतंत्र कराकर वहां सामाजिक एकरूपता स्थापित करना दुरूह कार्य है। अलग-अलग देशों में समाजवाद के अलग-अलग अर्थ लगाए जा रहे हैं। हम ऐसे समाज की अपेक्षा रखते हैं जहां मानवकृत विभाजन न हों। यदि भारत के विषय में मानव को सही जानकारी उपलब्ध कराई जाए तो निश्चय ही हमें सहानुभूति प्राप्त होगी।

जिन लोगों की विश्वव्यापी साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन में रुचि है उन्हें भारत मे भी रुचि होना स्वाभाविक है। हम भारतीय यह सोचते हैं कि ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के जिम्मेदार हमी लोग हैं। भारत के बिना ब्रिटिश साम्राज्य की क्या कीमत होती? अतः हमें यह विश्वास होने लगा है कि इसकी कुछ हद तक जिम्मेदारी, हम भारतवासियों की भी है। जो भूमिका हमें निभानी है वह दुरूह ही नही बल्कि महत्वपूर्ण भी है। भारत जिस बात के लिए चिंतित है वह पूरे विश्व की मानव जाति की चिंता का कारण है।

भारतीय प्रश्न का एक पक्ष और भी है। एशिया में जापानी साम्राज्य के विस्तार से भी लोग चिंतित हैं। अतः हमें एशिया में जापानी साम्राज्य पर रोक लगाने के उपायों पर भी विचार करना है। यदि कल चीन एकजुट और मजबूत हो जाए और भारत स्वतंत्र हो सके तो मुझे विश्वास है कि शेष एशिया में शांति संतुलन कायम हो जाएगा जिससे जापान के साम्राज्य विकास पर स्वतः रोक लग जाएगी। अतः हमारा, भारत व चीन का यह कर्तव्य है कि हम एशिया के साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन को समर्थन दें। जापान पर रोक लगाने से साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन को विश्व भर में मजबूती मिलेगी।

भारत के आंदोलन के भविष्य के विषय में दो शब्द। विदेशों में यह विश्वास किया जा रहा है कि भारत में महात्मा गांधी का प्रभाव कम हो गया है। यदि मैं वर्तमान स्थिति को सकारात्मक रूप में पेश करू तो मैं कहूंगा कि श्री गांधी का प्रभाव कम नहीं हुआ है।

राष्ट्रीय पार्टी में उनकी नीतियों की आलोचना हो रही है, किंतु इसका यह अभिप्राय नहीं है कि उनकी लोकप्रियता कम हो रही है। गांधीजी के व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव तो बढ़ा ही है। गांधीजी की राजनैतिक भूलों पर राष्ट्रीय पार्टी ने उनकी आलोचना की है और इसका उल्लेख मैंने भी किया है। जनसमूह का विचार है कि राष्ट्रीय पार्टी को सामाजिक प्रश्नों पर अपना रवैया स्पष्ट करना चाहिए। हमारे आंदोलन का उद्देश्य केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करना ही नहीं है बल्कि सामाजिक रूप में आजाद होना भी है। पहले की अपेक्षा अब यह ज्यादा महसूस किया जा रहा है कि हमारे देश के सामने जमींदारों, किसानों, पूंजीवाद और श्रमिकों की समस्याएं भी हैं। सामान्य राय यही है कि जनता के प्रति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को अपना उत्तरदायित्व निभाना चाहिए। इस आलोचना का जो ठोस परिणाम फिलहाल हमारे सामने आया वह यह है कि राष्ट्रीय पार्टी के लोगों ने सामाजिक प्रश्नों पर विचार करना प्रारंभ कर दिया है और अब समाजवाद की ओर उन्मुख हैं।

राष्ट्रीय पार्टी में दो अलग-अलग गुट हैं। यदि एक गुट सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति विरोध का रुख अपनाएगा तो विभाजन होगा।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि गांधीजी भारत में सामाजिक पुनर्निर्माण को समर्थन देंगे। यदि भारत राष्ट्रीय और सामाजिक दृष्टि से अपना निर्माण स्वयं करता है तो यह पूरे विश्व के लिए महत्वपूर्ण बात सिद्ध होगी। उन्होंने यह भी कहा कि वे जानबूझ कर भारतीय मुद्दों की विस्तृत चर्चा नहीं कर रहे, केवल मुख्य-मुख्य बातें बताई हैं जिनका विश्व से सीधा संबंध है।

आयरलैंड की छाप *

मैं प्रेसीडेंट डी वलेरा का बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मुझे आयरिश स्वतंत्र राज्य में आने की अनुमति देकर मेरी बहुप्रतीक्षित इच्छा को पूर्ण किया। साथ ही मैं उनका धन्यवाद करता हू कि उन्होंने डब्लिन में मेरा इतना जोरदार स्वागत किया। स्वर्गीय श्री वी.जे. पटेल की यह हार्दिक इच्छा थी कि मैं स्वदेश लौटने से पूर्व डब्लिन यात्रा पर अवश्य जाऊ और उन संबधों को पुनर्जीवित करू जो उन्होंने इंडियन-आयरिश लीग की स्थापना द्वारा शुरू किए थे। मुझे आशा है कि मेरी आयरलैंड की यात्रा से इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

आयरलैंड की सामाजिक एवं राजनीतिक छवि को सही रूप में समझने के लिए मैंने अधिक से अधिक गुटों तथा महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मुलाकात करने की कोशिश की। मुझे विश्वास है कि मैंने यहा ऐसा बहुत कुछ देखा और सीखा है जो भारत मे हम लोगों के काम आएगा।

ससद (डेल) में प्रेसीडेंट डी. वलेरा की फ़िना फ़ेल पार्टी बहुमत की पार्टी है जिसे श्री नार्टन की श्रमिक पार्टी का समर्थन भी प्राप्त है। श्री कॉग्रेव की फाईन गोल पार्टी विपक्षी पार्टी है। श्री कॉग्रेव की पार्टी में कुछ बहुत बढ़िया और योग्य वक्ता हैं किंतु कुल मिलाकर फिनाफेल पार्टी ही अधिक लोकप्रिय है क्योंकि कॉग्रेव की पार्टी को ब्रिटिश पक्ष की पार्टी समझा जाता है और बाकी सब पुरानी पार्टियां भी उनको ही समर्थन देती हैं। जनरल ओडफी के धोखा देने के कारण श्री कॉग्रेव की पार्टी कमजोर हुई है, जनरल ओडफी ब्लू शर्टस् के संगठनकर्ता हैं जिन्होंने कट्टरवाद विचारधारा के आधार पर नेशनल कार्पोरेट पार्टी का गठन भी किया था। इस कारण देश में 'फ़िनाफेल' पार्टी की स्थिति मजबूत हुई है।

आयरलैंड की राजनीति का दुर्भाग्य फ़िनाफ़ेल और रिपब्लिकस के मध्य विश्वास उठ जाना ही है। रिपब्लिकन लोगों का आरोप है कि डी वेलरा लोकतंत्र का पक्ष नहीं ले रहे, जिसका कि उन्होंने वायदा किया था बल्कि उनकी सरकार रिपब्लिकंस पर मुकदमा चला रही है जिसमें से 25 लोगों को तो जेल भी भेजा जा चुका है। सरकार का मानना है कि रिपब्लिकन्स धैर्यहीन और अकुशल हैं तथा वास्तविकता से अनभिज्ञ हैं। विशेष रूप से वे यह नही जानते कि देश में ब्रिटेन के पक्षधर लोग भी हैं, और वास्तव मे आयरलैंड विभक्त देश है, जिसकी वजह से लोकतंत्र राज्य की घोषणा करना असभव

---

* सुसाने में सोमवार 3 मार्च, 1936 को सुभाष चद्र बोस के बयान का विषय था 'आयरलैंड के बार में क्या प्रभाव पड़े।'

नहीं तो कठिन तो है ही। फिना फेल पार्टी के सदस्यों ने इसे स्वीकार लिया है, किंतु *इसकी घोषणा कुछ मुद्दों और शर्तों पर निर्भर करती है। कुल मिलाकर सरकार से मुक्त* रिपब्लिकन पार्टी अपने आप में एक वरदान है। यह तो निश्चित है कि फिनाफेल पार्टी कभी भी अपने मूल उद्देश्य लोकतंत्र को भूलेगी नहीं, क्योंकि यदि वह ऐसा करेगी तो लोग अपना समर्थन वापिस ले लेंगे। मैं चाहता हू कि रिपब्लिकंस और फिनाफेल पार्टी में मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हों, ठीक वैसे जैसे कि जब डी. वलेरा 1932 में सत्ता मे आए थे, उन दिनो थे। किंतु शीघ्र ही लोगों में विचार भिन्नता और एकमत न होने के कारण विश्वास टूटता गया।

श्री डी. वलेरा से लबे वार्तालाप के बाद मैं 'फ़िनाफ़ेल' पार्टी के कई लोगों से भी मिला। वे सभी लोग बहुत सहानुभूतिपूर्ण, मानवीय और सवेदनशील हैं। वे अभी प्रतिष्ठित नही हुए हैं। ज्यादातर तो अभी भागते फिर रहे हैं क्योंकि वे स्वतत्रता के लिए संघर्षरत है और उनके मिलते ही उन्हें गोली मार दिए जाने की संभावना है। अभी वे कठोर अफसरशाही मंत्री बने हैं, अतः सरकारी वातावरण उनके अनुकूल नहीं है। संपदा मत्री से मैंने बात की कि वे किस प्रकार जमींदारों से भूमि खरीदकर किसानो में विभक्त कर रहे हैं। कृषि मत्री से मैंने बात की कि वे अनाज के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए क्या कार्य कर रहे हैं। यह जानकारी दिलचस्प थी कि अधिकाश क्षेत्रो मे गेहू और गन्ना बोया जा रहा है और कृषि में उन्नति कर देश को पशुपालन पर ही निर्भर नही रहने दिया जा रहा। फलत: देश ब्रिटिश बाजार पर भी निर्भर होने को मजबूर नहीं है। मैंने उनसे भारत में जूट उत्पादन पर लगे प्रतिबंध की चर्चा की। उन्होंने मुझे बताया कि यदि उन्हें इसका कार्यभार सौंप दिया जाए तो वे इस समस्या को किस प्रकार हल कर देंगे। उद्योग मंत्री से मैंने सरकार की उद्योग नीति पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि वे देश को कृषि के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि उद्योग के क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। इससे उनके देश को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पडा तो वे आर्थिक तंगी के शिकार नहीं होंगे। कुछ ही वर्षों में नए उद्योग लगाने के प्रति बहुत कार्य हुआ है जिससे यह आभास होता है कि सरकार औद्योगीकरण के लिए कार्य कर रही है और काफी कार्य किया भी जा चुका है। औद्योगीकरण पुनर्स्थापना के क्षेत्र में उन्होने राज्यस्तर पर कई उद्यम लगाए हैं। कुल मिलाकर मैंने यह महसूस किया कि 'फिनाफेल' पार्टी के मंत्रियों ने जो कार्य किया है वह काफी महत्वपूर्ण है और भारत के लिए भी प्रेरक सिद्ध हो सकता है, क्योंकि हमें भी राज्यतंत्र के माध्यम से राष्ट्र निर्माण की समस्याओं से जूझना होगा।

आयरलैंड में सीखने को बहुत कुछ था किंतु मेरे पास समय कम था। मुझे आश्चर्य हुआ कि हमारे देश के लोग इतनी अधिक संख्या में इग्लैंड जाते हैं किंतु आयरलैंड बहुत कम लोग जाना पसद करते हैं जो कि बहुत निकट है और इंग्लैंड से बिल्कुल अलग प्रकार का स्थान है।

मुझे जानकर आश्चर्य हुआ कि आयरलैंड की सभी पार्टियों को भारत के प्रति सहानुभूति थी तथा वे उसके स्वतंत्रता आदोलन के समर्थक थे यद्यपि उन पार्टियो में आपस में वैचारिक

मतभेद थे। जिन दिनों मैं वहां था मैंने भारत की ओर से काफी प्रचार कार्य भी किया, इस बात का मुझे संतोष है। कई समारोहों और जनसभाओं में मुझसे अनुरोध किया गया कि मैं भारत की स्थिति पर कुछ प्रकाश डालूं तथा स्वतंत्रता आंदोलन की चर्चा करूं। अपनी सीमाओ से बाहर उनकी दो देशों में रुचि है-वे हैं भारत और मिस्र।

30 मार्च 1936

आजादी और नया संविधान

मैनचेस्टर गार्जियन के सपादक को 2 अप्रैल, 1936 को लिखा पत्र

महोदय,

मुझे ब्रिटिश वाणिज्य दूतावास से विएना में एक पत्र प्राप्त हुआ हे जो इस प्रकार है-

12 मार्च, 1936

महोदय,

मुझे आज ही विदेश मत्रालय के राज्य सचिव से निर्देश प्राप्त हुए हैं कि मैं आपको चेतावनी दे दू कि भारत सरकार ने प्रेस को दिए बयान में पढा है कि आप इस माह भारत लौटना चाहते हैं, अत: भारत सरकार आपको सूचित करना चाहती है कि यदि आप एसा करेगे तो स्वतत्र नहीं रह पाएंगे।

मैं राज्य सचिव
जे.डब्ल्यू टेलर
हिज मैजेस्टीज कौंसिल

2 जनवरी, 1932 को मुझे भारत में गिरफ्तार किया गया था तथा बिना कोई मुकदमा चलाए मुझे 22 फरवरी, 1933 तक जेल में रखा गया। मेरे बार-बार आग्रह करने पर भी कि मेरे विरुद्ध क्या आरोप हैं या भारत सरकार मुझसे क्यों नाराज है, यह मुझे नही बताया गया। जब मैं गभीर रूप से बीमार हो गया और सरकार द्वारा नियुक्त चिकित्सा अधिकारियो के दल ने यह कहा कि या तो मुझे मुक्त कर दिया जाए या फिर मुझे उपचार हेतु यूराप भेज दिया जाए, तब कहीं जाकर सरकार ने मुझे यूरोप रवाना होने की अनुमति दी और मेरी गिरफ्तारी के आदेश रद्द किए। लगभग पिछले तीन वर्ष से मैं यूरोप में हू। इस बीच केवल दिसबर 1934 में मुझे एक बार भारत जाने की अनुमति दी गई, तब भी मैं अपने मृत्यु शय्या पर पड़े पिता को देखने गया था और केवल छ: माह ही वहा रुक पाया था। इस अल्पावधि में भी मुझे भारत में मेरे घर मे कैदी बना कर रखा गया था।

अब मैं घर जाना चाहता हूं तो मुझे यह सरकारी धमकी दी गई है। मेरी पिछली गिरफ्तारी भी कानूनी तौर पर और मानवीय तौर पर बहुत दुखद थी। किंतु मेरे भारत लौटने पर प्रस्तावित इस गिरफ्तारी ने तो सभी रिकार्ड तोड़ दिए हैं। क्या मैं पूछ सकता हूं कि भारत में ब्रिटेन का यही कानून लागू है और क्या नए सविधान के लागू होने पर यह मिलने वाली आज़ादी का पूर्व नमूना है।

आपका
सुभाष चद्र बोस
(अध्यक्ष, बगाल कांग्रेस समिति)

कुरहास हॉकलैंड
बैगस्टीन ऑस्ट्रिया
17 मार्च

पंजाब *

6 अक्तूबर, 1936

यदि काग्रेस अपने झंडे के नीचे लोगों को एकत्र नहीं कर पाएगी तो मुस्लिम लीग जैसे सांप्रदायिक सगठन इस राज्य में सामने आएंगे। पांच वर्षों की अवधि में कांग्रेस पंजाब विधानसभा में अपना बहुमत बना सकती है, किंतु क्या वह ऐसा करेगी?

सदाशयता की आवश्यकता

यहा का निरीक्षण करने पर मुझे यह महसूस हुआ है कि इस प्रात के उच्च पदाधिकारी काग्रेसियों में सदाशयता और उदार हृदय की आवश्यकता है। कांग्रेस पार्टी को एकजुट करने के लिए पजाब में ऐसे नेताओं की आवश्यकता है जिनके पास दूर-दृष्टि हो, बड़ा हृदय हो ताकि वे गुटवाद से ऊपर उठकर कार्य करें और लोगों के प्रति उत्तरदायित्व महसूस करें। यदि इस अवसर पर काग्रेस के नेता स्वयं को सही सिद्ध कर सकें तो शीघ्र ही पजाब में काग्रेस की स्थिति बहुत अच्छी हो सकती है।

कांग्रेस की नजर से

ब्रिटेन के अधीन भारत के 11 प्रांतों में से 7 विधानसभाओं में काग्रेस का बहुमत है वे प्रात हैं--संयुक्त प्राव बिहार, उड़ीसा, केंद्रीय प्रांत, मद्रास प्रेसीडेंसी, बंबई प्रैसीडेंसी तथा सीमावर्ती प्रात। इन प्रांतों की सरकार की लगाम भी कांग्रेस पार्टी के हाथ में है। असम में सरकार की स्थिति कोई बहुत अच्छी नहीं क्योंकि बार-बार उसे विधानसभा में हराया जा रहा है किंतु अभी वह पद त्यागने को तैयार नहीं है। बंगाल विधानसभा की दशा भी कोई बहुत अच्छी नहीं है।

* पजाब छोड़ने से पूर्व 6 अक्तूबर, 1936 को प्रेस को दिया बयान।

जनता का ध्यान अभी तक केवल उन्हीं छः प्रांतों की ओर है जहा काग्रेस का स्पष्ट बहुमत है। किंतु मेरा विचार है कि अल्पमत वाले प्रांतों की ओर कांग्रेस हाईकमान का ध्यान अधिक जाना चाहिए।

आइए हम निरीक्षण करें कि इन प्रांतों में कांग्रेस असफल क्यो रही है।

सीमाप्रात की स्थिति आसानी से समझ में आने वाली है। वहां के नेता खान अब्दुल गफ्फार खान तथा उनके भाई डॉ खान साहब के देश निकाले के बाद से वहा चले दमन चक्र के कारण काग्रेस भी हतोत्साहित हुई है। वरना काग्रेस पार्टी निश्चय ही बहुमत प्राप्त पार्टी सिद्ध होती। खान अब्दुल गफ्फार खान के वापस लौटने से इस प्रात की स्थिति में हाल ही में कुछ परिवर्तन आया है। अल्पमत काग्रेस पार्टी ने कुछ अन्य पार्टियो से गठजोड़ कर स्वय को बहुमत में ला खडा किया है। वह सरकार बनाने की स्थिति मे है जिसके मुख्यमत्री डॉ. खान साहब होंगे। जल्दी ही काग्रेस पार्टी अपने बलबूते पर सीमावर्ती प्रात में बहुमत हासिल करने में सफल हो जाएगी, क्योंकि सीमाप्रात के मुसलमान अन्य कही के भी मुसलमानो की अपेक्षा पक्के काग्रेसी हैं।

कांग्रेस की दृष्टि से सिध की स्थिति बहुत आशाजनक नही है। यहा की आबादी का 74 प्रतिशत मुसलमान हैं। अत: यह स्पष्ट है कि जब तक अन्य प्रांतों के मुसलमानों की भाति वे लोग कांग्रेस में शामिल नही होते तब तक सिंध से काग्रेस के बहुमत की आशा बहुत कम है। किंतु क्या ऐसा कभी संभव न होगा? क्यों नही? दो मुस्लिम गुटों के विधानसभा के दो वर्तमान नेता अभिजात वर्ग के हैं। वे नेता कभी भी जनता के प्रतिनिधि नहीं हो सकते। यदि सिध में काग्रेस पार्टी अपनी पूंजीवादी छवि से निकलकर स्वय को किसानों की प्रतिनिधि पार्टी सिद्ध कर सके तो इस प्रांत में वह चुनाव जीत सकती है। यदि ऐसा नही किया गया तो किसानों की गैर कांग्रेसी पार्टी उभरेगी, जैसा कि बंगाल मे हो चुका है, और परिणामस्वरूप कांग्रेस को जबरदस्त धक्का लगेगा।

पंजाब की आबादी का 56 प्रतिशत मुसलमान हैं। किंतु विधानसभा की 174 सीटों में से 86 उनकी हैं और सिख व हिंदू मिलकर 75 हैं। यदि कांग्रेस पार्टी एक मजबूत पार्टी होती तो उसे बहुमत मिलता, शायद कुछ मुसलमान भी उनकी पार्टी में शामिल होते। किंतु दोहरी कठिनाई है। मुस्लिम सदस्यों का मिनिस्टीरियल पार्टी को समर्थन प्राप्त है। काग्रेस पार्टी आतंरिक कलह के कारण कमजोर है, जबकि सिख दूसरी दिशा की तरफ बढ़ रहे हैं। यदि काग्रेस पार्टी क्षुद्र-झगड़ों को भूलकर आर्थिक कार्यक्रम की ओर अग्रसर हो, जिससे आम जनता भी प्रभावित होगी, अपने धार्मिक उन्मादों को भूलकर, तो आज भी काग्रेस पार्टी इस प्रांत में मुख्य राजनैतिक पार्टी के रूप में उभर कर सामने आ सकती है। क्या यह सभव है? कहना कठिन है। कठिन कार्य है, और यह इस बात पर निर्भर है कि इस क्षेत्र को नेतृत्व कैसा प्राप्त होता है।

असम बंगाल का निकटवर्ती प्रांत होने की वजह से नुकसान उठा रहा है। 108 सदस्यों की असेंबली में से (हिंदुओं) सामान्य सीटें केवल 55 रह गई हैं। जबकि तथाकथित पिछड़ी जातियों और जनजातियों को 9 सीटें तथा विधि सम्मत अधिकारियों को 11 सीटें ताकि यूरोपीय कृषकों को लाभ पहुच सके। असम और बंगाल के क्षेत्र में सांप्रदायिक प्रोत्साहन

का अर्थ यही है कि इन दो प्रातो में काग्रेस को बहुमत न मिल सके। (सर सैम्युअल होरे की 27 मार्च 1933 को हाउस आफ कामंस का भाषण) फिर भी, कम से कम असम में तो काग्रेस पार्टी बहुमत प्राप्त कर सकती है, स्थितियों के आकस्मिक गठजोड़ के आधार पर असम काग्रेस के नेता श्री टी. आर. फूकन के दल बदलने की वजह से पार्टी को बहुत क्षति पहुंची तथा श्री एन. सी बारदोलाई की असामयिक मृत्यु के कारण इसकी स्थिति और भी खराब हुई। चुनावों के दौरान कांग्रेस हाईकमान ने असम पर बिल्कुल ध्यान नही दिया जबकि उत्तर प्रदेश जैसे प्रांतों पर अत्यधिक ध्यान दिया। असम की स्थिति बहुत निराशाजनक है, यदि कांग्रेस के उच्चाधिकारी इस प्रांत पर कुछ ध्यान दें तो कुछ आशा की जा सकती है। वर्तमान सरकार की स्थिति में काग्रेस किसी प्रमुख पार्टी से गठजोड कर मिली-जुली सरकार बना सकती है। किंतु खेद का विषय है कि वर्तमान विधानसभा के काल में काग्रेस पार्टी अल्पमत पार्टी बनकर ही रहेगी।

और बगाल? वहां की दशा भी निराशाजनक है। 44 प्रतिशत जनसख्या हिंदुओं की होने के बावजूद भी 250 सीटों में से कुल 80 सीटें हिंदुओं को प्राप्त हैं। (30 सीटे अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित हैं) जबकि 119 सीटें मुसलमानों को प्राप्त हैं। विधिसम्मत अधिकार प्राप्त अर्थात यूरोपीय एव एग्लो इंडियंस को 39 सीटें प्राप्त हैं। वर्तमान सविधान बल्कि वर्तमान साम्प्रदायिक व्यवस्था के अंतर्गत कांग्रेस पार्टी का भविष्य बगाल में अधकारपूर्ण ही है।

पर क्या हमें निराशा की इस घड़ी में हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाना चाहिए। *यह तो राजनीतिज्ञों या देशभक्तों का काम नहीं। हमें कांग्रेस में आमूल परिवर्तन लाना* होगा और इसके द्वारा जनसमूह के मुद्दों को उठाना होगा ताकि इसे वास्तव में जनता की प्रतिनिधि पार्टी के रूप में सामने लाया जा सके। इसी प्रकार हम साम्प्रदायिक विभाजन को समाप्त कर पाएंगे और शिमला तथा व्हाइट हाल के सविधान निर्माताओ के उद्देश्यों को असफल कर पाएंगे।बंगाल कांग्रेस को बंगाली किसानों की पार्टी बनाने में ही कांग्रेस का भविष्य सुरक्षित है। ऐसा करने पर ही कांग्रेस इस प्रांत की बहुमत प्राप्त पार्टी के रूप में उभरकर सामने आएगी।

यह कार्य पाच वर्ष पहले हो जाना चाहिए था। फिर भी अभी ज्यादा देर नही हुई।

भारत विदेश में

मेरे विचार में स्वर्गीय देशबधु सी आर. दास ही थे जिन्होंने पहले-पहल मुझे यह दृष्टि दी कि भारत के विषय में अन्य देशों तक जानकारी पहुंचाई जानी चाहिए। यह उस समय की बात है जब स्वर्गीय देशबधु तथा स्वर्गीय पंडित मोतीलाल नेहरू द्वारा फरवरी 1923 में इलाहाबाद में स्थापित स्वराज पार्टी के कार्यों की योजना की रूपरेखा बनाई जा रही थी। अप्रैल 1922 में जब हम सभी लोग जेल में थे तभी से नई कार्ययोजना बननी शुरू हो चुकी थी। देशबंधु की योजना में दो काम थे जिनमें उनकी व्यक्तिगत रुचि थी किंतु उस समय उन्हें अधिक प्रोत्साहन न मिल पाया क्योंकि लोगों का विशेष ध्यान उस

समय विधान मडल पर तथा लोक विभागों पर अधिकार प्राप्त करने की ओर था। वे दो विषय थे। विदेशो में भारतीय प्रचार तथा पैन एशियाटिक लीग का सगठन।

कुछ वर्ष पूर्व मुझे भी भारत के सबध में विदेशों में प्रचार करने के प्रश्न ने आदोलित किया था। 1928 में जब मैं कलकत्ता में था तब एक अमरीकी पत्रकार ने (मैं उनका नाम भूल रहा हू) मेरा साक्षात्कार लिया था। बातचीत के दौरान उसने कई तरह इस बात का उल्लेख किया था कि चीन ने पूरे विश्व की कल्पनाशक्ति को झिझोडकर रख दिया है। उनका विचार था कि भारत को भी विश्व के सम्मुख अपनी स्थिति रखनी चाहिए। यह कार्य कैसे किया जाए, विधि निर्धारण का कार्य भारतवासियों का है, किंतु भारत को इस बात की बहुत आवश्यकता है। दो और बातों से मेरा विचार दृढ होता गया कि भारत की उन्नति के लिए विदेश में भारतीय प्रचार अति आवश्यक है। वे बाते थीं- 1. पिछले दा वर्षों में यूरोप में हुए अनुभव और 2. इतिहास का मेरा अध्ययन। पिछले दा वर्षों में मैं यूरोप के बहुत से देशों में गया। प्रत्येक स्थान पर भारत के विषय में भ्रांतियां हैं, किंतु उसी के साथ लोगों की भारत में रुचि भी है और इसके प्रति सहानुभूति भी है। इस सहानुभूति को और बढ़ाया जा सकता है, यदि हमारी ओर से आवश्यक कदम उठाए जाएं' पर चूकि हमें इस विषय में कोई दिलचस्पी नही इसलिए मिशनरी या अन्य सभ्य एजेंसिया निष्क्रिय नहीं है। कई दशकों से वे भारत-भूमि की छवि इस रूप मे प्रचारित कर रहे हैं कि यह वह भूमि है जहा विधवाओं को जला दिया जाता है। 5 अथवा 6 वर्ष की कन्या का विवाह कर दिया जाता है, लोगों को पहनने-ओढने की कला नहीं आती । मुझे अच्छी तरह याद है कि 1920 में जब मैं इंग्लैंड में था तब मैं एक हाल के सामने से गुजर रहा था, जहां भाषण का चित्र रूप मे विज्ञापन किया गया था जिसमे एक मिशनरी को भारत के संबंध में भाषण देना था। उस विज्ञापन मे दो काले रग के आधे नंगे स्त्री व पुरुष के चित्र थे जो बेहद भद्दे लग रहे थे। निस्सदेह भाषणकर्ता भारत में सभ्यता के कार्य के लिए कुछ धन एकत्र करना चाह रहा था इसलिए बिना किसी पश्चाताप भावना के भारत को इस रूप में पेश कर रहा था । सन 1933 के अंत में एक जर्मन पत्रकार, जिसका दावा था कि वह हाल ही में भारत भ्रमण करके आई है, ने म्यूनिख पत्र मे लिखा कि उन्होंने भारत में विधवाओं को जिदा जलाया जाते देखा है और बबई में मृत देहों को लावारिस पड़ा देखा है। हाल ही मे विएना के पत्र में (विनर बिल्डर, 30 जून) एक चित्र छपा जिसमें एक मृत देह थी, जिस पर कीड़े चढ़े हुए थे । उसमें चित्र के नीचे लिखा था यह एक साधु का शव है । कई दिनो से इसलिए नही हटाया गया क्योकि ऐसी मान्यता है कि साधु की मृतदेह को सामान्य नागरिक उठा नही सकता। जो बात मुझे बुरी लगी वह यह थी कि प्रचारकों ने चुन-चुन कर ऐसे चित्र छाटे थे जिससे वे भारत को बुरे से बुरे रूप में पेश कर सके। ऐसा ही फिल्मों में भी किया जा रहा था। इस प्रकार के भारत विरोधी प्रचार की फिल्मे 'इडिया स्पीक्स' तथा 'बंगला' पर भारत में पहले ही पर्याप्त चर्चा हो चुकी है अतः अब मेरा उस पर चर्चा करना व्यर्थ है। किंतु मुझे शक है कि फिल्म 'एवरीबॉडी लव्ज म्यूजिक' में जो शरारत की गई है उसकी पर्याप्त चर्चा नहीं हो पाई है जिसमें महात्मा गाधी को अपनी वेश-भूषा में यूरोपीय लडकी के साथ नृत्य करते दर्शाया गया है।

यदि इसी प्रकार का प्रचार अन्य देशों में भी किया जाता रहा था तो उसमें आश्चर्य नही कि भारतीयों को 'कालों' की संज्ञा दी जाए जैसा कि इंग्लैंड में हो चुका है या 'नीगर' (नीग्रो-जैसा कि मैंने जर्मनी में अनुभव भी किया है)। इन परिस्थितियो में हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए। पहला और सबसे आसान तरीका तो यह होगा कि हम अपनी आंखें मूद लें। दूसरा एवं कठिन मार्ग यह होगा कि हम भी अपना प्रचार शुरू करें। 1933 में मैंने एक तुर्की राजदूत से विदेश प्रचार के संबंध में बात की थी। मैंने उनसे शिकायत की थी कि विदेशियों के लिए आधुनिक तुर्की पर कोई साहित्य उपलब्ध नही है, जो स्वयं तुर्कीवासियों ने लिखा हो। आत्मरक्षा की दृष्टि से उन्होंने कहा था कि तुर्कीवासी प्रचार में विश्वास नही रखते (यह पूर्ण सत्य नही क्योंकि तुर्कीवासियो ने भी प्रचार प्रारंभ कर दिया है)। मुझे नहीं लगता कि इस प्रचार के युग में कोई भी देश अपनी प्रचार क्षमता की कमी को इस प्रकार से तर्कसगत ठहराएगा। अब तो यूरोप में प्रचार को सरकार की सामान्य व विधिसंगत क्रिया माना जाता है। यूरोपीय देशों में इग्लैंड और रूस तो पुराने प्रचारक रहे हैं, इसके बाद इटली, जर्मनी का स्थान है। एशियाई देशों में चीन विदेश प्रचार में सबसे आगे है। आधुनिक विश्व को प्राचीन विश्व के प्रचारक के प्रति कोई विशेष रुचि नही है। किंतु मेरा विचार है कि लीग आफ नेशंस इस अटलांटिक ओशन पर पुल बनाने का कार्य कर रहा है। 1934 में जब मैं जेनेवा में था तब कई दक्षिण अमेरिकावासियों के संपर्क में आया जो महसूस करते थे कि दक्षिण अमेरिका के राज्य भी यूरोप के प्रचार में शामिल होने को उत्सुक हैं।

मैं शुरू में ही कह चुका हूं कि दो मुख्य बातों ने मेरे इस निश्चय को और भी दृढ़ किया कि विदेशो में भारत का प्रचार आवश्यक है तभी हमारी राष्ट्रीय प्रगति सभव है-(1) मेरे यूरोप में हुए अनुभव (2) इतिहास का मेरा अध्ययन। दूसरे के विषय में मैं कह सकता हूं कि हाल ही में स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले देशों का इतिहास इस तथ्य की पुष्टि करता है कि प्रचार का कितना महत्व है। मुझे आशा है कि पाठकों को 1920-21 में सिनफिन पार्टी द्वारा संयुक्त राज्य अमरीका में किए गए गहन प्रचार का ज्ञान होगा। पार्टी ने अपने सबसे सक्षम व्यक्ति-और कोई नहीं अध्यक्ष श्री डी. वलेरा को प्रचार के लिए भेजा। अन्य उपमहाद्वीपों में भी इस पार्टी ने प्रचार केंद्र स्थापित किए। विदेश प्रचार का सबसे महत्वपूर्ण और दिलचस्प उदाहरण चेकोस्लोवाकिया नेताओं का है। 20 वर्ष तक डॉ. मैसेरिक, डॉ. बेनेल तथा अन्य लोगों ने धीरे-धीरे प्रचार कार्य जारी रखा तथा इस प्रचार कार्य को इंग्लैंड, फ्रांस तथा सयुक्त राज्य तक में जारी रखा। दो दशकों बाद परिणाम् सामने आए और अब सभी इस बात से सहमत होंगे कि इग्लैंड, फ्रास और अमरीका के सहयोग व समर्थन के बिना चेकोस्लोवाकिया एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्वीकृति नहीं पा सकता था।

केवल गुलाम राष्ट्र ही योजनाबद्ध प्रचार को नहीं अपनाते। अब तो आजाद राष्ट्रों ने भी प्रचार नीति को अपना लिया है। यूरोप में हगरी और एशिया में चीन ऐसे देश हैं जिन्होंने अपनी शिकायतें प्रचार के माध्यम से ही विश्व के सम्मुख पेश की हैं। हंगरी अपनी वर्तमान सीमाओं में शातिपूर्ण ढग से सशोधन कराने का इच्छुक है, ट्रायनन समझौते में व्याख्यायित की गई सीमाओं को वह अनुचित और अन्यायपूर्ण मानता है। इसलिए वह

अतर्राष्ट्रीय सहानुभूति प्राप्त करने के लिए बहुत धन व्यय कर रहा है। चीन ने हाल ही में एक योजना बनाई है जिसमे उसके प्रचार का मुख्यालय जेनेवा होगा। वहां उन्होने एक भवन लेकर उसमे चीनी पुस्तकालय स्थापित किया है ताकि चीन के विषय मे जानने के इच्छुक व्यक्ति वहा पुस्तकें पढ़ सकें। चीनी सस्कृति के प्रचार हेतु वे फ्रेंच और इग्लिश भाषा में साहित्य का प्रकाशन भी कर रहे हैं। जेनेवा में ही एक अन्य भवन में उन्होने पत्र-पत्रिकाओ की, प्रदर्शनिया भी आयोजित की हैं। 1934 में उन्होंने युवा चित्रकारों की प्रदर्शनी आयोजित की जो अत्यधिक सफल सिद्ध हुई। जेनेवा की प्रदर्शनी के बाद उन चित्रों को अन्य देशों की राजधानियो मे भेजा गया जहां पर वैसी ही प्रदर्शनी आयोजित की गई। अप्रैल 1935 मे जब मैं पुनः जेनेवा गया तो वे बच्चों के चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित कर रहे थे और मुझे बताया गया कि वे अन्य यूरोपीय देशो की राजधानियो में भी बारी-बारी से ऐसी चित्र प्रदर्शनिया आयोजित करेंगे। इस प्रदर्शनी को देखने वाला प्रत्येक व्यक्ति यही प्रभाव लिए लौटेगा कि चीनी लोग सुसस्कृत और कलात्मक रुचि से सपन्न लोग हैं। नवंबर 1935 में लदन के बर्लिंगटन हाउस मे एक प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसमें जहाज भर कर चीनी कला कृतियां लंदन लाई गईं। इस सबध मे मैं यह कहना चाहूगा कि निरतर एव धीमी गति के प्रचार की सहायता से भी चीन ने सारे सभ्य विश्व की हमदर्दी प्राप्त कर ली है। इसका प्रमाण हमें मनचुकुओ पर हुए सिनो-जापानी विवाद से भी मिलता है जिसमें चीन को लीग आफ नेशस का समर्थन प्राप्त था हालाकि इसके लिए जापान ने अत्यधिक प्रयास किए थे। चीन इस दुर्लभ कठोर परिश्रम से प्राप्त समर्थन का लाभ केवल अपनी सैन्य दुर्बलता के कारण नहीं उठा पाया। फिर भी चीन के लोगों ने प्रचार के प्रभाव को स्वीकारा है तभी तो उन्होंने एक गहन योजना प्रारंभ की है। यद्यपि इस योजना को नानकिंग सरकार अपना समर्थन नही दे रही किंतु लोगों से व्यक्तिगत तौर पर अत्यधिक राशि प्राप्त हो रही है।

स्वतंत्र देश भी जिन्हें किसी प्रकार की कोई राष्ट्रीय शिकायत नही है वे भी प्रचार पर बहुत-सा धन व्यय कर रहे हैं। उनका उद्देश्य दोहरा है, सास्कृतिक एव व्यापारिक। एक ओर वे चाहते हैं कि उनकी सस्कृति अन्य देशों तक पहुचे तो वही दूसरी ओर वे चाहते हैं कि अन्य देशों से उनके व्यापारिक सबध स्थापित हों। अग्रेजो द्वारा किया जा रहा प्रचार किसी भी अन्य देश के द्वारा किए जा रहे प्रचार की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली है क्योकि वह अधिक प्राकृतिक एव वैज्ञानिक है। ब्रिटिश प्रचार विधि निम्न प्रकार है-

(1) समाचार एजेंसिया जैसे * * * वे ग्रेट ब्रिटेन के पक्ष में खबरो को फेरबदल कर उसका प्रचार कर रही हैं।

(2) पूरे विश्व में कहीं भी होने वाली अतर्राष्ट्रीय काग्रेस मे वे उपस्थित रहते हैं।

(3) प्रत्येक देश में, उस देश के साथ मैत्री संबंध स्थापित करने को विशेष सगठन रहते हैं। उदाहरण के लिए विएना में एग्लो-आस्ट्रिया फ्रेंडस सोसायटी है। इसी प्रकार का सगठन यूरोप व अमरीका के प्रत्येक देश में हैं जो ग्रेट ब्रिटेन से पत्राचार सबध स्थापित किए रखते हैं।

(4) विभिन्न क्षेत्रों के ब्रिटिश प्रतिनिधि प्रतिवर्ष विदेश में जाकर ब्रिटिश सस्कृति पर

भाषण देते हैं। इस कार्य में ब्रिटिश कलाकारों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

(5) विदेशी एवं विदेशी विद्यार्थियों को ग्रेट ब्रिटेन आने का नियत्रण दिया जाता है। कुछ मामलों में तो विद्यार्थियों को वजीफा भी दिया जाता है।

(6) क्वेकर्स, द आल पीपल्स एसोसिएशन आदि जैसे कई अतर्राष्ट्रीय सगठन हैं जिनका मुख्यालय लदन में है तथा यूरोपभर में शाखाए फैली हुई हैं। इनके माध्यम से ग्रेट ब्रिटेन के पक्ष में पर्याप्त प्रचार किया जाता है। इन संस्थाओं के पुस्तकालयों में काफी मात्रा में अग्रेजी की पुस्तकें उपलब्ध कराई गई हैं।

(7) यूरोप के प्रत्येक मुख्य शहर में अंग्रेजी-स्पीकिंग क्लब स्थापित किए गए हैं। ये क्लब प्रचार का ही कार्य करते हैं।

(8) ग्रेट ब्रिटेन के संबध में पुस्तकें आदि प्रत्येक भाषा में प्रकाशित की जाती हैं।

यह प्रचार तो अधिकतर गैर-सरकारी सस्थाओं द्वारा किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त राजदूतावास और वाणिज्य दूतावासों द्वारा सरकारी प्रचार अलग हो रहा है। ब्रिटिश प्रचार जबर्दस्ती थोपा गया प्रचार नही है। अत: जिन लोगों के लिए किया जा रहा है वे यह जान भी नही पाते हैं कि किसी प्रकार का प्रचार हो रहा है। जहा यह प्रचार स्पष्ट है, जैसे मिस मायों की 'मदर इडिया' अथवा 'बगला' फिल्म आदि है, वहां यह प्रचार कार्य तीसरे गुट के माध्यम से कराया जाता है, ताकि कोई यह कह ही न सके कि इन कार्यों के पीछे अंग्रेजों का हाथ है। इसकी तुलना में जर्मन प्रचार अधिक तीखा और स्पष्ट है इसलिए कभी-कभी वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाता।

पिछले दो वर्षों में मैंने यह अनुभव किया है कि ब्रिटिश लोग उस प्रचार के प्रति भी बहुत जागरूक हैं जो उनकी आवश्यकताओं पर पूरा नहीं उतरता। लोगों को शायद लगता होगा कि ब्रिटेन जैसा बड़ा देश इस बात की परवाह नहीं करता कि लोग उसके विषय में क्या कहते या सोचते हैं। किंतु वास्तविकता बिल्कुल विपरीत है। मुझे याद है कि जून 1934 में बेलग्रेड में ब्रिटेन के राजदूत ने युगोस्लाविया के विदेश कार्यालय को कहा था कि वे अपने यहां के समाचार-पत्रों को मेरे साथ हुए साक्षात्कार छापने से मना करें। मुझे आज भी याद है कि जेनेवा में सितबर 1933 में दिए गए एक भाषण पर सर वाल्टर स्माइल्स सांसद कितना नाराज हुए थे। (सर वाल्टर स्माइल्स का आग्रह था कि ऐसे भाषण के कारण जब मैं भारत लौटू तो मुझे जेल में डाल दिया जाए। जब मैंने उन्हे कहा कि वे मेरी कोई गलत बात जो मैंने भाषण में कही, वह बताए तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया)। विदेशी विचारधारा के प्रति अत्यधिक जागरूक होने के कारण ही ग्रेट ब्रिटेन ने विदेशों में अपने प्रचार कार्य को सुदृढ़ करना शुरू किया है। हाल ही मे उसने प्रिंस आफ वेल्स के सरक्षण में एक संस्था बनाई है जिसे 'ब्रिटिश काउसिल आफ रिलेशस विद फारेन कंट्रीज' का नाम दिया गया है, ताकि विदेशों में प्रचार कार्य जारी रह सके। •2 जुलाई, 1935 को अपने अभिभाषण में हिज रॉयल हाइनेस, अध्यक्ष, लार्ड टाइरेल ने कहा कि इस सस्था का सगठन विदेश मत्रालय के कहने पर पाच सरकारी विभागों के तत्वावधान में किया गया है जिसमें सरकारी खजाने से 6,000 पाउड की सहायता

प्राप्त हुई है। लन्दन के डेली टेलीग्राफ ने इसे अपना पूर्ण समर्थन देते हुए इस कार्य के पक्ष मे 3 जुलाई के अपने अंक में लिखा–

'अब फ्रास और इटली अपने राष्ट्रीय प्रचार एवं प्रतिष्ठा के लिए प्रतिवर्ष दस लाख पाउड व्यय करते हैं। जापान ने आने वाले वर्ष के लिए इस कार्य हेतु एक सौ हजार पाउड का लक्ष्य रखा है तथा जर्मनी भी अपने प्रचार कार्य को ठीक से आगे बढाने मे प्रयत्नशील है। यदि हमें भी अपना अस्तित्व दुनिया के सम्मुख पेश करना है तो हमें भी लगभग 6,000 पाउड, जरूरी नहीं कि वह सरकारी धन हो, व्यय करना होगा।'

भारत के विषय मे प्रश्न उठता है कि हमें क्या करना चाहिए? बहुत खेद के साथ मुझे यह कहना पड रहा है कि हमारी पुरानी पीढी की रुचि इस प्रकार के प्रचार कार्य में बिल्कुल भी नहीं है। भूलाभाई देसाई और इंडियन सोशल रिफार्मर के संपादक के विचार इसके विशिष्ट उदाहरण हैं। कांग्रेस अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद के विचार फिर भी प्रगतिशील विचार हैं। वे इस प्रचार कार्य के महत्व को स्वीकारते हैं किंतु उनका कहना है कि सरकार के पास इस कार्य को करने के पर्याप्त संसाधन नहीं हैं। इन बातो से यही आभास होता है कि पुरानी पीढी इस कार्य को केवल ऐश्वर्य का साधन मानती है और इसकी आवश्यकता को नहीं स्वीकारती। यदि वे इस कार्य को आवश्यक मान ले तो इसके लिए धन भी एकत्र हो जाएगा।

भारतीय नेताओं में से केवल स्वर्गीय विट्ठलभाई पटेल ही एकमात्र ऐसे नेता थे जो विदेश प्रचार की प्रासंगिकता को समझते थे और उनके पास इस कार्य को अंजाम देने की स्पष्ट योजना भी थी। यह बताना व्यर्थ है कि इस प्रचार कार्य के लिए ही उन्होंने अपने जीवन का बलिदान तक दे डाला। अपने अमरीकी मित्रों की बदौलत वे विदेश से यह निश्चय करके लौटे थे कि संयुक्त राज्य में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रतिनिधि अवश्य होना चाहिए। उन्होंने इस विचार से महात्मा गांधी को भी अवगत कराया। स्वर्गीय विट्ठलभाई पटेल का विचार था कि इस प्रचार कार्य के लिए हमारा मुख्यालय जेनेवा में हो और सारे यूरोप व अमरीका में उसकी शाखाए स्थापित की जाए। अपने जीवन काल में ऐसी एक शाखा की स्थापना उन्होंने डब्लिन में की थी जिसका नाम उन्होंने इंडो-आयरिश लीग रखा था। उनकी दुखद व आकस्मिक मृत्यु से एक माह पूर्व जेनेवा यात्रा के दौरान उनका प्रयास था कि वे वहा भी एक शाखा का संगठन करें किंतु भाग्य ने उन्हें यह कार्य पूर्ण नहीं करने दिया।

यदि स्वतत्र राष्ट्रों और उन राष्ट्रों के लिए, जिन्होंने शस्त्रों के आधार पर युद्ध कर अपनी स्वतत्रता हासिल की है, विदेशी प्रचार कार्य आवश्यक है तो भारत जैसे देश के लिए, जिसने शस्त्रों के आधार पर या शक्ति के आधार को छोड, शातिपूर्ण ढंग से स्वतत्रता आदोलन छेडा है, तो यह अति आवश्यक है। ऐसे शांतिपूर्ण एवं वैधानिक कार्य के लिए तो ब्रिटिश सरकार भी कोई आपत्ति नहीं उठा सकती। इस शातिपूर्ण विधि से पूरे विश्व की सहानुभूति अर्जित करने का हमें पूर्ण हक है और ब्रिटिश सरकार ने भी अनजाने में इसे स्वीकृति दे दी है, भारत को लीग आफ नेशंस की सदस्यता दिलाकर, जिसका अर्थ यही है कि भारत को पूर्ण राष्ट्र के सब अधिकार प्राप्त हैं।

कुछ लोगों की यह राय हो सकती है कि विदेश प्रचार गुप्तरूप से अथवा क्रांतिकारी ढग से या ब्रिटेन के विरुद्ध ही होगा। किंतु यदि ऐसी क्रांति कहीं कुछ लोगो मे है तो वह निराधार हैं। प्रचार खुले रूप में, प्रचार विधियां गुप्त नहीं हों तथा किसी प्रकार की क्रांतिकारी गतिविधियां नहीं होंगी। उसके अलावा यह प्रचार ब्रिटेन विरोधी नहीं बल्कि भारत के पक्ष में होगा। यूरोप के अपने अनुभवों के आधार पर और यूरोप में प्रचार के अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हू कि यदि हमने ब्रिटेन विरोधी प्रचार आरभ किया तो हम अपने लक्ष्य में मात खा जाएंगे। अंग्रेजों का प्रचार तंत्र बहुत बडा है, जिसमें राजदूतावास, वाणिज्य दूतावास, कई गैर-सरकारी संगठन हैं, जिसके माध्यम से वे हमारे प्रचार कार्यों का मुहतोड़ जबाव दे सकते हैं। वैसे भी यदि हमने ब्रिटेन पर आक्रमण शुरू किया तो हम सहानुभूति प्राप्त करने की बजाय उसे खो देंगे। इसके विपरीत यदि हम भारत के पक्ष मे प्रचार करते रहेंगे तो, हमारी अपील का अधिक प्रभाव रहेगा। यदि अंग्रेजो ने हमारे वैधानिक प्रचार को दबाने का प्रयत्न किया तो वे अपने-आप गलत सिद्ध हो जाएगे और स्वभावतः सहानुभूति खो बैठेंगे।

मेरे विचार में विदेशों में भारतीय प्रचार के निम्न उद्देश्य होने चाहिए-

(1) भारत के प्रति हो रहे झूठे प्रचार पर आक्रमण।

(2) भारत की वर्तमान स्थितियों के विषय में विश्व को जागरूक करना।

(3) मानवीय क्रियाओं में भारतवासियों की उपलब्धियों से विश्व को परिचित कराना।

अंतिम उद्देश्य सबसे महत्वपूर्ण है, क्योकि यदि हम विश्व को अपनी सस्कृति और सभ्यता से परिचित करा पाएंगे तो स्वतः ही भारतवासियों के प्रति फैली भ्रांतियों से स्वय को मुक्त कराने में सफल हो जाएंगे। लोगों की नजरों में भारत का पक्ष स्पष्ट होगा तथा पूरे विश्व की सहानुभूति अर्जित करने में हम सफल हो पाएंगे।

इस त्रिपक्षीय उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए, अन्य कदमों के साथ-साथ निम्न कदम भी उठाए जाने चाहिए-

(1) प्रत्येक अतर्राष्ट्रीय कांग्रेस मे भारतवासियों की उपस्थित रहना चाहिए।

(2) विदेशी समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं में भारत के सबध में लेख प्रकाशित किए जाने चाहिए।

(3) यूरोपीय व अमरीकी भाषाओं मे भारत के सबंध में पुस्तके प्रकाशित की जानी चाहिए।

(4) यूरोप के किसी केंद्रीय स्थल पर कम से कम एक अच्छा पुस्तकालय स्थापित किया जाना चाहिए जहा भारत मे रुचि रखने वाले लोग पुस्तकें, पत्र, पत्रिकाएं आदि पढ सकें।

(5) भारतीय सस्कृति के विभिन्न पक्षों से जुडे भारतवासी प्रायः विदेश यात्रा पर जाते रहने चाहिए।

(6) भारत सबधी फिल्में विदेशो में दिखाई जानी चाहिए।

(7) जादुई लालटेन की सहायता से भारत संबंधी भाषण विदेशों मे आयोजित किए जाए।

(8) विदेशी विद्वानो को भारत में आमंत्रित किया जाए और उन्हे भारतीय विद्वानो से सपर्क करने के अवसर प्रदान किए जाएं।

(9) विदेशों से सांस्कृतिक सबंध स्थापित करने की दृष्टि से प्रत्येक देश मे वहां के निवासियो व भारत के प्रतिनिधियों को मिलाकर संस्थाए स्थापित की जाए।

ऐसी सस्था का पत्राचार कार्यालय भारत में स्थित हो। इसका प्रथम उदाहरण इडो-चेकोस्लोवाकियन सोसायटी है।

(10) भारत तथा अन्य देशों के बीच व्यापारिक सबध स्थापित करने की दृष्टि से मिले संगठन बनाए जाएं। (इसका एक उदाहरण इंडियन सेंट्रल यूरोपियन सोसाइटी आफ विएना है) भारत में पत्राचार सस्थाओं की स्थापना की जानी चाहिए।

(11) सयुक्त चैंबर्स आफ कामर्स प्रत्येक देश की राजधानी में स्थापित किए जाएं (इडो-चेकोस्लोवाक चेबर्स आफ कामर्स, इडो-आस्ट्रियन चेंबर्स आफ कामर्स आदि) भारत मे पत्राचार चेंबर्स आफ कामर्स की स्थापन की जानी चाहिए। ऐसे चैंबर्स आफ कामर्स प्रत्येक यूरोपीय देश मे है। केवल भारत ही अभी तक इनकी आवश्यकता अनुभव नही कर पाया है।

जेनेवा स्थित अतर्राष्ट्रीय समिति जैसी सस्थाओं को जो अभी तक स्वतत्र रूप मे कार्य कर रही हैं, उन्हें निरंतर सहायता प्रदान की जानी चाहिए। इस प्रकार की अनेकों सस्थाए यूरोप व अमरीका में हैं। इस प्रकार की संस्थाओं के मध्य समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए।

लंबी अवधि से चले आ रहे विरोधी प्रचार के कारण आम राय बन चुकी है कि भारतवासी असभ्य लोग हैं, हमारी स्त्रियां गुलामी का जीवन जी रही हैं, हम एक राष्ट्र नही है, हमारे समाज में अनेकों कुरीतिया हैं। क्या हम अपने आपको एक कमरे में बंद करके इस बात के प्रति निष्क्रिय हो सकते हैं कि लोगों को हमारे बारे में जो कुछ मर्जी सोचने दो। नही, अच्छे या बुरे के लिए हम मानवीयता के सामान्य जीवन की आधुनिक स्थितियों में जीने के लिए बाध्य हैं। अत: हम इससे बेखबर नही रह सकते कि विश्व हमारे विषय मे क्या सोचता है। फिर हम अपनी आँखों से यह देख रहे हैं कि बाकी देश योजनाबद्ध तरीके से किए जा रहे प्रचार के माध्यम से लाभ ले रहे हैं। इतिहास हमे यह सिखाता है कि हमारे जैसे गुलाम और दमित देश को, जो कि हिंसा क तरीके से दूर है-विश्व की सहानुभूति प्राप्त करना अति आवश्यक है, और इस सहानुभूति को जीतने के लिए प्रचार करना अति आवश्यक है। विशिष्ट भारतीय जैसे स्वामी विवेकानद, डॉ रवीद्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गांधी ने पिछले दिनों काफी प्रचार किया है और उनके विदेशी मित्रों ने भी उनके कार्य को अपना समर्थन दिया है। परिणामस्वरूप, भारत की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति लोगों में सम्मान बढा है। किंतु यदि हम और प्रगति करना चाहते हैं तो यह अति आवश्यक है कि भारतवासियों द्वारा समर्थित योजनाबद्ध प्रचार

किया जाए। विदेश में कई ऐसे भारतवासी हैं, जो इस कार्य के लिए कृतसंकल्प हैं हालांकि उनके पास सीमित साधन उपलब्ध हैं। प्रश्न केवल यह है कि क्या भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इस महत्वपूर्ण कार्य का भार वहन करना चाहेगी और इस कार्य को प्रभावी एवं सक्षम ढग से अंजाम देगी।

इंडो-ब्रिटिश व्यापार के पचास वर्ष (1875-1925)

भारत के विदेश व्यापार के विस्तार के सबंध में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ब्रिटेन की प्रतिशत दर पिछले पचास वर्षों में निरंतर नीचे गिरी है यद्यपि इडो-ब्रिटिश व्यापार में ऊपरी तौर पर विकास हुआ है। इससे पता चलता है कि इंडो-ब्रिटिश व्यापार में अत्यधिक उन्नति हुई है। इसका अर्थ यह भी है कि इंडो-ब्रिटिश व्यापार हमारे कुल व्यापार के साथ कदम मिलाने में असमर्थ रहा है, दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि गैर-ब्रिटिश देशों के साथ व्यापार दर में वृद्धि हुई है। 19 वीं सदी के मध्य मे, विदेश व्यापार की प्रगति ब्रिटेन से हमारे व्यापार की तुलना में बिल्कुल बराबर थी।

इस लेख में हमारे ग्रेट ब्रिटेन से व्यापार सबंधों की शुरुआत कब हुई, इस का हवाला देना असंभव है, जिससे धीरे-धीरे उसने भारतीय विदेश व्यापार पर अपना एकाधिपत्य स्थापित कर लिया। धीरे-धीरे हमारे आयात व निर्यात मे कुछ दिशा परिवर्तन हुआ, चाहे वह ब्रिटेन से अन्य देशों के साथ हो या विशेषरूप से यूरोप के उपमहाद्वीप देशों में, सयुक्त राज्य अमेरीका, जापान आदि के साथ। निम्न आंकड़े तथ्यों की स्पष्ट जानकारी देते हैं।

भारतीय व्यापार में ब्रिटेन की प्रतिशत दर-

1875-76	-	62.2
1880-81	-	58 7
1890-91	-	50.9
1900-01	-	45 1
1905-06	-	42.9
1910-11	-	39.1
1915-16	-	47.4
1920-21	-	41 8
1925-26	-	32.1

युद्धकाल के दौरान इंडो-ब्रिटिश व्यापार में अस्थायी प्रगति हुई क्योंकि भारत से कच्चे माल के आयात में वृद्धि हुई।

ब्रिटेन की प्रतिशत दर की गिरावट हमारे निर्यात व्यापार पर अधिक स्पष्ट रूप में

दिखाई पड़ती है। यह सत्य है कि हमारे आयात में ग्रेट ब्रिटेन की दर सदैव अधिक रही है, किंतु निर्यात में कम हुई है, इस गिरावट को आयात की तुलना में स्पष्टता से अनुभव किया जा सकता है जैसा कि निम्न आकड़े भी बताते हैं-

भारत के आयात व निर्यात व्यापार में ब्रिटेन की प्रतिशत दर-

	आयात	निर्यात
1875-76	83 0	48.3
1880-81	82 8	41 6
1890-91	76.4	32 7
1900-01	65.6	30 7
1905-06	68 5	28.1
1910-11	62.1	24 8
1915-16	60 4	38 1
1920-21	58 8	19 4
1925-26	50.9	21 0

हमारे आयात में कुल व्यापार का आधा ग्रेट ब्रिटेन से रहा है, तथा उसका महत्वपूर्ण स्थान है, उसके बाद जापान का स्थान है जिसने 1925-26 में केवल 8 प्रतिशत व्यापार किया। किंतु भारतीय सामान के उपभोक्ता के रूप में भी उसकी स्थिति यही रही है। जापान और सयुक्त राज्य अमेरीका लगभग बराबरी पर है, ब्रिटेन जापान और सयुक्त राज्य अमेरीका का निर्यात व्यापार क्रमशः इस प्रकार है-

20 0, 15.0 तथा 10.4 वर्ष 1925-26 में।

II

भारत के विदेश व्यापार में सयुक्त राज्य की प्रतिशत दर में आई कमी के कारणों को खोजना कठिन कार्य नही है। इस देश के पूर्व महत्व का कारण यह था कि इसमें भारत के साथ सम्बधों से कई विशेष सुविधाएं प्राप्त की।* इस देश में उसकी राजनैतिक सत्ता थी। हमारा पूरा व्यापार ब्रिटिश जहाजों पर निर्भर था, अधिकाश आयात व निर्यात सस्थाएं ब्रिटेन की थी, इसी प्रकार विनिमय बैंक तथा बीमा कपनियां भी ब्रिटेन के अधिकार में थीं। भारतीय रेल अग्रेजों के धन से बनी थी तथा उसे ब्रिटेन की सस्थाएं चला रही थी जिन्होंने ब्रिटेन के वाणिज्य को बढ़ावा दिया।** कुछ कृषि उद्योग (ब्रिटिश राशि मे

* डा एस जी पनदिकर का लेख इकोनॉमिक कासीक्वेंस आफ दि वार फॉर इंडिया, पी पी 66 7 तथा प्रो. आर. एम. जोशी का लेख इंडियन एक्सपोर्ट ट्रेड, पी.पी -160-1 तथा 164 ।

** रेलवे के विकास में ब्रिटेन के आयात में वृद्धि हुई, क्योंकि रेलवे निर्माण हेतु सारा सामान वहीं से खरीदा गया।

निर्मित) भी इसी दृष्टि से विकसित किए गए कि वे ब्रिटिश बाजार को चाय काफी आदि उपलब्ध करा सकें।

सरकार की कृषि नीति भी उन चीजों को उगाने का प्रोत्साहन देने की थी जिनसे अंग्रेजो को कच्चा माल उपलब्ध हो सके और वे उसे ब्रिटेन में आयात कर सके। इन वस्तुओं में जूट, कपास, गेहू, तिल, तिलहन आदि शामिल थे। दूसरी ओर ब्रिटेन एक प्रमुख औद्योगिक देश था जो भारत में बने बनाए माल की आपूर्ति करता था जिनमे से कुछ (सूती वस्त्र) भारत सरकार द्वारा शुल्क विधान के अंतर्गत प्रोत्साहित किए गए थे और उन उद्योगो पर रोक लगाई गई थी जो हमारे आयात के मार्ग मे रुकावट उत्पन्न कर सकते थे।

ब्रिटेन का हमारे विदेश व्यापार पर प्रभुत्व दो कारणों के परिणामस्वरूप था। पहला तो यह कि भारत राजनैतिक व आर्थिक रूप से उस देश के नियंत्रण मे था, दूसरा यह कि पूरे विश्व में ग्रेट ब्रिटेन औद्योगीकरण में सर्वोपरि था।

परिणामस्वरूप, विश्व के सभी मुख्य देशों से सीधे व्यापार संबंध स्थापित हुए, तथा धीरे-धीरे व्यापार संबंधों मे अन्य देशो के साथ संबंधों में आई प्रगाढ़ता के कारण ब्रिटेन की आबादी कम होनी शुरू हो गई। इसमें दो राय नहीं कि ब्रिटिश सरकार द्वारा उन्मुक्त व्यापार नीति अपनाए जाने की वजह से ही गैर-ब्रिटिश देशों से व्यापार संबध बढ़ा। विशेष कारणों का खुलासा इस तथ्य से होता है कि 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में केवल ब्रिटेन ही मुख्य औद्योगिक देश था जिसकी वजह से जर्मनी, सयुक्त राज्य अमेरीका, जापान आदि देशों में औद्योगिक विकास बने-बनाए माल का हुआ जो कि वहां से ग्रेट ब्रिटेन के खर्च पर आयात किया जाता था।

दूसरी ओर, औद्योगिक रूप से विकसित देशों को भारत में कच्चे माल का अपार भडार उपलब्ध था जिससे उनके सामान बनाने की कपनियों का सामान मिलता था। किंतु ब्रिटेन के हाथों से भारतीय बाजार को अपने कब्जे में लेने की जो प्रतियोगिता थी वह उनकी अपनी आवश्यकताओं के सामान हेतु न्यूनतम थी। अन्य देशों से आयात प्रगति पर हो रहे सघर्ष पर ब्रिटेन का कड़ा प्रतिबंध था क्योंकि भारत किसी भी ऐसे देश को माल बेचने को स्वतत्र था जो उसे उचित दाम दे सकता था। इसलिए गैर-ब्रिटिश देशो के लिए यह आसान हो गया कि वे ब्रिटेन से अपने बने-बनाए माल का आयात करने की अपेक्षा भारतीय सामान का इस्तेमाल शुरू कर दें।

अत: गैर-ब्रिटिश देशों की आर्थिक उन्नति तथा उनके साथ व्यापारिक सबध स्थापित होने से हमारा व्यापार धीरे-धीरे इन देशों से बढ़ता चला गया।

III

उपर्युक्त विवरण से यह नही मान लिया जाना चाहिए कि वास्तव मे ही इडो-ब्रिटिश व्यापार में गिरावट आई। दूसरी ओर ग्रेट ब्रिटेन के आंकडे दर्शाते हैं कि किसी अन्य देश की अपेक्षा उसने भारत से अधिक व्यापार किया है। जैसा कि निम्न आकडे भी बताते हैं–

इंडो-ब्रिटिश व्यापार-मूल्य लाख रुपयों में

	ब्रिटेन को निर्यात	ब्रिटेन को आयात	कुल राशि इंडो-ब्रिटिश व्यापार
1875-76	2809	3228	6037
1880-81	3105	4403	7508
1890-91	3227	5502	8779
1900-01	3205	5310	9516
1905-06	4070	7685	11755
1910-11	5224	8311	13533
1915-16	7600	8352	15952
1920-21	5297	20460	25757
1925-26	8097	11532	19629

इस प्रकार वर्ष 1875-76 से 1925-26 में ब्रिटेन के साथ हमारे व्यापार में लगभग 136 करोड़ रु की वृद्धि हुई है। जो किसी अन्य देश की तुलना में सर्वाधिक है। जो प्रतिशत दर में कमी आई मुख्य कारण यह था कि अन्य देशों से व्यापार के मुकाबले में ब्रिटेन स्वय अपनी क्षमता को बढ़ा नही पा रहा था। इसका स्पष्टीकरण हमें निम्न आकडो से मिल जाता है।

	कुल भारतीय व्यापार	इंडो-ब्रिटिश व्यापार
1875-76	100	100
1880-81	131	124
1890-91	177	145
1900-01	194	141
1905-06	282	194
1910-11	354	224
1915-16	348	264
1920-21	634	426
1925-26	630	325

जैसा कि पहले ही देखा जा चुका है कि भारत के आयात व्यापार मे ग्रेट ब्रिटेन का प्रभुत्व रहा है। इसकी झलक इसमें भी मिलती है कि हमारे कुल आयात की दर ब्रिटेन की आयात दर के बराबर है। उस देश के किसी भी दशा में उतार या चढाव जैसा असर हमारे आयात पर भी दिखाई देता है। ऐसा निर्यात के क्षेत्र में नही है, जिसमें कुछ विशेष वर्षों में विपरीत परिणाम भी सामने आए हैं। इसका कारण यह है कि हमारे कुल आयात का प्रतिशत ब्रिटेन के आयात से कही अधिक है। किंतु भारत के आयात व्यापार पर उस देश का ऐसा प्रभुत्व रहा है कि हमारे अन्य देशों से विकसित सबधो का कोई प्रभाव नहीं रहा। प्रत्येक वर्ष हमारा आयात व्यापार ग्रेट ब्रिटेन में व्यापार के समकक्ष ही रहा है।

ग्रेट ब्रिटेन से हमारे आयात व्यापार की मुख्य वस्तु सूती वस्त्र हैं। लंदन विश्व का सबसे बड़ा सूती वस्त्र बनाने वाला देश है। भारत उसका सबसे बड़ा उपभोक्ता देश है। सूती वस्त्रों के आयात में भारत का पहला स्थान है। यही सूती वस्त्र ही भारत के ब्रिटेन के आयात का 50 प्रतिशत है।

अन्य महत्वपूर्ण वस्तुएं है-धातुएं, मशीनरी, मिलवर्क, रेलवे प्लांट तथा रोलिंग स्टाक। पिछले वर्ष प्रत्येक वस्तु का आयात दस करोड़ रुपये से अधिक का रहा है। इनके अलावा कई अन्य छोटी-मोटी वस्तुएं भी हैं। अधिकांशतः ब्रिटेन में बने सूती वस्त्रों तथा धातुओं का ही आयात होता है। इंडो-ब्रिटिश व्यापार की प्रगति भी मुख्यतः इन्हीं वस्तुओं पर निर्भर है।

इस तथ्य के बावजूद कि ब्रिटेन से निर्यात की तुलना में आयात की दर अधिक है, और इनमे प्रगति भी धीमी रही है, एक और तुलनात्मक मुद्दे पर ध्यान देना आवश्यक है। आयात किए गए सामान में सूती-वस्त्रों की मात्रा अधिक है जबकि निर्यात किए गए सामान में ऐसी कोई विशेष वस्तु नही है। बल्कि इसके विपरीत जबकि आयात किए गए मुख्य सामान की स्थिति ज्यो की त्यो बनी रही है। वहा निर्यात किए गए सामान मे बहुत परिवर्तन आया है।

प्रारंभिक दिनों में निर्यात किए गए सामान में कपास का पहला स्थान था। 1884-85 से निर्यातित सामान मे जूट का स्थान पहले नंबर पर है क्योंकि डंडी में जूट निर्यात उद्योग से इसको प्रोत्साहन मिला है और इसका पर्याप्त विकास हुआ है। इसके बाद चाय ने, जिसने चीन को पीछे धकेलकर ब्रिटिश बाज़ार में अपना आधिपत्य जमाया है। यह नया विकास पहली बार 1890-91 में सभव हुआ। इस प्रकार 1890-91 में चाय, अनाज, कच्ची जूट व कपास पहले चार स्थानों पर रहे। इन सभी का निर्यात लागत 4 से 5 करोड के मध्य रहा है।

तब से कपास के निर्यात में गिरावट आई जो 1899-90 में केवल 21 लाख रुपये रह गया किंतु अन्य तीनों वस्तुओं में निरंतर वृद्धि हुई और आगामी पाच वर्षों में यही चीजें एक दूसरे का स्थान लेती रही हैं। सदी के अंत में चाय निश्चय ही सर्वोच्च स्थान पर रही बाकी चीजे भी अपना स्थान बनाए रही हैं। अनाज और जूट की अपेक्षा चाय के अधिक मात्रा में निर्यात होने के निम्न कारण हैं।

भारत घनी आबादी वाला देश है, यहां फसल की कमी रहती है, सूखा पडता है, इसलिए अनाज का निर्यात किसी सीमा तक ही संभव है इसलिए इसमें उतार-चढाव आता रहता है। जूट के क्षेत्र में भारत में जूट उद्योगों की स्थापना के कारण ब्रिटेन से निर्यात पर स्वतः प्रतिबंध लग गया। चाय पर ऐसा कोई प्रभाव नहीं पड़ा। भारत मे इसका प्रयोग बहुत कम मात्रा में था और किसी अन्य देश से भी इसकी माग नही की जा रही थी। इस उद्योग को इसी उद्देश्य से स्थापित किया गया था कि यह ब्रिटेन की माग को पूरा करेगा, वही भारतीय चाय का एक मात्र बाजार था, किसी अन्य देश को चाय का निर्यात न्यूनतम था। यदि चाय निर्यात न होती तो ब्रिटेन के साथ निर्यात दर मे और भी गिरावट दिखाई देती।

IV

इडो-ब्रिटिश व्यापार के विकास के उपयुक्त अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि आयात व निर्यात किए गए सामान की द्विपक्षीय प्रतियोगिता रही है।

आयात की मुख्य वस्तुए सूती वस्त्र, धातुओं से बना सामान है जिनकी प्रतियोगिता देश मे बने और आयातित सामान से थी। स्वदेश में निर्मित सामान तथा जापान में निर्मित सामान की प्रतियोग्तिा के कारण ब्रिटेन पर इसका प्रभाव पडा। पिछले वर्षों मे इग्लैंड के बने सूती वस्त्रों के आयात मे भी बहुत गिरावट आई है। प्रारंभ मे धातु एव धातुओ से बने सामान के क्षेत्र में ब्रिटेन का कोई प्रतिद्वद्वी नहीं था किंतु इस सदी के अत मे बेल्जियम और जर्मनी इसके प्रतिद्वद्वी के रूप में तेजी से उभरे हैं। बल्कि इस सदी के प्रारभ में तो धातुओ, विशेष रूप से लोहा और इस्पात से बने सामान के क्षेत्र में तो बेल्जियम और जर्मनी ने ब्रिटेन को बिल्कुल पछाड दिया है। बाद में संयुक्त राज्य अमेरीका भी इनमें शामिल हो गया। भारत मे भी लोहा और इस्पात उद्योग का विकास हुआ जो बचाव पद्धति के अंतर्गत अपना सिर उठा रही थी। आयात के क्षेत्र में जूट, पशुओं की खालें, तथा बीज की माग उपनिवेशिक देशों से बढी। इस प्रकार ब्रिटेन से गैर-ब्रिटिश देशो की ओर व्यापारिक झुकाव बढा। दूसरी ओर-काफी, कपास और चाय निर्यात मे विदेशों से प्रतियोगिता थी कि कौन ब्रिटिश मार्केट को अधिक से अधिक सप्लाई करता है अतः निर्यात घटा। तीसरी प्रकार की वस्तुएं थी अनाज और ऊन, जिसके घरेलू उत्पादन से तथा विदेशी प्रतियोगिता से निर्यात में कमी आई। यह देखा जा सकता है कि चाय के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुओं का निर्यात ब्रिटेन से हटकर अन्य देशों की तरफ झुका। ग्रेट ब्रिटेन को कपास और जूट का सामान का निर्यात नहीं किया गया क्योंकि अन्य देश बहुत थे जो उससे कच्चे माल के रूप में जूट, तिलहन, पशुओ की खालें आदि खरीदने लगे थे।

V

इडो-ब्रिटिश व्यापार के विकास के सबंध में जो एक और महत्वपूर्ण बात है वह यह है कि ग्रेट ब्रिटेन के विदेश व्यापार के साथ यह कदम मिला कर चला है। इसका अर्थ है कि जब भारत विदेश व्यापार में ब्रिटेन की प्रभुता समाप्त हो रही थी तब भारत

ग्रेट ब्रिटेन में अपनी प्रभुता स्थापित किए रहा। पिछले युद्ध के प्रारंभ होने तक, भारत अपनी महत्ता प्राप्त कर रहा था, ब्रिटेन के कुल व्यापार की तुलना में इंडो-ब्रिटिश व्यापार की दर अधिक थी। तब से भारत थी स्थिति में हलकी सी गिरावट आई। जिससे ब्रिटेन के विदेश व्यापार में भारत की तुलना में कुछ तीव्रता आई। कुल मिला कर ब्रिटेन का भारत के साथ व्यापार लगभग समान ही रहा जबकि भारतीय व्यापार में उसकी दर गिरावट पर थी। अतः यह जानना महत्वपूर्ण है कि ब्रिटिश व्यापार की भारत में क्या संभावनाए थी जबकि ब्रिटेन के भारत के साथ व्यापार में अन्य देशों की तुलना में सुधार था।

यह अतर ध्यान आकर्षित करने वाला है। निम्न विवरण इस पर पर्याप्त प्रकाश डालता है।

		ब्रिटेन से कुल व्यापार	इडो-ब्रिटिश व्यापार
सामान्य	1875-79	100	100
सामान्य	1885-89	104	144
सामान्य	1895-99	121	141
सामान्य	1905-09	178	210
सामान्य	1910-13	208	265
सामान्य	1914-18	301	270
वर्ष	1920	585	428
वर्ष	1921	322	327
वर्ष	1925	388	326

ब्रिटेन के कुल व्यापार में यदि हम भारतीय व्यापार का प्रतिशत देखें तो स्पष्ट होता है कि जो स्थिति भारत के व्यापार में ब्रिटेन की है वह स्थिति भारत की नहीं है। ब्रिटेन के कुल व्यापार में इडो-ब्रिटिश व्यापार की स्थिति न्यूनतम है। यह सत्य है कि ब्रिटिश सामान के उपभोक्ता के रूप में भारत का पहला स्थान है, किंतु यह कुल व्यापार का 50 प्रतिशत है, इसलिए ब्रिटेन के कुल निर्यात का 12 प्रतिशत भी नहीं है। भारतीय सामान के उपभोक्ता के रूप में ब्रिटेन की भी यही स्थिति है। अतः जब हमारे 1924-25 के विदेश व्यापार में ब्रिटेन का प्रतिशत 25.5 है तो ब्रिटेन के व्यापार में 1924 में भारत का प्रतिशत मात्र 5.7 है।

ग्रेट ब्रिटेन के व्यापार में भारतीय स्थिति को स्पष्ट करने के लिए निम्न आंकड़ों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

वर्ष 1924 : मूल्य दस लाख पाउंड में

	ब्रिटेन से निर्यात		ब्रिटेन से आयात
भारत	90 6	अमेरीका	222.6
आस्ट्रिया	60 7	अर्जेंटीना	75 2
अमेरीका	53.8	भारत	65.1
जर्मनी	42.6	कनाडा	62 7

वर्ष 1924 मे कुल मिलाकर ब्रिटेन के व्यापार में भारत का प्रतिशत 8 था जबकि भारतीय व्यापार में ब्रिटेन का प्रतिशत 36 था।

VI

यह देखा गया है कि हमारे विदेश व्यापार में ब्रिटेन का प्रतिशत आयात की अपेक्षा निर्यात मे कम था।

युद्ध समाप्ति के बाद एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। भारत के निर्यात की स्थिति तो युद्ध पूर्व की थी जबकि ब्रिटेन से आयात में गिरावट आई। 1920–21 से 1925–26 तक के समय के मध्य हमारे व्यापार मे ब्रिटेन का प्रतिशत 58 8 से गिरकर 50 9 रह गया जबकि हमारा प्रतिशत 19 4 से बढ़ कर 21 0 हो गया। यही स्थिति ब्रिटेन के साथ व्यापार में भी देखने को मिलती है।

ब्रिटेन के आयात-निर्यात व्यापार मे भारत का प्रतिशत

	निर्यात-	आयात
1910	10.69	5.53
1913	13.38	5.48
1922	12 80	4.25
1932	11.24	5 75
1925	11.12	5 76

1922 से पूर्व ब्रिटेन के निर्यात व्यापार में भारत की महत्वपूर्ण स्थिति थी जबकि आयात में वह अपनी स्थिति से नीचे आ रहा था। विकास विपरीत दिशा मे हो रहा था। इडो-ब्रिटिश व्यापार में आ रहे इस परिवर्तन के कारणों की जाच करने पर कुछ महत्वपूर्ण सत्य सामने आते हैं जिनकी वजह से भारतीय बाजार में ब्रिटेन की स्थिति इतनी

सुदृढ थी।

युद्ध क दौरान, भारत में ब्रिटिश सामान के आयात पर स्वत: प्रतिबध लग गया था तथा जापान, अमेरीका जैसे देशो ने इस स्थिति का पूरा लाभ उठाते हुए अपना सामान इन देशों में बेचना प्रारभ किया। परिणामस्वरूप जब ब्रिटेन अपनी सामान्य स्थिति में आया तो उसे पता चला कि उसका बाजार दो महत्वपूर्ण देशों के अधिकार में आ गया है जिन्हें वहा से भगाना कठिन कार्य था। जापान केवल भारत में ही नही बल्कि अन्य देशों में भी एक प्रतिद्वंद्वी के रूप में उभर रहा था। उसने सूती वस्त्रों का भी निर्माण शुरू कर दिया जो अब तक हम ब्रिटेन से ही खरीदते थे। उस पर भी आयात शुल्क बढ़ने से तथा निर्यात शुल्क समाप्त कर देने की वजह से भारतीय उत्पादनों को अत्यधिक लाभ पहुचा। जिससे वे आजतक वचित थे। अत: युद्ध पूर्व समय के ब्रिटिश से आयातित सूती वस्त्रों को गहरा धक्का लगा, क्योंकि देश में भी उत्पादन प्रारभ हो गया था और जापान स भी सामान आने लगा था। दूसरी ओर जर्मनी और बेल्जियम युद्ध के दौरान अपन भारत के साथ व्यापार के समाप्त होने के बावजूद भी भारतीय बाजार पर अपना प्रभुत्व बनाने में सफल रहे जबकि ब्रिटेन ऐसा नहीं कर पाया। फिर ब्रिटेन कुछ वस्तुओं में उन देशो का मुकाबला करने में भी असमर्थ था। भारत में नई उद्योग इकाइयो के कारण भी ब्रिटिश आयात पर प्रभाव पड़ा, उदाहरण के लिए आयरन एड स्टील कपनी की स्थापना से। अत: यह स्पष्ट है कि युद्धपूर्व काल में ही ब्रिटिश आयात पर स्वदेश और विदेश से प्रतिद्वंद्विता का असर शुरू हो गया था।

भारत से निर्यात के मामले में स्थिति ऐसी नहीं थी। युद्ध के दौरान पडे प्रभाव से इसके विकास में प्रगति हुई। औपनिवेशिक प्रभुसत्ता की नीति तथा भारतीय सामान पर ब्रिटेन में लगाए गए शुल्क के परिणामस्वरूप भी हमारे उस देश के साथ निर्यात में कुछ प्रगति हुई।

युद्ध बाद के समय में ब्रिटेन को भेजे गए सामान में अधिक प्रगति हुई जबकि वहा से खरीदे माल में कमी आई जबकि अब तक इसके विपरीत स्थिति रही थी।

VII

उपर्युक्त अध्ययन के आधार पर इंडो-ब्रिटिश व्यापार के भविष्य के बारे में कुछ मुख्य निष्कर्षों पर पहुचा जा सकता है। यह सत्य है कि हमने वर्तमान प्रगति पर उतना ध्यान नही दिया जितना कि दिया जाना चाहिए था, पिछले चार वर्षों से अध्ययन भी नहीं किया और न ही हमने स्वदेशी आदोलन के अपने व्यापार पर पडने वाले प्रभावो का निरीक्षण ही किया। आधी शताब्दी के ऐतिहासिक परिदृश्य से, हमारे विचार में, पिछले कुछ असामान्य वर्षों में हुई घटनाओं का मार्गनिर्देश मिल सकता है।

इस तथ्य के मद्देनजर कि हाल ही में ब्रिटेन को निर्यात व्यापार में अत्यधिक प्रतिद्वंद्विता का सामना करना पड़ रहा है, भारत से भी और अन्य देशों से भी, और कुछ देश तो भारत को उसकी आवश्यकताओं का पक्का सामान उपलब्ध कराने में अधिक सक्षम हैं। हम ब्रिटेन के साथ अपने व्यापार को यदि बिल्कुल नीचे भी नहीं ला पाते तो कम

से कम कुछ सुधार की आशा तो कर ही सकते हैं।

भारत में निर्यात होने वाले सामान के प्रतिशत में हम भविष्य में कुछ सुधार की आशा कर सकते हैं। विशेष रूप से इसलिए क्योंकि साम्राज्य से आयात किए गए सामान को ब्रिटेन द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है और ऐसे योजनाबद्ध तरीके से प्रयत्न किया जा रहा है कि औपनिवेशिक सामान की खपत अधिकाधिक हो। किंतु भविष्य अधिक उज्जवल नहीं हैं। कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसे देश जिनके पास वृहत् कृषि संसाधन हैं, वे ब्रिटेन के साथ निर्यात के क्षेत्र में काफी प्रगति कर रहे हैं। यह भी सम्भव है कि निकट भविष्य मे भारत से निर्यात होने वाले सामान की जगह इन देशो का सामान ले ले। गेहू के क्षेत्र में तो इन देशों ने ब्रिटिश बाजार से भारत को लगभग बाहर ही कर दिया है।

हमें इस बात को भी नहीं भूलना चाहिए कि इंडो-ब्रिटिश व्यापार की कुल राशि इतनी अधिक है कि भारत जैसे गरीब देश के पास इसे अधिक विस्तार दे पाने की सभावनाए नही है। अब जबकि ब्रिटिश सामान की प्रतिद्वंद्विता भारतीय सामान व अन्य देशों में बने सामान से है तो भारत से आयात होने वाले सामान पर भी अन्य देशो की अपेक्षा प्रतिबंध लगेगा ही। इससे अन्य देशों का माल ब्रिटेन में ज्यादा बिकेगा तथा भारतीय माल की अपेक्षा गैर-ब्रिटिश देशों के सामान की खपत बढ़ेगी ही।

मंत्री पद स्वीकारने में भलाई व बुराई

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सर्वोच्च समिति ने कांग्रेस सदस्यों को यह अनुमति देने का निर्णय कर लिया है कि जिन राज्यों में कांग्रेस पार्टी बहुमत में है वहा वे मत्रालयों का कार्यभार संभालने की स्वीकृति दे सकते हैं। इससे हमारे सम्मुख आने वाल खतरो के प्रति हम जागरूक रहेंगे। यद्यपि ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन भारत के 11 राज्यों में से केवल छः मे ही कांग्रेसी मत्री मंडल स्थापित हो पाएगा (वे छः राज्य हैं सयुक्त प्रात, बिहार, उड़ीसा, मद्रास प्रेसीडेंसी, केंद्रीय प्रात तथा बंबई प्रेसीडेंसी)। इसमें शक नही कि कुछ समय के लिए कांग्रेस कार्यकर्ताओं व जनता की नजर मत्रियों के कार्य तथा प्रातीय विधानसभा पर लगा रहेगा। वैधानिक कार्यवाही रोजमर्रा का कार्यकलाप बन जाएगी और अवज्ञा आंदोलन जैसे असंवैधानिक कार्य जो, फिलहाल राजनैतिक हथियार बने हुए थे, कुछ देर के लिए पार्श्व में चले जाएगे। निश्चय ही लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आएगा और कुछ कांग्रेसियों में कुर्सी की लालसा भी जाग्रत होगी। विद्रोही मानसिकता जिसने पिछले कुछ वर्षों में जन्म लिया है एक बार फिर दब जाएगी और आत्मतुष्टि व जडता धीरे-धीरे घर करने लगेगी। ये कुछ संभावनाए हैं जो आजकल स्पष्ट दिखाई दे रही हैं।

मैं उन लोगों में से नही हू जिनका यह मानना है कि मत्रीपद स्वीकारना सिद्धांततः बुरा है। विधानसभाओं में सम्मिलित होना या मत्री पद स्वीकारने का अर्थ ब्रिटिश राज के प्रति वफादारी की कसम खाना है। किंतु मैंने ऐसे सभी कदमों को केवल संवैधानिक क्रिया ही माना है। 1922 और 1925 में जिन दिनों विधानसभाओं में कांग्रेस के प्रवेश

की चर्चा गरमागरम थी तब इसका विरोध करने वालों का तर्क यही था कि ऐसा करने से ब्रिटिश राज के प्रति वफादारी की कसम खानी होगी, किंतु मुझे उनका यह तर्क कभी उचित प्रतीत नही हुआ। मैं नैतिक रूप से इसमे कोई बुराई नहीं देखता कि श्री डी वलेरा ब्रिटिश राज की वफादारी की कसम खाकर डेल में प्रवेश ले ले और फिर उस कसम को तोड दे। यहा प्रश्न सिद्धात का नहीं बल्कि नैतिकता का है और मेरे विचार से यही यथार्थ भी है।

निगम प्रशासन में अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि प्रशासनिक क्षेत्र में सफलता पाने के लिए छोटी-छोटी बातों पर अधिकार प्राप्त करना आवश्यक है। प्रशासन का कार्य सही ढंग से निपटाने के बाद किसी के पास इतना समय नहीं बचता कि वह अन्य मुख्य मुद्दो को सुलझाने में सक्षम रहे। बहुत कम ऐसे लोग देखने मे आते हैं जो प्रशासन कार्यों को छोटी से छोटी बात पर ध्यान दें और इसके साथ-साथ मूलभूत समस्याओं पर भी विचार कर सकें। मुझे याद है जब 1924 में मैं कलकत्ता नगर निगम का मुख्य अधिशासी अधिकारी था, तब मैं काग्रेस से बिल्कुल कट गया था और पूरी तरह नगर निगम प्रशासन के कार्यों में लिप्त हो गया था। किंतु मैं इस कार्य में जानबूझकर कूदा था, क्योंकि मुझे पूर्ण विश्वास था कि काग्रेस की गतिविधियों को अजाम देने वाले उत्साहित व्यक्तियो की कमी नही है।

मेरा सदा यही विचार रहा है कि स्वतंत्रता के लिए सघर्ष करने वाले व्यक्ति ही युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण कार्य को भी करेंगे। हमारा काम पूरा हो गया की भावना से ग्रस्त होकर वे अपने कधे जिम्मेदारी से झटक नही लेंगे। अत: जैसे ही राजनैतिक पार्टी की विजय होती है, तो उसे प्रशासनिक एवं सामाजिक पुनर्निर्माण के कार्य मे जी-जान से जुटना होगा और यह सिद्ध करना होगा कि यदि उसमें विध्वंस की शक्ति है तो निर्माण करने की भी शक्ति है। किंतु इससे पहले कि पार्टी इस जिम्मेदारी को सभाले, उसे यह निर्णय करना होगा कि बहुत दिन से प्रतीक्षित घड़ी आ गई है और स्वतत्रता सग्राम जीता जा चुका है। विषय पर वापस आए, जो प्रश्न हमे उद्वेलित कर रहा है वह यह है कि क्या भारत सरकार के एक्ट 1935 में वह प्रावधान है जिसके लिए हम इतने दिनों से सघर्षरत थे। फिलहाल केंद्रीय सरकार की बात छोड भी दें तो क्या प्रातो में हमें पूर्ण आधिपत्य प्राप्त हो सकेगा? निस्सदेह उत्तर नकारात्मक ही है।

नि:सदेह यह तर्क दिया जाएगा कि राजनैतिक एव सैन्य बल के क्षेत्र में हमें अनुकूल प्वाइंट को अपने नियत्रण में लेना है और अपनी स्थिति को इतना सुदृढ करना है कि हम लक्ष्य की ओर बढ सकें। सच है, किंतु क्या हम पूर्णत: आश्वस्त हैं कि मत्रीपद पाने का प्रयत्न करने से, जिसके कि हम योग्य हैं, हम प्रशासन के कार्य मे खो नही जाएगे और विद्रोही मानसिकता, जो कि राजनैतिक प्रगति की शुरुआत है, को पुनर्जीवित रखेंगे। काग्रेस स्पष्ट रूप से दुविधा की स्थिति में है। स्वतंत्रता पाने के लिए सघर्ष को जिंदा रखने की दृष्टि से वह अपने सभी प्रमुख नेताओं के मत्रालय में नही शामिल होने दे सकती। दूसरी ओर यदि सभी प्रमुख काग्रेसी विभिन्न प्रातों को मत्री बन जाते हैं तो हम सविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार और प्रभाव का पूरा उपयोग नहीं कर पाएगे। वर्ष 1925-30

में भारतीय विधानमडल के अध्यक्ष रहे स्वर्गीय वी.जे. पटेल जैसे लोगो की गिनती बहुत कम है, जो महान कार्य को भी लेकर चलें, ससदीय परपरा भी कायम कर सकें और ट्रेजरी बेंच के सदस्यो को भी यथास्थान रख सकें। सामान्य व्यक्ति निश्चित रूप से असफल हो जाता। स्वर्गीय वी.जे.पटेल के साथ षणमुखम चटर्जी तथा अब्दुररहीम आदि भी उसी कडी के लोग थे।

मत्रीपद स्वीकार करने के समर्थकों द्वारा यह तर्क दिया जा सकता है बल्कि दिया जाएगा कि किसी भी राजनैतिक दल के लिए प्रशासनिक अनुभव अति उपयोगी है और नया सविधान हमे यह अनुभव पाने का लाभ दे रहा है। किंतु इस तर्क का खडन किया जा सकता है। प्रशासन का अनुभव किसी सगठन के अनुभव के समान ही है, बल्कि सगठन का अनुभव अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है जबकि प्रशासनिक अनुभव एक बाधा बन सकता है। यूरोप युद्ध के बाद सभी युगो और जलवायु मे महान प्रशासक तुलनात्मक रूप मे अल्पायु और कम अनुभवी थे, जब उन्होंने अपने पूर्वजों से कार्यभार सभाला। हमे लेनिन, स्तालिन, हिटलर, मुसोलिनी और कमाल पाशा जैसे प्रशासको को देखना चाहिए। तथ्य तो यह है कि क्राति (हिंसक अथवा अहिंसक) के पश्चात नए प्रशासन को सिद्धातो और तकनीक की आवश्यकता होती है जो पहले से भिन्न होती हैं, तभी नई परिस्थितियो का मुकाबला किया जा सकता है। इसके लिए हिम्मत, दूरदृष्टि और ससाधनो की आवश्यकता रहती है। क्या अनुभवी प्रशासक सोवियत संघ की पचवर्षीय योजना, तुर्की के लिए नए गणराज्य की स्थापना, इटली में नए साम्राज्य की स्थापना और आतक और धोखाधडी मे से नए ईरान की स्थापना कर पाए?

इसमें सदेह नही कि शक्ति और प्रतिक्रिया का केंद्रीय स्तभ अभी भी ब्रिटिश सरकार के हाथ मे है और केवल बाहरी स्तभ अर्थात प्रातीय सरकारें हमारे नियत्रण मे आई है और वे भी पूरी तरह नही। इन परिस्थितियों में क्या हम मुख्य मुद्दो से हटकर अपना उत्साह खोए बिना अपने पूर्ण स्वतत्रता के सघर्ष को जारी रख सकते हैं जबकि हमारे कुछ महत्वपूर्ण लोग अपने आपको प्रशासन के दायित्व में खो देना चाहते हैं। इस प्रश्न का उत्तर पूर्व निर्धारित अधिक महत्वपूर्ण नही है और समय आने पर घटने वाली घटनाए ही हमारे प्रश्नों के उत्तर हमे देंगी। यदि पार्टी के मंत्री पद के पक्षधरों के विश्वास का प्रश्न है, हमे भविष्य में आने वाली कठिनाइयें, जिनका उल्लेख पहले पैराग्राफ में किया गया है, के लिए स्वयं को पूरी तरह चेतन कर लेना चाहिए। मेरा उद्देश्य उस प्रश्न को पुनः उठाना नहीं है जिसे कांग्रेस के सर्वोच्च अधिशासी ने हमेशा के लिए खत्म कर दिया है, किंतु उन बाधाओं का उल्लेख करना है जो हमारे मार्ग में आएंगी। ये बाधाए इसलिए भी उत्पन्न होंगी क्योंकि हम नए सविधान के अतर्गत भारत की स्वतंत्रता के लिए सघर्षरत रहेंगे।

मुख्य समस्याएं जो भारतीय राजनीतिज्ञों के सम्मुख आएंगी वे हैं- निर्धनता, बेरोजगारी, बीमारी और अशिक्षा। इन समस्याओं का समाधान वही राष्ट्रीय सरकार कर पाएगी जिसके पास पर्याप्त ससाधन होंगे। जब हम इन समस्याओं को हल करने की इच्छा रखेंगे तो हमें सगठनों और धन की आवश्यकता पड़ेगी। क्या प्रातीय सरकारों के काग्रेस मत्री राष्ट्र

निर्माण के कार्य को बड़े पैमाने पर करने के लिए आवश्यक संगठन और राशि उपलब्ध करा पाएंगे? संगठनों के संबंध में कहा जा सकता है कि उच्च सेवाए सभी ब्रिटिश सरकार के नियत्रण में हैं जिनकी परपरा अलग रही है और जिन्हें हमेशा अपने वेतन, परिलब्धियों और पेंशन की चिंता रहेगी जो में मंत्रियों के अधिकार क्षेत्र के बाहर सविधान के नियत्रण में है। तथा ऐसे ही अधिकारी कांग्रेस मंत्रियों द्वारा प्रतिपादित नई नीतियों पर कार्य करेंगे? यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो मत्रियों का भविष्य क्या होगा? सद्भावनाओं के रहते वे क्या इन प्रतिरोधी अधिकारी गणों से सफलतापूर्वक संघर्ष करने में सक्षम होंगे? उनके लिए उच्च सेवाओं के अधिकारी गणों में परिवर्तन लाना असंभव होगा क्योंकि वे उस कोटि के लोग होंगे जिन्हें मंत्री कुछ कह नहीं सकते। अत: मंत्रियों को केवल हाथ पर हाथ धरे देखना होगा कि क्या हो रहा है? क्योंकि उनकी प्रतिरोधी नीतियों के कारण व उनके कार्यों में बाधाएं उत्पन्न करेंगे। इसके अलावा कई प्रांतों में कांग्रेस सरकार की स्थिति बिल्कुल विपरीत होगी, क्योंकि ब्रिटिश अधिकारी वहां कार्यरत होंगे।

आर्थिक समस्या अधिक जटिल समस्या है। कांग्रेस पार्टी कुछ बातों के लिए वचनबद्ध है, जिसके कारण सरकारी राजस्व में कमी आएगी और बड़े पैमाने पर राष्ट्र निर्माण के कार्य में बाधा उत्पन होगी। भूमि किराए में कमी लाने से और उत्पादन कर में कटौती लाने की नीति लागू करने से मंत्रालय को बजट घाटे का सामना भी करना पड सकता है। किसी अन्य देश में वित्तमंत्री तत्काल व्यय में कटौती लागू कर सकता है। भारतीय प्रांतों में उच्च अधिकारियों के वेतन आदि में कटौती सभव नही और शेष कर्मचारियो को वैसे ही इतना कम वेतन मिलता है कि उसमें कटौती संभव ही नहीं। परिणामस्वरूप इस क्षेत्र से नौकरी से निष्कासित करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सेना, रेलवे, डाक और तार, सीमा शुल्क आदि संघीय विषय हैं, अत: किसी प्रकार की कटौती अथवा आय में वृद्धि जैसी बात इनमें से किसी भी विभाग में आसानी से संभव नहीं हो पाएगी। मुद्रास्फीति के द्वारा किसी भी प्रांत की सरकार अधिक धन नहीं बना सकती। भारत मे सोना पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। अत: यह संभव है-क्योंकि करेंसी भी संघ के नियत्रण में है। इन परिस्थितियों में प्रांतीय सरकारों के पास केवल एक ही विकल्प बचेगा वह यह कि वह राष्ट्र निर्माण की गतिविधियों के लिए उधार ले। किंतु क्या प्रांतीय विधानसभा के कहने पर गवर्नर उसकी स्वीकृति देगा और क्या प्रतिक्रियावादी केंद्रीय सरकार यह राशि उधार देगी, जिसके लिए संवैधानिक स्वीकृति आवश्यक है। यदि यह संभव हुआ तो कांग्रेसी मंत्रियों के पास निराशा के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रहेगा।

उपर्युक्त परिस्थितियों के चलते आइए हम विचार करके देखें कि कांग्रेसी मत्री क्या उपाय कर सकते हैं- पहला, वे राजनैतिक बंदियों को मुक्त कर सकते हैं और दमनकारी नियमों तथा अधिनियमों को अधिक उन्मुक्त बना सकते हैं ताकि लोगो को अधिक स्वतत्रता मिल सके। दूसरा- वे प्रांतीय प्रशासन में नई आत्मा फूंक सकते हैं और सरकारी सेवकों, विशेषकर पुलिस के लिए नए कीर्तिमान बना सकते हैं। इससे वे वर्तमान सरकारी अधिकारियों से अधिक कार्य ले सकते हैं और प्रशासनिक वर्ग में उन्नति ला सकते हैं। तीसरा, वे कांग्रेस की गतिविधियों को यथाशक्ति सरकारी सहयोग देकर उसके प्रति सृजनात्मक कार्य कर सकते हैं । चौथा, वे घरेलू उद्योगों को गति दे सकते हैं, विशेष रूप से खादी

(हथकरघा कपड़े) सरकारी भंडारों में विदेशी सामान की अपेक्षा घरेलू उत्पादन को खरीदने पर बल दे सकते हैं। पांचवा, वे ऐसे परोपकारी विधान बना सकते हैं विशेष रूप से समाज कल्याण तथा जनस्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर, जहां अधिक व्यय करने की आवश्यकता भी न पड़े। छठा, प्रांतों में ऐसी संस्थाओं को संरक्षण दे सकते हैं जिनसे राष्ट्रीयता का विस्तार हो और प्रतिक्रियावादी ताकतें स्वय ही कमजोर पड़ जाएं। सातवा, लोगों की संपत्ति सबधी प्रांतों मे गहन सर्वेक्षण कराकर अनुभव लगवा सकते हैं कि वे कितना कर दे सकते है। इस प्रकार बेरोजगारी को भी कम कर सकते है। आठवां, कुछ विभागों के व्यय को सीमित कर सकते हैं। नौवां, केंद्र में फेडरेशन से लोगों को परिचित कराने के लिए अपने पद का इस्तेमाल कर सकते है। और अंतिम रूप में वे अपने उदाहरणों द्वारा अन्य प्रातो के गैर-काग्रेसी मंत्रिमंडल को प्रभावित कर सकते हैं।

लेकिन ये सब छोटे-मोटे सुधार हैं। कुछ समय के लिए इस प्रकार वे लोगो को सतुष्ट कर सकते हैं किंतु अधिक लबे समय तक नहीं। एक वर्ष बीतते न बीतते मुख्य समस्याएं-गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, अशिक्षा आदि पुन: गंभीर रूप में उठ खडी होंगी और तत्काल इनकी ओर ध्यान देना आवश्यक हो जाएगा। केंद्र में प्रतिक्रियावादी सरकार के रहते और प्रांतों में अल्पराशि के कारण क्या कांग्रेसी मत्री इनका मुकाबला कर पाएंगे। गरीबी और बेरोजगारी का मुकाबला तो कृषि का विकास करके या राष्ट्रीय उद्योगों को पुनर्जीवित करके किया भी जा सकेगा। इसके साथ-साथ बैंकिंग या ऋण सुविधाओं का विकास करके भी इनका हल खोजा जा सकता है। इस सब के लिए अधिक धन की आवश्यकता पडेगी। बीमारी के क्षेत्र में एक ओर तो इलाज और बचाव के तरीके अपनाने के लिए अत्यधिक धन की आवश्यकता होगी और दूसरी ओर खेलों व शारीरिक व्यायाम को भी बढावा देना होगा। निरक्षरता को दूर करने के लिए नि:शुल्क और जरूरी प्राइमरी शिक्षा युवा वर्ग और प्रौढ वर्ग को उपलब्ध करानी होगी यह सब तभी सभव हो पाएगा जब मत्रियों के पास अत्यधिक राशि हो।

ये मुख्य समस्याए, जिनका समाधान अभी तक कई प्रमुख देश भी नही कर पाए, भारत में तभी सफलतापूर्वक हल हो पाएंगी जबकि दिल्ली में लोकप्रिय सरकार की सत्ता हो तथा केंद्रीय प्रत की सरकारों में गहन तालमेल हो। मेरा दृढ विश्वास है कि भारत जैसे पिछड़े और कंगाल देश को इस ज्वार-भाटे का मुकाबला करना होगा और इसमें मूल आदेशों व उपलब्ध राशि से ही काम चलाना होगा। अत: मैं निकट भविष्य में आने वाले समय की कल्पना कर सकता हूं। जब काग्रेसी मंत्री अपने छोटे-मोटे कार्यों को पर्याप्त अनुपात में पूरा कर लेंगे तो उन्हें यह महसूस होने लगेगा कि आगे प्रगति तब तक नही की जा सकती जब तक कि दिल्ली में लोकप्रिय सरकार कायम न हो और देश के लोगों के हाथ में पूर्णरूप से सत्ता न आ जाए।

किंतु हमें यह सोचकर ही नहीं बैठ जाना चाहिए कि इस स्थिति तक आने तक काग्रेस के मंत्री सुख की सांस ले पाएंगे। मैंने पहले भी दो कठिनाइयों का जिक्र किया है जो उनके सरकारी पद के दौरान उनके मार्ग में रोडे अटकाती रहेंगी। वे कठिनाइया हैं– धन की उपलब्धता और उच्च सेवाधिकारियों के अधिकार। पहली समस्या अधिक व्याख्या नहीं चाहती किंतु दूसरी समस्या का मैं विस्तृत उल्लेख करना चाहूंगा। भारतीय चिकित्सा

सेवा, एक उदाहरण लें। पुरानी योजना के अंतर्गत भारतीय चिकित्सा सेवा में 386 ब्रितानी और 263 भारतीय थे। नई योजना के तहत अंग्रेजों की संख्या तो वही रहेगी लेकिन भारतीयो की सख्या घटकर 198 हो जाएगी तथा 58 अधिकारी शार्ट सर्विस कमीशन मे रहेंगे। भविष्य मे भारतीय चिकित्सा अधिकारी के मूल वेतन में कटौती होगी लेकिन अग्रेज अधिकारियो को परदेशीय भत्ता दिया जाएगा जिससे उनका वेतन बढ जाएगा जबकि भारतीयो के साथ ऐसा नही होगा। अत: इस नई योजना के अंतर्गत भारतीय चिकित्सा अधिकारियों की स्थिति अग्रेज चिकित्सा अधिकारियों की तुलना में दयनीय हो जाएगी। इससे भी ज्यादा दुखद स्थिति यह होगी कि देश के कुछ मुख्य जिलों व देश के मुख्य मेडिकल कालेजो में पद अंग्रेजों क लिए सुरक्षित कर दिए जाएगे। यद्यपि काग्रेसी मंत्री इस स्थिति के जिम्मेदार नही होंगे, और कुछ जागरूक लोग उनकी असमर्थता को स्वीकारेंगे भी, लेकिन जन सामान्य का व्यक्ति अवश्य ही प्रातीय सरकारो को उच्च सेवाओं के भारतीयकरण में असफल रहने का तथा भारतीयो क वेतन कम करने का दोषी ठहराएगा। छ: प्रातों के काग्रेसी मत्री अनियत्रित दशा म रहेंगे यद्यपि वे भारतीय चिकित्सा अधिकारियो के वरिष्ठ अधिकारी होंगे किंतु वे उन लोगों के एक भी विशेषाधिकार को छू नहीं सकेंगे। ऐसी स्थिति ही अन्य सेवाओं के उच्चाधिकारियों की भी रहेगी।

यदि छ: प्रातो में काग्रेस मत्रिमंडल के सामने यह स्थितिया उपस्थित होंगी तो आसानी से यह अदाजा लगाया जा सकता है कि अन्य पाच प्रातो की स्थिति क्या होगी जहा क मत्रियो की रीढ ही नही है और जिनका एकमात्र उद्देश्य पद पर आसीन रहने का है। बगाल मे उदाहरण के तौर पर मत्रालय की उपलब्धियां, बल्कि पिछले चार माह की कोई उपलब्धि नही भविष्य को सूचक हैं। अभी तक वे लोकप्रिय मत्रालय के कार्यक्रम क पहले मुद्द अर्थात राजनैतिक बदियों की रिहाई को सुलझाने का साहस तक नही जुटा पाई हैं। फिर ऐसे मत्रिमडल से जूट की समस्या जैसी कठिन समस्या को सुलझाने की आशा कैस की जा सकती है, जिसके सतोषजनक समाधान पर कम से कम तीन या चार करोड लोगो की समृद्धि निर्भर है।

मुझे ध्यान है जब फरवरी, 1936 मे मैं डब्लिन में था तो कृषि एव उद्योग मत्री स बातचीत के दौरान मैंने इन जैसी समस्याओं, अर्थात आयरिश स्वतत्र राज्य मे गन्ने की खेती, चीनी मिलो की आवश्यकताओं से इसके सबध तथा देश मे चीनी उत्पादनो के बाजारीकरण आदि, पर चर्चा की थी। तब मैंने यह महसूस किया था कि बंगाल की जूट समस्या का समाधान कितना आसान है, यदि दिल्ली और बगाल में राष्ट्रीय एव लोकतात्रिक सरकार की सत्ता हो। मेरा विश्वास है कि बगाल में यदि लोकप्रिय सरकार की सत्ता हो तो वह सविधान के भीतर रह कर ही जूट समस्या का समाधान कर सकती है बशर्ते कि वह अपने निजी स्वार्थों का त्याग कर दे, हालाकि जूट उत्पादकों को देने के लिए अतिरिक्त राशि की कमी के कारण वह स्वय को असमर्थ महसूस करेगी। कुछ भी हो इतना तो पक्का है कि वर्तमान प्रतिक्रियावादी मंत्रिमंडल से कोई आशा नही क्योकि इसके पास गुण और साहस दोनों की ही कमी है।

तो क्या हम इस निर्णय पर पहुचे कि मत्री पद स्वीकारने से कोई ठोस लाभ होने वाला नही है। यद्यपि अन्य काग्रेसियों की भाति मुझे यह आशा नही है कि काग्रेसी

मत्रिमडलों के माध्यम से अधिक लाभ होगा, फिर भी मुझे विश्वास है कि मत्री पद स्वीकारने की नीति का प्रयोग हम भारत की स्वतत्रता के उद्देश्य पूर्ति के लिए ता कर ही सकते हैं। किंतु इसकी प्रतिपूर्ति के लिए हमें पूर्ण रूप से जागरूक रहना है तथा काग्रेस को लिबरलीग की चमक-दमक से बचाना है। काग्रेस मे ऐसे लोगों का आभाव नही कि यदि उन्हे उन की मर्जी पर छोड दे तो, वे सविधानवाद के अधिक सुखद मार्ग को ही चुनेंगे।

मत्रिपद की स्वीकृति देने का सबसे बडा लाभ यह होगा कि लोगों का यह विश्वास हा जाएगा कि ब्रिटिश सरकार की उत्तराधिकारी काग्रेस ही होगी और देर-सबेर पूरा शासकीय तत्र काग्रेस पार्टी के नियत्रण में आ जाएगा। इसके नैतिक परिणाम सुखद होंगे और यह किसी भी उम भौतिक उपलब्धि से अधिक है जो हमें हमारे काग्रेसी मत्रियो द्वारा स्वत ही प्राप्त हो जाएगा। दूसरे कमजोर हृदय काग्रेसियों के लिए सत्ता का सुख उनके भविष्य के कार्यकलापों के लिए प्रेरक सिद्ध होगा तथा त्याग की भावना से उनमे अधिक आत्म विश्वास पैदा होगा। तीसरे, इससे काग्रेस प्रातीय सरकारों के माध्यम से फेडरशन का विरोध करने में सक्षम हो सकेगी और इस विरोध के परिणामस्वरूप फेडरल योजना पूर्णत ध्वस्त हो जाएगी और काग्रेस को इसका श्रेय मिलेगा।

और अतिम लाभ यह होगा कि मत्री पद स्वीकारने से मत्री गण भारत और विश्व को, अपने प्रशासनिक अनुभव के आधार पर, यह दिखा देंगे कि 1935 के सविधान के आधार पर, यह सामाजिक पुनरुत्थान असभव है। इस अनुभव का मनोवैज्ञानिक प्रभाव यह होगा कि काग्रेस व देश अंतिम रूप से दिल्ली व व्हाइट हाल के स्तभ पर आक्रमण करने को तैयार हो जाएगा।

व्यक्तिगत रूप से यदि मत्री पद स्वीकारने से उपर्युक्त चौतरफा लाभ मिल ता मैं बहुत सतुष्ट होऊगा जो लोग इस मत्री पद स्वीकारने की नीति के पक्ष म नहीं है किंतु मजबूरी मे इसे स्वीकारते हैं, वे हमारे देशवासियों को काग्रेस के दस वर्षीय कार्यक्रम के विरुद्ध चेताएगे, जो कार्य कुछ काग्रेसी नेताओ ने शुरू किया था और व सविधानवाद को चुपचाप स्वीकारने के लिए बाध्य थे।

यह सुखद अनुभव है कि काग्रेस के शीर्ष नेताओं महात्मा गाधी, पडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, बाबू राजेंद्र प्रसाद तथा अन्य कई- ने स्वय को मत्रीपद व विधानसभा से अलग रखा है। यह तो पक्की बात है कि काग्रेस स्वय को ससदीय कार्यवाही में इतना नहीं उलझाएगी कि वह पूर्णरूप से सवैधानिक सस्था बन कर रह जाए। (मैं यहा सवैधानिक शब्द का प्रयोग सीमित दायरे मे कर रहा हू)। ये नेता देखेंगे कि काग्रेसी मत्री अपने-अपने स्थान पर रह कर काग्रेस हाईकमान के निर्देशानुसार कार्य करें। कुछ अवधि के लिए कार्य मुक्त होने के बावजूद भी महात्मा गाधी इतने चौकन्ने हैं कि प्रत्येक घटना पर नजर रखते हैं और आवश्यकता पडने पर सभी को बता देंगे कि समय आने पर वे फिर सामने आ सकते हैं और काग्रेस को सवैधानिक गतिविधियो को स्थगित करने का आदेश भी दे सकते हैं। वे सत्याग्रह का झडा पुनः लहरा सकते हैं ताकि काग्रेस अपने पूर्ण स्वराज के सपने को पूरा करने का अंतिम युद्ध छेड सके।

कलकत्ता *

कलकत्ता द्वारा भूतपूर्व मेयर का अभिवादन

सुभाष चंद्र बोस का जनसम्मान

मित्रो,

आपके इस प्यार और सम्मान के प्रदर्शन से मैं बहुत आनंद का अनुभव कर रहा हूं। मैं समझ नहीं पा रहा कि आपका आभार किन शब्दों में व्यक्त करूं और यदि इस समय वाणी मेरा साथ न दे तो वह मेरी गलती नहीं होगी। आपने मेरे राजनीतिक जीवन की उपलब्धियों और कष्टों का जिक्र किया है। किंतु मुझे कोई खेद नहीं होगा यदि मैं स्पष्ट शब्दों में आपको बता सकूं कि मेरे पास सकारात्मक उपलब्धि के नाम पर कुछ भी नहीं है। किंतु मैं एक सेनानी हूं जो सदा चलायमान रहता है। हमारा लक्ष्य हमसे अभी बहुत दूर है, मार्ग कांटों से परिपूर्ण है, हमारे मार्ग में फूल नहीं बिछे हैं। इस लंबे मार्ग में कई बाधाओं का मैंने सामना किया है। किंतु ऐसा हमारी राष्ट्रीय सेना में से किसके साथ नहीं हुआ, और फिर उन लोगों की तुलना में, जिन्होंने अपना सर्वस्व दान कर दिया, मेरे कष्ट बहुत कम हैं।

17 मार्च को जब अचानक मुझे रिहा किया गया तो तत्काल मेरा ध्यान उन लोगों की ओर गया जो बिना किसी वजह के कई वर्षों से कारागार में हैं या उन पर अनेकों प्रकार के प्रतिबंध लगाए गए हैं। मैंने उनके समान दुख भोगे हैं और उनके परिवारजनों व निकट संबंधियों के आंसू देखे हैं। मेरा कष्ट इन अनुभवों से और भी बढ़ा कि मेरे साथ वाले केबिन में एक कैदी ने कलकत्ता मेडिकल कालेज में दम तोड़ा जहां हमारी सतर्क पुलिस उपस्थित थी और उसकी मृत देह को, तब तक जब तक कि पवित्र नदी के किनारे उसका अंतिम संस्कार नहीं कर दिया गया, ले जाते देखना एक कटु अनुभव था। इसलिए आप समझ सकते हैं कि मेरे मन पर इतना बोझ क्यों है और मैं आपके हृदयों को उन असहाय लोगों के लिए सहानुभूति से भर देना चाहता हू जो हृदयहीन राज्य के शिकार हैं।

लगभग पांच-साढ़े-पांच वर्ष के अंतराल के बाद आज पुनः मैं आपके सामने उपस्थित हू, सिर पर नीला आकाश है। पिछली बार जब मैं यहां खड़ा हुआ तब से लेकर अब तक हुगली नदी में बहुत सा पानी प्रवाहित हो चुका है, हमारे इस देश मे बहुत सी अच्छी-बुरी घटनाए घट चुकी हैं। आज मैं पुरानी यादों के झंझावात से घिरा हू, वे यादें सुखद भी हैं और दुखद भी जो मेरे मस्तिष्क के सामने से गुजर रही हैं। सबसे दुखद बात यह है कि इस देश ने कई, देशप्रिय जतींद्र मोहन सेनगुप्ता, अध्यक्ष वी.जे. पटेल, डॉ. एम. ए. अंसारी, श्री बीरेंद्र नाथ ससमाल जैसे नेता खो दिए जो आज हमारे बीच नहीं हैं। वे इस जीवन को छोड़ गए किंतु हमें एक प्रेरणा और संदेश दे गए हैं, और

* 6 अप्रैल 1937, कलकत्ता में आयोजित जन सम्मान के दौरान दिया अभिभाषण, द कलकत्ता म्यूनिसिपल गजट में प्रकाशित ।

अब हमे उनके इस कार्य को फलीभूत करना है। देश के इस भू भाग में आप सभी लोगों को देशप्रिय सेन गुप्ता की कमी अत्यधिक खल रही होगी। उनके नेतृत्व के बिना बगाल आज एक नेतृत्वहीन प्रांत बन गया है और इस रिक्त स्थान को पूर्ति करने के लिए आप सबको अपने ससाधन और पूर्ण शक्ति लगा देनी होगी।

देश के अनेक भागों व बंगाल के अनेक घरों में अधिकारी वर्ग की दमनकारी नीतियों के कारण बहुत हताशा व निराशा व्याप्त है। मैंने अनुभव किया है कि पिछले पाच वर्षों के दौरान कृषकों व श्रमिकों की दशा और भी दयनीय हुई है। इसी वजह से आज प्रदर्शन व हड़तालें हो रही हैं, उदाहरणार्थ बंगाल में जूट श्रमिकों की हड़ताल में लगभग 80,000 लोग शामिल हैं। आर्थिक शोषण के शिकार इन मजदूरों की अहिंसक लडाई में मैं उनके साथ हू। यह सघर्ष उनकी मूलभूत आवश्यकताओं काम और रोटी के लिए है।

इसमे बिल्कुल भी अतिशयोक्ति नहीं है कि अपनी गिरफ्तारी, देश निकाले व बदी रहने के बाद आज आप लोगों के सम्मुख आने पर मुझे राजनीतिज्ञ रिप वैन विन्कल जैसा अनुभव हो रहा है। पुराने सूत्रों को एकत्र करने की दृष्टि से आपको मुझे कुछ समय देना होगा तभी मैं भविष्य के प्रति कुछ निष्कर्ष ले सकूगा। फिर आप मेरे स्वास्थ्य से भी परिचित हैं, मुझे अपने काम पर लौटने से पूर्व कुछ समय चाहिए ताकि मैं अपनी पुरानी शक्ति पुनः प्राप्त कर सकूं। आप मेरे इस बात से भी सहमत होंगे कि इससे पहले कि मैं भविष्य की योजना बनाऊं मुझे सामान्य मुद्दों पर तथा वर्तमान स्थिति पर महात्मा गांधी से आवश्यक बात कर लेनी चाहिए जिनकी ओर आज भी हमारा देश देख रहा है कि वे नेतृत्व की बागडोर संभालें, हमारे अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू व अन्य नेताओं से भी वार्तालाप करना आवश्यक है। अतः आज के ज्वलंत प्रश्नों पर अपनी राय जाहिर करने के लिए मुझे अभी समय अनुकूल नहीं लगता।

पिछले छः वर्षों के दौरान, जो मेरे लिए अनुभवों से भरे थे, मैंने बहुत कुछ सीखा है। मैं वर्तमान सरकार का आभारी हू कि उसने मुझे जबर्दस्ती ऐसे-ऐसे स्थानों पर रखा जहा मैं सामान्यतः जाना पसद न करता, और जहां से मुझे बहुत-सा ज्ञान प्राप्त हुआ। सबसे बडा खजाना जो आज मेरे पास है वह है अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों में मेरी अतर्दृष्टि तथा आधुनिक यूरोप के निर्माता व्यक्तियों से सपर्क। परिणामस्वरूप आज मैं महसूस करता हू कि मानवीय मुद्दों पर और भारत की समस्याओं पर मैं सही ढग से व सही दिशा में सोचने के योग्य हो गया हूं।

भारत की किसी भी विशेष समस्या के विषय में कुछ विचार ऐसे अवश्य होने चाहिए जो उसका मूल आधार बन सकें। हमें यह स्वीकारना चाहिए कि पूरा विश्व एक है तथा भारत का भविष्य शेष आधुनिक विश्व से सबध रखने में ही सुरक्षित है। इसलिए भारतीय आदोलन की नीति और युद्धनीति निर्धारित करने से पूर्व पूरे विश्व की आज और कल की स्थिति का आकलन कर लेना बहुत जरूरी है। दूसरे साम्राज्यवाद, जिस रूप में भी हो, दूसरे लोगों की आजादी का साधन है और आधुनिक विश्व की शांति का दाता है। पश्चिमी यूरोप में लोकतत्र के रूप में और केंद्रीय यूरोप में कट्टरवादी तानाशाही के रूप में किंतु आजादी और शांति के प्रेमी होने के नाते हमें इसका डटकर विरोध

ही करना है।

तीसरे, पूरे विश्व के लिए भारत एक राष्ट्र ही है, अतः यदि हमें अपने लोगों का समर्थन पाना है तो हमें विभिन्न प्रांतों व विभिन्न सम्प्रदायों के लोगों का एक झंडे तले एकत्र होना होगा। विभाजन की प्रवृत्ति, चाहे वह प्रांतीयतावाद हो या साम्प्रदायिकतावाद, को अभिशाप माना जाना चाहिए तथा प्रत्येक जाति व धर्म के स्वतंत्रता प्रेमियों को वृहत सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम के लिए कार्य करना होगा ताकि साम्प्रदायिकता व प्रांतीयता से ऊपर उठा जा सके।

चौथे, हमारी युद्ध नीति ऐसी होनी चाहिए जिसके तहत हम श्रमिकों, कृषकों व मध्यमवर्ग की साम्राज्यवाद विरोधी शक्ति को बढ़ा सकें। देश की सभी गैर-साम्राज्यवादी ताकतों का भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अंतर्गत एकत्र किया जाए ताकि आज की मुख्य आवश्यकता अर्थात हमारी भूखी और गुलाम जनता को आर्थिक स्वतंत्रता दिलाई जा सके। हमारे संघर्ष अहिंसक और असहयोग पूर्ण हों।

यद्यपि मैं आज अपनी भविष्य की कार्य योजना की घोषणा करने की स्थिति में नहीं हूं, फिर भी आप सब को स्पष्ट रूप में बताना चाहूंगा कि भविष्य में मैं अपना समय और शक्ति भारत की समस्याओं के समाधान हेतु लगाना चाहता हूं। हमारी मुक्ति चाहे राजनैतिक क्षेत्र में हो या सामाजिक क्षेत्र में, उस संघर्ष पर निर्भर रहेगी, जो भारत विदेशी अधिकार और साम्राज्यवादी दमन के विरुद्ध करेगा।हमारा कार्य किसी अन्य प्रदेश अथवा प्रांत की अवहेलना कर किसी एक विशेष प्रांत पर अधिक ध्यान देना नहीं है। अखिल भारतीय मुद्दों पर कार्य करते हुए मैं बंगाल के मामलों पर अधिक ध्यान दे सकता हूं, किंतु मैं वैसा करूंगा या नहीं यह कुछ विशेष स्थितियों पर निर्भर करेगा। सर्वप्रथम विभिन्न गुटों के श्रमिकों को व्यर्थ के झगड़ों से बचना होगा और पूर्ववर्ती प्रकार के मतभेदों को भुलाकर एकजुट होना होगा। बंगाल को एक सामान्य सामाजिक आर्थिक कार्यक्रम के आधार पर एकत्र होना होगा जिससे कि न केवल कांग्रेसी गुट एक होंगे बल्कि हिंदू और मुसलमान भी एक हो जाएंगे। यह एकजुटता हमारे पूर्ववर्ती गुटों के मतभेदों की लाश पर खड़ी होगी। दूसरे, बंगाल को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व को ही मानना होगा और किसी भी सिद्धांत या विधि के कारण वर्गीकरण नहीं होगा। तीसरे, बंगाल में कांग्रेस के कार्य को ठीक प्रकार कार्यरूप देने के लिए पर्याप्त धन जुटाना होगा। चौथे, कलकत्ता निगम के प्रति कांग्रेस की नीति। हावड़ा नगर निगम तथा अन्य लोक कार्यालयों का कांग्रेस के तत्वावधान में पिछले पांच या छः वर्षों में पुनः निरीक्षण किया जाना चाहिए। मैं बंगाल कांग्रेस कमेटी का कार्य करूंगा अथवा नहीं यह मेरे राजनीति में सक्रिय रूप से लौटने के बाद ही तय होगा। इस बीच मैं अपने सभी साथियों और मित्रों से कहता हूं कि यदि वे प्रांतीय मामलों में मेरा सहयोग चाहते हैं तो उन्हें बंगाल में कांग्रेस के कार्यक्रम व मशीनरी के पुनर्निर्माण का कार्य करना होगा, जिस पर मैं पर्याप्त प्रकाश डाल चुका हूं।

साथियो, आज की शाम आप लोगों ने मेरे प्रति जो स्नेह और आदर प्रदर्शित किया उसके लिए मैं एक बार फिर आप लोगों का हृदय से आभारी हूं। यह एक अद्वितीय

घटना है जो मुझे सदा याद रहेगी और कठिनाइयों व मुश्किलों के दौरान मुझे प्रेरणा देती रहेगी। मैं आपको इसके बदले में कुछ नही दे सकता, केवल यही दृढ निश्चय दोहरा सकता हू कि मैं अपनी मातृभूमि के राजनैतिक व आर्थिक विकास के लिए मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब न्यौछावर कर दूगा। मेरे देशवासियों की सद्भावनाए और आशीर्वाद व्यर्थ नही जा सकते, अत: मुझे आशा है कि कुछ माह के अंतराल के बाद मुझमे इतनी शक्ति आ जाएगी कि मैं पुन: राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय हो सकूगा। अब मैं आपकी आज्ञा चाहूगा कि मैं लबी अवधि के लिए आराम करने की दृष्टि से कलकत्ता से दूर चला जाऊगा। अपनी वापसी पर मैं भारत की तत्कालीन समस्याओं पर और अपने भविष्य की कार्य योजना पर प्रकाश डालूगा। आज जो कुछ मैंने कहा या अपना मत स्पष्ट किया उसे समझने के पश्चात अब आप लोगो को निर्णय लेना है कि क्या आप मेरी चिर प्रतीक्षित सहयोग की इच्छा को पूर्ण करेंगे।

परिवर्तनशील आदर्शवाद की कमी *

भूतपूर्व मेयर सुभाष बोस के निगम के मामले पर व्यक्त विचार

"शर्म से मेरी गर्दन झुक जाती है।"

आपने मेरी सहायता मागी है। यदि यह सभव होता तो मैं अवश्य करता। किंतु मुझे अपनी असमर्थता का अहसास है। आपको मेरे प्रभाव के विषय मे गलत धारणा है। यदि लोगों से मुझे सहयोग प्राप्त है तो इसका यह अभिप्राय नही कि निगम की चारदीवारी मे भी मुझ सहयोग मिलेगा। अन्यथा पिछले कुछ वर्षों मैं जो घटनाए घटी वे न घटती। सन् 1924 मे देशबधु के नेतृत्व मे काग्रेसी इस दृष्टि से निगम में नही आए थे कि वे उच्चाधिकारियों का वेतन बढाएगे और शेष लोगों को वर्तमान वेतन पर ही रहने देगे। पिछले कुछ नर्षों में भाई-भतीजावाद इतना अधिक बढा है कि शर्म से मरी गर्दन झुक जाती है। यह सब उस सस्था मे हो रहा है जहा काग्रेस का प्रभाव रहा है या होना चाहिए था। कुछ माह पूर्व जब मुख्य अधिशासी अधिकारी ने अवकाश मागा तो उसके साथ जो असाधारण व्यवहार हुआ वह दर्शनीय है। गरीब श्रमिकों की वेतन वृद्धि की माग के विरोध में ये लोग जो तर्क दे रहे हैं वह अधिकारी वर्ग का ही कृत्य है। मानव के रूप में न्याय की इच्छा तथा काग्रेसी के रूप में मेरी आत्मा इसके विरुद्ध विद्रोह करती है किंतु फिलहाल मैं असमर्थ हूं।

अपनी रिहाई के समय से ही मैं निगम की आतरिक कार्य व्यवस्था के लिए चिंतित हू। मुझ तक पहुचने वाली अफवाहों या रिपोर्टों का यदि न्यूनतम प्रतिशत भी सत्य है तो जनता के लिए यह निराशाजनक स्थिति है। मुझे यह देखकर प्रसन्नता है कि वर्तमान मेयर के नियत्रण मे बुराई का एक कोना खत्म हुआ है जिसने निगम के विभागों की कार्यक्षमता को घेर रखा था। किंतु मुझे आशा है कि अभी जितना अधकार शेष हे वह भी धीरे-धीरे छट जाएगा।

*कलकत्ता म्युनिसिपल गजट में 14 अगस्त, 1937 में प्रकाशित पत्र का मसौदा।

एक कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में, जो कुछ भी निगम के अंदर चल रहा है, उसके प्रति मैं भी काफी हद तक जिम्मेदार हूं, इस बात से मैं पूर्ण सहमत हूं। निर्धन कार्यकर्ताओं के प्रति जो अन्याय हुआ है उसके साथ-साथ अन्य कई बातों के लिए भी यह जिम्मेदारी हमारी ठहरती है। निकट भविष्य में हमें इस समस्या का समाधान खोजना होगा। मैं आपको अभी यह नहीं बता सकता कि जब मैं वापस लौटूंगा तब किस प्रकार कार्य करूंगा। हा इतना अवश्य कह सकता हूं कि यदि बंगाल की राजनीति में मुझे कार्य करना है तो कलकत्ता निगम की आगीन स्टेबल्स बिल्कुल साफ करने होंगे अन्यथा कांग्रेस पार्टी को नगर निगम के कार्यों के प्रति अपनी जिम्मेदारी से हाथ खींच लेने होंगे।

मेरे विचार से कलकत्ता निगम में जो कुछ भी चल रहा है वह बंगाल के जन-जीवन का आईना है। हमारे लोगों में एक निष्क्रियता आ गई जो आदर्शवादी शक्ति हमारे पास है वह या तो जेल में बद है या फिर नजरबंद है। जो लोग बाहर हैं वे बेकार समय गंवा रहे हैं। इसीलिए चारों ओर छोटी-छोटी बातों के लिए झगडे हो रहे हैं। असली और गंभीर समस्याओं की ओर किसी का भी ध्यान नही है। इस दलदल से प्रांत को बाहर निकालने के लिए नैतिक उत्थान की आवश्यकता है, आदर्शवाद की आंधी द्वारा, तभी क्षुद्र, व्यर्थ और प्रतिक्रियावाद से छुटकारा मिलेगा। तभी हमारे दिलों में, जीवन में विश्वास, निष्पक्षता और निःस्वार्थ सेवाभाव उत्पन्न होगा। मेरा विश्वास है कि इस पागलपन के दौरे के बाद हम लोगों में जागरूकता की किरण उदित होगी।

भारतीय वास्तुकला और कलकत्ता नगर निगम *

श्री सुभाष चंद्र बोस के विचार

आपके पत्रों के उत्तर देने में हुई देरी के लिए मुझे खेद है, जिसका मुख्य कारण यह था कि मैं आपके उद्देश्यों की प्रतिपूर्ति में स्वयं को असहाय महसूस करता हू। भारतीय वास्तुशिल्प के पुनरुत्थान के विषय में मेरे विचारों से आप भली भांति अवगत हैं। मेरा मानना है कि यह हमारी राष्ट्रीय परंपरा का एक महत्वपूर्ण तत्व है। कला और वास्तुशिल्प हमारे राष्ट्र की आत्मा के प्रतीक है। लोगों की आत्मा जाग्रत होती है तो वह स्वाभाविक रूप से सामने भी आती है। इस दृढ़ विचार की वजह से ही मुझे आपके कार्यों मे दिलचस्पी थी। आपने जिस अनन्त उत्साह और जोश के साथ हृदय में विचारे इस कार्य को संपन्न करने की ठानी है उसकी मैं हृदय से प्रशसा करता हूं और यह प्रार्थना करता हू कि आपके मार्ग मे कितनी ही कठिनाइयां या रुकावटें क्यों न आएं, आपको आशा की एक भी किरण कम न हो यही किरण आपकी सफलता का रहस्य है।

आपके पत्र के विषय में मुझे यह कहना है कि कलकत्ता निगम के लिए यह संभव है कि वह भारतीय वास्तुशिल्प को आगे बढ़ा सके। मैं यह स्पष्ट करना चाहूगा कि यदि मेरा इस सस्था पर थोड़ा भी नियत्रण होता तो मैं अवश्य ही आपके विचारों को क्रिया रूप देता। आप स्वीकार करें या नहीं किंतु सत्य यही है कि इस सस्था पर

* कलकत्ता म्युनिसिपल गजट के 28 अगस्त, 1937 अंक में प्रकाशित पत्र ।

मेरा रत्ती भर भी नियंत्रण नही है। आपको यह बात आश्चर्यजनक लग सकती है कि संस्था मे कांग्रेस का प्रभुत्व है किंतु मेरा इस पर कोई नियत्रण नही है। किंतु यही सत्य है।

मुझे नही मालूम कि क्या वैधानिक कठिनाइयों के कारण, भारतीय वास्तुकला के लिए एक स्थान निश्चित कर पाना संभव होगा अथवा नहीं, क्योंकि निगम किसी को भी एक विशेष प्रकार के वास्तुशिला के लिए बाध्य नहीं कर सकता। वैसे भी निगम परोक्ष रूप में भारतीय शिल्प को प्रोत्साहित नहीं कर सकता। यह तो संभव हो सकता है कि भारतीय वास्तुकला का एक विभाग हो जो लोगों को यह राय दे सके कि उन्हें किस प्रकार का वास्तुशिल्प अपनाना चाहिए। इस विभाग के पास लोगों के उपयोग मे आने वाली पुस्तकें, डिजाइन आदि हों, तथा यह विभाग लोगों में भारतीय वास्तुशिल्प को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रचार का कार्य करे। कलकत्ता के लोगों में भारतीय वास्तुशिल्प को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रदर्शनियों का आयोजन भी किया जा सकता है। और यदि कलकत्ता एक उदाहरण पेश करता है तो अन्य शहर भी उसके नक्शेकदम पर चलेंगे।

किंतु बात तो यह है कि मेरी बात सुनेगा कौन, लोग क्षुद्र झगडों में, महत्वहीन बातों में उलझे हैं और महत्वपूर्ण समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। परिणामस्वरूप मुझे कोई भी आशा नहीं है। आप कह सकते हैं कि इस प्रकार निगम में कांग्रेस पार्टी की उपस्थिति का क्या लाभ है। शायद आपकी राय ठीक हो, और यही बात जब से मैं मुक्त हुआ हू, तभी से मेरे मस्तिष्क को भी आंदोलित कर रही है। अपने सामान्य कार्यक्रम पर वापस आने के पश्चात मैं क्या करूंगा, कुछ कह नहीं सकता। किंतु इस समस्या का समाधान तो देर सबेर करना ही है। तब तक मैं आपको अपनी शुभकामनाए प्रेषित करता हू तथा यह प्रार्थना करता हू कि आप कभी निराश न हों।

यूरोप आज और कल *

आधुनिक राजनीति में विभिन्न देशों को दो वर्गों में विभक्त करने की परपरा है-उनके पास क्या है और क्या नहीं है।जिनके पास कुछ है उनमें ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस आदि हैं जिन्हें वार्सिलेस, ट्रायनन तथा न्यूवेली सधि से लाभ हुआ और अंततः फिर युद्ध से भी लाभान्वित हुए। दूसरी ओर वे देश हैं जिन्हें इन संधियों से हानि हुई और जिनकी कुछ न कुछ शिकायतें बनी हुई हैं। यूरोप में ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस तथा आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य से बने नए राज्य आदि लाभान्वित राज्यों में हैं। दूसरी ओर जर्मनी, इटली, हंगरी, आस्ट्रिया और बुल्गारिया ऐसे राज्य हैं जिन्हें हानि पहुंची है। पिछले युद्ध के दौरान यद्यपि रूस ने अपना बहुत सा क्षेत्र खो दिया था, किंतु अब वह यथास्थिति बनाए रखने को राजी है इसलिए उसे भी लाभान्वित देशों में गिना जाएगा। इटली ने यद्यपि आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के क्षेत्र पर युद्ध के दौरान कब्जा कर लिया था किंतु फिर भी वह हानिग्रस्त क्षेत्र माना जाता है, क्योंकि उसे युद्ध के परिणामस्वरूप बहुत-सा लाभ होने की आशा थी। 1915

* माडर्न रिव्यू के सितंबर 1937 के अंक में प्रकाशित तथा सुभाष चंद्र बोस द्वारा लिखित थ्रू कांग्रेस आईज में पुनःप्रकाशित (किताबिस्तान, इलाहाबाद तथा लंदन, 1938)।

में लदन में हुए गुप्त समझौते के अनुसार इटली को मित्र राष्ट्रों में मिला लिया गया था और उसे विश्वास दिलाया गया था कि दाल्मेशियन कोस्ट जैसे बहुत से क्षेत्र उसे दिए जाएगे लेकिन जो बाद में पीस कान्फ्रेंस द्वारा युगोस्लाविया को सौंप दिए गए। (जिन्हें शाति समझौते में सर्ब, क्रोट्स और स्लोवस राज्य कहा गया)

हानिग्रस्त क्षेत्रों में से बुल्गारिया सबसे शांत राज्य था। अपने निकटवर्ती देशो को वह अपना क्षेत्र गवा बैठा। 1912 के बल्कान युद्ध में और फिर विश्व युद्ध उसके बहुत से क्षेत्र पर रोमानिया, ग्रीक, सर्बिया और फिर युगोस्लाविया का कब्जा हो गया। इन विरोधी ताकतो से घिरे रहने के कारण उसने अपनी हानि पर चुपचाप संतोष कर लिया और सुखद भविष्य की आशा करता रहा। जहा तक प्रचार का संबंध है हगरी आर्थिक क्रियाशील रहा। उसके प्रचारक पूरे यूरोप में घूमे और बडी शक्तियों के बीच अपनी सीमाओ के पुनर्विचार का मुद्दा पेश किया। सैन्यशक्ति की दृष्टि से हंगरी आज बहुत महत्वपूर्ण देश नही है और इसके आधे से अधिक क्षेत्र और जनसंख्या पर आज चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया (पूर्व में साइबेरिया) तथा रोमानिया का अधिकार है।

अभी तक सोवियत रूस को ही सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य माना जा रहा था जो पूरे विश्व को विद्रोह के लिए प्रोत्साहित करता था। किंतु आज वह स्थिति नही है। लेनिन की मृत्यु और ट्राट्स्की के पतन के पश्चात स्टालिन के दिशा-निर्देश के अधीन रूस आज अपनी सीमाओं में रहकर समाजवाद का प्रचार करने मे ही दिलचस्पी ले रहा है। जर्मनी के पुनरुत्थान के परिणामस्वरूप भी इस आस्था को बल मिला है, इसीलिए रूस अब लीग आफ नेशंस का सदस्य बन गया है जिस पर कि पूजीपतियो का आधिपत्य है और जो आज एक नारा-'सबकी सुरक्षा और शाति' के तहत एकजुट हैं । तथा यूरोप में यथास्थिति को अस्थिर न होने देने के प्रति प्रयासरत हैं आज यूरोप मे सबस खतरनाक दो शक्तिया हैं फासिस्ट इटली और नाजी जर्मनी। इनके विरुद्ध हैं-ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत रूस। यूरोप के इस शतरज के बोर्ड पर निरंतर चालें चली जा रही हैं जिससे परिदृश्य लगातार परिवर्तित हो रहा है।

विश्वयुद्ध के पहले शक्ति-सतुलन के माध्यम से यथास्थिति बनाई गई थी। यथास्थिति के समर्थकों का आपसी समझौता था और जो उनके साथ मिलने को तैयार नही थे उनके विरोध में वे एकजुट हो जाते थे। 1919 में लीग आफ नेशस की स्थापना इसी उद्देश्य से हुई थी कि इस गुप्त समझौते का अंत किया जा सके और विश्व को विरोधी शक्तियो के गुटों में विभाजित करने वाली शक्तियों को, जो कि युद्ध की सभावना को कायम रखे हैं, खत्म किया जा सके। इसके स्थान पर नई तकनीक प्रस्तुत की गई जिसमें सभी राष्ट्र लीग के सदस्य होंगे। और 'सामूहिक सुरक्षा तथा शांति' के प्रति जिम्मेदार भी होंगे। किंतु लीग आफ नेशस तथा उसकी नई तकनीक दोनों ही असफल हो गई क्योंकि ऐसे कुछ राष्ट्र हैं जो यथास्थिति कायम रखने में रुचि नही रखते। इनमें से जापान और जर्मनी तो अब लीग आफ नेशस के सदस्य भी नही है और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष अमेरीका तो कभी इसका सदस्य बना भी नहीं।

यूरोप की वर्तमान हलचलों के पीछे क्या अर्थ है। इसे समझने के लिए हमे कट्टरवादी

इटली और नाजी जर्मनी के उद्देश्यों को समझना होगा। 1922 से जब से मुसोलिनी सत्ता मे आया है तभी से इटली विस्तार की सोच रहा है। रोमन सत्ता की पुनर्स्थापना का विचार कर रही है। किंतु जनवरी 1935 तक इटली को स्वय यह मालूम नही था कि उसकी विस्तार की नीति क्या होनी चाहिए। उसे युगोस्लाविया से शिकायत है, जिसने उससे दाल्मेशियन कोस्ट छीन लिया। फ्रास के प्रति उसे गुस्सा था कि उसने सेवाय और नाइस जैसे इटली के क्षेत्रो पर कब्जा कर रखा था तथा उत्तरी अफ्रीका मे ट्यूनीसिया मे जहा अधिकाश आबादी इटलीवासियों की थी तथा भौगोलिक रूप से कोर्सिका पर फ्रास ने कब्जा जमा रखा था। वह ब्रिटेन के भी विरुद्ध थी, क्योंकि उसने इटली के माल्टा क्षेत्र पर कब्जा कर रखा था तथा फ्रास के साथ मिलकर मध्यसागर को ब्रिटिश झील बना रखा था।

इटली और फ्रास के मध्य स्थिति बेहद नाजुक थी जिसके कारण फास व इटली की सीमाओ पर कडी नजर रखी जा रही थी। 1933 मे अचानक नाजीवाद विशाल रूप मे उभरा और यूरोप का दृश्य ही बदल कर रख दिया। फ्रास सहायता और वर्तमान खतर से बचाव के लिए इग्लैंड की ओर दौडा। किंतु ब्रिटेन ने कोई आश्वासन नही दिया शायद उसके अतर मे यह विचार पनप रहा था कि इस उपद्वीप में फ्रास के आधिपत्य पर रोक लगनी चाहिए। शायद वह अतर्राष्ट्रीय विषयों में अपनी परपरागत नीति का अनुपालन कर रहा था। जो भी हो फ्रांस को निराशा ही मिली और नाराजगी में वह इटली और रूस की ओर मुडा। फ्रांस इटली की सीमाओं से अपनी सेना को हटाकर जर्मनी के विरुद्ध लगाना चाहता था तथा जर्मनी के पश्चिमी फ्लाक पर समझौता करना चाहती थी। अत परिणामस्वरूप लावल-मुसोलिनी समझौता और सोवियत-फ्रैंको समझौता हुआ।

जनवरी 1935 के लावल-मुसोलिनी समझौते मे इटली को भविष्य में विस्तार याजना का निर्देश मिला। इटली ने फ्रास से अपने मतभेद दूर कर यूरोप मे अपन क्षेत्र विस्तार का विचार त्याग दिया। इसके बदले में फ्रास ने उसे अफ्रीका में उन्मुक्त कर दिया। फलत· एबीसीनिया पर अनावश्यक और बलात अधिकार हुआ।

एबीसीनिया पर विजय पा लेने के पश्चात मुसोलिनी ने एक भाषण मे यह कहा कि अब इटली एक सतुष्ट शक्ति बन चुका है। एबीसीनिया के अधिग्रहण से ब्रिटेन को लगा कि अफ्रीका में उसके अधीन क्षेत्र पर घुसपैठ की गई है । अत· मुसोलिनी क भाषण के परिणामस्वरूप एग्लो-इटालियन सबधों पर पुनः विचार करना आवश्यक हुआ। फिर भी वह आशा फलीभूत नही हुई यद्यपि ब्रिटेन ने पहले इटली को एबीसीनिया के प्रश्न पर चेतावनी दी, किंतु बाद में मुसोलिनी की अकड़ और ऐंठ के आगे घुटने टेक दिए फिर भी वह अपने अपमान को भूल न पाया। मध्यसागर तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रो मे हुए अपमान को पूरा करने की दृष्टि से ब्रिटेन ने मध्यसागरीय क्षेत्र में अपनी नौसेना और वायुसेना को सुदृढ करना प्रारम्भ किया। सर सैम्युअल होर मध्यसागरीय क्षेत्र के निरीक्षण के लिए गए और वहा जाकर उन्होंने सार्वजनिक रूप से यह घोषणा की कि ब्रिटेन उस क्षेत्र से पीछे नही हटेगा। एथेनी एडन जैसे अन्य मत्रियों ने भी यह घोषणा की कि भूमध्य सागर ब्रिटेन की जीवनरेखा है वह एक शार्टकट नही बल्कि मुख्य मार्ग है।

मध्यसागर मे अपनी स्थिति को बनाए रखने व उसे सुदृढ़ करने के ब्रिटेन के निर्णय से इटली कुपित हो गया क्योंकि इटली का भी यही विचार था कि वह मध्यसागरीय क्षेत्र में अपनी नौसेना और वायुसेना को सुदृढ़ करेगा जो केवल ब्रिटेन के सौजन्य से ही संभव था। *अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि एग्लो इटालियन विवाद इल ड्यूस के आक्षेप* के कारण उत्पन्न नहीं हुआ था और न ही यह सुगमता से समाप्त होने वाला था। इस विवाद का अंत तभी संभव है जब यह सुनिश्चित हो जाए कि मध्यसागर पर किसका प्रभुत्व रहेगा या फिर कोई .शक्ति स्वेच्छा से स्वयं को वापस खींच ले या फिर दोनों शक्तियों में से किसी एक शक्ति की हार हो जाए। नेविल चेंबरलेन और मुसोलिनी के मध्य चाहे जितने भ्रातृत्व भाव का पत्र-व्यवहार हो जाए और दोनों देशो के राजदूत व विदेश मंत्री जितना चाहे हाथ मिला लें, फिर भी राजनैतिक द्वंद्व तो बना रहेगा जब तक कि कारण का समूल नाश नहीं होगा।

मध्यसागर में ब्रिटेन की पुन: दिलचस्पी के उत्तर में इटली ने स्पेनिश सिविल युद्ध में हस्तक्षेप प्रारंभ किया है। यह सोचना और सुझाव देना कि इटली को फ्रांस से सहानुभूति है या वह उसके कट्टरवाद के सिद्धांत का पक्षधर है या कम्युनिज्म का विरोधी है, निरर्थक है। राजनैतिक सहानुभूति संभव हो तब भी वह फ्रांस पर अपना धन और खून केवल इसीलिए लुटा रहा है क्योंकि इसके पीछे युद्धनीति कार्य कर रही है। यही स्थिति जर्मनी की भी है। जो इस बात को नहीं समझते, वे स्पेनिश गृहयुद्ध को ही नही समझ पाए।

पुन:शस्त्रीकरण में उन्नति करने के बावजूद भी ब्रिटेन के मुकाबले में इटली कुछ भी नही। एबीसीनिया युद्ध के पश्चात ब्रिटेन के शस्त्रीकरण के परिणाम स्वरूप इटली की स्थिति कमजोर हुई है। जिब्राल्टर और स्वेज पर नियंत्रण होने की वजह से, यदि इटली से युद्ध हुआ तो ब्रिटेन इटली की सेना को वहीं रोक देगा तथा आर्थिक अवरोध भी पैदा कर सकता है जो बाद में काफी खतरनाक सिद्ध हो सकता है। इटली कच्चे माल का अर्थात कोयला, लोहा, तेल, रूई, कपास आदि का आयात करता है और उसका दो तिहाई समुद्री व्यापार एटलांटिक के द्वारा होता है जबकि 80 प्रतिशत निर्यात मध्यसागर के मार्ग से होता है। उसकी तटीय रेखा लंबी और संवेदनशील है तथा वह अफ्रीकी क्षेत्रों लीबिया, एरीटीरिया तथा एबीसीनिया आदि से संबंध तभी स्थापित कर पाएगा जबकि भूमध्य सागर पर उसका नियंत्रण हो। इन सब कारणों की वजह से यदि ब्रिटेन आर्थिक अवरोध पैदा कर दे और अपने नौसेना केंद्रों माल्या और साइप्रस से आक्रमण कर दे तो इटली के लिए बहुत मुश्किल पैदा हो जाएगी। यहां तक कि वह इटली को समाप्त भी कर सकता है। बदले में वह भी मध्य सागर के मार्ग से होने वाले ब्रिटिश व्यापार पर आक्रमण तो कर सकती है किंतु न तो वह ब्रिटेन पर आक्रमण कर सकता है और न ही ब्रिटेन के कच्चे माल व भोजन के स्रोत को छू सकता है जो कि मध्यसागर क्षेत्र से बाहर है। अत: युद्ध के क्षेत्र में ही भलाई है।

जब तक स्पेन ब्रिटेन के प्रति मैत्री भाव रखता है अथवा निष्पक्ष रहता है तब तक इटली को अपनी असहायता पर ही चुप बैठना होगा। केवल स्पेन की सहायता से ही वह इस कठिन स्थिति से उबर सकता है। स्पेन पर नियंत्रण कर लेने पर ही वह

ब्रिटेन के विरुद्ध सघर्ष कर सकता है। वह जिब्राल्टर को नष्ट कर ब्रिटेन के दोनो मार्ग मध्यसागर व केप मार्ग को बंद कर सकता है। इसके अतिरिक्त वह स्पेन के थल मार्गों को अवरुद्ध कर एटलांटिक की ओर से निर्यात कर सकता है। इसका प्रदर्शन एबीसीनिया मे ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध मे हो चुका है, अतः स्पेन पर नियत्रण होने से या स्पेन की भूमि पर अपने पैर जमा लेने से उसकी स्थिति बदल सकती है और वह अपनी दुर्बल स्थिति की तुलना में अधिक शक्तिशाली हो सकता है, यदि भविष्य मे युद्ध हो तो।

इस प्रकार स्पेन मे इटली ग्रेट ब्रिटेन से ही युद्धरत है। वह फ्रास की इसीलिए सहायता कर रहा है ताकि स्पेन के क्षेत्र पर पैर जमा सके।

इन युद्ध नीतिगत तथ्यों पर विचार करने के पश्चात इस पर आश्चर्य नही करना चाहिए कि इटली फ्रास की सफलता में इतनी रुचि क्यों दिखा रहा है। बल्कि आश्चर्यजनक बात तो यह है कि इग्लैंड में कुछ ऐसे लोग हैं जो फ्रांस से सहानुभूति रखते हैं। ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध युद्धनीतिज्ञ का यूरोप इन आर्म्स मे कहना है कि-

"युद्धनीति के मुताबिक खतरा (ब्रिटेन के पक्ष में) निश्चित है तथा यह जानना कठिन है कि कुछ ब्रिटेन के देशभक्त लोग इतने उत्सुक क्यों हैं कि वे विद्रोहियो की सफलता की कामना कर रहे है।"

सभवतः यह राजनैतिक पूर्वाग्रह (यानी कि समाजवादी व कम्युनिस्टो के प्रति घृणा) के कारण है जिसमे निजी लाभ भी नगण्य हो जाता है।

जो कुछ भी मैंने कहा उसका आशय यह है कि कुल मिलाकर इटली एक सतुष्ट शक्ति है वह भूमध्यसागर में ब्रिटेन के प्रभुत्व की विरोधी है और वह सोचता है कि आने वाले दिनों मे मध्यसागर रोमन झील बन जाएगी। किंतु वह ग्रेट ब्रिटेन से किसी भी कीमत पर युद्ध नही करेगा। स्पेनिश गृहयुद्ध में उसका हस्तक्षेप उसकी दृष्टि मे उचित है क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि फिलहाल बड़ी शक्तियां किसी अतर्राष्ट्रीय युद्ध के लिए तैयार नही हैं। मुसोलिनी इतना बडा कूटनीतिज्ञ है कि वह अपनी या अपने देश की स्थिति को भविष्य में दाव पर लगाना नहीं चाहता। अतः हम इतना तो निश्चित रूप से कह सकते हैं कि यूरोप की शाति भग करने में इटली मुख्य भूमिका नही निभाएगा और तब तक युद्ध में भी नहीं कूदेगा जब तक कि विजय के प्रति पूर्ण आश्वस्त नही होता।

किंतु हिटलर के अधीन जर्मनी के विषय में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है, यद्यपि जर्मन आर्मी के रीकश्वेर की नीति शात और संभलने की है। नाजी जर्मनी वह सपने देख रहा है जो केवल युद्ध द्वारा ही पूर्ण हो सकते हैं। जर्मनी की आर्थिक दशा इतनी खराब हो चुकी है कि विचारकों का मत है कि वह शीघ्र ही घरेलू निराशा को दूर करने के लिए बाहर युद्ध प्रारभ करेगा। जर्मनी के भविष्य के कदम को समझने के लिए हमें अधिक गहन अध्ययन करना पडेगा।

विश्वयुद्ध के बाद से पूरे द्वीप पर फ्रास का आधिपत्य रहा है। जर्मनी को दबाने के बाद भी असतुष्ट रहने पर फ्रास ने अपने चारों और मैत्री का हाथ बढा कर एक

राजनैतिक चारदीवारी खड़ी कर ली है। पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, युगोस्लाविया तथा रोमानिया पर कब्जा कर लिया है। इसके पश्चात उसने तुर्की से अपने संबंध मैत्रीपूर्ण बनाए जो पहले जर्मनी के प्रभाव मे था। जर्मनी असहाय होकर देखता रहा जबकि उसे सभ्य विश्व से राजनैतिक रूप में अलग-थलग किया जाता रहा। इसके प्रत्युत्तर में उसने केवल सोवियत रूस से रेपैलो सधि की।

युद्ध बाद के यूरोप में फ्रांस के आधिपत्य से जर्मनी को धक्का लगा क्योकि 1870 से फ्राको-पर्शियन युद्ध के बाद पूरे क्षेत्र में उसी का आधिपत्य था जिसमे फ्रांस की हार हुई थी। तभी से जर्मनी विभिन्न दिशाओं में अपना विस्तार कर रहा था। यूरोप से बाहर वह उपनिवेशिक विस्तार में लगा था। व्यापार के क्षेत्र में वह ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका के मुकाबले में आ खडी हुई थी। शक्तिशाली नौसेना का विस्तार भी उसने किया जिसे ब्रिटेन सदैव आशका की दृष्टि से देखता था। आस्ट्रिया, बुल्गारिया और तुर्की को भी वह अपने प्रभाव क्षेत्र में ले आया। बर्लिन-बगदाद रेल सेवा की योजना बनाई थी जो ब्रिटेन के पूर्वोत्तर अधिकार के लिए एक धक्का माना जा रहा था। किंतु युद्ध ने इन उपलब्धियो को बर्बाद कर के रख दिया और एक दशक तक जर्मनी को निराशा के अधकार में खो जाना पडा जबकि उसके विचारकों ने दार्शनिक भाव में यह कहा कि पश्चिम का पतन होगा और स्पेंगलर ने अपनी अंटरग्रैंड डेस एबेंडलैंड्स लिखी। इसके पश्चात राष्ट्रीय समाजवाद अथवा नाजी पार्टी के द्वारा एक नई चेतना जाग्रत हुई।

नाजी पार्टी के राजनैतिक मत को एक वाक्य में 'ड्राग नाश ओस्टन' अर्थात 'ड्राइव टू दि ईस्ट'। इस मत का प्रतिपादन सर्वप्रथम मूलर वैन डेन ब्रूक ने अपनी पुस्तक 'दि थर्ड अम्पायर' में किया था। वह 1933 में हिटलर के अधीन थर्ड रीक की स्थापना को नहीं देख पाया क्योंकि 1925 में निराशा के एक दौर में उसने आत्महत्या कर ली थी। उसी के मत को हिटलर ने आगे बढाया और अपनी पुस्तक 'मीन काम्फ' (मेरा संघर्ष) में उसकी चर्चा की, जो उसने 1923 में जेल में लिखी थी। इस मत का निष्कर्ष यह था कि जर्मनी को नौसेना या औपनिवेशिक शक्ति बनने का विचार त्याग देना चाहिए। उसे उपमहाद्वीपीय शक्ति ही बने रहना चाहिए और उसे अपना विस्तार पूर्व दिशा मे उपद्वीप में ही करना चाहिए। युद्ध पूर्व की जर्मनी ने औपनिवेशिक विस्तार का प्रयत्न कर सबसे बडी भूल की थी। जिसके परिणामस्वरूप उसका ब्रिटेन से विवाद शुरू हुआ।

हिटलर द्वारा प्रतिपादित नाजियों का नया सामाजिक दर्शन यह था कि जर्मन जाति को शुद्ध किया जाए और उसको मजबूत बनाया जाए जिसमें उसे यहूदियों के प्रभाव से मुक्त कराना आवश्यक था। नाजियों की विदेशनीति थी 'ब्लड एड सोल' जिसमें उनका आशय था कि वे जर्मन भाषी लोगों को एकत्र करें और जर्मन जाति के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र में जगह बनाई जाए। व्यावहारिक राजनीति में उपर्युक्त उद्देश्यों का अर्थ था (1) आस्ट्रिया* (2)मेमल, जो वह लिथुआनिया से हार चुका था (3) डेंजिग, जो लीग आफ नेशस के अतर्गत एक स्वतत्र शहर बना दिया गया था। (4) चेकोस्लोवाकिया का जर्मन भाषी प्रांत, जिसकी जनसख्या 35 लाख थी (5) पोलिश कारिडोर व सिलेसियन, जो वह पौलैंड से

* यह लिखे जाने तक नाजियों ने आस्ट्रिया से गठबंधन कर लिया था।

हार चुका था, (6) सोवियत यूक्रेन की अनाज उत्पादक भूमि, (7) तथा स्विटजरलैंड इटली के टायरोल तथा अन्य समीपवर्ती क्षेत्रों के जर्मन भाषी क्षेत्रों पर आधिपत्य जमाना था।

मार्च 1935 मे जर्मनी ने वर्सेल्स सधि को मानने से इंकार कर दिया और मार्च 1936 मे रीनलैंड पर कब्जा कर लिया और जब वह बिना किसी द्वंद्व के एनकलस पहुच गया तो यूरोप के राजनीतिज्ञों की सब गणनाए व्यर्थ हो गईं। इन परिस्थितियों में उसके शस्त्रीकरण का केवल एक ही अर्थ था और वह यह था कि वह युद्ध की तैयारी कर रहा है। जर्मनी का शस्त्रीकरण अतर्राष्ट्रीय निरस्त्रीकरण के ताबूत की आखिरी कील साबित हुई और घबरा कर सभी ने शस्त्रीकरण प्रारभ कर दिया। जब चारों ओर विश्व मे युद्ध की इतनी तैयारियां हो रही हैं तो किसी भी दिन कोई भी घटना अतर्राष्ट्रीय सघर्ष का कारण बन सकती है।

अब यह हमे सोचना है कि जर्मनी अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए किस हद तक जा सकती है। किस स्थिति में वह किससे युद्ध शुरू करेगा ?

राजनैतिक भविष्यवाणी करना दुरूह कार्य है किंतु एक बात तो निश्चित है, जर्मनी अपनी पिछली हार से सीखे पाठ को भूला नही है? वह हार सेना की हार नही थी बल्कि आर्थिक हार थी। ब्रिटिश नौसेना ने ही समर्पण के लिए विवश किया था इसलिए इतना निश्चित है कि जर्मनी को यदि यह मालूम होगा कि ब्रिटेन उसके विरुद्ध युद्ध करेगा तो वह कभी इस युद्ध में नही पड़ेगी। सन् 1914 में जर्मनी ने इतनी मूर्खता से काम लिया कि वह अतिम समय तक यह नही समझ पाई कि ब्रिटेन बेल्यिम और फ्रास की ओर से भी आक्रमण कर सकता है। अधिकाश इतिहासकारों का यह मानना है कि यदि ब्रिटेन जर्मनी को अपनी योजनाओं का थोड़ा सा भी अहसास करवा देता तो वह कभी भी आस्ट्रो-सर्बियन विवाद मे न पडता और इस प्रकार विश्वयुद्ध रुक सकता था। कम से कम स्थगित तो हो ही सकता था।

यद्यपि हिटलर ने अपनी पुस्तक 'मीन काम्फ' में फ्रास से अतिम निर्णय करने की बात की है किंतु जब से नाजियों ने सत्ता सभाली है तब से जर्मनी की विदेशनीति मे काफी परिवर्तन आया है। अब जर्मनी फ्रास से अल्सक-लोरेन तथा बेल्यिम से यूपन माल्मडी वापस लेने की इच्छुक नहीं दीखती। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि जर्मनी अब पश्चिमी यूरोप में अपनी सीमाओं के पुनर्निर्धारण की मांग करने की इच्छुक भी नही है। इसका कारण तलाशना कठिन नही, जर्मनी को मालूम है कि फ्रास, बैल्जियम तथा हालैंड पर आक्रमण का अर्थ है कि ब्रिटेन भी युद्ध में कूद पडेगा और इस प्रकार पिछले युद्ध की पुनरावृत्ति ही होगी। इसलिए जर्मनी लगातार पश्चिम समझौते की बात कर रही है ताकि यथास्थिति कायम रखी जा सके। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को यह बात लुभा रही है क्योंकि इससे ब्रिटेन के विरुद्ध सभी द्वंद्वों का सदा के लिए अंत होने की आशा है। इस योजना से जर्मनी अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक लाभ उठाना चाहता है अतः उसकी यह माग है कि ब्रिटेन और फ्रास केंद्रीय व पूर्वी यूरोप में अपने हितों को छोड दे ताकि जर्मनी मुक्त रूप से इस भाग का नक्शा निर्धारित कर सके।

जर्मनी अब तीन दिशाओं में तैयारी कर रहा है। पहला, वह हर प्रकार का पुनरास्त्रीकरण

कर रहा है, दूसरे, वह भोजन तथा अन्य मूलभूत कच्चे माल के क्षेत्र में स्वयं को आत्मनिर्भर करने का प्रयास कर रहा है। (भविष्य में आर्थिक अवरोध की तैयारी के लिए) । यह कार्य पिछले वर्ष जर्मनी की चार वर्षीय योजना के अतर्गत प्रारंभ हुआ था। तीसरे, वह पश्चिमी शक्तियों को इसके लिए तैयार करने में लगी है कि यदि केद्रीय पूर्वी यूरोप में युद्ध शुरू होता है तो वे तटस्थ रहेंगे। जब तक ये सब तैयारिया पूर्ण नही हो जाती तब तक इस बात में शंका ही है कि जर्मनी युद्ध शुरू करेगी।

तटस्थता के प्रति ब्रिटेन पर विजय पाने की दृष्टि से जर्मनी ने उस देश मे वृहत रूप में प्रचार कार्य छेडा और इसमें वह पर्याप्त सफलता भी पा चुकी है। इस कोशिश मे जर्मनी ने कम्युनिज्म का दुरुपयोग भी किया । इससे ब्रिटेन के धनाढ्य वर्ग और मध्य वर्ग के मध्य पनप रही घृणा को और उभरने में सहायता मिली। फ्रैंको-सोवियत समझौता हुआ और नाजियो ने इस बात पर बल दिया कि फ्रांस और ब्रिटेन की मैत्री का अर्थ उस पूर्वी यूरोपीय युद्ध से है जिसमें सोवियत रूस की ओर से युद्ध होगा यद्यपि ब्रिटेन को उस क्षेत्र में कोई रुचि नही थी। इसके साथ-साथ नाजियों ने यह कसम खाई कि वे भूमि के उस भाग को कोई हानि नहीं पहुंचाएगे जिसमें ब्रिटेन की कोई रुचि होगी। इस प्रयत्न का परिणाम यह हुआ कि ब्रिटेन में नाजी समर्थक एक गुट बन गया जो लदन शहर के हाउस आफ लार्ड्स में उनका पक्षधर बना। इसमे सत्तापक्ष के लोग भी थे यद्यपि वे उनके प्रति अन्य कारणों से आकर्षित हुए थे। सामान्यत: यह माना जाता है कि बैंक आफ इग्लैंड का गवर्नर मोंटागू नारमैन, प्रधान नेविले चैंबरलेन तथा विदेश विभाग का भूतपूर्व अधिकारी सर राबर्ट वैनिसीटार्ट आदि सब नाजियों के पक्षधर थे।

इस विषय में कुछ भी कहना जल्दबाजी होगी कि ब्रिटेन की विदेशनीति सीधी रेखा में चलेगी या इधर-उधर भटकती रहेगी जैसा कि अभी तक करती रही है। इस समय ब्रिटेन की जनता की राय बिल्कुल उलझन भरी है। एक तो जैसा कि ऊपर चर्चा थी नाजी पक्ष के लोग हैं जो पश्चिमी समझौता करना चाहते हैं और केंद्रीय तथा पूर्वी यूरोप में कोई वादा करना नहीं चाहते। दूसरे, जर्मन विरोधी कट्टरवादी गुट के लोग हैं जो विसटन चर्चिल के नेतृत्व मे हैं और नाजीवाद के विरोधी हैं और जिनका मत है कि यदि जर्मनी यूरोप में एक बार सर्वोच्च शक्ति बन गया तो वह विदेश मे ब्रिटेन को चेतावनी देने में सक्षम हो सकता है। इसके पक्ष में उनका कहना है कि ब्रिटेन को फ्रास से डरने की आवश्यकता नहीं है और यूरोप से बाहर ब्रिटेन और फ्रास के सबंध और रुचिया एक समान हैं। तीसरे, वह ऐसे समाजवादी और कम्युनिस्ट लोग है जो आदर्श के धरातल पर जर्मन विरोधी हैं और सामान्य रूप से फ्रेंच के पक्षधर हैं।

इस असमजस की स्थिति में ब्रिटिश विदेश कार्यालय एक निश्चित नीति अपना रहा है, वह नीति है फ्रांस को केंद्रीय व पूर्वी यूरोप में अपना हस्तक्षेप रोकने के लिए बाध्य करना। वैनिसीटार्ट की नीति, जिसका अनुपालन अब लार्ड हालीफैक्स भी कर रहे हैं, वह यह है कि जर्मनी को यूरोपीय औपनिवेशिक शक्ति बना कर रखा जाए। इसीलिए ब्रिटेन ने जर्मनी के पुनशस्त्रीकरण को चुपचाप स्वीकार कर लिया और 1935 जून में जर्मनी से नौसैनिक समझौता भी किया। मार्च 1936 में जर्मनी सेना द्वारा रीनलैंड पर कब्जे की बात

को भुलाने की फ्रास को सलाह दी और फ्रास को यह भी कहा कि वह स्पेनिश सरकार की सहायता न करे हालाकि वह अतर्राष्ट्रीय नियमानुसार ऐसा करने को स्वतत्र थी। इसके अतिरिक्त जो लोग राजनीतिक रहस्यो से वाकिफ हैं उनका मानना है कि 1933 मे ब्रिटिश विदेश विभाग ने पोलैंड को नाजी सरकार से समझौता करने के लिए प्रोत्साहित भी किया। (जर्मनी-पोलिश असघर्ष समझौता अगले वर्ष सपन्न हुआ)। उसने बेल्जियम को उत्साहित किया कि वह फ्रास से किया समझौता तोड दे और तटस्थ हो जाए, युगोस्लाविया को इटली व जर्मनी से मैत्री करने को उकसाया। इसके अलावा उसने चेकोस्लोवाकिया मे नाजी पक्षधर हेनलीन पार्टी को उकसाया कि वह समझौता रद्द कर दे जिसमें लिटल एटेंट (चेकोस्लोवाकिया युगोस्लाविया तथा रोमानिया) और बल्कान एटेंटे (युगोस्लाविया, रोमानिया, ग्रीक एव तुर्की) को समाप्त कर दे जो कि फ्रास के प्रभुत्व में हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचना गलत नहीं होगा कि ब्रिटेन का विदेश विभाग कम से कम यूरोप मे तो चुपचाप फ्रास का विरोध कर रहा था और इस महाद्वीप में फ्रास का प्रभुत्व व्हाइट हाल को अच्छा नही लग रहा था। शायद इसी वजह से फ्रासीसी राजनीतिज्ञ ग्रेट ब्रिटेन से बहुत नाराज थे और लवल ने इटली, सोवियत रूस से ब्रिटेन के बिना ही समझौता कर लिया। वस्तुत: एक दृष्टि से लवल की विदेशनीति को ब्रिटेन विरोधी कहा जा सकता है। किंतु फ्रासीसी राजनीतिज्ञो ने अधाधुध ब्रिटेन के विदेश विभाग की नीति का अनुपालन किया और उनका मानना था कि फ्रास और ब्रिटेन को हर हाल में एक दूसरे का साथ देना चाहिए।

फिलहाल जर्मनी का विदेश विभाग आक्रामक भूमिका निभा रहा है जबकि फ्रास उसकी गतिविधियो का जवाब देने मे व्यस्त है। ब्रिटेन से बाहर बेल्जियम मे नाजी पूर्णत: सफल हैं। बेल्यिम में एक नाजी पक्षधर गुट (द रैक्सिस्ट) उभरा है और जिसने बेल्जियम के फ्लेमिश भाषी लोगों में पर्याप्त प्रचार किया है। बेल्जियम सरकार ने फ्रास से किए समझौते को तोड दिया है और भविष्य मे यदि कभी केंद्रीय या पूर्वी यूरोप म युद्ध छिडा तो वह तटस्थ रहेगा। 1933 से जब से नाजी सत्ता में आए हैं तब से सोवियत रूस के साथ हुआ रापालो समझौता व्यर्थ हो चुका है किंतु जर्मनी को सात्वना देने के उद्देश्य से नाजी सरकार ने पोलैंड के साथ असघर्ष समझौता कर लिया है। इस समझौत से पोलैंड मे फ्रास का प्रभुत्व कम हुआ है। पिछले वर्ष फ्रास ने पोलैंड में अपने प्रभुत्व को कायम करने का बहुत प्रयास किया। इस सदर्भ मे दोनों ओर से कई यात्राए भी हुईं। किंतु यह स्पष्ट है कि अब पुनः फ्रैंको-पोलिश समझौता सभव नही है तथा भविष्य मे पोलैंड स्वतत्र विदशनीति अपनाएगा। वह नीति है कि यदि फ्रास व जर्मनी का या रूस व जर्मनी का सघर्ष हुआ तो पोलैंड तटस्थ रहेगा।

उपर्युक्त गतिविधियों के अलावा, जर्मनी, फ्रास को कमजोर करने म अति व्यस्त है और इसके लिए वह लिटल एटेंट बल्कान एटेंटे को रद्द कर स्पेन के क्षत्र म अपन पैर जमान में लगा है। कई समझौतो व मैत्रीपूर्ण सबधों के कारण फ्रास की स्थिति काफी सुदृढ है और जब तक यह स्थिति रहती है तब तक वह केंद्र व पूर्वी यूरोप मे हस्तक्षेप करना बद नही करेगा। वह भी सोवियत विदेश मत्री लितिविनोव की भाति इसी बात पर

बल देगा कि शांति अति आवश्यक है अतः सबको सुरक्षा की दृष्टि से यूरोप एकजुट होना चाहिए जो कि लीग आफ नेशस के अंतर्गत सभी देशों में एकत्र होने से सभव है। यदि इसमें असफल रहते हैं तो पश्चिमी समझौते के अतिरिक्त एक अन्य समझौता होना चाहिए जिसमें केंद्रीय पूर्वी यूरोप की शांति की गारंटी सुनिश्चित हो। इसके लिए जर्मनी तैयार नहीं और न ही तैयार होगा।

फ्रास ने चेकोस्लोवाकिया और सोवियत रूस के साथ सैन्य समझौता कर स्वय को सुरक्षित कर लिया है। दोनों देशों का आपस में सैन्य समझौता पहले ही था। परिणामस्वरूप किसी भी प्रकार की अंतर्राष्ट्रीय आपदा में ये तीनों देश एक होगे। चेकोस्लोवाकिया का भी अन्य लिटिल एंटेंटे के देशो युगोस्लाविया और रोमानिया से आपसी समझौता है और युगोस्लाविया और रोमानिया का बल्कान एंटेटे के देशो ग्रीक व तुर्की से समझौता है। जर्मनी को आशा है कि युगोस्लाविया और रोमानिया को मना लेने से वह केंद्रीय यूरोप में चेकोस्लोवाकिया को अलग-थलग करने मे सफल हो जाएगी क्योंकि चेकोस्लोवाकिया तक रूसी मदद पहुंचाने के मार्ग रोमानिया या पोलैंड द्वारा होकर ही है। असघर्ष समझौते के कारण जर्मनी के लिए पोलैंड की ओर से वैसे भी खतरा नही है। ब्रिटेन के द्वारा वह फ्रांस को विश्वास दिलाना चाहता है कि सोवियत रूस अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। अतः फ्रास को फ्रैंको-सोवियत समझौते के सैनिक मुद्दे पर अधिक विचार करना आवश्यक नही है। हाल ही में रूस के आठ सेना जनरलों की हत्या से धनिक वर्ग को शक्ति मिली है और वे लोग यह दुष्प्रचार कर रहे हैं कि सोवियत सैनिक शक्ति में अनुशासनहीनता है और युद्ध की स्थिति में उस पर विश्वास नही किया जा सकता। अंतिम रूप से जर्मनी का यह प्रयास है कि वह अपने स्पेनिश क्षेत्र में अपने पैर जमा ले ताकि जब कभी भविष्य में फ्रास से युद्ध हो तो वह उत्तरी अफ्रीका से उसके सचार को अवरुद्ध कर उसकी पीठ मे छुरा भोंक सके। क्योंकि वहीं से हमेशा फ्रांस को सेना और सामग्री प्राप्त हुई है। जब-जब भी यूरोप में युद्ध हुआ है जर्मनी को आशा है कि ब्रिटेन के विदेश विभाग द्वारा दबाव डलवाकर वह फ्रास को कमजोर कर सकेगी और अततः पश्चिमी समझौते के लिए तैयार कर लेगी और जर्मनी को केंद्रीय व पूर्वी यूरोप मे निश्चितता प्राप्त हो जाएगी। यदि फ्रास इसके लिए तैयार नही होता और अततः रूस की ओर से जर्मनी के विरुद्ध युद्ध करता है तो वह स्वय को 1914 की ही भांति असहाय महसूस करेगा।

किंतु क्या फ्रास जर्मनी को योजनाएं सफल होने देगा? निस्सदेह नही। ब्रिटेन के लिए यह बात महत्वहीन है कि फ्रास या जर्मनी में से किस देश का महाद्वीप पर प्रभुत्व रहता है, क्योंकि उसकी रुचि यूरोप से बाहर है। किंतु ब्रिटेन की भांति फ्रास यूरोप पर किसका स्वामित्व हो इस विचार को त्याग नहीं सकता क्योंकि वह औपनिवेशिक शक्ति के साथ-साथ उपमहाद्वीपीय शक्ति भी है। फ्रास केवल शक्ति और सम्मान के लिए सघर्षरत नहीं है बल्कि अपनी सुरक्षा के प्रति भी सचेत है। वह 1870 की दुखद हार को भुला नही पाया है। उसकी जनसख्या कम है और जर्मनी की तुलना में दो तिहाई है, और वहा की जनसख्या अभी भी बढ़ोत्तरी पर है। परिणामतः फ्रांस को जर्मनी के आक्रमण का भय है किंतु ब्रिटेन के साथ ऐसा नहीं है जब तक कि एग्लो- जर्मन जलसेना समझौते क तहत जर्मनी जलसेना निर्धारित सीमाओं से परे रहती है। कुल मिलाकर फ्रास में जर्मनी

के उद्देश्यो व लक्ष्यो के प्रति एक अविश्वास व्याप्त है जिसकी चर्चा हिटलर की पुस्तक 'माई स्टोरी' में भी हुआ है। लेखक ने स्पष्ट रूप में लिखा है कि फ्रास के दक्षिणपथी जर्मनी से घृणा करते हैं और वामपथी हिटलर से घृणा करते हैं। इन परिस्थितियो मे इस बात पर विश्वास करना कठिन है कि फ्रास अपनी मैत्री केंद्रीय या पूर्वी यूरोप से समाप्त करेगा कम से कम तब तक जब तक कि नाजी पार्टी सत्ता मे रहती है।

स्पेनिश गृहयुद्ध का मुद्दा तुला पर लटका है और अभी यह बताना कठिन है कि जर्मन राजनीति वहा कितनी सफल हो पाती है। किंतु केद्रीय और पूर्वी यूरोप मे तो वह काफी आगे बढ चुकी है। रोमानिया मे राजा और उसका पूरा मंत्रीमंडल जर्मनी के पक्ष मे है और वहा के भूतपूर्व विदेश मत्री फ्रेंकोफिले का प्रभाव काफी कम हो चुका है। वहां आयरन गार्ड नाम की एटी सीमीटिक प्रोन्नाजी पार्टी है जिसका नेतृत्व गोडरीनू कर रहे हैं और जो पूर्ण रूप से सरकार के साथ हैं। युगोस्लाविया मे प्रधानमत्री स्टोयडिनोविच नाजी पक्ष के हैं, उनकी सरकार भी नाजी पक्षधर है। जबकि राजसी परिवार ब्रिटेन के प्रभाव मे है। यूनान के प्रधान जनरल मैयक्सास, जो स्वय को तानाशाह मानते हैं, निस्सदेह जर्मनी के प्रभाव में हैं। जर्मनी के लिए ग्रीक का बहुत महत्व है क्योकि रूसी सेना काले सागर से डार्डनेल के मार्ग से मध्यसागर मे प्रवेश करेगी और उस पर ग्रेसियन उपद्वीप के सैन्य ठिकाने से आक्रमण किया जा सकता है। फिर हगरी और बुल्गारिया जैसे शात प्रदेशों द्वारा भी जर्मनी को सहायता देने की आशा है, यदि उन्हें अपने राष्ट्रों की शिकायतो के हल खोजने के आसार नजर आए तो। अत: स्पष्ट है कि जर्मनी ने फ्रास पर बल्कान पेनिनसुला द्वारा आधिपत्य जमा लिया है अब केवल व्यापारिक जाल फैला रहा है।

किंतु अतर्राष्ट्रीय राजनीति में अंतिमरूप से कुछ भी कहना असभव है। फ्रास जर्मनी के पदचिह्नो पर चल रहा है। यह कहना कठिन है कि ग्रीक में मैटाक्सास की सरकार और युगोस्लाविया मे स्टोयाडिनोविच की सरकारें कब तक चलती हैं। रोमानिया मे फ्रास की पक्षधर पार्टी, यद्यपि अभी वह सत्ता में नहीं है, को नकारा नहीं जा सकता और बल्कान का विचार भी परिवर्तित होता रहता है। जर्मनी स्वय पर दया करती है क्योकि आधुनिक यूरोप के एक महान राजनीतिज्ञ चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपति एडवर्ड बेनेस हैं।

दिन प्रतिदिन दृश्य परिवर्तित होता रहता है और राजनैतिक भविष्यवाणी करना कठिन कार्य है। एक बात निश्चित है यदि युद्ध होता है तो उसका कारण केवल यह होगा कि केंद्रीय व पूर्वी यूरोप में यथास्थिति को जर्मनी ने चेतावनी दी है। किंतु क्या यह होगा? इसका उत्तर ब्रिटेन के पास है। जर्मनी 1914 की गलती को दोहराकर युद्ध मे रत नहीं होगी यदि उसे यह मालूम होगा कि ब्रिटेन उसके विरुद्ध युद्ध करेगा। किंतु 1914 की भाति वह यह सोचकर कि ब्रिटेन इससे अलग रहेगा वह पुन: उस स्थिति मे पड सकता है। यदि केंद्रीय व पूर्वी यूरोप में फ्रास और ब्रिटेन अपने आपको तटस्थ रखते हैं तो यूरोप मे युद्ध प्रारभ होगा, क्योंकि सूर्य पूर्व से उगता है, और जर्मनी इसके लिए यदि तत्पर हो जाता है तो, यदि फ्रांस सोवियत रूस से मिल जाता है और ब्रिटेन तटस्थ रहता है। तब भी युद्ध होगा यद्यपि उसका निष्कर्ष सन्देहास्पद होगा।

यदि फ्रास विजयी होता है तो वह जीत इटली और जर्मनी की होगी और मध्यसागर में ब्रिटिश आधिपत्य की समाप्ति हो जाएगी तथा फ्रास के लिए आगामी वर्ष कठिनाइयों से युक्त होंगे। किंतु रूसी प्रतिभा सदा ही रहस्य रही है। इसने यूरोपीय विजेता नेपोलियन को भी उलझन में डाले रखा है। क्या हिटलर को भी उलझाएगी?

डलहौजी
21 अगस्त, 1937

बिजय कुमार बासु

श्री बी.के. बासु की मृत्यु से हम सभी को गहरा सदमा लगा है। यद्यपि वे पिछले कुछ दिनों से काफी अस्वस्थ चल रहे थे किंतु किसी ने स्वप्न मे भी यह नही सोचा था कि वह अचानक हमें यू छोडकर चले जाएगे।

श्री बासु काग्रेसी नही थे। हमारी घनिष्ठता के बावजूद राजनैतिक रूप में हम लोग बिल्कुल अलग-थलग थे। और प्राय· जैसा कि इस देश में होता है, राजनैतिक मतभेद सामाजिक सबधो को भी प्रभावित करते हैं। किंतु मैं बिना किसी झिझक के यह कह सकता हू कि उन्हें हर क्षेत्र में पर्याप्त इज्जत प्राप्त थी। यह श्रद्धा केवल उनके तीखे व्यवहार या उनकी सदाशयता के कारण नहीं थी।उनका एक चरित्र था। सही या गलत उनके कुछ सिद्धात थे और मध्यमार्गी होने के नाते वे बहुत ईमानदार थे। इसके अलावा वे बहुत योग्य भी थे। यही कारण था कि भारत सरकार समय-समय पर कलकत्ता नगर निगम मे उनकी सेवाएं लेती रहती थी। राज्य की कौंसिल में प्रांतीय सरकार में तथा जनेवा में भी उनकी सेवाए सरकार ने ली। उनका निर्णय ठोस होता था और उनके विचार सबको समायोजित करने वाले थे। इसीलिए वे हर खेमे में अपने मित्र बना लेने मे सक्षम थे। जब भी कोई निर्णय लेते तो पूर्णतः भरोसे के योग्य होते थे। नगर निगम मे भी वे काफी लोकप्रिय सिद्ध हुए। नही तो वह एक से अधिक बार मुख्यपौर व कलकत्ता के मेयर नही चुने जाते।

श्री बासु कठोर परिश्रमी थे। जो भी कार्य उन्होंने हाथ मे लिया उसे उन्होने यथाशक्तिपूर्ण किया। हम लोगों की हार्दिक इच्छा थी कि वे कांग्रेस में शामिल हों, क्योंकि यदि वे इसने शामिल हो जाते तो पार्टी के लिए बहुमूल्य व्यक्ति सिद्ध होते। उनका कोई भी शत्रु नही था किंतु उनकी मृत्यु ने अनत लोगों को दुख पहुचाया है।

इस सबके अलावा वे एक सज्जन पुरुष थे। आज विश्व को उन जैसे अनेकों सज्जनो की आवश्यकता है।

उनकी मृत्यु के समय में आइए हम लोग उनकी याद में मौन रह कर उन्हें श्रद्धाजलि दें। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह उनकी आत्मा को शांति दे।

4 सितबर, 1937

पूर्वोत्तर में जापान की भूमिका *

यदा कदा हम अपने दैनिक समाचार-पत्रो में यह पढते रहते हैं कि चीन और जापान मे सघर्ष चल रहा है। कुछ लोग उन समाचारों पर एक निगाह डाल छोड देते हैं कि इतनी दूर घट रही घटनाओं का हम भारतवासियों से क्या लेना-देना। अन्य लोग रोजमर्रा की घटनाओं की भाति उन्हें पढ कर छोड देते हैं। किंतु मुझे आश्चर्य होता है कि हममें से कितने कम लोगो को उन रिपोर्टों में रुचि है।

जापानी जाति का यह उपद्वीप घनी आबादी का क्षेत्र है। लगभग सात करोड आबादी को उन्हे सभालना है जिसके परिणामस्वरूप वहां अत्यधिक भीड है और भूमि पर बहुत बोझ हैं। किंतु कठिनाई केवल इतनी ही नही है। एक वर्गमील में 100 लोग चीन में रहते हैं और जापान में 313 लोग हैं। जापान में जन्मदर ब्रिटेन की तुलना मे दोगुनी है। अत: जापान को अपने बच्चों के लिए अधिक भूमि और विकासशील उद्योगो के लिए अधिक कच्चे माल की तथा तैयार माल के लिए अधिक बाजार की आवश्यकता है। कोई भी राष्ट्र उसे ये तीनों वस्तुएं उपहार में नहीं देगा, अत: वह शक्ति का प्रयोग करेगा। जापान के पास इस समस्या को हल करने का एक मार्ग यह भी है कि वह जनसख्या पर नियत्रण करे। जन्मदर पर नियत्रण करे और अपने स्रोतों पर निर्भर करे। किंतु यह हल उसे पसद नही है। संक्षेप मे यह जापानी औपनिवेशिक विस्तार का रेसन डि'टेर हैं।

चीन, रूस, ब्रिटेन और अमरीका के विरोध में ही जापान का विस्तार हागा। यदि वह एशिया के मुख्य क्षेत्र में अपना विस्तार करने का प्रयास करेगा तो उसे चीन और रूस के गुस्से का सामना करना पडेगा। यदि वह दक्षिण की ओर अर्थात फिलीपीन उपमहाद्वीप और आस्ट्रेलिया की ओर अपना विस्तार करता है तो अमरीका अथवा ग्रेट ब्रिटेन से विवाद खडा होने की संभावना है। जहां तक अंदाजा लगाया जा सकता है उससे तो यह लगता है कि जापान पहले मार्ग का ही चुनाव करेगा और वह लेफ्टिनेंट कमाडर इशीमारू द्वारा लिखी पुस्तक 'जापान मस्ट फाइट इग्लैंड' में की गई अपील पर ध्यान नहीं देगा जिसमे उन्होंने सुझाया है कि उसे चीन, रूस व अमरीका से मैत्री रखनी चाहिए और इग्लैंड से युद्ध करने को तैयारी करनी चाहिए। एशिया की मुख्यभूमि पर जहा जापान की दृष्टि जा सकती है वह या तो रूस की भूमि है और या फिर चीन की। रूस से युद्ध जापान को भारी पडेगा, क्योंकि सोवियत सत्ता के अधीन रूस पूर्ण रूप से जागरूक हो चुका है। अब उसके पास प्रथम श्रेणी की सैन्यशक्ति है जो यूरोप में तथा पूर्वोत्तर तक फैली है।

अत: जापान को अपने विस्तार की इच्छा को सतुष्ट करने के लिए चीन पर ही बोझ डालना होगा। यद्यपि यह विस्तार चीन के बलबूते पर होगा फिर भी इसमें रूस का विरोध सहना ही पड़ेगा, कारण की व्याख्या नीचे की जाएगी। जहा तक ब्रिटेन का सवाल है वह एशियाई उपद्वीप में जापान के विस्तार से कितना भी नाखुश क्यों न हो,

* माडर्न रिव्यू में अक्टूबर 1937 में प्रकाशित और 'सुभाष चंद्र बोस थ्रू कांग्रेस आईज (किताबिस्तान इलाहाबाद और लदन में 1939) में पुनर्प्रकाशित।

वह षड्यंत्र करता रहेगा, वह जानता है कि दक्षिण क्षेत्र में विस्तार से जापान का उसके साथ विवाद निश्चित है। वर्तमान स्थिति मे अमेरीका पूर्वोत्तर क्षेत्र मे अपने लाभ के लिए जापान से युद्ध कदापि नहीं करेगा।

एशियाई देश होने के कारण तथा महाद्वीप के निकट होने से जापान के लिए यह स्वाभाविक ही है कि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एशिया को मुख्य भूमि की ओर ताकेगा। यहा उसे सेलेस्टियल एपायर की जगह अब वहां अनेकीकृत व अव्यवस्थित चीन दिखाई दे रहा है। वहा पर जापान की अपेक्षा प्राकृतिक सपदा भी अधिक है। अनत विस्तार, प्राकृतिक सपदाए तथा चीन की आंतरिक दुर्बलता जापान को इस ओर आकर्षित करने के पर्याप्त कारण हैं।

दो एशियाई देशो का यह सघर्ष चालीस वर्ष पुराना है। पिछली सदी के अत में यह विवाद प्रारभ हुआ था। तब से लेकर अब तक जापान ने अपना प्रशासन तत्र आधुनिक कर लिया है, आधुनिक विधिया अपना ली है तथा उसके पास युद्ध के भी आधुनिकतम साधन उपलब्ध हैं। उसने यह देख लिया है कि यूरोपीय महान शक्तिया चीन का शोषण कर स्वय को सुदृढ़ बना रही है तो फिर जापान, जो कि उसका निकटतम पडोसी है वह यह सब क्यो न करे और पूर्व की सपदा को पश्चिमी शक्तियो द्वारा खींच ले जाने पर रोक क्यों न लगाए? यह तर्क जापान को विस्तार करने के लिए प्रेरित करता है।

पिछले चालीस वर्षों में, जापान ने कोई ऐसा क्षण नहीं खोया है कि जब कि चीनी सरकार में सुविधाए प्राप्त न की हो, इस बीच वह धीरे-धीरे पाश्चात्य शोषण करने वाली शक्तियों के प्रभाव को कम करने में भी लगा रहा है। उसके सबमे बड़े शत्रु रूस, ब्रिटेन, अमेरीका और जर्मनी थे। 1904-1905 के रूस-जापान युद्ध मे उसने जारशाही सत्ता को मात दी थी। विश्वयुद्ध के दौरान उसने चीनी नक्शे पर से जर्मनी को बिल्कुल हटाकर रख दिया था। किंतु अभी तक वह ब्रिटेन और अमेरीका का मुकाबला नहीं कर पाया है। इस बीच रूस जो कि एक बार मात खा चुका है, पुनः सोवियत स्टेट के रूप में नई सैन्य शक्ति के साथ उभरा है।

उन्नीसवी सदी के अत से चीन का पृथक्करण प्रारंभ हो गया था। ब्रिटेन, रूस, जर्मन जैसी यूरोपीय शक्तियो व अमेरीका ने चीन पर दबाव डाला और सधि बंदरगाहो जैसे हागकाग व शघाई आदि प्राप्त की जिससे चीन के क्षेत्र को हडप लिया। पिछली सदी के अंत से पहले, जापान पुनः उभरा और चीन के साथ उसने पाश्चात्य रणनीति अपनाई।

चीन के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में स्थिति फोरमोसा उपद्वीप पर जापान ने 1904-1905 के युद्ध मे कब्जा कर लिया था। उसी समय जापान ने चीनी पूर्वी रेलवे के क्वातुग रेलवे पर भी कब्जा किया जो मंचूरिया से गुजरता था जिससे दक्षिणी मचूरिया जापानी प्रभुत्व का क्षेत्र बन गया। 1910 में जापान ने कोरिया, जो कि पहले चीन के अधिपत्य में था, को भी हथिया लिया यह बात बहुत दिलचस्प है कि 1894 में चीन के साथ हुए युद्ध मे जापान ने अपनी स्वतत्रता पर विशेष बल दिया। विश्वयुद्ध के दौरा जापान ने जर्मनी

से युद्ध की घोषणा कर दी और तत्काल त्सिंगताओ तथा अन्य जर्मन अधिकार के क्षत्रो शान्तुग पेनिनसुला पर कब्जा कर लिया। 1915 में जब उसने देखा कि सभी पाश्चात्य शक्तिया युद्ध में लिप्त हैं तो जापान ने चीन के सामने 21 मांगें रखी तथा उससे अनेको सुविधाएं प्राप्त कर ली। युद्ध के पश्चात जापान को भूतपूर्व जर्मन पैसिफिक उपमहाद्वीप स्वय ही प्राप्त हो गया जिसकी सबसे अधिक महत्ता इसलिए थी कि वह यूनाइटेड स्टेट्स से लेकर- फिलिपीस उपमहाद्वीप का सीधा समुद्री मार्ग था।

फिर कुछ समय के लिए जापान के विस्तार कार्यक्रम मे कुछ रुकावट आ गई क्योकि जापान चाहता था कि जो क्षेत्र उसने हथिया लिए हैं उन्हें पूरी तरह अपने नियत्रण मे कर ले। 1931 मे पुन: गतिविधिया शुरू हुईं जब उसने मनचुकुओं (मचूरिया) पर, जो कि पहले चीन के अधिपत्य मे था, कब्जा कर लिया। बाद में इसे स्वतंत्र राज्य का दर्जा दे दिया गया था जैसे 1895 मे कोरिया को आजाद कर दिया गया था। 1941 से प्रारभ हुए इस विस्तार कार्यक्रम की स्पष्ट झलक आज के प्रसिद्ध बल्कि खूखार 1928 के तनाका ज्ञापन में देखी जा सकती है। जिसमें एशियाई भू-भाग पर जापान की भविष्य की विस्तार योजनाओ की साफ-साफ चर्चा है। इस ऐतिहासिक सर्वेक्षण से एक बात तो स्पष्ट है कि हमारे इस ग्रह पर जापान का पैर फैलाने का निश्चय अटल है। बाह्य परिस्थितिया इस विस्तार कार्यक्रम को प्रभावित नही करेगी जयादा से ज्यादा वे इसकी गति व दिशा का निर्धारण कर सकती हैं।

1931 के पश्चात जापान की आतरिक अर्थ-व्यवस्था के वैज्ञानिक परीक्षण से जापान की सैन्य शक्ति का स्पष्ट आकलन किया जा सकता है। उसकी बढती आबादी को देखत हुए उसे, अधिक भूमि की आवश्यकता है, इस बात को आसानी से समझा जा सकता है क्योकि उसकी वर्तमान जनसख्या के लिए फिलहाल उसके पास जो भू-भाग है, वह अपर्याप्त है। उसके औद्योगिक सिस्टम को देखने से पता लगता है कि उसे रूई, कपास, लुगदी, लोहा, तेल आदि सब कच्चा सामान बहुत दूर से मगाना पडता है। औद्योगिक विकास व जनसख्या विकास के साथ-साथ उसे भू-विकास की बहुत आवश्यकता है। इतनी जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसे- कच्चे सामान की नियमित सप्लाई की आवश्यकता है। उद्योगों के विस्तार के लिए नए बाजार की भी आवश्यकतता है।

अत. ये सब आवश्यकता पूरी कैसे हो? क्या चीन अपने वायदे के मुताबिक जापान के लिए भूमि त्याग देगा? क्या वह जापान को अपने कच्चे माल के ससाधनो का व अपने बाजार का दुरूपयोग करने की छूट दे देगा? कदापि नही। राष्ट्रीय सम्मान व अपने हित मार्ग मे आ जाएगे। फिर यूरोपीय शक्ति और अमेरीका भी जापान को चीनी ससाधनो और बाजार पर आधिपत्य जमाने की अनुमति नही देंगे। वे अत तक चीन के लिए खुले बाजार की नीति का आग्रह करेगे जिसके तहत सभी शक्तिया चीनी ससाधनो का इस्तेमाल करने को स्वतत्र हैं। अत: जापान को शक्ति के बल पर चीनी क्षेत्र पर कब्जा करना होगा। यह काम वह चरणों मे कर रहा है, धीरे-धीरे एक-एक कौर खा रहा है और उसे हजम करने का समय भी लेता है। प्रत्येक आक्रमण निश्चित सीमाओं मे, सुनियोजित ढग से होता है जिससे जापान का कब्जा बढता है। नीतिया बढी हैं, चाह उन्हे भारत,

एबीसीनिया में अथवा पूर्वोत्तर में मंचूरिया प्रात पर ही क्यो न देखे।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में जापान की साम्राज्यवादी आवश्यकताओ और मार्गों की प्रति पूर्ति केवल एक ही दशा में सभव है कि वह चीन पर अपना राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित कर ले। इसके लिए उसे गोरी जाति को वहां से निकालना होगा और खुले मार्ग की नीति को रद्द करना होगा। समय-समय पर उसके राजनीतिज्ञ बहुत कुछ बोलते रहते हैं। जापान के प्रवक्ताओं ने प्राय: कहा है कि उसकी पूर्वोत्तर क्षेत्र में विशेष रुचि है, जिसकी तुलना अन्य पाश्चात्य शक्तियों से नही की जा सकती, जापान वहा अपनी सत्ता कायम करना चाहता है। आर्थिक उद्देश्यो के अतिरिक्त जापानी वहां अपनी सत्ता कायम करना चाहते हैं और इस प्रकार अविजित जाति के रूप में स्वयं को स्थापित करना चाहता है। बाहरी क्षेत्र मे अपनी सत्ता कायम करने की योग्यता के कारण जापानी समाज के कट्टरवादियो की चढ़ बनी।

यदि चीन स्वय को राजनैतिक और आर्थिक अधिराजत्व के लिए मना लेता है या जापान का सरक्षण प्राप्त कर लेता है तो सिनो-जापानी सघर्ष तत्काल समाप्त हो सकता है। इसी प्रयास में जापान के महानतम राजनीतिज्ञ हिरोता पिछले तीन वर्ष से लगे हैं। उनके भाषण सुलह-समझौते के भाषण हैं जिनमें निरतर सिनो-जापानी सहयोग की अपील की गई है। इस सहयोग का उद्देश्य क्या है? निश्चय ही जापान को सुदृढ़ करना तथा चीन को धीरे-धीरे गुलाम बनाना। इस सत्य को नकारा नही जा सकता क्योंकि उनका नारा है-'कम्युनिज्म के खिलाफ सहयोग द्वारा मिलकर बचाव'। यह नारा जापान के उद्देश्यो को ही जामा नही पहनाता बल्कि जापान, चीन या अन्य कही के भी समाजवाद विरोधी तत्वों को सुलह का मार्ग दिखाता है। अत: भारतीय समाचार-पत्रो ने 7 अगस्त, 1937 में हिरोता की विदेश नीति की निम्न व्याख्या की है–

'एम.हिराता ने, जापान द्वारा चीन की जो मुख्य सिफारिश की है, कम्युनिज्म के खिलाफ सहयोग द्वारा आत्मरक्षा, की चर्चा हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्ज में की और कहा कि उन्हें विश्वास है कि सिनो-जापान का सहयोग तभी सभव है यदि चीन के उग्रवादी तत्वों, विशेष रूप से कम्युनिस्टों पर प्रभावी रूप से नियत्रण पाया जाए। उन्होंने आगे कहा कि वह उत्तरी चीन के विवाद को समाप्त करना चाहते हैं तथा साथ ही साथ सिनो-जापानी सबधों को मूलरूप से पुन: स्थापित करना भी चाहते हैं।'

इसी प्रकार की भाषा में इसी प्रकार की अपील कुछ वर्ष पहले भी की गई थी जब हिरोता जापान के विदेशमत्री बने थे।

क्या चीन इस माग के आगे घुटने टेक देगा हालाकि उससे उसे शाति ही प्राप्त होगी। मेरे विचार में तो नानकिंग केंद्रीय सरकार के डिक्टेटर मार्शल च्याग काई शेक ने तो यही किया होता। हृदय से वे पूरी तरह कम्युनिस्ट विरोधी हैं तथा 1927 में (चीनी राष्ट्रीय पार्टी) के विभाजन के बाद से उन्होंने चीनी कम्युनिस्टों और उनके समर्थकों को समाप्त करने में कोई कसर नही उठा रखी। किंतु मार्शल च्याग का दो ओर से विरोध होता रहा है। चीन के पश्चिमी प्रात, जिसे चीनी सोवियत राज्य माना जाता है और जो नानकिंग सत्ता से स्वतत्र है, ने जापान के विरुद्ध सघर्ष जारी रखा है। इस विषय में

चीनी जनता की राय भी उनके साथ है। दूसरे, पाश्चात्य शक्तियों की रुचि चीन मे है तथा वे पूर्वोत्तर जातियो के सामने अपना सम्मान कायम रखना चाहते हैं, अत: वे लेटिन अमरीका मे (केंद्रीयता दक्षिणी अमरीका) किसी बाह्य सत्ता को हस्तक्षेप नहीं करने देना चाहते। चीन मे जहां तक ब्रिटेन के हस्तक्षेप का प्रश्न है उस पर 19 अगस्त, 1937 के लंदन टाइम्स ने पर्याप्त प्रकाश डाला है–

'चीन में ब्रिटिश का निवेश पाच करोड पाउड है, जिसमे से बीस करोड पाउड व्यापारिक निवेश है तथा पाच करोड पाउंड सरकारी अहसान के रूप में है। अठारह पाउड शघाई में लगाए गए हैं और इसका एक बड़ा हिस्सा सैटलमैंड डिस्ट्रिक्ट अर्थात सूशोग्रीक के उत्तर में खर्च किया गया है। इसी जिले पर सबसे अधिक बमबारी हो रही है। यही पर, लोक उपयोगी कार्यालय तथा व्यापार कार्यालय आदि हैं।'

दि टाइम्स के लेखक ने आश्चर्य प्रकट किया है कि पहले इस क्षेत्र मे ब्रिटिश सुपरिंटेंडेंट नियुक्त थे किंतु अब इन पुलिस स्टेशनों को खाली करके वहा जापानी लोगो का जमाव हो रहा है। गोरी जातियो को इस सच्चाई का पता है कि चीन पर जापानी प्रभुत्व का अर्थ होगा चीन की समाप्ति तथा पूर्वोत्तरी क्षेत्र से उनका निष्कासन। प्राय: देश का भूगोल वहा की सैन्य रणनीति निर्धारित करती है, अत: यह आवश्यक है कि चीन के भूगोल की मुख्य बातो पर गौर किया जाए।

चीन की महत्वपूर्ण सचार की रेखाए वहा की तीन नदिया हैं, उत्तर में ह्वाग हो (पीली नदी), केंद्र मे यंग-त्से, दक्षिण में सीं कियांग। सी कियाग में प्रवेश पर, ब्रिटिश *बदरगाह हागकाग का नियत्रण है, यगत्से पर शंघाई का जिस पर ब्रिटेन व अमेरीका जैसी* विदेशी शक्तियों का नियत्रण है। ह्वाग हो में प्रवेश पर जापान का नियत्रण है जो पहले कोरिया और फिर मचूरिया के अधीन थी। चीन का एकमात्र व्यावहारिक मार्ग उत्तर स है। इस मार्ग के साथ-साथ मगोल और माचुस भी चीन में प्रवेश कर गए और विश्व युद्ध से पहले के वर्षों में रूस और जापान दोनों की नजर उस पर थी। 1931 से जापान इस मार्ग पर कब्जा करने के प्रयास में ताकि साथ के शहरों पर भी उसका कब्जा हो सके और जुलाई 1937 से वहा निरंतर युद्ध चल रहा है। इस सबध मे यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि ऊंचे-ऊचे पहाड मुख्य चीन को पश्चिमी क्षेत्र से अर्थात् सीकियाग और चीन तुर्किस्तान से पृथक करते हैं।

इसका परिणाम यह है कि चीन में प्रवेश का मार्ग उत्तर की ओर से है और इतिहास इस बात का गवाह है कि जिस शक्ति ने मचूरिया पर नियंत्रण रखा है उसकी चीन मे स्थिति अधिक मजबूत रही है।

1931 से लेकर अब तक की पूर्वोत्तर क्षेत्र में घटी घटनाओं को सही रूप में समझने के लिए जापानी रणनीति को भलीभाति समझना अति आवश्यक है। चीन मे शातिपूर्वक प्रवेश कर जापानी प्रभुत्व क्योंकि सभावित नही था इसलिए जापान में चीन को सैन्य शक्ति द्वारा जीतने की योजना बनाई। जीत भी नहीं सके तो कम से कम सैनिक दबाव तो बना ही रहे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जापान को दो कार्य करने होंगे। पहला, चीनी एकता को भग करना होगा और दूसरे, किसी भी अन्य शक्ति को चीन की सहायता

न कर देने सकना। इस उद्देश्य के लिए उसे चीन के उत्तरी मार्ग पर कब्जा करना होगा जिसमें मचुकुओ, मगोलिया और उत्तरी चीन के हिस्से शामिल हैं। इन क्षेत्रों पर पूर्णत: नियत्रण कर रूसी साइबेरिया को मुख्य चीन से काट देना है, (इसमें ह्वाग हो, यगत्से तथा सीकियाग नदिया हैं)। नक्शे को देखने से पता चलेगा कि यदि जापान इस क्षेत्र पर कब्जा कर लेता है तो रूस से युद्ध होने पर वह मगोलिया से वहा घुस सकता है और बाइकल लेक पर ट्रास-साइबेरियन रेलवे को अवरुद्ध कर सकता है। और यदि रूस को बिल्कुल अलग-थलग कर दिया जाए तो, विपत्ति के समय में चीन की सहायता के लिए कोई अन्य देश नही आ सकता। हम देखेंगे कि 1931 से लेकर अब तक जापान इस कार्य मे कितनी प्रगति कर पाया है।

यह बात ध्यान देने की है कि जापान अपनी योजनाएं प्रकट नहीं करता है और आक्रमण करता रहता है और इस बात का पूरा ध्यान रखता है कि जब वह आक्रमण कार्य में लिप्त हो तब कोई अन्य देश अक्रमण न करें। इसके अलावा वह हर बार कोई न कोई कारण उत्पन्न कर देता है ताकि चीनी क्षेत्र पर कब्जा कायम कर सकें। पहला कारण 18 सितबर, 1931 में बना जब जापानी साम्राज्य की सेना के लेफ्टिनेंट कंवामाटो ने दक्षिण मचूरिया रेलवे मार्ग पर सर्वेक्षण कर रहे थे। इसके अगले दिन ही मुकादेन रेलवे पर और मचूरिया रेलवे मार्ग पर कब्जा सभव हो गया। उस समय पूरा विश्व आर्थिक बदहाली के दौर से गुजर रहा था और रूस अपनी पहली पचवर्षीय योजना को लागू करने में व्यस्त था। अत. जापान को पूर्ण विश्वास था कि उसके इस कदम का कही से भी विरोध नही होगा। लीग आफ नेशस द्वारा भेजे गए लायटोन आयोग ने जापान के विरोध में अपनी रिपोर्ट दी और बाद में लीग सभा ने मचूरिया पर जापानी कब्जे की भर्त्सना भी की। किंतु जापान ने लीग पर ध्यान नहीं दिया और वह इस झझट से उबर गया। इसके बाद 1933 में सोवियत यूनियन ने पूर्वी चीनी रेलवे को मचुकुओ को बेच दिया तथा 1934 में रूसो-मचुकुओ जलमार्ग समझौता सपन्न हुआ। यद्यपि मचुकुओ को अन्य शक्तियों ने स्वतत्र रूप से स्वीकृति नहीं दी किंतु कुछ शक्तियो ने उसे डी-फैक्टो के रूप में मान्यता दे दी।

मचुकुओ एक विस्तृत क्षेत्र है जहां नई बस्ती बसाने की बहुत सी संभावनाए हैं हालाकि वहा की जलवायु कठोर है किंतु कोयले जैसे कच्चे माल की दृष्टि से अति उपयुक्त भी है। इसके अलावा यदि कभी सोवियत रूस से युद्ध छिड जाता है तो जापान के लिए यह भूमि अज्ञात स्थान में प्रवेश का द्वार भी सिद्ध हो सकती है। कई लोगों का विचार था कि मचुकुओ के विकास में जापान को काफी समय लगेगा तब तक पूर्वोत्तर क्षेत्र मे शाति भी स्थापित हो जाएगी। किंतु उनका विचार गलत था। आर्थिक व रण कौशल की दृष्टि से मचुकुओ आत्म निर्भर नहीं हो सकता। जापान को जिस कच्चे माल की आवश्यकता है वह थोड़ा बहुत वहां उपलब्ध हो सकता है फिर वहा का बाजार भी जापान के लिए पर्याप्त नहीं है। रणनीति की दृष्टि. से यह प्रात बहुत कमजोर है क्योंकि चारों ओर से विरोधियों से घिरा हुआ है। परिणामत: अपनी आर्थिक आवश्यकताओ की प्रतिपूर्ति के लिए और नए राज्य की सुरक्षा के लिए जापान को अक्रमण कार्यक्रम

जारी रखना होगा।

1932 में शघाई में एक और घटना घटी जिस से चीन और जापान मे युद्ध आरभ हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि चीन को शघाई के कुछ क्षेत्र से अपनी सेनाए हटाने के लिए बाध्य होना पडा और जापान की कुछ अन्य शर्तों को भी मानना पडा। 1932 मे शघाई की रणनीति का महत्व स्पष्ट नही था किंतु वर्तमान युद्ध (1937) ने इसे स्पष्ट कर दिया है।

1933 मे राजा पू-यी के अधीन मचुकुओ को समेकित किए जाने का कार्य पूर्ण हुआ और जापान आगे अपनी सीमाओ की वृद्धि के लिए युद्ध को पूर्ण तत्पर था। मचुकुओ के बाहर उत्तरी चीन मे युद्ध हुआ। जापानी सेनाओं ने जेहोल तथा चाहरबा का कुछ हिस्सा अपने कब्जे में किया और पीकिग (आजकल पीकिंग) के मुख्य द्वार की ओर बढना शुरू किया। युद्ध में हार कर चीन को जापान के आगे घुटने टेकने पडे और कुछ और हिस्से पर जापान का कब्जा हुआ। 1933 में टगकु सधि के तहत युद्ध का अत हुआ।

वर्ष 1934 घटना रहित वर्ष था किंतु 1935 में पुन: विरोध शुरू हो गया। जैसा कि जापान हमेशा करता था । समझौते के भाषणों व शातिपूर्ण विदेश नीति के अतर्गत उसने पुन: आक्रमण प्रारभ किया। 23 जनवरी, 1935 में हिरोता ने एक भाषण मे आक्रमण विरोधी नीति की तरफदारी करते हुए अच्छे पडोसी राश्त्र की नीति का हवाला दिया ताकि चीन पर अवैध कब्जा कर सके। इस बार उन्होंने स्वतंत्र उत्तरी चीन का नारा लगाया और नानकिग (चीन की नई राजधानी) की सरकार को कहा गया कि वह उत्तरी चीन में जापान की गतिविधियो के विरुद्ध हस्तक्षेप नही करे। किंतु नानकिंग ने जापान की इस बात को पूरी तरह स्वीकार नही किया और उत्तरी चीन के लोग भी मचूरियनो की भाति अधाधुध जापान के कब्जे मे आने को तैयार नही थे जैसा कि मचूरियनो ने 1931 मे किया था। परिणाम यह हुआ कि जापान की योजनाए असफल हो गईं। जब खुले आम द्वद्व छिड़ा तो पता चला कि चीन ने एक और क्षेत्र गवा दिया है।

1933 मे जेहोल और चहार का कुछ हिस्सा मंचुकुओ ने अपने कब्जे मे ले लिया और होपी प्रात मे जिसकी राजधानी तुगको थी जो पीपिंग से 12 मील पूर्व मे स्थित था, वहा से सैन्य शक्ति को हटा लिया गया। इस क्षेत्र का मालिक चीनी रीनेगेड, यिन-जू-केग था और यह क्षेत्र पूर्णत: जापानी अधिकार में था। (बाद में जापान की सहमति से यहा बडे पैमाने पर तस्करी शुरू हुई ताकि चीनी राजस्व को हानि पहुचाई जा सके)। होपी का शेष भाग (पीपिंग और टीनास्टिन) तथा चहार के कुछ भाग को मिलाकर एक अलग प्रशासनिक अनुभाग बना दिया गया जिसको राजनैतिक काउंसिल होपी-चहार कहा गया और जिसके मुखिया जनरल सुग चेह युआन थे जो कि नानकिंग के बाहर सबसे शक्तिशाली नेता माने जाते थे। यह काउंसिल यद्यपि जापान को खुलेआम विरोध करने मे हिचकिचाती थी किंतु नानकिग से भी इसके मधुर सबध स्थापित नहीं हुए। फरवरी 1936 में टोक्यो में सैनिक विद्रोह हुआ जिससे जापानी सरकार व्यस्त हो गई। किंतु वह शात होकर नही रही। अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी स्थिति को सुदृढ करने की दृष्टि से जापान ने जर्मनी के साथ 'जर्मन-जैपनीज़ एंटी कैमिंटर्न पैक्ट' नामक समझौता किया। साल के अंत में नवबर

1936 में यह प्रयास किया गया कि मगोलिया को भी पीपिंग-पाउटो रेलवे के अंतर्गत ला दिया जाए किंतु जापान के मगोल-मचुकुओ मिशनरियों को जनरल फू-त्सोई ने सुआन प्रात से बहुत दूर रोके रखा, इस कार्य में उसने नानकिंग सेना की सहायता भी ली।

इतिहास के सभी विद्यार्थियों को स्पष्ट रूप मे जान लेना चाहिए कि 1931 से ही जापान न केवल पूर्वोत्तर में लगातार अक्रामक रुख अपना रहा था बल्कि पूरे विश्व के मामले में ही उसका रुख आक्रामक था। यदि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे वह स्वय को सुदृढ़ नही मानता तो वह चस्त्न के विरुद्ध कभी अक्रमण न करता। हम उसके लीग आफ नेशस से स्वय को हटा लेने की चर्चा पहले ही कर चुके हैं जब उसने मचूरिया पर कब्जा किया था। इससे पहले उसने एंग्लो-जापानी समझौते को तोड़ा। शायद उसे पता था कि वह इसके बिना भी काफी शक्तिशाली है।

वाशिगटन के नौसेना समझौते में जापान ने युद्ध पोतों के लिए ब्रिटेन, अमेरीका व स्वय के लिए 5:5:3 का प्रतिशत निर्धारित किया। जब 1935 में इस सधि का उल्लघन हुआ तो जापान ने बराबरी की बात उठाई किंतु जब अन्य शक्तिया नही मानी तो उसने यह सधि तोड़ दी। जब ब्रिटेन ने विश्व बाजार के विषय में जापान से आर्थिक समझ की बात की तो उसने किसी भी अन्य बाजार पर बात करने से मना कर दिया और केवल उन बाजारों पर चर्चा की जो ब्रिटेन के अधीन और दोनो देशों का 1935 का लदन सम्मेलन व्यर्थ सिद्ध हुआ। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि 1937 की समाप्ति तक जापान नैतिक रूप से व अतर्राष्ट्रीय रूप से पूर्वोत्तर में बड़े सघर्ष के लिए पूरी तरह तैयार था।

किंतु कभी-कभी अच्छे-अच्छों को भी मात खानी पड़ती है। 1937 में मार्च से जुलाई के मध्य जापान ने पूरे विश्व को इस भ्रांति में डाल रखा था कि वह आर्थिक तगी के दौर से गुजर रहा है अत: वह चीन के विरुद्ध आक्रमण के लिए तैयार नही है। कई अमरीकी पत्रिकाओं में लेख छपे कि जब विश्व आर्थिक तंगी से उबर चुका है तब जापान की स्थिति इसके विपरीत है। इससे कच्चे माल की कीमतों में बहुत वृद्धि हुई। जापान को अधिक मूल्य पर ये वस्तुएं खरीदनी पड़ी जिससे उसके उत्पादन की कीमतों में वृद्धि हुई और वह विश्व बाजार का मुकाबला करने में असमर्थ रहा। (इस बयान को वर्तमान समय में भारत में जापानी कपड़े की कम कीमतें गलत सिद्ध करती हैं)। अमरीकी पत्रकारों ने तर्क दिया कि इस आर्थिक तंगी की वजह से जापान का रुख चीन के प्रति नरम पडा है और वह उसकी ओर मैत्री का हाथ बढा रहा है। एक और तर्क भी दिया गया कि इन्हीं कारणों से फिलहाल सेनाएं भी उसके पक्ष मे नहीं हैं तथा मध्यमार्गी जापान में आजकल उभर रहे हैं।

अब स्पष्ट है कि जापान की सदाशयता अपनी वास्तविक इच्छाओं को छिपाने का एक आवरण मात्र थी ताकि अपने शत्रुओं में सुरक्षा की भावना जाग्रत कर सके। कई कारणों से जापान ने इस समय चीन पर आक्रमण करना उचित समझा। इस समय अमेरीका ब्रिटेन और रूस में से कोई भी जापान के विरुद्ध युद्ध को तैयार नहीं था। सभी लोग शस्त्रीकरण मे व्यस्त है अत: दो तीन वर्ष बाद जापान के लिए कठिनाइयां पैदा हो सकती

हैं। अतः जापान के सामने 'अभी या कभी नही' वाली स्थिति पैदा हो गई। अतः वह आक्रमण की तैयारी कर चुका था और जब सब लोगों को यह विश्वास हो गया कि जापान शाति की बात कर रहा है तो उसने आक्रमण कर दिया। अतः 24 अप्रैल 1937 मे न्यूयार्क के सुप्रसिद्ध पत्र 'दि नेशन' ने लिखा था कि-1931 की अपेक्षा पूर्वोत्तर क्षेत्र में शाति की सभावनाए आजकल अधिक हैं। 26 जून को उसी अखबार ने पुनः लिखा कि चीन के प्रति जापान आजकल शात हैं किंतु उस पत्रकार को यह मालूम नही था कि यह तूफान से पहले की शांति थी।

जापान की अन्य आक्रमणों की सामान्य तैयारी के साथ-साथ पूर्वोत्तरी क्षेत्र के सकट में अन्य बातों की हिस्सेदारी भी थी। सियान विद्रोह और दिसंबर 1936 मे मार्शल च्याग -काई शेक का अगवा किया जाना भी चीन की यूनाइटेड फ्रन्ट नीति के लिए जिम्मेदार थे। अब इस बात में शक की गुजाइश नही रह गई कि बंधकों द्वारा च्याग की रिहाई से पूर्व ही चीनी सोवियत व नानकिंग सरकार इस समझौते पर पहुच गए थे कि वे जापान का मिलकर विरोध करेंगे। इसके परिणामस्वरूप वर्तमान इतिहास में पहली बार चीन का एकीकरण हुआ। चीनी सोवियत के लोग कम्युनिज्म व अलगाववाद को छोड़कर नानकिंग सरकार से मिलने को तैयार हुए। च्याग ने जापान के विरुद्ध एकीकृत चीन का नेतृत्व करना या कम्युनिस्ट नेता चाउ एन लाई तथा च्याग का अपना पुत्र ही उसके मुकाबले में थे। जापान यह सब जानता था अत. उसने आक्रमण कर दिया और चीन को समेकित होने का अवसार भी नहीं दिया। समय कई प्रकार से जापान के पक्ष मे था। ब्रिटेन, रूस व अमरीका पुनः शस्त्रीकरण मे व्यस्त थे अतः उनमें से किसी ने भी सघर्ष मे भाग लेना उचित नही समझा। ब्रिटेन को अभी भी अपने सिगापुर के सैन्य अड्डे को पूरा करने के लिए समय चाहिए था। अमेरीका द्वारा तटस्थता की नीति अपनाने से स्पष्ट है कि वह भी अतर्राष्ट्रीय सघर्षों से दूर रहना चाहता है। कट्टरवादी रिपोर्टों के अनुसार रूसी सेना भी असतोष से गुजर रही थी। अतः 12 माह पूर्व की भाति आज किसी भी सघर्ष में पड़ने की तैयार नही था। 4 जुलाई, 1937 में सोवियत सेनाओं द्वारा सघर्षरत स्थल से सेनाए हटा लेने के बाद सोवियत मंचुकुओ सीमा पर द्वद्व का अत हुआ। यह उपमहाद्वीप 1860 के चीन समझौते के बाद से रूस के नियत्रण में था, इसमे भी स्पष्ट होता है कि रूसी सरकार भी युद्ध के लिए तैयार नहीं थी।

अमूर नदी के पास से रूसी सेनाओं के हटने के तीन दिन बाद पीपिंग के निकट एक ताजा घटना घटी और 8 जुलाई, 1937 को उत्तरी चीन पर आक्रमण हुआ।

कई कठिनाइयों को सहने के बाद व्यक्ति बुद्धिमान बन जाता है। अब सूचना प्राप्त पत्रकारों का कहना है कि जापान इस कार्य की तैयारी कई दिनों से करता आ रहा था। वह मचुकुओ पर कब्जा करके संतुष्ट नही है। जापानी शरणार्थियों के लिए यह स्थान बहुत ठडा है। जापान की आवश्यकता का कच्चा माल भी यहां अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। इसमें सदेह नही कि जापान के व्यापार में बढ़ोत्तरी तो हुई है किंतु प्रशासनिक व्यय अधिक है तथा मंचूरियाई उत्पादों के कारण जापानी बाजार को हानि भी हुई है। इसके बदले उत्तरी चीन में (शान्तुंग, होपी, चहार, शासी तथा सुइयान के क्षेत्रों) मचुकुओ की

अपेक्षा अधिक आर्थिक लाभ दिखाई देता है। चहार, शांसी और दक्षिणी होपी में लोहे के भंडार हैं। शांसी में कोयला भी उपलब्ध है। इसके अलावा पांचों प्रांतों में टिन, कापर, सोना और तेल फैला पड़ा है। नीली पदी की घाटी (ह्वांगहो) कपास के उत्पादक के लिए लाभदायक है, जिसे कि फिलहाल भारत या अमेरीका से चालीस करोड येन प्रतिवर्ष के मूल्य से प्राप्त किया जा रहा है। जापानी शरणार्थियों के लिए भी यहां की जलवायु उपयुक्त है और पशुपालन के लिए भी मंचुकओ की अपेक्षा यह स्थान अच्छा है।

कुछ समय पूर्व ही जापानियों ने इस क्षेत्र के शोषण की योजना बना ली थी किंतु जापान के धनिक जब तक यहा प्रवेश करने का इच्छुक नहीं थे जब तक कि यहा चीनी प्रभुत्व बना रहता है। इसलिए सपन्नता की सहायता के लिए सैन्य शक्ति का उपयोग हुआ।

वर्तमान आक्रमण के पीछे आर्थिक आवश्यकता के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक तथ्य भी कार्यरत था। अमरीकी पत्रकार कुछ हद तक ठीक थे, जब उन्होंने लिखा कि जापान आर्थिक तगी के दौर से गुजर रहा है किंतु उनके निष्कर्ष पूर्णतः गलत थे। उन्होने जो लिखा उसके विपरीत यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि आंतरिक असंतोष को छुपाने के लिए सरकार बाहर आक्रमण भी कर सकती है। (निकट भविष्य में जर्मनी को भी इसी प्रकार के असतोष का सामना करना होगा)। जापान के संबंध में यह कहा जा सकता है कि हाल ही में उसे जिस आर्थिक तगी का सामना करना पड़ा है उसका कारण व्यापार मे सतुलन कायम न रख पाना भी है और युद्ध-मनोविज्ञान को आवश्यक मानना भी हो सकता है।

जापान द्वारा सूइयान (उत्तरी चीन का एक प्रांत)। नवबर 1936 के आक्रमण व हार से यह बात स्पष्ट हो गई है कि मगोलिया के मुख्य क्षेत्रों पर तब तक कब्जा कर पाना संभव नही है जब तक कि पूरे उत्तरी चीन पर अधिकार न जमा लिया जाए। चहार और विशेष रूप से सूइयान पर नियंत्रण किए बिना मगोलिया को मचुकुओ के नियत्रण से निकाल पाना असंभव है।

जापान मगोलिया में इतनी रुचि क्यों रखता है जब कि वह एक व्यर्थ का क्षेत्र है जिसकी आर्थिक दृष्टि से भी कोई महत्ता नही है? इसका कारण आर्थिक नही बल्कि रणकौशल का है। ऊपर चर्चा की जा चुकी है कि जापान एक बड़े क्षेत्र पर कब्जा करना चाहता है जिसमें मचुकुओ, उत्तरी चीन व मगोलिया शामिल है। इस बीच रूसी राजनीति भी बेकार नही बैठी है और चीनी लोकतंत्र के दो मुख्य प्रात रूसी प्रभाव में आ चुके हैं। वे प्रात हैं-सिकियांग (और चीनी तुर्किस्तान) तथा बाहरी मगोलिया (मगोलिया का ऊपरी भाग जो सोवियत रूस से जुडा है)। जापान की दृष्टि में सिनकियाग का अधिक महत्व नही है (यद्यपि भारत के निकट होने के कारण रूस के लिए इसका महत्व है) किंतु मगोलिया का है। बाहरी मगोलिया पर सोवियत रूस का नियंत्रण होने से वह उत्तरी चीन मे आसानी से प्रवेश पा सकता है। इस समस्या से बचने के लिए और रूस को चीन से हमेशा के लिए काट देने की दृष्टि से एक ही रास्ता है कि मगोलिया पर कब्जा कर लिया जाए। मगोलिया (मगोलिया के दक्षिणी क्षेत्र) और उत्तरी चीन पर आधिपत्य जमा

लेने से पश्चिम से पूर्व तक एक दीवार खड़ी हो जाएगी जिससे रूसी साइबेरिया, मंगोलिया और चीन को अलग-थलग किया जा सकेगा। फिलहाल इस क्षेत्र पर कब्जा करना ही जापान का मुख्य उद्देश्य है। एक बार एक प्रयत्न में सफल होने के बाद उसका प्रयास होगा कि इस कब्जा किए गए क्षेत्र में रेल मार्ग का निर्माण किया जाए जो पूर्व से पश्चिम तक मिलती हो। यदि वह यहा अपनी स्थिति दृढ कर लेती है तो वह बाहरी मगोलिया की ओर बढ़ने का प्रयत्न कर सकती है। तब क्या होगा इसकी भविष्यवाणी करना कठिन कार्य है। फिलहाल मगोलिया रूसी प्रभाव का क्षेत्र है और रूसी सरकार ने स्पष्ट घोषणा की है कि इस क्षेत्र में जापान द्वारा की गई कैसी भी घुसपैठ को कैसस बेला के समतुल्य समझा जाएगा।

किंतु जापान ने भाविष्य में मगोलवासियों को अपने नेतृत्व में लेकर एकत्रित करने की आशा छोडी नही है। अत: जापानी एजेंट मगोलवासियों के लिए मचुकुओ जैसे आदर्श की प्राय: चर्चा करते हैं। यदि इस योजना को लागू करने में सफलता मिली तो यह मचुकुओ का ही सहयोगी होगा। इस प्रकार मगोलवासियों को अपना राज्य तो मिल जाएगा जिसे गिलबर्टियन स्वायत्ता प्राप्त होगी किंतु वह जापान के नियंत्रण मे रहेगा। पूर्वोत्तर क्षेत्र मे मगोलो की सख्या लगभग पचास लाख है। बीस लाख के लगभग मचुकुओ हसीगान प्रात मे रहत हैं और दस लाख बाहरी मगोलिया में हैं। -जिसे सयुक्त राज्य के आधे भाग के बराबर माना जा सकता है। किंतु अधिकाश भाग रेगिस्तान है। दस लाख मगोल आतरिक मगोलिया में रहते हैं जबकि दस लाख के करीब सिनकियाग (चीनी तुर्किस्तान) तिब्बत और सोवियत रूस (बुरियाट गणराज्य) में हैं। मंगोलियन राजनीतिक काउसिल की स्थापना होने से मैंगकुकुओ राज्य का पहला चरण तो लगभग शुरू हो चुका है। मगोल नेता जो जापानी प्रभाव से ग्रस्त हैं उनमें ली शाउहसिन और प्रिंस तेह हैं।

किंतु स्वायत्त मेंगकुकुओ अभी जापान के लिए भविष्य की परियोजना है, उत्तरी चीन उसका तत्काल लक्ष्य है।

मचुकुओ पर कब्जा होने से उत्तरी चीन में जापानी प्रभाव निरतर बढ रहा है और अब यह आशा की जा रही है कि अब बिना किसी बडे सघर्ष के उत्तरी चीन के पंच प्रांतों में से किसी भी प्रात को वह अपने हाथों की कठपुतली नही बना पाएगा। किंतु हाल ही में नानकिंग भू-क्षेत्र से काटोन प्रात पर कब्जे से तथा मार्शल च्याग और चीनी कम्युनिस्टों द्वारा दिसंबर में किए गए समझौते ने जापान की आशाओ पर पानी फेर दिया। अतत: एक सुदृढ़ और एकीकृत नवीन विश्व के सामने उभरकर आ रहा है और सभी को आशा है कि चीन अपना उत्तरी क्षेत्र युद्ध के बिना नही छेड़ेगा।

जनवरी 1937 से नानकिंग ने उत्तरी चीन के अधिकारी वर्ग पर अपना प्रभुत्व डालना प्रारंभ किया हुआ है। वह जापान के सहयोग द्वारा पूर्वी होपी में तस्करी का विरोध करते हैं। उसने चीन की सहमति के बिना जापान द्वारा स्थापित तेन्त्सीन टोक्यो वायुमार्ग को स्थगित करने की हिम्मत दिखाई है। उत्तरी चहार में मकुकुओ और मगोली सेना ने छिट-पुट विद्रोह भी किए हैं। अत: प्राय: जापान विरोधी घटनाएं घटती रहती हैं, और वह जापानी मांगों के समक्ष घुटने भी नही टेक रहे। इस सबके अतिरिक्त नानकिंग और चीनी कम्युनिस्टों

में एक समझौता हो गया है जिसके अतर्गत वे जापान के विरुद्ध लगभग 90,000 सैनिक सप्लाई करेंगे।

3 जुलाई, 1937 को जापानी राजदूत शिगेरू कावागो ने नानकिंग से बातचीत प्रारंभ की। जापान ने अपने को सीमित करते हुए यह प्रस्ताव पेश किया कि उत्तरी चीन से जापानी राजनीतिक नियत्रण हटा लिया जाए जब तक कि नानकिंग मचुकुओ डी जूरे को स्वीकार कर जापान के साथ आर्थिक सहयोग स्थापित करने को तत्पर न हो जाए। नानकिंग ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और इसके बदले उसके द्वारा दी गई पेशकश जापानी आवश्यकताओं के मुताबिक पूर्ण नही थी। किसी प्रमाण की आवश्यकता शेष नही रह गई थी कि नए चीन का अस्तित्व अब सामने आ गया है, जिससे शीघ्र ही उत्तरी राज्यों में उसके प्रभुत्व की आशा बचती है। इसलिए जापान ने बिना देरी किए आक्रमण कर दिया और लुकोचियो में, जो पीपिंग (पीकिंग) से 18 मील पश्चिम मे स्थित है, एक और घटना घटी जब रातोंरात जापानी सेनाओं ने चीनी ट्वेंटी-नाईन्थ आर्मी से युद्ध छेड़ा।

इस घटना के वैधानिक अध्ययन से स्पष्ट है कि जापान गलती पर था। हालाकि 1901 के बाक्सर समझौते के मुताबिक उन्हें अपनी सेवाएँ पीपिंग लीगेशन तक तथा पीपिंग-त्येनत्सीन रेलमार्ग के कुछ भागों तक की छूट प्राप्त थी ताकि वे समुद्र मार्ग से सचार सुविधा प्राप्त कर सकें। इस उद्देश्य से इस संधि को लागू भी किया गया था। सघर्ष के तत्काल बाद जापानी सरकार ने निम्न मांगें सामने रख दी-

(1) पश्चिमी पीकिंग के क्षेत्र से ट्वेंटी-नाईन्थ आर्मी को वापिस बुला लिया जाए।

(2) इस संघर्ष के जिम्मेदार चीनियों को सजा दी जाए।

(3) उत्तरी चीन में जापान विरोधी हर प्रकार की गतिविधि पर नियत्रण किया जाए।

(4) सचार के लिए तत्काल कदम उठाए जाएं।

यह रिपोर्ट मिली है कि 19 जुलाई को होपी-चहार राजनीतिक काउंसिल ने इन मांगों को मान लिया और जिन शर्तों पर यह समझौता हुआ उसे 23 जुलाई के तोक्यो से प्रकाशित भी किया गया। चीनी सोच रहे थे कि इस क्षेत्र में चीन व जापान दोनों ही की ओर से युद्ध समाप्त कर दिया जाएगा और यह पूरी सभावना है कि नानकिग भी आखिरकार इस समझौते को स्वीकार कर ही लेगा। किंतु जब जापानी सेनाओं ने उस क्षेत्र को खाली नहीं किया तो अधीनस्थ अधिकारियों तथा चीनी सेनाओं ने भी वहां से हटने से इंकार कर दिया। 26 जुलाई को जापानी सेना के कमांडरों ने एक ज्ञापन दिया कि चीनी सेनाओं का 28 जुलाई दो दोपहर तक वह क्षेत्र खाली कर देना चाहिए। चीनी सेनाओं ने इंकार किया और जापानियों ने जबर्दस्ती उन्हें हटाने का प्रयत्न किया। अतः युद्ध प्रारंभ हुआ।

हालांकि नानकिग डिक्टेटर युद्ध के लिए तैयार नहीं थे किंतु जापानी इस युद्ध के लिए पर्याप्त धनराशि खर्च करने को तैयार थे। यह सूचना मिली थी कि वे 117,650,000 पाउंड खर्च करने को तत्पर थे और वह युद्ध जनवरी 1938 तक चला।

पूर्वोत्तर क्षेत्र मे युद्ध की तरोताजा प्रगति यह है कि शघाई क्षेत्र मे भी युद्ध छिड गया है। 9 अगस्त को शघाई के हवाई अड्डे हंगजाओ में एक नई घटना घटी। दो जापानी सेनाधिकारियो, को मार डाला गया, जब वे हवाई अड्डे में घुसने का प्रयास कर रहे थे। अतः जापानी सेनाओं ने इस हत्या का बदला लेने के लिए दुखद कार्य किया तथा जापानी एडमिरल ने अन्य बातों के साथ-साथ यह माग भी की कि शघाई से 30 मील की दूरी तक चीनी सेनाएं दिखाई नहीं देनी चाहिए। तथा इस क्षेत्र मे जितने भी सेना के अड्डे हैं उन्हे तत्काल नष्ट कर दिया जाए। चीनियों ने इस माग के उत्तर में शंघाई क्षेत्र से 88वी डिवीजन को वहा से हटा लिया ताकि वहा की सेनाओं को शक्ति मिल सके। जापानियों ने इसे 1932 के समझौते का उल्लंघन माना और चीनियो ने कहा कि जापानियो ने स्वय चीनी क्षेत्र मे अपनी सेनाए तैनात करके और इस क्षेत्र मे जानबूझ कर इतने बडे सैन्य बल को बुलाकर उस सधि की अवमानना कर चीन को भी उस सधि से मुक्त कर दिया है।

इस प्रकार दो क्षेत्र पीकिंग तथा शघाई क्षेत्र मे युद्ध जारी है। इस सबध मे मुख्य प्रश्न यह है कि शघाई क्षेत्र में युद्ध जारी रखने की इच्छुक कौन सी पार्टी थी। सभी सभावनाए जापान की हैं।

नानकिंग सेनाओं के होपी प्रांत मे आ जाने से जापान का थल मार्ग अवरुद्ध हो गया, तो वे समुद्र की ओर मुडे। मार्शल याग ने पीपिंग के चारो ओर (जापानी क्षेत्र मे) सेनाओं का अर्द्धवृत्त बना दिया, बहुत योजनाबद्ध तरीके से यह किया गया जो कि एक अच्छी और मजबूत रणनीति थी। सरकारी सेवा का बायां बेडा प्रसिद्ध दर्रे नानको पर तैनात किया जहा से पीकिंग पाओटो रेलवे पर्वत शृंखला को काटती हुई निकलती थी। पीपिंग से 100 मील दक्षिण में हेंको रेलमार्ग पर पाओटिंगफू पर केंद्रीय सेनाए तैनात थी। दाया बेडा त्येनत्सीन से 30 किलोमीटर की दूरी पर था। यह क्षेत्र भी जापान के अधीन था। यह अर्द्धवृत्त हीडनबर्ग लाइन, एक दुर्जेय रेखा थी। अतः चीनियों की शक्ति का गलत आकलन करके ही शघाई पर आक्रमण किया जा सकता था।

यदि चीन के पास हृदय है तो वह यागत्से के मुह में आर्थिक केंद्र मे स्थिति है। जापान इस पर आक्रमण कर के विदेशी नियत्रण के औद्योगिक, वाणिज्यिक और आर्थिक क्षेत्र पर आक्रमण करना चाहता है ताकि केंद्रीय सरकार की आर्थिक स्थिति खराब करके राष्ट्रीय भावना को ठेस पहुचा सके और चीनी मध्यवर्ग को आतकित कर सके। शघाई जापानी जल सेना की दया पर है और इस सपन्न क्षेत्र पर आक्रमण करके इस विकसित देश को जानबूझ कर युद्ध मे झोंकने के समान है किंतु इस धक्के के प्रभाव का पता तभी चलेगा जब यहा का व्यापार-कार्य ठप्प हो जाए तभी युद्ध से हुई हानि का सही आकलन सभव हो पाएगा।

कुछ अर्से तक युद्ध जारी रहेगा। जापान की कोशिश होगी कि वह हृदय को नष्ट कर दे ताकि उसे पगु बनाने में आसानी हो जाए। चीन मुकाबला करे या घुटने टेक दे इसीलिए प्रमुख रणनीति के तौर पर शंघाई में युद्ध छेडा गया है। क्या चीन इस खूनी दरिया से पार हो पाएगा? यदि आयुध सामग्री के लिए काटोन का मार्ग खुला रहेगा और

शंघाई में युद्ध के दौरान हुए राजस्व घाटा अधिक नहीं होगा तो शायद चीन जापान की सामाजिक व आर्थिक स्थिरता को हानि पहुंचा सकता है। इसी विषय में यह तथ्य भी गौरतलब है कि जापानी जल सेना चीनी बंदरगाहों को अवरुद्ध करने का प्रयास कर रहा है तथा जापानी लोगों में युद्ध का बुखार चढ़ा है, और इस क्षेत्र में सेनानियों व आम जनता के उद्देश्यों में अब अधिक अंतर भी नहीं रह गया है। चीन ने एक बार फिर 1931 की भांति लीग आफ नेशंस से अपील की है। किंतु ऐसे आपातकाल में इस मरणासन्न लीग की कीमत क्या है? विश्व की सहानुभूति निःसंदेह चीन के साथ है किंतु विश्व की सहानुभूति की भी मशीनगनों के सामने क्या कीमत है। चीन की स्थिति निराशाजनक है। यह सोचना कि समय चीन के पक्ष में है, गलत है। आज चीन समय के विरुद्ध युद्ध कर रहा है। ईश्वर करे कि वह सफल हो सके।

जापान ने अपने लिए और एशिया के लिए बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। वर्तमान सदी के अंत में उसके जागरण ने पूरे महाद्वीप में भय का संचार कर दिया है। जापान ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में गोरी जाति के सम्मान को धक्का पहुचाया है और सभी पाश्चात्य साम्राज्यवादी ताकतों को सीमित दायरे में रहने का मार्ग दिखाया है चाहे नव सेना के क्षेत्र मे हो या फिर आर्थिक क्षेत्र में। जापानी बहुत संवेदनशील हैं, ठीक भी है, एशियाई जाति के रूप में उनमें आत्म-सम्मान भी बहुत है। वह पूर्वोत्तर क्षेत्र से पश्चात्य ताकतों को बाहर निकाल फेंकने के लिए वचनबद्ध है। किंतु क्या यह सब साम्राज्यवाद के बिना, चीनी गणराज्य को नष्ट किए बिना, किसी अन्य तथा सभ्य व प्राचीन जाति के सम्मान को ठेस पहुंचाए बिना संभव नहीं? हमारी प्रशंसा जापान के लिए है, जहां तक उसकी प्रशंसा होनी चाहिए, किंतु हमारा हृदय इस कष्ट की घड़ी में चीन के साथ है। चीन को स्वयं अपने लिए और मानवता के लिए अभी जिंदा रहना चाहिए। इस संघर्ष की राख से वह एक देवदूत की भांति पुनः प्रकट होगा, जैसा कि पहले भी कई बार हो चुका है।

आइए पूर्वोत्तर क्षेत्र के इस संघर्ष से हम भी कोई सबक सीखें। नए युग के शुरू में भारत को प्रत्येक दिशा में राष्ट्रीय प्राप्त करना है, किंतु अन्य राष्ट्रों के आधार पर नहीं, और न ही स्वयं को बड़ा बनाने या साम्राज्यवाद के खूनी मार्ग पर चलकर।

19 सितंबर, 1937

व्यक्तिगत पत्राचार में हस्तक्षेप करने पर *

मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे पत्र व्यवहार में असंवैधानिक हस्तक्षेप के विषय में अपनी टिप्पणी से लोगों को अवगत कराना मेरा कर्तव्य है। अब इस विषय में संदेह की गुंजाइश नहीं रह गई है कि यह हस्तक्षेप डाक विभाग के सहयोग द्वारा ही संभव हो रहा है। अब तक सी.आई.डी. के कर्मचारियों की इस गुप्तचरी की गतिविधियों के लिए पर्याप्त भर्त्सना हो चुकी है। मेरी निजी राय है कि ऐसी ही भर्त्सना डाक विभाग

---

* 6 अक्तूबर, 1937 को कलकत्ता से लाहौर के लिए रवाना होते समय सुभाष चंद्र बोस द्वारा, यूनाइटेड प्रेस को दिया गया बयान।

के कर्मचारियों की भी की जानी चाहिए। सी.आई.डी. के सदस्य तो अपने बचाव में यह तर्क दे सकते हैं कि उन्हें इस प्रकार की गतिविधियों के लिए ही वेतन मिलता है। इसके विपरीत डाक विभाग के कर्मचारियों को एक प्रकार के कार्य के लिए वेतन मिलता है किंतु वे उन जासूसों के साथ शामिल हो गए हैं। जिस बात से मुझे बहुत दुख पहुंचा है वह यह है कि मेरे प्रश्नों के उत्तर में डाक विभाग के कर्मचारियों ने जो कुछ कहा है वह मंत्रियों के विरुद्ध है। केंद्रीय मंत्रियों को चाहिए कि वे व्यक्तिगत पत्राचार की पवित्रता को कायम करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

पंजाब की स्थिति पर *

कुछ अपरिहार्य कारणों से मैं पंजाब छोड़कर इस समय पूर्व चला जाना चाहता हूं जो मैंने मूलरूप में सोचा था। किंतु जाने से पूर्व मैं अपने हृदय की गहराई से उन अनन्त मित्रों व शुभचिंतकों का आभार व्यक्त करना चाहता हूं जिन्होंने मेरे पांच माह के यहां के आवास के दौरान अपना प्रेम और आदर मुझे दिया। मैं डलहौजी के लोगों तथा बाहर के लोगों को, जो जब भी मुझे मिले, मेरा बहुत स्वागत किया, का भी धन्यवाद करना चाहूंगा। यह कहना आवश्यक नहीं कि यह प्रेम और सहृदयता जो मुझे मिली उसने मेरे डलहौजी के आवास को सुखद एवं आनन्ददायक बना दिया।

पंजाब में स्थिति

पिछले कुछ माह के दौरान मुझे पंजाब की स्थिति को निकट से देखने व समझने का अवसर मिला है। किंतु मैं बहुत दुख के साथ इस प्रांत से जा रहा हूं। ऐसा लगता है कि वर्तमान संघीय सरकार ने सुधार पूर्व के दिनों की तुलना में दमनकारी नीति अपना ली है। इससे पहले सरकार ने, कई राजनीतिक बंदियों को मुक्त करके, राज्य कैदी सतींद्रनाथ सेन के विरुद्ध मुकदमे को वापिस ले कर, साम्प्रदायिकता पर नियंत्रण कर, अन्तर साम्प्रदायिक एकता के लिए एकता सम्मेलनों का आयोजन कर खान अब्दुल गफ्फार खां पर से प्रतिबंध हटाकर तथा कसाईखानों को बंद कराकर, लोगों के मन में अपने प्रति सहानुभूति व आदर पैदा किया था।

किंतु अब दमनकारी नीति अपनाकर उसने कई गुणा असम्मान अर्जित किया है। कुछ लोगों से बात करने पर मुझे महसूस हुआ है कि आम लोगों की राय यह है कि सरकार अपने राजनैतिक प्रतिद्वंद्वियों पर अधिक ध्यान दे रही है। खालसा कालेज के कई महत्वपूर्ण वह योग्य प्रोफेसरों को बरखास्त करने के मामले ने लोगों में यह धारणा बना दी है कि इस सबके पीछे सरकार का हाथ है। यदि यह बात सत्य है तो मुझे भय है कि राष्ट्रीय सिखों, मुसलमानों और समाजवादियों के हृदय में सरकार के प्रति अविश्वास पैदा हो जाएगा जैसा कि आजकल दिखाई दे रहा है।

---

* 8 अक्टूबर, 1937 को सुभाष चंद्र बोस द्वारा यूनाइटेड प्रैस को दिया गया बयान।

लोगों की स्वतंत्रता

लोकप्रिय सरकार की पहली कसौटी यह है कि वह जनता को स्वतत्रता की गारंटी दे। इस कसौटी पर सरकार के इस कार्य की प्रासगिकता क्या है जबकि बहुत से राजनैतिक बदी अभी भी कैदी हैं, दोनों जिन पर मुकदमा चल रहा है या जिन पर मुकदमा नही भी चल रहा है, और अन्य लोगो की गिरफ्तारी के आदेश भी दिए जा रहे हैं। इसके अलावा शचींद्र नाथ सान्याल तथा उनके मित्र को देश निकाला देने की क्या न्याय सगतता है? यदि मत्रालय ने स्वयं यह आदेश जारी किया है तो भी या गर्वनर के कहने पर यह हुआ तो भी इसकी भर्त्सना की जानी चाहिए। शचींद्र नाथ सान्याल द्वारा जनता को हिंसा करने से रोकने पर और उनको मुक्त करने को अपील पर तो कोई भी बुद्धिमान सरकार उनका स्वागत करती ताकि वे जनता के मध्य अहिंसा का संदेश प्रचारित करते।

राजनैतिक स्वांग

एकता सम्मेलन के आयोजन की पृष्ठभूमि में राजनैतिक स्वाग की झलक स्पष्ट है। सघीय सरकार की अपेक्षा क्या है जनता की एकता अथवा प्रतिक्रियावादी ताकतों की एकता? यदि वह जनता की एकता चाहते हैं तो उन्हें प्रात में उन्नतिवादी ताकतों के दमन का कार्य-व्यापार स्थगित कर देना चाहिए।

प्रतिक्रियावादी गुट

अब इस बात में कोई संशय नहीं है कि संघीय कागजी कार्यक्रम कुछ भी हो, वह एक प्रतिक्रियावादी गुट के रूप में सामने आ रही है जिसमें मंत्रालयों के पर्दे के पीछे गवर्नर के हाथ में उनकी लगाम है। फिलहाल सघीय गुट की स्थिति इतनी अजेय है कि उसे सत्ता से अलग करने की कोई आशा नही कम से कम इस विधानमडल के कार्यकाल के दौरान तो बिल्कुल ही नहीं। इन बादलों से जो एक आशा की किरण फूटती है वह केवल यही है कि समाजवादी विचार अधिकाधिक लोकप्रिय हो रहा है। मुझे यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि जो लोग पहले कांग्रेस के विरोधी थे या उसमे रुचि नहीं रखते थे अब उनका मत बदल रहा है। क्या कांग्रेस पार्टी पजाब की स्थिति का सदुपयोग करेगी और यहां के लोगो को अपने झंडे तले एकत्र कर पाएगी? यदि ऐसा नही हो पाता तो मुस्लिम लीग जैसी साप्रदायिक सस्थाएं इस प्रात मे आगे बढ़ जाएगी।

पंजाब में कांग्रेस

पजाब में कांग्रेस अपनी स्थिति सुदृढ कर सकती है। इस मौके का फायदा उठाकर जो उसे स्वत: ही उपलब्ध हो गया और अगले पांच वर्ष के लिए वह विधानसभा मे कांग्रेस बहुमत भी प्राप्त कर सकती है। किंतु क्या वे यह करेंगे? एक मित्र के रूप में मैंने जो निरीक्षण किया उससे यह आभास हुआ है कि यहा के कांग्रेस के उच्चतम नेताओं में सहृदयता और विशाल हृदयता की अधिक आवश्यकता है। पजाब को ऐसे नेताओं की आवश्यकता है जो दूरदृष्टि रखते हों तथा जिनका हृदय विशाल हो तभी वे इस प्रात

को एकजुट रख पाने में सफल होंगे। यहां ऐसे नेता चाहिए जो जातिवाद और गुटवाद से ऊपर उठकर संपूर्णजाति के मनुष्यों के लिए कार्य करने को प्रतिबद्ध हों। पद और प्रतिष्ठा के हिसाब से यह आभास होता है कि पजाब में कम समय में ही कांग्रेस अपना प्रभुत्व बना सकती है। यदि इस समय उसके नेता अपने को योग्य सिद्ध कर पाए तो मुझे आशा है और मैं प्रार्थना करता हूं कि यह बात जल्दी से जल्दी सभव हो जाए।

किसान और भारतीय राष्ट्रवाद *

कलकत्ता में किसान रैली

कांग्रेस के आदर्शों पर श्री सुभाष चंद्र बोस के विचार

अत्यधिक स्वागत व प्रसन्नता की तालियों की गड़गड़ाहट में सुभाष चद्र बोस ने अभिभाषण देते हुए घोषणा की कि कांग्रेस हर प्रकार के दमन को समाप्त करना चाहती है चाहे व सरकार की ओर से हो या निजी स्वार्थों के कारण हो। कांग्रेस सभी वर्गों का नेतृत्व करने की इच्छुक है। राजनैतिक स्वाधीनता प्राप्त करने से भारत को आर्थिक स्वतंत्रता भी प्राप्त हो जाएगी। एक बार फिर वह विश्व के सभ्य लोगों की श्रेणी मे आ खडा होगा।

बंगाल की स्थिति पर *

कल प्रातः मैं दुखी हृदय से कुछ समय के लिए यूरोप के लिए रवाना हो जाऊंगा। आज बगाल की स्थिति इतनी दुखद है कि मुझे जानबूझ कर इस हताशा और निराशा की स्थिति में स्वयं को अलग करने पर मजबूर होना पड़ रहा है। यदि मेरा स्वास्थ्य इस योग्य होता कि मैं इन उत्तरदायित्वों को जो हमारे सम्मुख खड़े हैं निभा पाऊं तो मैं नही जाता, किंतु आज मेरे पास अन्य कोई मार्ग नहीं है। मेरे कई कांग्रेसी मित्रों के आग्रह पर मैंने यह निर्णय लिया कि मैं अपने डलहौजी आवास के दिनों में कटौती कर अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में उपस्थित होने के लिए कलकत्ता आऊं। तभी से अनेकों कारणो से, जिसे जनता भलीभांति जानती है, मैं यहां कलकत्ता में ही रुका हुआ हू, जिसका परिणाम यह है कि आज मुझे महसूस हो रहा है कि मैं इस राजनैतिक जीवन के अपरिहार्य तनाव को सहन करने की शक्ति से क्षीण हू। मैं इस आशा के साथ कल रवाना होऊंगा कि आगामी नववर्ष में मेरी शारीरिक क्षमता और मेरा स्वास्थ्य इस योग्य हो जाए कि मैं इतने वर्ष राजनैतिक परिदृश्य से हटा रहा उस कार्य को परिपूर्ण कर सकू।

---

* 10 अक्टूबर, 1937 को दिए गए अभिभाषण का कुछ अंश जो, 28 अक्टूबर, 1937 के कलकत्ता निगम गजट में प्रकाशित हुआ।

* नवबर, 1937 को सुभाष चद्र बोस द्वारा प्रेस को दिया गया बयान।

पिछले मार्च में रिहा होने के पश्चात जो बात सबसे पहले मेरे जहन में आई वह यह थी कि कुछ सिद्धांत हैं जो मेरे भविष्य के जीवन को और कार्यों को निर्देशित करेंगे। मैं फिर इस बात पर बल देना चाहूंगा कि यदि बंगाल फिर पुरानी स्थिति मे लौटना चाहता है तो उसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सिद्धांतों, कार्यक्रमों और नीतियों का अनुपालन करना चाहिए। इसके अलावा अहिंसा के सिद्धांत की भर्त्सना करना अति आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि यदि आज अभी तक कहीं ऐसी गुप्त कार्यवाहिया चल रही हों तो उन्हें सदा के लिए समाप्त कर दिया जाना चाहिए। तभी हम सामाजिक आर्थिक कार्यक्रम के आधार पर कार्य करने में सफल होंगे।

आज बंगाली समुदाय के कुछ लोग सांप्रदायिकता में लिप्त हो गए हैं। इस विषाक्त वातावरण में से कांग्रेस ही हमारे लोगों को निकाल सकती है क्योकि कांग्रेस ही इस भूमि पर एकमात्र राष्ट्रीय संस्था है। मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे ही हम अपने आर्थिक कार्यक्रम आगे बढाएगे हम सभी प्रकार की सांप्रदायिकता को छोड़ कर एक समुदाय के रूप में एकत्र हो जाएंगे। मैं उन सभी मुसलमान भाइयों और अनुसूचित जाति के लोगों से अपील करता हू, जो अभी तक कांग्रेस से अलग-थलग रहे, कि वे कांग्रेस में शामिल हो जाए। यह उनका कार्य है कि वे कांग्रेस पर अधिकार कर लें और उसे अपनी पार्टी बना लें। यदि वह ऐसा कर लेते हैं तो हमें पिछड़ेपन से निजात मिल जाएगी।

इस समय मेरे लिए कुछ भी कहना संभव नहीं है कि राजनैतिक बंदियो के और नजरबंदी के विषय में महात्मा गाधीजी का क्या कदम होगा। मैं लोगों को याद दिलाना चाहता हू कि महात्मा जी को बगाल में आमंत्रित कर हमने उन पर कठिन जिम्मेदारी डाल दी है। मैं जनता की ओर से उन्हें आश्वस्त करता हूं कि, उनके कलकत्ता आने से पूर्व मैंने उन्हें अहिंसा की दृष्टि से जो बताया था, आज बंगाल का वातावरण पहले की अपेक्षा अधिक उपयोगी है। मुझे पूरी आशा है कि भविष्य में ऐसा कोई कदम नहीं उठाया जाएगा जो इस वातावरण को दूषित कर सके। यदि हम अहिंसा के वातावरण को कायम रख पाएंगे तभी राजनीतिक बंदियों की रिहाई के लिए किए जा रहे प्रयासों के सफल होने की आशा की जा सकेगी।

बंदे मातरम।

संपादक, *हिंदुस्तान स्टैंडर्ड*

23 नवबर, 1937

महोदय

18 तारीख के आपके पत्र में पृष्ठ 6 पर आपने कहा है कि महात्मा गाधी ने समयानुभाव के कारण लेखकों से (बंदे मातरम के प्रश्न पर) न मिल पाने के लिए खेद व्यक्त किया है। यह बात सही नहीं है।

मैंने ही लेखकों को महात्मा गांधी के पास शिष्टमंडल भेजने का विचार दिया था,

बाद में डॉ सुनीति चटर्जी को फिलहाल इस विचार को त्याग देने का सुझाव दिया था। अत: मेरा दायित्व है कि मैं स्थिति को स्पष्ट रूप मे पेश करू।

मत्रियों ने महात्मा गांधी की सहमति से प्रात: 11.30 पर एक बैठक आयोजित की। हमें आशा थी कि यह बैठक एक घटे में समाप्त हो जाएगी। अत: हमने विचार बनाया कि महात्मा गाधी के लिए सायं 3 30 बजे का समय ठीक रहेगा। अत: डॉ चटर्जी को इसकी सूचना दे दी गई। उस दिन (शायद 16 तारीख थी) हमने देखा कि महात्मा गांधी का रक्तचाप बढ़ गया है और मंत्रियों ने बैठक का समय दोपहर बाद 12.30 बजे निर्धारित कर दिया है। हमने यह महसूस किया कि जब मत्रियों से मिलने के बाद गाधी घर लौटेंगे तो इतने थक चुकेंगे कि इन विशिष्ट व्यक्तियों से कैसे मिल पाएगे। अत: मैंने डॉ. चटर्जी को फिलहाल इस विचार को त्याग देने की राय दी जिसे उन्होने ने स्वीकार कर लिया। मुझे प्रसन्नता है कि यह हुआ, क्योकि मंत्रियों से महात्मा गांधी की बातचीत तीन घटे चली और गाधी जी बहुत थके हुए वापिस लौटे। अगले दिन बैठक संभव नही हो पाई क्योंकि दोपहर की गाड़ी से गांधी जी हिजली के लिए रवाना हो गए।

आपका
सुभाष चद्र बोस

कार्ल्सबाद
तथा
चेकोस्लोवाकिया के अन्य जल स्थान *

जुलाई 1933 में जब मैं प्राग में था तब चेकोस्लोवाकिया सरकार के सौजन्य से कार्ल्सबाद की पोर्सलीन फैक्टरियों को देखने का अवसर मिला जिसके लिए पूरा प्रबध सरकार द्वारा कर दिया गया था। कार्ल्सबाद के अल्प आवास के दौरान मैंने खनिज झरनो को भी देखा जिन्होंने पूरे विश्व में कार्ल्सबाद को प्रसिद्ध कर दिया है। कार्ल्सबाद मे मेरी दिलचस्पी अप्रैल 1933 में और बढी जब मेरी परीक्षण हेतु आए एक प्रोफेसर ने मुझे बताया कि जिस आंतरिक पीड़ा से मैं ग्रस्त हूं उसके उपचार के लिए मुझे कार्ल्सबाद जाना चाहिए। सितबर 1934 में मुझे कार्ल्सबाद जाने का अवसर मिला और मैंने वहा के प्रसिद्ध खनिज झरनों का पानी पिया।

अगस्त 1933 में मैं चेकोस्लोवाकिया के एक अन्य स्नानघाट फ्रेंजनबाद गया जो कार्ल्सबाद से एक घटे की यात्रा की दूरी पर स्थित है। उस समय श्री वी जे पटेल अपने हृदय रोग के उपचार हेतु वहा आए हुए थे। फ्रेंजनबाद एक छोटा स्थान है और कार्ल्सबाद की भाति अतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्थान भी नहीं है। फिर भी यह एक बहुत सुदर स्थल है, विशेषरूप से हृदय रोगों, स्त्री रोगों तथा जोडों के दर्द आदि के लिए तो बहुत उपयोगी स्थान है। यह एक समतल भूमि पर स्थित है अत: बूढ़ों व कमजोर स्त्री-पुरुषों के लिए

* कलकत्ता नगर निगम के गजट में 31 दिसबर, 1937 को प्रकाशित।

उपयुक्त स्थान है।

इसके विपरीत कार्ल्सबाद पहाडियों की शृंखलाओं से घिरा स्थान है। मुख्य शहर घाटी मे स्थित है तथा घरों के साथ-साथ सड़के बनी हैं जो हर ओर पहाडो तक फैली हुई हैं। स्वास्थ्य और दृश्यावलि की दृष्टि से भी इस शहर की स्थिति बहुत उत्तम है। कार्ल्सबाद नगर निगम ने बहुत सुंदर सड़कें और मार्ग बनाए हैं जो कार्ल्सबाद को घेरने वाले पहाडों तक पहुचते हैं। अधिकाश चोटियों उदाहरण के लिए ड्रिक रेशउजबर्ग (त्रिशूल के आकार में) फ्रेंडशाफ्टशेश (मैत्री पहाड) हौरशनुस्प्रा (हिरणकूद) विएट्सबर्ग, अबर्ग, स्टिफ्टरवर्ट आदि को शहर से ही देखा जा सकता है और वहां तक आधे घटे की पैदल यात्रा के पश्चात पहुचा जा सकता है। इन सभी चोटियों से आखों के सम्मुख अद्‌भुत दृश्य देखने को मिलता है। पर्वत चोटियों पर पहुचने वाले मार्ग पर थोडी-थोडी दूर पर विश्राम स्थल हैं और ऐसे मार्ग बनाए गए है कि हर प्रकार के पैदल यात्रियों को लुभाते हैं। मौसम के दौरान इन सभी एकात चोटियों पर कैफे खुले रहते हैं जिससे पैदल यात्री यहां स्वय को तरोताजा कर सकते हैं और घर लौटने की यात्रा शुरू करने से पूर्व अपनी थकान मिटा सकते हैं। यूरोप के किसी भी लोकप्रिय रिसोर्ट की भाति कार्ल्सबाद में भी टेनिस, गोल्फ, नृत्य, सिनेमा, थियेटर, घुडसवारी-शिकार आदि की सुविधाएं उपलब्ध हैं। किंतु मुझे कार्ल्सबाद मे जो चीज सबसे आकर्षक लगी वह थी, वह पगडंडिया जो पर्वत की चोटियो तक पहुचती हैं। वहा नीरसता का कोई नाम नही। प्रत्येक दिन की यात्रा में आप नए-नए दृश्यों से अपना मन लुभा सकते हैं।

कार्ल्सबाद की स्थापना 1349 में राजा चार्ल्स IV (कार्ल-IV) ने की थी। इससे एक लोककथा जुड़ी है कि एक बार राजा चार्ल्स-IV कार्ल्सबाद ने पर्वतों में शिकार खेल रहे थे। अचानक वहां एक बडा हिरण आया और उसके पीछे कुत्ते पड़े हुए थे। वह हिरण चट्टान पर से कूदा, पीछे-पीछे कुत्ते भी कूदे। तभी राजा को एक कुत्ते के चिल्लाने की आवाज सुनाई दी, क्या हुआ यह देखने के लिए राजा वहां पहुचे तो उन्होंने देखा कि एक गरम चश्मे (झरने) मे कुत्ता जल गया है। अत: अचानक राजा चार्ल्स-IV द्वारा कार्ल्सबाद की खोज हुई। बाद में चिकित्सकों की राय से राजा चार्ल्स ने उस चश्मे के चारो ओर एक घाट बनवा दिया। तभी से कार्ल्सबाद (चार्ल्स, जर्मन भाषा में कार्लसबाथ) मध्य यूरोप का सुप्रसिद्ध स्नानागार बन गया, क्योंकि इस चश्मे के पानी में रोगों को ठीक करने की शक्ति थी, अब यह हमेशा के लिए प्रसिद्ध हो गया है। गोथे, जिन्होंने कम से कम 13 बार कार्ल्सबाद की यात्रा की, कहते हैं-'इन चश्मों की वजह से मेरा अस्तित्व बार-बार स्थापित होता है।' अन्य जल स्नानों की भाति ही कार्ल्सबाद मे किसी भी समय जाया जा सकता है, क्योंकि चश्मे और स्नानाघाट वर्ष भर खुले रहते हैं। कार्ल्सबाद के थर्मलचश्मों मे अल्कासोलाइना मिनरल वाटर है, जिसमें सोडा सल्फेट, सोडा कार्बोनेट और सोडा क्लोरेट मुख्य रूप से विद्यमान है। इसके अलावा यहां के पानी में लीथियम (हाइड्रो कार्बोनेट) भी मिलता है और अन्य खनिज पानी के स्रोतों की अपेक्षा यहा के पानी में रेडियोधर्मिता भी अधिक है। पानी और कार्बोनिक एसिड गैस भी रेडियोधर्मिता से परिपूर्ण है।

कार्ल्सबाद की स्थायी आबादी 16,000 है, किंतु मौसम के दौरान यहा 50,000 के लगभग यात्री आते हैं। 1928 और 1931 मे रिकार्ड कायम हुआ जब यहा आने वालो की सख्या 68,000 और 71,000 के लगभग हो गई। किंतु पिछले कुछ वर्षों में आर्थिक तंगी के कारण तथा अन्य देशों में जल स्रोतो के विकास की वजह से और कई सरकारों की आत्म निर्भरता की नीतियों के कारण यहा आने वाले यात्रियों की सख्या मे बहुत कमी आ गई। 1933 मे यात्रियों की सख्या 38,000 थी। चेकोस्लोवाकिया के लिए कार्ल्सबाद का महत्व यहा की पोर्सलिन इंडस्ट्री के कारण भी है जिसकी वजह से चेकोस्लोवाकिया इतना प्रसिद्ध है। किंतु विश्व इसे जलस्रोत के रूप में ही जानता है।

कार्ल्सबाद के गर्म चश्मों की संख्या 16 है। यहां का पानी पीने के और स्नान के दोनों ही कामो में आता है। कुल सुप्रसिद्ध चश्मों का विवरण इस प्रकार है–

स्प्रूडेल–यह हवा मे ऊपर की ओर तेज गति से उठता है। यह कार्ल्सबाद का प्रतीक चिन्ह है। इसके उपचार योग्य पानी (72 डिग्री सेंटीग्रेड) को पहले-पहल आधी शताब्दी तक केवल स्नान के काम में ही लाया जाता था, 1520 में डॉ. वेंजल पेयर ने इसे पीने के लिए भी कहा। यह स्रोत प्रति मिनट 2000 लिटर पानी फेंकता है, गर्म पानी कुल मिलाकर पूरे दिन मे 29 लाख लिटर पानी यहां से निकलता है। इसमें 19,000 किलो लवण होता है। 40 लाख बोतलों की वार्षिक खपत 1½ दिन में पूरी हो जाती है, 23,500 बोतल पानी मौसम के दिनों में प्रति दिन उपयोग में आता है। यह खपत दो मिनट मे फेंके गए पानी से पूरी हो जाती है। स्प्रूडेल से निकले पानी द्वारा सभी सस्थाओं के स्नान के पानी की पूर्ति हो जाती है। प्रतिवर्ष यहा से 100,000 किलो स्प्रूडेल लवण तैयार किया जाता है। प्रति घटा यहां 250 किलो कार्बोनिक गैस का उत्पादन होता है।

'द मुहलब्रन्न' यह स्प्रूडेल के बाद सबसे शक्तिशाली स्रोत है। प्रति मिनट 17 5 लिटर पानी छोडता है। तापमान 53.7 डिग्री सेंटीग्रेड है। पूरे विश्व मे 30 लाख बोतले प्रतिवर्ष इसके पानी की खपत होती है। कार्ल्सबाद आने वाला प्रत्येक व्यक्ति मुहलब्रन्न के पास बनी ग्रीक स्थापत्य का प्रशसक अवश्य बनता है।

'दि स्कलसब्रन्न' सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित है। 45 लिटर प्रति मिनट पानी छोडता है। तापमान 63.3 डिग्री सेंटीग्रेड है। स्कलासब्रन्न की जड़ में चट्टान से कार्मटब्रन्न निकलता है। प्रति मिनट 4 9 लिटर पानी देता है। तापमान 49.9 डिग्री सेंटीग्रेड है।

'दि कैसर कार्ल IV स्प्रिंग' यह राजा चार्ल्स के समय से पुराना स्रोत है (1316-1370) पैरों में दर्द हो जाने पर राजा यहां स्नान किया करता था तो उसने इसके पानी को स्वास्थ्य के लिए उपयोगी पाया। प्रति मिनट 5.1 लिटर पानी यहा से निकलता है। तापमान 50 4 डिग्री सेंटीग्रेड है। अन्य चश्मे हैं न्यूब्रन्न, बर्न हार्डसब्रन्न, दि एलिजाबेथे रोजन क्वेले, दि कुरहास क्वेले, पार्कब्रन्न, दि रशियन क्रानन क्वेले, स्पाइटलस्क्वेले, डोरोथीन सोरलिग तथा ईजन क्वेले।

कार्ल्सबाद में 6 स्नानघर हैं। जिनमें निम्न स्नान किए जा सकते हैं-स्प्रूडेल बाथ, मडबाथ, कार्बोनिक एसिडबाथ, हाट एयर बाथ, इलेक्ट्रिक बाथ, स्प्रूडैल एटोम बाथ, स्प्रूडेल

इटेस्टाइनबाथ, स्प्रूडिल कार्बोनिक एसिड बाथ, ड्राई गैस बाथ, मड पैक बाथ आदि।

निम्न बीमारियों के उपचार में कार्ल्सबाद बहुत उपयोगी है-पेट की बीमारियां, आंतों की बीमारिया, यकृत की बीमारिया गालडक्ट की बीमारियां आदि के लिए। इसके अतिरिक्त अन्य बीमारियों में भी कार्ल्सबाद उपचार से लाभ पहुंचता है वे हैं-मलेरिया के परिणामस्वरूप पैदा हुए रोग, मुत्र मार्गों के रोग, जोड़ों का दर्द, पेशियों का दर्द, गठिया, चर्मरोग, स्त्री रोग।

कार्ल्सबाद में आपको सड़कों पर चलते हुए स्त्री-पुरुष हाथ में गिलास लिए पानी पीते नजर आएगे। प्राय: यह पानी एक बार सुबह और एक बार दोपहर में पीना होता है। पानी पीने के इस निर्धारित समय में वहा अत्यधिक भीड़ होती है। मौसम के दिनों मे अर्थात मई से अगस्त के बीच पीने के पानी को लेने के लिए लबी-लंबी लाइनें लगी देखी जा सकती हैं। यहा बड़े-बड़े हाल बनाए गए हैं ताकि खराब मौसम के दिनों में भी लोग पानी पीने आ सकें। डाक्टर प्राय: एक और दूसरी बार पानी पीने के बीच एक घटे का अतर रखने की राय देते हैं।

अभी यहा केवल एक पहाडी रेल मार्ग है जो शहर से पहाड़ की चोटी फ्रडशाफ्टशोल तक पहुंचता है। अन्य रेल मार्गों का कार्य चल रहा था किंतु आर्थिक तगी के कारण उसे रोक देना पड़ा।

कार्ल्सबाद का पानी और नमक पूरे विश्व में उपलब्ध है हालांकि यह पानी उतना प्रभावशाली नही जितना कि ताजा पानी जो सीधे झरने से लेकर गर्म ही पिया जाता है, फिर भी लाभ तो पहुंचता ही है।

कार्ल्सबाद आधुनिकतम फैशनेबल स्थान है। सुविधाओं से पूर्ण होटल है, बहुत मंहगे है, यहां रहना काफी खर्चीला है। सुविधाजनक स्थिति में रहने के लिए आवश्यक खर्च अधिक नही है। उदाहरण के लिए मैं स्कालेसबर्ग में कुरहांस कोनिजिक अलेग्जेंडरा में ठहरा था। सुविधाजनक स्थान है जहा खाने और स्नान की कीमतें मध्यम हैं। यहां प्रत्येक कमरे में गर्म और ठडा पानी हर समय उपलब्ध होता है। कार्ल्सबाद में ऐसे कई स्थान हैं। किसी विदेशी को जो सबसे बड़ी असुविधा का सामना यहां करना पडता है वह है यहां का विशेषकर 'कुरटेक्स' जो व्यक्ति की आर्थिक अवस्था के अनुरूप लगाया जाता है। यह कर ईमानदारी से नही लगाया जाता क्योंकि प्राय: आगंतुकों को वहा के व्यवस्थापकों से कर कम करने के लिए झगड़ते देखा जा सकता है।

कार्ल्सबाद के निकट ही और भी कई पानी के स्रोते हैं जैसे मोरीनबाद और सेट जोशीमस्थल जहा मैं भी गया था। इस स्थान के निकट रेडियम की खानें हैं। जोशीमस्थल का रेडियम स्नान उपचार की दृष्टि से बहुत प्रसिद्ध है।

अब मैं यह प्रश्न करना चाहूंगा कि पानी के ये स्रोत हमें क्या सबक सिखाते हैं। ऐसा बहुत कुछ है जो हम लोग सीख सकते हैं। भारत मे कई पर्वतीय स्थल हैं, समुद्र किनारे के स्थान हैं और कई खनिज झरने भी हैं। किंतु इनको वैज्ञानिक पद्धति से विकसित करने का कोई प्रयास नहीं किया गया है। जिससे की सारे देश के यात्री

इस ओर आकर्षित होते। इसका मुख्य कारण सरकार की इस ओर रुचि न होना ही है। इसके विपरीत चेकोस्लोवाकिया में सरकार ने इन स्थानों के विकास में बहुत कार्य किया है। उन सभी यात्रियों को जो, दस दिन कार्ल्सबाद में रुकते हैं। पचास प्रतिशत रेलभाडे में छूट मिलती है जब वे वापसी की यात्रा करते हैं। भारत में जब सरकार या निगम इस ओर कदम उठाए उससे पहले हमें लोगों को इस कार्य के लिए तैयार करना होगा। ऐसे स्थानों पर दूसरे देशों के यात्रियों की दिलचस्पी पैदा होने से अपने देश की संपदा में वृद्धि होती है। अपने देश के लोगों को लाभान्वित करने के साथ-साथ इसका आर्थिक उद्देश्य भी हो सकता है। क्या हम इसी रूपरेखा पर अपने देश में कुछ कार्य नही कर सकते? भारत की सामाजिक व आर्थिक उन्नति के लिए राज्य योजनाएं बनाते समय हमें उसमे भारत के स्वास्थ्य केंद्रों व जलस्थानों के विकास को भी शामिल करना होगा।